For Private & Personal Use Only

www.jainelibrary.org

Jain Education International

अर्हम् ।

प्रातः सरणीय पंजाबकेसरी न्यायां भोनिधि

्श्रीविजयानन्दसूरिवरविर**चित**

॥ नवतत्त्वसङ्ग्रह ॥

तथा

उपदेशबावनी

संपादक

प्रो॰ हीरालाल रसिकदास कापडिया, एम् ए.

प्रथम संस्करण

वि. सं. १९८८]

वीरसंवत् २४५८

[इ. स. १९३१

सर्व हक साधीन]

आत्मसंवत् ३६

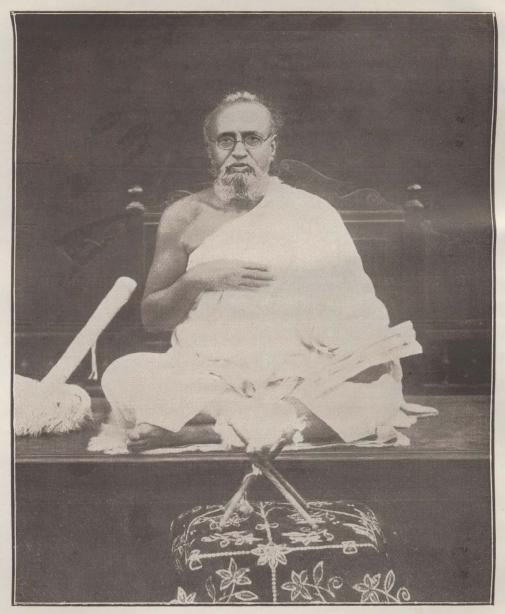
[All rights reserved

मूल्य रु. ४.

प्रकाशक-हीरालाल रसिकदास कापिडया भगतवाडी, भूलेश्वर, मुंबई.



मुद्रक-रामचंद्र येस् शेडगे, निर्णयसागर मुद्रणालय. २६।२८, कोलभाट छेन, **मुंबई.** न्यायाभोनिधि जैनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानंद्सृरिपदृधर श्रीमहावीर जैन विद्यालय मुंबई, श्री आत्मानंद जैन गुरुकुल पंजाब गुजरांवाला, श्री वरकाणा पार्श्वनाथ जैन विद्यालय (मारवाड) इत्यादि अनेक संस्थाओंके उत्पादकः



आचार्य १०८ श्रीमद्रिजयवस्रभस्रिजी महाराज.

जन्म बडौदा. सं. १९२७ कार्तक सुदि २. दीक्षा राधनपूर. सं. १९४३ वैशाख सुदि १३. आचार्यपद लाहौर. सं. १९८१ मार्गशीर्ष सुदि ५.

पालनपुरनिवासी पारी डाह्याभाई सूरजमल तरफथी तेमना वडील बंधु स्व. झवेरी मणिलाल सूरजमलना स्मरणार्थे

निवेदन.

संवेगी दीक्षा अंगीकार कर्या पहेलां परंतु ढुंढक (स्थानकवासी) मतना परिलागनी भावनाना चद्भव अने श्रिरीकरण बाद प्रथम कृति तरीके जेनी विश्वविख्यात पंजाबकेसरी न्यायांभोनिधि क्रीविक्यानन्दसूरीथरना वरद हस्ते 'विनोली' गाममां वि. सं. १९२७ मां रचना शह ते आ विकासमंग्रहने प्रकाशित थयेलुं जोइ कोइ पण सहृदयने आनंद थाय ज. तेमां पण वळी मारा सद्गत पिताना सतीर्थ्य अने धर्मस्नेही तेमज मारा प्रत्ये पूर्ण वात्सल्यभाव राखनारा आचार्य श्रीविजय-बुद्धमस्रिए 'मोहमयी' नगरीमां अप स्थान भोगवता श्रीगोडीजी महाराजना उपाश्रयमां आपेला सद्दपदेशतुं आ मुख्य परिणाम छे ए स्परणमां आवतां मारा जेवाने अधिक आनंद थाय छे. अगाउथी पाहक तरीके नाम नोंधावी नकल दीठ चार रुपिया श्रीविजयदेवसूर संघ (पायधुनी, मुंबई)नी पेढीमां भरी ने बाहकवर्गे आ प्रकाशनमां जे आर्थिक प्रोत्साहन आप्युं छे तेटले अंशे आ प्रकाशन-रूप पुण्यात्मक कार्यमां तेमनो हिस्सो छे, एम मारे कहेवूं ज जोइए, आ कार्यमां २५१ तक्छो नौधा-ववानी जे पहेल श्रीविजयदेवसूर संघनी पेढीना कार्यवाहकोए करी ते बदल तेमने धन्यवाद घटे है. विशेषमां प्रकाशन माटे रकम एकठी करी आपवामां ए पेढीना ते वखते मेनेजिंग ट्रस्टी तरीके श्रीयुत मणीलाल मोतीलाल मुळजी तरफथी ए पेढी द्वारा जे अनुकूछता करी आपवामां आवी तेनी आभारपूर्वक नींघ छेवामां आवे छे. आ प्रंथ घारेला समये बहार पडवाना कार्यमां केटलाक अनिवार्य प्रसंगोने लड्ने जे विलंब थयो ते बदल हुं दिलगीर छुं. आ प्रंथ तैयार करवामां जे हस्त-छिखित प्रति मने काम लागी छे ते झंडियाला गुरु (Jandiala Guru) ना भंडारनी ७४ पत्रनी छे तेमज ते कर्ताए खहर्से छखेळी जणाय छे. एमां पीळी हरताळनो केटलेक स्थळे उपयोग करायो छे अने कोइक सके प्रन्थकारे पोते ते सुधारेली जोवाय छे. आ प्रति मने मेळवी आपवानुं जे स्तुत्य कार्य श्रीविजयवल्लभसूरिए कर्युं ते साहित्यप्रचार अंगेनी तेमनी सिकय सहानुभूतिना प्रतीकरूप छे एम कहा विना नहि चाले. आ प्रमाणे आ प्रंथना प्रकाशनकार्यमां तेमनी तरकथी जे विविध प्रकारनो सहकार मळवो छे ते बदल हूं तेमनो अत्यंत ऋणी छं. एना सारणलेश तरीके आ संस्करणमां तैमनी प्रतिकृतिने सानंद अप्र स्थान आपुं छं. दक्षिणविहारी सुनिराज श्रीअसरविजयना विद्वान शिष्य मुनि श्रीचतुरविजये आ प्रन्थना १३६ पृष्ठ सुधीनां द्वितीय वेळानां शोधनपत्रोनी तेमना उपर मोकलायेली एकेक नकल तपासी मोकली छे ते बदल तेमनी सानंद उपकार मानवामां आवे छे.

१ आ संबंधमां श्रीविज्ञयवहुमसूरि कथे छे के—"चौमासे बाद हुबिआरपुरसें विहार करके दिल्ली शहर तरफ गये, और संवत् १९२४ का चौमासा, दिल्लीसें विहार करके जमना नदीके पार "बिनौली" गाममें जा किया; जहां मी कितनेही लोकोने सनातन जैनधर्मका श्रद्धान अंगीकार किया. इस चौमासेमें श्रीआत्मारामजीने "नवतत्त्व" ग्रंथ बनाना श्रुरू किया; संवत् १९२५ का चौमासा श्रीआत्मारामजीने "बढौत" गाममें किया; जहां "नवतत्त्व" ग्रंथ समाप्त किया; जिस श्रंथको देखनेसेंही ग्रंथकर्ताका बुद्धिवैभव मालुम होता है."

आ टिप्पममां प्रनथ 'बडीत'मां सं. १९१५ मां पूर्ण थयानो जे उक्षेत्र छे ते विसंवारी छे. आ संबंधमां श्रीविजय बहुमस्रितुं सादर लक्ष्य खेंचतां तेओ स्चवे छे के "मने जेवुं याद रहेल तेवुं लखायेल, कारणके आचार्यश्रीना सर्गवास पछी जीवनचरित्र लखामां आवेल छे. एथी स्खलना होवानो संभव छे. माटे प्रथकार पीताना हस्तलिखित पुर्तकमां ज पोते जे संवत् लखे छे ते ज खरो समजवो."

२ जुओ "श्री आत्मानंद प्रकास" (पु. २७, अं. २, प्ट. ३६-३८). ३ एमनी ग्रुभ नामावली अंतमां आपेली छे.

नवत्त्वसंग्रह ए नाम ज कही आपे छे तेम आ प्रंथमां जीवादि नव तत्त्वोतुं खरूप आलेखवामां आल्युं छे, परंतु विशेषता ए छे के श्रीभगवतीसूत्र प्रमुख विविध आगमोना पाठोनी अत्र संकलना करवामां आवी छे. अनेक मुद्दानी वस्तुओ यंत्ररूपे कोष्ठक द्वारा रजु कराइ छे जेथी आ प्रंथनी महत्तामां असाधारण युद्धि थइ छे. आ प्रंथना कर्ताए बार विविधवर्णा 'चित्रो वडे एने अलंकृत कर्यों छे. आ प्रंथनी मुख्य भाषा हिंदी गणाय जोके केटलीक वार संस्कृत, प्राकृत अने गुजराती प्रयोगो एमां दृष्टिगोचर थाय छे; कोइक वेला तो पंजाबी शब्दो पण नजरे पडे छे. आवी परिस्थितिमां तेमज अंतमां अतिशीचताए आ प्रंथ मुद्रित कराववो पड्यो तेथी मारे हाथे जो यथेष्ट संशोधनादि द्वारा आने पूर्ण न्याय न अपायो होय तो सहृदय साक्षरो क्षमा करशे एटली मारी तेमने विनित छे. मूळ कृतिमांना आंतरिक स्वरूपमां भाग्ये ज स्वरूप परिवर्तन करवुं अने ते पण खास आवश्यकता होय तो ज करवुं एवी श्रीविजयवल्लभसूरिनी सूचना तरफ पण तेमनुं सविनय ध्यान खेंचीश. आ प्रंथमां क्या कया विषयो आलेखाया छे तेनुं निरीक्षण करवा मारी पाठकमहोदयने विशिष्ट विनित छे. मने पोताने तो एम स्फुरे छे के आ प्रंथमां अतिसूक्ष्म वस्तुओनी भाषा द्वारा प्रथम ज गुंथणी थह छे एटले जमने आगमो जोवाजाणवानो ग्रुभ प्रसंग मळथो न होय तेमने आमांथी घणुं नवुं जाणवानुं मळशे.

विशेषमां उपदेशवावनी प्रसिद्ध करवानुं वचन अपायुं हतुं निह, छतां श्रीविजयवस्नमस्रिनी सूचनाने मान आपी ते सुरस्य तेमज सुश्लिष्ट पद्यमय छघु प्रन्थने पण अत्र स्थान आपवामां आप्युं छे.

प्रम्थप्रणेतानी तेमज तेमना प्रथम शिष्यरक्ष स्व. मुनिवर्य श्रीहरूमीविजयनी प्रतिकृतिओ श्रीयुत लालचंद खुशालचंद (बालापुर) तरफथी, प्रम्थकारना हस्ताक्षरनी तेमज प्रवर्तक मुनिराज श्रीकांतिविजयनी श्रीयुत दोसी कालीदास सांकलचंद (पालनपुर) तरफथी, शांतमूर्ति मुनिराज श्रीहंसविजयनी श्रीयुत कांतिलाल मोहनलाल (पालनपुर) तरफथी, स्व. मुनिवर्य श्रीहंपविजयनी लाला मानिकचंद छोटालाल दुग्गढ (गुजरांवाला) तरफथी अने श्रीविजयवल्लभस्रिनी श्रीयुत हाद्याभाइ स्राजमल तरफथी पूरी पाडवामां आवी छे ते बदल तेमने तेमज जेमणे ए कार्य माटे पोताना ब्लांकोनो चपयोग करवा दीधो छे तेमने पण हार्दिक धन्यवाद घटे छे.

अंतमां आ निवेदनने वधु न छंबावतां आ प्रंथना प्रणेताना जीवननी जे आछी रूपरेखा हवे पछी आछेखवामां आवे छे तेमांथी उद्भवता बोधदायक पाठो जीवनमां उतारवानुं सामर्थ्य प्रकटे एटढी अभिछाषा पूर्वक विरमवामां आवे छे.

भगतनारी, भूलेश्वर, मुंबई. चीरसंवत २४५७ भादपद कृष्ण पंचमी

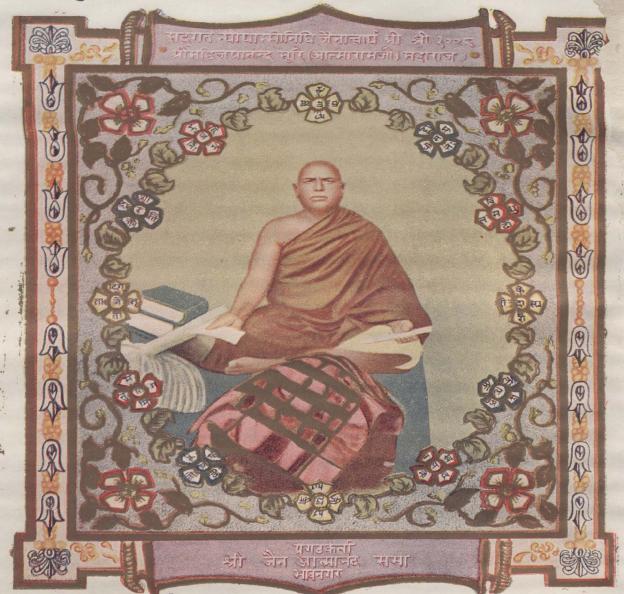
चारित्र्याकांक्षी हीरालाल रसिकदास कापडियाः

⁹ जुओ इस्तिलिखित प्रतिना खास करीने पत्रांक-१६ ब, ३२ ब, ३३ ब, ३४ ब, ३७ अ, ५० अ, ५० ब, ५२ ब, ५३ अ, ५३ व तथा ५४ अ. आ चित्रोत्तं मुद्रणकार्य चित्रशाळा मुद्रणालय (पुना)मां थयुं छे. वळी लियो तरीके एक फॉर्म पण त्यां ज तैयार करावायो छे.

२ मारा पिता एमने पोताना गुरुदेव तरीके सन्मानता हता.

३ ख. श्रीविजयकमलस्रि तेमज उपाध्याय श्रीवीरविजयनी पण प्रतिकृतिओने अत्र सानंद स्थान अपात, किन्तु तेने लगता स्लॉको मेळववा पूर्ण प्रयास करवा छतां ते न मळवाथी ए इच्छा सफळ थइ शकी नथी.

श्रीयुत लालचंद खुशालचंद (बालापुर) तर्फसे गुरुभिक्तिनिमित्ते



योगा भोगानुगामी द्विज भजन जिन शारदारिक रक्तो, दिग्जेता जेतृजेतामतिनुतिगितिभिः पूजितो जिष्णुजिहैः। जीयाद्दायाद्यात्री खलबलद्लनो लोललीलस्वलज्जः केदारौदास्यदारी विमलमधुमदोद्दामधाम प्रमत्तः॥

Lakshmi Art, Bombay, 8.

→ ∰ यन्थप्रणेतानी जीवनरेखा भू ←

आहेत शासनना शङ्काररूप, अने अमूल्य प्रन्थोना विधाता, जैनाचार्थ न्यायाम्मीनिधि विजयानन्द सुरीश्वरनुं रोचक, सार्थक अने बोधदायक जीवनचरित्र अत्यार सुधीमां विविध स्थळेथी र्जनेक विबुधोने हाथे आलेखायेछं होवा छतां आ स्वर्गस्य महात्माना गुणानुबाद गाइ मारा जीवननी क्षणोने सफळ करुं एवी अभिलाषार्थी तेमज आ अंथनुं संपादनकार्य स्वीकारती वेळा प्रन्थपणेतानी जीवन-दिशा दर्शाववानी करेली प्रतिज्ञाना पाठनार्थे हुं मारी मन्द्र मति अनुसार आ महामंगलकारी कार्यमां प्रवृत्त थाउं छं. आ प्रसिद्ध जैन महर्षिनो जैन्म आजथी ९४ वर्ष उपर एटले वि. सं. १८२३ ना चैत्र मासना शक्क पक्षमां प्रतिपदा गुरुवारे, पंजाबना जिल्ला फिरोजपुरनी तहसील जीरामां आवेला 'लेहरा' गाममां थयो हतो. 'कपुर ब्रह्मक्षत्रिय' जातिना अने सामान्य स्थितिना गणेशचन्द्रनी धर्मपत्नी रूपादेवीने एमनी माता थवानो अद्वितीय प्रसंग प्राप्त थयो हतो. आ गुणज्ञ दंपतीए आत्माराम एवं एमनं हाम नाम पाडी आनंद अनुभव्यो हतो. जन्मसमयथी ज एमनां सौन्दर्थने अलोकिकता वरेली हती. एमना वदन-कमलना दक्षिण भागमानुं रक्तिमापूरित चिह्न सुवर्णभूमिकामां पद्मराग मणिना जेवं कार्य करतं हतं. एमना पिताश्री विशिष्ट प्रकारनी विद्वत्ताथी विभूषित न हता तेमज एमना जन्मस्थळमां कोइ पाठशाळा पण न हती; तेथी बालकीडामां लगभग दश वर्ष एमने व्यतीत करवां पड्यां. एवामां एक प्रामीण पंडित पासे एमने हिंदी भाषानी अभ्यास करवानी तक मळी. परंत शिक्षानी प्रारंभिक दशामां ज पिता परलोकवासी बन्या, जोके त्यार बाद एमना पिताना 'जीरा' निवासी अने 'ओसवाल' जातीय सन्मित्र जोधामल एमने पोताना गाममां अभ्यासार्थे लइ गया. आ वखते एमनी उम्मर चौद वर्षनी हती. पिताना सदाना वियोगे एमना विचारोमां पुष्कळ परिवर्तन पेदा कर्यु. पदार्थोनी यथार्थ स्थितिनं एमने भान थवा लाखं. वैराग्यरंगथी एमनं हृदयक्षेत्र रंगायुं अने एणे जीवनपलटानुं कार्य कर्युं. 'जीरा'मां ढंढक पंथना साधुओनी साथेना विशेष परिचयथी एमणे १७ वर्षनी सुकुमार वये, ए फिरकाना श्रीयत जीवनराम साधु पासे 'मालेरकोटला'मां ढुंढक मतनी दीक्षा अंगीकार करी. भोगी मटी एओ योगी बन्या. आ प्रमाणे एमनी स्थितिमां-आत्मोन्नतिना क्षेत्रमां परिवर्तन थयुं, परंतु नाम तो तेनुं ते ज राखवामां आब्यं.

एमनी प्रतिभानो प्रभाव एटलो बधो हतो के तेओ रोज बसे त्रणसे श्लोको कंठस्थ करी शकता. आथी एमणे दुंक समयमां 'ढुंढक' मतने मान्य बत्रीसे सूत्रो कंठस्थ करी लीधां. वीस वर्षनी उम्मरमां तो 'ढुंढक' मतनां रहस्यभूत तत्त्वोथी एओ पूर्ण परिचित बनी गया. थोडा वस्तत पछी 'रोपड़'निवासी पंडित श्रीसदानंद अने 'मालेरकोटल।'ना वासी पंडित श्रीअनंतराम पासे एमणे व्याकरणनो अभ्यास कर्यो. त्यारबाद 'पट्टी'निवासी पंडित श्रीआत्माराम पासे न्याय, सांख्य,

⁹ आ सर्वमां मुनिरत श्रीचल्लभविजय (अलारे श्रीविजयवल्लभस्रि तरीके ओळलाता)ने हाथे आलेलायेलं अने तस्वनिर्णयप्रासादमां प्रसिद्ध थयेलं जीवनचरित्र विशेषतः मननीय जणाय छे. २ एमनी जन्मकुंडळी माटे जुओ तस्वनिर्णय० (पृ. ३५). ३ एना वंशदक्ष माटे जुओ तस्वनिर्णय० (पृ. २४).

वेदान्तादि दर्शनशास्त्रोनं अध्ययन करवानी एमने सोनेरी तक मळी. विविध दार्शनिक साहित्य तेमज व्याकरणादिनो अभ्यास थतां यथार्थ सत्यनं एमने दर्शन थयं. आथी खोटी रीते मूर्तिपूजादिनो अपलाप करनारा ढंढक मतनो एमणे परित्याग कर्यो. केटलाक कदाग्रही स्थानकवासी साधुओए अने गृहस्थोए एमने हेरान करवामां कचास न राखी, परंतु ए बधां कष्टो तेओ समभावे निर्भयतापूर्वक सहन करी गया, केमके "सत्ये नास्ति मयं कचित्" ए वाक्य उपर एमने पूर्ण श्रद्धा हती. एमने एवो अटल विश्वास हतो के जो हुं साचे मार्गे चालुं छुं तो समग्र ब्रह्माण्डमां एवी कोइ शक्ति नथी के जे मने नाहक सतावी शके. स्थाने स्थाने जैन धर्मनो विजयडंको वगाडतां अने अनेक स्नीपुरुषोने सन्मार्ग दोरवतां एओ पंजाबमांथी '१५ साधुओ साथे नीकळ्या अने श्रीअर्बुदाचळ, श्रीसिद्धाचळ (पालीताणा) बगेरे तीर्थोंनी यात्रा करी 'अमदावाद'मां वि. सं. १९३२ मां पर्धार्या. आ समये वेष तो ढुंढक साधुनो हतो. केवळ मुखविस्त्रका उतारी नांखवामां आवी हती. अहीं गणि श्रीमणिविजय महाराजश्रीना शिष्य मुनिरत गणि श्रीबुद्धिविजय (बुटेरायजी महाराजश्री) पासे एमणे तपागच्छनो वासक्षेप लीधो अने एमने गुरु तरीके खीकार्या. आ समये एमनी उमर ३९ वर्षनी हती. दीक्षासमये आनन्दविजय एवं एमनुं नाम राखवामां आब्युं, परंतु आत्मारामजी ए ज पूर्वनुं नाम विशेषतः प्रचलित रह्युं. एमनी साथे आवेला १५ साधुओ एमना शिष्य अने प्रशिष्य बन्या. 'अमदाबाद'थी विहार करी विविध तीर्थस्थानोनी यात्रा करता, मतांतरीय विद्वानो साथे शास्त्रार्थ करी तेमने निरुत्तर करता, जैन शासननी विजयपताका देशे देशे फरकावता, अने स्याद्वादमार्गना यशःपुंजनो विस्तार करता तेओ वि. सं. १९४३मां 'सिद्धाचळजी' आवी पहोंच्या. बहु जनोनी प्रार्थनाथी एमनुं चातुर्मास अहीं ज थयुं. एमनो सत्यपूर्ण अने सारगर्भित उपदेश, एमनुं निर्मळ अने निष्कलंक चारित्र, एमनी अद्भुत प्रतिभा, विश्वधर्म बनवानी योग्यतावाळा जैन धर्मना प्रचार माटेनी एमनी तालावेली इत्यादि एमना सद्गुणोथी आकर्षाइने एमना दर्शन-बन्दनार्थे तथा तीर्थयात्राना निमित्ते विविध देशोमांथी आवेळा लगभग ३५००० सज्जनो समक्ष देवोने पण दुर्रुभ अने अनुमोदनीय 'आचार्थ' पदवी श्रीजैन संघे एमने उत्साह अने आनंदपूर्वक अर्पी अने एमनुं श्रीविजयानन्दसूरि एवं नाम स्थाप्यं. वि. सं. १९४५ मां एमणे 'महेसाणा'मां चातुर्मास कर्युं. आ समये संस्कृतज्ञ डॉ. ए. एफ. रुडॉल्फ हॉर्नेल नामना गौरांग महाशये एमने जैन धर्म संबंधी

१ एमनां नामो नीचे मुजब छे---

⁽१) विश्वचंद (लक्ष्मीविजय), (२) चंपालाल (कुमुद्वि०), (३) हुक्रमचंद (रंगवि०), (४) सलामतराय (चारित्रवि०), (५) हाकमराय (रलवि०), (६) ख्वचंद (संतोषवि०), (७) घनैयालाल (कुशलवि०), (८) तुल्क्षीराम (प्रमोदवि०), (९) कल्याणचंद (कल्याणवि०), (१०) नीहालचंद (हर्षवि०), (११) निधानमल (हीरवि०), (१२) रामलाल (कमलवि०), (१३) धर्मचंद (अमृतवि०), (१४) प्रभुद्याल (चंद्रवि०) अने (१५) रामजीलाल (रामवि०).

अत्र कैं। समां स्चवेलां नामो संवेगी दीक्षा लीघा बाद पाडवामां आव्यां हतां.

२ ज्यारे एओ उपदेश आपता त्यारे कोई प्रश्न करतो ते तेओ पूर्ण गंभीरताथी सांमळता अने तेनो शांत चित्ते संतोषकारक उत्तर आपता. प्रश्नकार खधमां होय के परधमां होय, जिज्ञास होय के टिखली होय परंतु तेतुं दिल हुभाव्या विना तेओ तेने संतोष पमाडी निरुत्तर बनावता. आ संबंधमां जुओ सरस्वती मासिक (भा. १६, खण्ड १) तेमज एमांथी उद्धृत संक्षिप्तजीवन (पृ. ११-१५)

केटलाक प्रश्नो 'अमदावाद'निवासी श्रावक शाह मगनलाल दलपतराम द्वारा पूछ्या. एनो उत्तर मळतां ए महाशयने पूर्ण संतोष थयो. त्यारबादना प्रश्नोत्तरोनुं सिक्रिय परिणाम शुं आव्युं तेना जिज्ञासुने डॉ. हॉर्नेल्र्ने हाथे संपादन थयेला सटीक उपासकदशांगमां ए विद्वाने जे कृतज्ञताप्रदर्शक निम्नलिखित पद्यो आ सूरिवरने उद्देशीने रच्यां छे तेनुं मनन करवा हुं विनवुं छुं:—

''दुराश्रहध्वान्तिविभेदभानो !, हितोपदेशामृतसिन्धुचित !। सन्देहसन्दोहिनिरासकारित् !, जिनोक्तधर्मस्य धुरन्धरोऽसि ॥ १ ॥ अज्ञानितिमरभास्कर—मज्ञानिवृत्तये सहृदयानाम् । आहेततत्त्वादश्—अन्थमपरमि भवानकृत ॥ २ ॥ आनन्दिवजय ! श्रीमन्नात्माराम ! महामुने !। मदीयनिखिल्लप्रश्न—ज्याख्यातः ! शास्त्रपारग ! ॥ ३ ॥ कृतज्ञताचिह्नमिदं, अन्थसंस्करणं कृतम् । यत्नसम्पादितं तुभ्यं, श्रद्धयोत्सृज्यते मया ॥ ४ ॥''

वि. सं. १९४८मां आ डॉ. हॉर्नेल् महोदय एमना दर्शनार्थे 'अमृतसर' आव्या. अहो तेमनी सुजनता! वि. सं. १९४९मां 'चिकागो'मां भरवामां आवनार सर्वधर्मपरिषद्ने अलंकृत करवानुं एमने आमंत्रणपत्र मळ्युं; प्रतिकृति तेमज जीवनचरित्र माटे पण अभ्यर्थना करवामां आवी. परंतु नौकानो आश्रय लीधा विना 'अमेरिका' जवुं अशक्य होवाथी, श्रीयुत वीरचंद राधवजी गांधी बार ऍट लॉ ए महाशयने पोतानी प्रतिकृति, संक्षिप्त जीवनचरित्र अने जैन सिद्धान्त विषयक निबंध आपी पोताना प्रतिनिधि तरीके पसंद कर्या. थोडो वखत पासे राखी एमना सुवर्ण जेवा ज्ञानने श्रीविजयानन्दस्रिए सुगन्धनो योग अप्यों. 'मुंबइ'ना जैन संघे श्रीयुत गांधीने अमेरिका मोकल्या. "The World's Parliament of Religions" नामना पुत्तकना २१ मा प्रष्ठमां एमनी प्रतिकृति आपी निम्नलिखित उद्गारो मुद्रित कराया छे:—

"No man has so peculiarly identified himself with the interests of the Jain community as Muni $\bar{A}tm\bar{a}r\bar{a}mj\bar{\imath}$. He is one of the noble band sworn from the day of initiation to the end of life to work day and night for the high mission they have undertaken. He is the high priest of the Jain community and is recognised as the highest living authority on Jain religion and literature by oriental scholars".

वि. सं. १९५३ ना जेठ मासनी सुद बीजे 'गुजरांवाला' गाममां एओ आव्या आ समये त्यांना जैनोए एमनुं अपूर्व खागत कर्यु. ज्वराक्रान्त देह होवा छतां एमणे धर्मोपदेश आप्यो, परंतु आ एमनो अंतिम उपदेश हतो. हवे फरीथी 'भारत'वर्षना भाग्यमां आ महात्मानो ब्रह्मनाद श्रवण कर्र वानो सुप्रसंग मळे तेम न हतुं. सप्तमीनी रात्रिए नित्यकर्म समाप्त करी सूरिवर्थ निद्राधीन बन्या. एम करतां बार वाग्यानो समय थयो. आ वखते दशे दिशामां शांतता अने निश्चलतानुं साम्राज्य स्थापेखें हतुं. कायर मृत्युमां एवी ताकात न हती के आ महिष्ना असंडित तेजनी ते सामे थइ शके.

१ जे समये महाराजश्रीनो खर्गवास थयो तेवारे अष्टमी थती हती; एथी एमनी निर्वाणितिथ अष्टमी गणाय छे.

आश्री ते धीरे धीरे गुप्त रूपे पोतानी कुटिल जाळ पाथरी रह्यो हतो. निर्भय स्रिवर तो क्यारना ए स्रिश्च बनी मृत्युनुं खागत करवानी तैयारी करी रह्या हता. आवे वखते पण एमना शरीरनी शोभा चन्द्र-कान्तिने हास्यास्पद बनावी रही हती. एमना मुखमांथी 'अर्हन्' शब्दनो दिव्य ध्वनि नीकळी रह्यो हतो. सामे बेठेलो शिष्यपरिवार आ सर्वोत्तम नादनुं उत्सुक हृदये पान करी रह्यो हतो. एटलामां समम पूरो थयो. लो भाइ अब हम जाते हैं, अर्हन् एम कहेतां कहेतां ए स्रिश्चर खर्गे संचर्या. मनोहर रात्रि भयानक रूपे परिणमी. शांत रस करणरूपे परिवर्तन पाम्यो. बीजे दिवसे एमना देहनो अग्निसंस्कार करवामां आव्यो. आ प्रमाणे एमना स्थूल देहनो अस्त थयो, परंतु साधुताना साचा आदर्शनी ए ज देह द्वरा आचरी बतावेल ज्योति तो सदाने माटे उदयवंती बनी गइ.

आ पातःस्मरणीय सूरिवर्य विद्वानोना निःसीम प्रेमी हता. विद्याव्यासंगने छइने एमने हाथे बहु मंथोनो उद्धार थयो छे. अनेक जनोने एमणे सन्मार्गी बनाव्या छे. तेमां खास करीने 'पंजाब' देश उपर एमनो पारावार उपकार छे. ए देशने उद्देशीने एमने जैन धर्मना जन्मदाता तरीके संबोधी शकाय. एमनी यशःपताकारूप त्यांना अनेक जैनमंदिरो आजे पण आ वातनी साक्षी पूरी रह्या छे. 'सिद्धाचरु'मां एमनी पाषाणमयी प्रतिमा स्थापवामां आवी छे ए एमना प्रत्येना सज्जनोनो प्रेम जाहेर करे छे. अमदावाद, पाटण, वडोदरा, जयपुर, अंवाला, छियाना वगेरे स्थलो एमनी मूर्ति तेमज चरणपादुकाथी विभूषित बन्यां छे ए एमनी धर्मसेवानो प्रताप छे. 'गुजरांवाला' शहेरमां एमनी स्मृतिरूपे भव्य समाधिमंदिर बनावायुं छे ए त्यांनी जनतानुं मन एमनी तरफ केटलं आकर्षायेलुं हतुं ते सूचवे छे.

जैन साहित्यने समृद्ध बनाववा तेमणे केवो सतत प्रयास कर्यो छे ए तेमनी नीचे मुजब तस्व-निर्णयप्रासादगत जीवनचरित्रने आधारे रजु कराती विविध कृतिओ कही रही छे:—

(१) नवतत्त्वसंग्रह सं. १९२४-२५, (२) औत्मवावनी सं. १९२७, (३) चोवीसजिनस्तवन सं. १९३०, (४) जैनतत्त्वादर्श सं. १९३७-३८, (५) अज्ञानितिमरभास्कर सं. १९३९-४१, (६) सत्तरभेदी पूजा सं. १९३९, (७) सम्यक्त्वशल्योद्धार सं. १९३९-४१, (८) वीसस्थानक पूजा सं. १९४०, (९) जैनमतवृक्ष सं. १९४२, (१०) अष्टप्रकारी पूजा सं. १९४३, (११) चतुर्थस्तुति-निर्णय (भा. १) सं. १९४४, (१२) श्रीजैनप्रश्लोत्तरावली सं. १९४५, (१३) चतुर्थस्तुतिनिर्णय (भा. २) सं. १९४८, (१४) नवपदपूजा सं. १९४८, (१५) स्नात्रपूजा सं. १९५० अने (१६) तत्त्वनिर्णयमासाद सं. १९५१.

अंतमां एटछं ज निवेदन करीश के आत्मभावमां रमण करनार श्रीविजयानन्द सूरीश्वरनो जन्म सार्थक थयो छे. जेमने एमना दर्शननो लाभ मळ्यो छे तेमनी नेत्रप्राप्ति सफळ थइ छे. जेमने एमनो सुधामय उपदेश सांभळवानी तक मळी छे तेमना कर्ण धन्यपात्र छे. जे माताए आ सूरिरलने जन्म आप्यो तेमने सहस्रशः धन्यवाद अने वन्दन घटे छे. जे जैन संघे एमनुं गौरव कर्युं छे ते विचक्षण संघने मारा प्रणाम छे. जे 'भारत' भूमि आवा महात्माओनी जीवनभूमि बने छे ते बहुरला वसुन्धरा सदा जयवंती वर्तो.

⁹ सन्मतितर्क जेवा प्रौढ प्रन्थनुं एमने पठन कर्यु हुतुं एम मानवानां खास कारणो मळे छे.

२ २०००० स्नीपुरुषोने धर्ममार्गे चढाववा उपरांत एमणे केटलाए स्थानकवासी साधुओने पण जैन धर्मनी प्रशस्त नौकाना कर्णधार बनात्रा. ३ उपदेशबायनी ते आ ज होय एम जणाय छे.

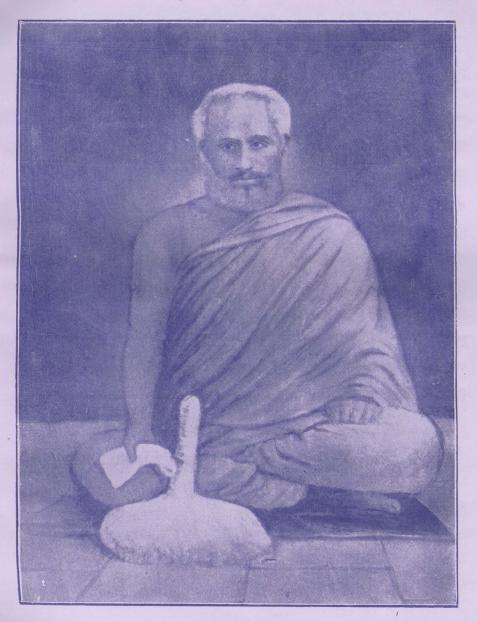
विषयानुक्रम

~\$

	विषय							प्र ष्ठांक
	निवेदन	••••	••••	****	••••	••••	••••	₹-8
	प्रन्थप्रणेतानी जीवनरे	खा	****	• • • •		••••	••••	4-८
	नवतत्त्वसंग्रह	••••	****	••••	••••	****	****	१–२५०
१	जीव-तत्त्व	••••	••••	***	••••	••••	••••	१–११७
२	अजीव-तत्त्व	••••	••••	••••	••••	••••	••••	११७–१३५
ર	पुण्य-तत्त्व	• • • •		••••	••••	****	••••	१३६-१३९
ပွ	पाप-तत्त्व	****			****	****		१३९
4	आस्रव-तत्त्व	••••		200G	e > • o	8***	• • • •	१३९-१४०
દ્	संवर-तत्त्व	••••	• • • •		• • • •	••••	•	१४०-१७५
•	निर्जरा-तत्त्व	••••	••••	••••	••••	• • • •		१७५-१९५
	बन्ध-तत्त्व			••••				१९५२४१
	मोक्ष-तत्त्व	••••	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		••••	••••		२४१–२५०
,	उपदेश बावनी	****	••••	****	****	••••		२५१-२५८
	•	- 	••••	••••	****	• • • •		२५ ९ –२६२
	ब्राहकोनी राभ नामाव	(Ø)	4.70					1-29-444



जैनाचार्य १००८ श्रीमहिजयानन्दसूरि (श्रीआत्मारामजी) महाराजके मुख्य शिष्य १०८ श्रीमान् श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराज मेडता (मारवाड) के वासिंदे पुष्करणा बाह्मण स्वर्गवास १९४० पाछी (मारवाड).





मुनिमहाराज श्रीहर्षविजयर्जा, आचार्यमहाराज श्रीविजयकमलसूरिजी, श्रीहंसविजयजी महाराजजी के गुरुदेव; संघाडा के सर्व साधुओं के आदा विद्यागुरु

बालापुर जीला आकोला (वराड) निवासी होठ लालचंद खुशालचंदकी तर्फसे गुरुभक्ति निमित्तेः



न्यायाम्मोनिधि-पञ्चनदोद्धारक-जैनाचार्य-१००८ श्रीमद्--विजयानन्दुसूरीश्वरविरचितः

॥ नवतत्त्वसङ्ग्रहः ॥

श्रीमत्सर्वज्ञाय नमः । शुद्धज्ञानप्रकाशाय, लोकालोकैकभानवे ।

नमः श्रीवर्धमानाय, वर्धमानजिनेशिने ॥ १ ॥

अथ नवतत्त्वसंग्रह 'लिख्यते. प्रथम 'जीव'तत्त्व लिख्यते —पन्नवणा पद १.

(जीवभेद्)

नरकनाम—रत्नप्रभा १ शकर(करा)प्रभा २ वालु(का)प्रभा ३ पंकप्रभा ४ घूम्रप्रभा ५ तमा ६ तमतमा ७.*

पृथ्वी भेद—कृष्ण मृत्तिका १ नीली मही २ एवं पांच वर्णकी मही ५ पांड ६ पनग-धूल ७ कंकर ८ रेत ९ लवण १० रांग ११ लोह १२ तांवा १३ सीसा १४ रूपा १५ खर्ण १६ हीरा १७ हरिताल १८ ँसिंगरफ १९ मनसिल २० पारा २१ ँमूंगा २२ सोवीरांजन २३ भीडल २४ सर्व जातिके रत्न-पन्ना माणक आदि, सूर्यकांत आदि मणी इति.

^{* &}quot;नेरइया सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—रयणप्पभापुढविनेरइया १ सक्करप्पभा० २ वालुय-प्पभा० ३ पंकप्पभा० ४ धूमप्पभा० ५ तमप्पभा० ६ तमतमप्पभा० ७"। (प्रज्ञा० सू० ३१)

^{† &}quot;सण्हवायरपुढिविकाइया सत्तविहा पन्नता, तंजहा—िकण्हमित्तिया १ नीलमित्तिया २ लोहियमित्तिया ३ हालिहमित्तिया ४ सुकिल्लमित्तिया ५ पांडमित्तिया ६ पणगमित्तिय ७, सेत्तं सण्हवादरपुढिविकाइया" । (सू०१४)...... "खरवायरपुढिविकाइया अणेगिविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढवी १ य
सक्तरा २ वालुया ३ य उवले ४ सिला ५ य लोणूसे ६-७ । अय ८ तंव ९ तउ १० य सीसय ११
हत्य १२ सुवन्ने १३ य वहरे १४ य ॥ १ ॥ हिरियाले १५ हिंगुलए १६ मणोसिला १७ सासगंजणपवाले
१८-२० । अन्भपडलन्भवालुय २१-२२ वायरकाए मणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जए २३ य रुयए २४
अंके २५ फिलेहे २६ य लोहियक्खे २७ य । मरगय २८ मसारगले २९ भुयमोयग ३० इंदनीले ३१
य ॥ ३ ॥ चंदण ३२ गेरुय ३३ हंसगन्भ ३४ पुलए ३५ सोगंधिए ३६ य वोद्धन्त्रे । चंदण्यभ ३७
वेरिलिए ३८ जलकंते ३९ स्रकंते ४० य ॥ ४ ॥" (प्रज्ञा० सू०१५)

९ लखाय छे। २ आ प्रकारे। ३ कलाइ घातु। ४ हिंगळोक। ५ परवाळा। ६ अवरख।

अप्काय—ओस १ पांला २ घूँगर ३ गँडा ४ हॅरतणु ५ वर्षानो ६ स्वभावे ज्ञीतल ७ स्वभावे उष्ण ८ स्वारा पाणी ९ खद्दो पाणी १० लवणवेत् स्वारा ११ वार्षणसमुद्रोदग १२ स्वीरोदग १३ द्वृतोदग १४ इश्लरसवत् १५ कृप आदि जलाश्रयनाः*

तेजस्काय—अंगारा १ ज्वाला २ र्ग्युमर ३ अर्ची ४ उँल्प्रुक ५ लोहपिंडमिश्रित ६ उल्कापातनी अग्नि ७ विजली ८ भ्रुभर ९ निर्घात अग्नि १० अरण आदि काष्ठ घसने से उपनी ११ सूर्यकांत मणीसे उपनी अग्नि १२ इत्यादि जाननीः

वायु(काय)—दशो दिशना वायु १० उत्किलका ११ मंडिल वायु १२ गुंजा १३ झखड १४ झंझा १५ संवर्तक वायु १६ घनवात १७ तनुवात १८ ग्रुद्ध वायु १९ इत्यादि 'ज्ञेयम्.‡

वनस्पति प्रत्येक—अंभ्र आदि वृक्ष १ वेंगण आदि गुच्छा २ गुरम-वनमिल्लका आदि ३ लता—चंपक आदि ४ विली—कोहल आदि ५ पर्व-इक्षु आदि ६ तृण-दर्भ आदि ७ वलया—केतकी आदि ८ हरि(त)—तंदुली प्रभृति ९ ओषि सर्व जातनां धान्य १० कमलादि ११ क्कृहण-भूमिस्कोट आदि १२.॥

अनंतकाय लिख्यते—हलदी १ आर्द्रक २ मूली ३ गाजर ४ आलू ५ पिंडालू ६ छेदे पछे (बाद) वधे ७ नवा अंक्र्रा ८ कृष्ण कंद ९ वज्र कंद १० स्ररण कंद ११ खेलूडा १२ इत्यादि. पैनवणापदात् क्षेयं लक्षणम्.\$

^{* &}quot;बाद्रआउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उस्सा १ हिमप २ महिया ३ करए ४ हर-तणुप ५ सुद्धोद्प ६ सीतोद्प ७ उसिणोद्प ८ खारोद्प ९ खट्टोद्प १० अंबिलोद्प ११ लवणोद्प १२ वारुणोद्प १३ खीरोद्प १४ घओद्प १५ खोतोद्प १६ रसोद्प १७"। (प्रज्ञा० स्०१६)

^{। &}quot;बादरतेऊकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—इंगाले १ जाला २ मुंमुरे ३ अची ४ अलाए ५ सुद्धागणी ६ उका ७ विज्ञू ८ असणी ९ णिग्घाए १० संघरिससमुद्धिए ११ सूरकंतमणिणिस्सिए १२"। (प्रज्ञा० सू०१७)

^{‡ &}quot;बाद्रवाउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—पाइणवाप १ पडीणवाप २ दाहिणवाप ३ उदीणवाप ४ उहुवाप ५ अहोवाप ६ तिरियवाप ७ विदिसीवाप ८ वाउन्भामे ९ वाउकलिया १० वायमंडलिया ११ उक्कलियावाप १२ मंडलियावाप १३ गुंजावाप १४ झंझावाप १५ संवट्टवाप १६ घणवाप १७ तणुवाप १८ सुद्धवाप १९"। (प्रज्ञा० सू० १८)

^{॥ &}quot;पत्तेयसरीरबाद्रवणस्सद्दकाद्दया दुवालसविद्दा पश्चता, तंज्ञहा— रुक्खा १ गुच्छा २ गुन्मा ३ लता ४ य वल्ली ५ य पव्चगा ६ चेव । तण-वलय-हरिय-ओसहि-जलरुह-कुहणा ७-१२ य वोद्धव्या ॥ १॥" (प्रज्ञा० सू० २२)

^{\$ &}quot;साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया अणेगविहा पन्नत्ता तंजहा—अवष १ पणष २ सेवाले ३ लोहिणी ४ मिहुत्थु ५ हुत्थिभागा ६ (य) । अस्सकन्नि ७ सीहकन्नी ८ सिउंढि ९ तत्तो मुसुंढी १० य ॥ १ ॥ रुरु ११ कुंडरिया १२ जीरु १३ छीर १४ विराली १५ तहेव किट्टीया १६ । हालिहा

१ हिम । २ धूमस । ३ करा । ४ पृथ्वीने मेदीने तृणना अप्र भाग उपर रहेनारू पाणी । ५ जेम । ६ तणसा । ७ उंबाडियुं । ८ जाणबुं । ९ आंबो । १० **पञ्चवणा**ना पदशी लक्षण जाणबुं ।

बेइंद्री—पूरा १ (पायु)कृम(मि) २ कुक्षिकृम ३ गंडोला ४ गोरोमा ५ निकुरिषा ६ मंगल ७ वंसीम्रख ८ सचिम्रख ९ गोजलोक १० जो(जलो)क ११ संख १२ लघु संख १३ कौडी १४ घोषे १५ सीप १६ गजाइ १७ चंदणग १८ मातृवाहा १९ समुद्रलीख २० संबुक्त-संखिवशेष २१ नंदियावर्त २२ इत्यादि जान लेना.*

तेइंद्री—उपविता १ रोहणी २ कुंथुया ३ कीडी ४ उद्दंस माकड ५ दंसक ६ उद्देही ७ फलवेंटी ८ बीजवेंटी ९ जूंका १० लीख ११ कानसिलाइ १२ कानखजूरा १२ 'पिसं १३ इंद्रगोप १४ हस्तीसोंडा १५ सुरसली १६ तूंरतुवक १७ चीचड.

चतुरिंद्री—अंधक १ पोतिक कोच्छेलीया २ माखी ३ डांस ४ उडणा(उडणेवाले) कीडा ५ पतंग ६ ढंकुण ७ कुकुड ८ कुहण ९ नंदावर्त १० संगरडा ११ कृष्ण पांखना १२ एवं पांच वर्णनी पांखना १६ भमरा १७ भमरी १८ टीड १९ विछ २० जलविछ २१ गोवर माहिला कीडा २२ अक्षिवेद आंख मे पडे २३ इत्यादि.

१७ सिंगबेरे १८ य आत् लुगा १९ भूलए २० इय ॥ २॥ कंबूयं २१ क बुकड २२ सुमत्तओ २३ वलइ २४ तहेव महुसिंगी २५। नी कह २६ सप्पसुयंघा २७ छिन्नकहा २८ चेव वीयकहा २९॥ ३॥ पाढा ३० मियवालुंकी ३१ महुररसा ३२ चेव रायवत्ती ३३ य। पडमा ३४ माढि १३५ दंतीति ३६ चंडी ३७ किट्टी ३८ ति यावरा ३९॥ ४॥ मासपण्णी ४० मुग्गपण्णी ४१ जीवियरसहे ४२ य रेणुया ४३ चेव। काओली ४४ खीरकाओली ४५ तहा भंगी ४६ नही ४७ इय॥ ५॥ कि मिरासि ४८ मह ४९ मुच्छा ५० णंगलई ५१ पेलुगा ५२ इय। किण्हे ५३ पडले ५४ य हुढे ५५ हरतणुया ५६ चेव लोयाणी ५७। कण्हे कंदे ५८ वज्रे ५९ सूरणकंदे ६० तहेव खलूरे ६१। एए अणंतजीवा जे यावन्ने तहाविहा॥ ६॥" (प्रज्ञा० सू० २४)

साधारणनुं लक्षण---

"चक्कागं भज्जमाणस्स, गंठी चुन्नघणो भवे । पुढविसरिसेण भेएण, अणंतजीवं वियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिराग् पत्तं सच्छीरं जं च होइ निच्छीरं । जं पि य पणडुसंधि अणंतजीवं वियाणाहि ॥२॥" (सू० २५)

ं "बेइंदिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा — पुलाकिमिया १ कुच्छिकिमिया २ गंडूयलगा ३ गोलोमा ४ णेडरा ५ सोमंगलगा ६ वंसीमुहा ७ सूइमुहा ८ गोजलोया ९ जलोया १० जालाडया ११ संखा १२ संखणगा १३ घुल्ला १४ खुल्ला १५ गुलया १६ खंघा १७ वराडा १८ सोत्तिया १९ मुत्तिया २० कलुयावासा २१ एगओवत्ता २२ दुहओवत्ता २३ नंदियावत्ता २४ संबुक्का २५ माइवाहा २६ सिप्पिसंपुडा २७ चंदणा २८ समुद्दलिक्खा २९"। (प्रज्ञा० सू० २७)

ं "ते इंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्तां, तंजहा—ओवश्या १ रोहिणिया २ कुंथू ३ पिपीलिया ४ उद्दसगा ५ उद्देहिया ६ उक्कलिया ७ उप्पाया ८ उप्पडा ९ तणहारा १० कट्टहारा ११ मालुया १२ पत्ताहारा १३ तणवेंटिया १४ पत्तवेंटिया १५ पुष्कवेंटिया १६ फल्डेंटिया १० वीयवेंटिया १८ तेबुरणिंमिजिया १९ तओसिंमिजिया २० कप्पासिंहिमिजिया २१ हिल्लिया २२ झिल्लिया २६ झिलिया २६ सिलिया २६ सिलिया २६ सिलिया २६ सिलिया २६ सिलिया २६ सिलिया ३६ दंदगोवया ३२ तुरुतुंबगा ३३ कुच्छलवाहगा ३४ जूया ३५ हालाहला ३६ पिसुया ३७ स्यवाह्या ३८ गोम्ही ३९ हिल्थसोंडा ४०"। (प्रज्ञा० सू० २८)

🕽 "चर्डारेंदियसंसारसमापन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अंधिय १ पत्तिय

१ चांचड । २ धान्यमां उत्पन्न थतां लाल रंगनां जीवडां।

पंचेंद्री तिर्यंच--जलचर-मत्स्य आदि १ स्थलचर-गो आदि २ सेचर-हंस आदि ३ उरपर-सर्प आदि ४ भ्रजपर-गोह नकुल भिलेरी किरली आदि ५ इति अलम्.

मनुष्य - कर्मभूमिज १५ अकर्मभूमिज ३० अंतरद्वीपज ५६ (१०१) संमूर्च्छिम.*

भवनपति — असुरकुमार १ नागकुमार २ सुवर्णकुमार ३ विद्युत्कुमार ४ अधि-कुमार ५ द्वीपकुमार ६ उद्धिकुमार ७ दिक्कुमार ८ वायुकुमार ९ स्तनितकुमार १०. पंदरे परमाधार्मिक असुरकुमारमेदः

च्यंतर-पिशाच १ भूत २ यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५ किंगुरुष ६ महोरग ७ गंधर्व ८.

जोतिषी—चंद्र, सूर्य, ग्रह ८८, नक्षत्र २८, तारे एवं पांच भेद जोतिषी.

२ मिन्छिय ३ मसगा ४ कीडे ५ तहा पयंगे ६ य । ढंकुण ७ कुक्कड ८ कुक्कह ९ नंदावत्ते १० य सिंगिरडे ११ ॥ १ ॥ किण्हपत्ता १२ नीलपत्ता १३ लोहियपत्ता १४ हालिइपत्ता १५ सुक्किल्लपत्ता १६ चित्तपक्खा १७ विचित्तपक्खा १८ ओहंजलिया १९ जलचारिया २० गंभीरा २१ णीणिया २२ तंतवा २३ अन्छिरोडा २४ अन्छिवेहा २५ सारंगा २६ नेउरा २७ दोला २८ भमरा २९ भरिली ३० जरुला ३१ तोहा ३२ विंछुया ३३ पत्तविच्छुया ३४ छाणविच्छुया ३५ जलविच्छुया ३६ पियंग्गला ३० कणगा ३८ गोमयकीडा ३९"। (प्रज्ञा० सू० २९)

* "मणुस्सा दुविहा प० तं०—संमुि छममणुस्साय गव्भवकंतियमणुस्सा य ।..... गव्भवकंतियमणुस्सा तिविहा प० तं०—कम्मभूमगा १ अकम्मभूमगा २ अन्तरदीवगा ३ ।..... अंतरदीवगा अद्वावीसविहा प० तं०—एगोरुया १ आहासिया २ वेसाणिया ३ णंगोला ४ हयकन्ना ५ गयकन्ना ६ गोकन्ना ७ सकुलिकन्ना ८ आयंसमुहा ९ में हमुहा १० अयोमुहा ११ गोमुहा १२ आसमुहा १३ हित्यमुहा १४ सीहमुहा १५ वग्धमुहा १६ आसकन्ना १७ हितकन्ना १८ अकन्ना १९ कण्णपाउरणा २० उक्कामुहा २१ मिहमुहा २२ विज्ञुमुहा २३ विज्ञुदंता २४ घणदंता २५ लहुदंता २६ गूढदंता २७ सुद्धदंता । सेन्तं अंतरदीवगा । (याहशा एव यावत्यमाणा यावद्पान्तराला यन्नामानो हिमवत्पवैतप्वीपरिदेग्व्यविश्वता अप्राविश्वतिविधा अन्तरद्वीपास्ताहशा एव तावत्यमाणा तावद्पान्तरालास्त्रामान एव शिखरिपवैतपूर्वापरिदेग्व्यवस्थिता अपि, ततोऽत्यन्तसहशतया व्यक्तिमेदमनपेक्ष्य अन्तरद्वीपा अष्टाविश्वतिविधा एव विवक्षिताः).....अकम्मभूमिगा तीसविहा प० तं०—पंचिहं हेमवएहिं, पंचिहं हिरण्णवएहिं, पंचिहं हिर्यासेहिं, पंचिहं रम्मगवासेहिं, पंचिहं देवकुरूहिं, पंचिहं उत्तरकुरूहिं।.....कम्भभूमगा पन्नरसविहा प० तं०—पंचिहं भरहेहिं, पंचिहं एरवएहिं, पंचिहं महाविदेहिं"। (प्रज्ञा० सू० ३७)

९ खिस्कोली । २ गिलोडी । ३ एटले पर्याप्त । ४ समचायांगना १५ मा स्थानकमां एनां नामो नीचे मुजब आपेलां छे:—

[&]quot;अंबे १ अंबरिसी २ चेंब, सामे ३ सबले ४ ति आवरे। रुद्दोवरुद्दकाले ५-७ अ, महाकाले ८ ति आवरे॥ १॥ असिपत्ते ९ धणु १० कुंमे ११, वालुए १२ वेअरणीति १३ अ। खरस्सरे १४ महाघोसे १५, पते पन्नरसाहिआ॥ २॥"

वैमानिक—सुधर्म १ ईशान २ सनत्कुमार ३ महेन्द्र ४ ब्रह्म ५ लांतिक ६ महाशुक्र ७ सहस्रार ८ आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२, नव प्रैवेयक ९, पांच अनुत्तर—विजय १ विजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५ एवं सर्व २६.* इत्यादि जीवभेद जान लेना.

(संख्याद्वार)

पूर्वोत्पन्नसंख्या—मनुष्य वर्जी २३ वंडकमे असंख्याते, वनस्पतिमे अनंते, मनुष्यमै संख्याते वा असंख्याते इति संख्याद्वारम्.

* "देवा चडिवहा पन्नत्ता, तंजहा—भवणवासी १ वाणमंतरा २ जोइसिआ ३ वेमाणिआ ४।…
भवणवासी दसविहा प० तं०—असुरकुमारा १ नाग० २ सुवन्न० ३ विज्जु० ४ अग्गि० ५ दीव० ६ उद्दि० ७ दिसा० ८ वाउ० ९ थणिय० १०।…...वाणमंतरा अट्टविहा प० तं०—िक न्नरा १ किंपुरिसा २ महोरगा ३ गंधव्वा ४ जक्षा ५ रक्षसा ६ भूया ७ पिसाचा ८।...जोइसिया पंचिवहा प० तं०—वंदा १ स्रा २ गहा ३ नक्षता ४ तारा ५।...वेमाणिआ दुविहा प० तं०—कण्पोवगा १ य कण्पाईया य।...कण्पोवगा वारसविहा प० तं०—सोहम्मा १ ईसाणा २ सणंकुमारा ३ माहिंदा ४ बंभलोया ५ छंतया ६ महासुका ७ सहस्तारा ८ आणया ९ पाणया १० आरणा ११ अज्जया १२।... कण्पाईया दुविहा प० तं०—गेविज्जगा य अणुत्तरोववाइया य ।...गेविज्जगा नवविहा प० तं०—हिंदुमिहिट्टिमगेविज्जगा १ हिंदुममिन्झम० २ हिंदुमउविरम० ३ मिन्झमहेद्विम० ४ मिन्झममिन्झम० ५ मिन्झमउविरम० ६ उविरमहेद्विम० ७ उविरममिन्झम० ८ उविरमउविरम० ९।...अणुत्तरोववाइया पंचिवहा प० तं०—विजया १ वेजयंता २ जयंता ३ अपराजिता ४ सब्वट्टसिद्धा ५"। (प्रज्ञा०स्र०३८)

9 ते ते जातिना समुदायनुं प्रहण करवा माटे (तजातीयसमृहप्रतिपादकलार्थ) 'दंडक' शब्द योजायो छे. जेने विषे जीव पोते करेलां कर्मोंनो दंड पामे ते 'दंडक' कहेवाय छे. आ संबंधमां एवो पण खुलासो नजरे पडे छे के एकार्थंक सरखो पाठ जेमां आवतो होय ते 'दंडक' कहेवाय छे. जेमके उख, नख, णख, वख, मख वगेरे धातुओ गतिवाचक होवाथी ते 'दंडक' धातुओ कहेवाय छे. कुले दंडको चोवीस छे. तेनां नामो माटे श्रीमगवतीसूत्र (स्॰ ८)नी व्याख्या करतां श्रीअमयदेवसूरि नीचे मुजबनी गाथानुं टांचण करे छे:—

"नेरइया १ असुराई १० पुढवाई ५ वेंदियादओ ३ चेव । ंपंचिंदियतिरिय १ नरा १ वंतर १ जोइसिय १ वेमाणी १॥"

मोटे भागे 'नेरइया' शब्द द्वारा साते नरकने लगता सरखा पाठो-आलापको-सूचवाया छे, माटै ते एक दंडक जाणवो. 'अधुरकुमारा जाव थणियकुमारा' इत्यादि शब्दो वडे जुदा जुदा आलावाओ सूचवायेला होवाथी एना दश दंडको गणाय छे. एवी रीते एकेन्द्रियना अधिकारमां प्रायः 'पुढविकाइया' इत्यादि शब्द वडे पृथक् पृथक् आलावाओ सूचवाया छे, तेथी एना पांच दंडको गणाय छे.

नरकना सात, व्यंतरना आठ, ज्योतिष्कना पांच अने वैमानिकना २६ मेद होवा छतां ए प्रत्येकना एके ज दंडक गणाय छे, ज्यारे भुवनपतिना दश दंडको गणाय छे तेनो शो हेतु छे ! आनो उत्तर एम सूचवाय छे के अधुरकुमार अने नागकुमार वच्चे नरकना प्रस्तर (पाथडा)नुं तेमज नारकी जीवोनुं अंतर छे, एवी रीते नागकुमार अने विद्युत्कुमार वच्चे, एम भुवनपतिना अन्य मेदो आश्री छे. आवुं अंतर नारक, व्यंतर वगेरेना संबंधमा नथी तेथी, ते प्रत्येकनो एकेक दंडक गणाय छे, जोके रक्षप्रभा अने शर्कराप्रभा वच्चे तेना आधारभूत घनोदिध, घनवात, ततुवात अने आकाशनुं आंतरूं छे.

(१) अथ पूर्वोत्पन्नसंख्या लिख्यते श्रीपन्नवणा शरीरपद १२ मे वा अनुयोगद्वारे (स्०१४२) तथा ^१पंचसंग्रहे च कथितम्

	गा सराराच ११ म मा अधुवानक्षार र दर्	1.12 " 1.1/186 1 11/11/4
प्रथम गरके के जिववत मन में भूछ	प्रतरके असंख्यातमे भागमे जितने आकाशप्रदेश आवें ती(इ)तने जीव प्रथम रलप्रभा नरकमे हैं. प्रतरका खरूप अने (और) श्रेणिका खरूप कथ्यते-सात रजु छंबी अने सात रजु चौडी अने एक प्रदेशकी मोटी इसकूं तो घनीकृत छोककी एक प्रतर कहीये अने सात रजु प्रमाण चौडी अने एक प्रदेश प्रमाण मोटी इसकूं घनीकृत छोककी एक श्रेणि कहीये। जिहां कही समुच्चये प्रतर अने श्रेणिका मापा है तिहा (चहां) ऐसी प्रतर अने श्रेणि जाननी. इस्य हं विस्तरेण.	श्रेण अंगुल प्रमाण चौडी अने सात रज्ञ प्रमाण लंबी. तिस श्रेणीमे असत् कल्पना करके श्रेणि २५६ कल्पीये. तिसका प्रथम वर्गमूल काढीये तो १६ होइ(वे). दूजा (सरा) वर्गमूल काढीये तो ४ निकले हैं तिस दूजे वर्गमूलकूं पहिले वर्गमूलसं गुण्या ६४ होइ. तिण चौसठ ६४ श्रेणि प्रमाण तो चौडी अने सात रज्ज लंबी असी सूची नीपजे. तिस सूचीमे जितने आकाशप्रदेश हे तितने पहिली नरकमे छ नरकके नारकी कम करके इतने नारकी जान लेने.
दू जी न र क	श्रेणिके असंख्यातमे भागमे जितने आकाराप्रदेश आवे तितने दूजी नरकमें नारकी जान लेने.	श्रेणिके प्रदेशांका वर्गमूल काढत जब वारमा वर्गमूल आवे तिस बार १२ मे वर्गमूलका भाग पूर्वोक्त श्रेणिके प्रदे शांकू दीजे जो हाथ आवे तितने नारकी दूजी नरकमे जानने. एवं सर्वत्र क्षेयम्.
तीसरी नरक	श्रेणि के असंख्यातमे भाग.	श्रेणिका १० मा वर्गमूल भाग हाथ लगे.
ौथी नरक	"	श्रेणि ८ ख(मा १)मूल भाग हाथ लगे.
पांचवी नरक	99	श्रेणि ६ छटो वर्गमूलका भाग "
छट्टी नरक	33	श्रेणि ३ तीजो वर्गमूलका भाग "
सातवी नरक	99	श्रेणि २ दूजे वर्गमूलका भाग "
बादरपर्याप्त तेजस्काय	•	^प िंकिचिन्यून घनावितिके समय प्रमाणे.
प्रत्येक निगोद पृथ्वीकाय अप्काय	पर्याप्ते लोकके असंख्यातमे भाग.	होकके असंख्यातमे भाग.

१ पंचसंप्रहमां पण कह्युं छे। २ कहेवाय छे। ३ विस्तारथी। ४ सर्व स्थळोगां। ५ कंइक ओछा।

बादर अप- यांत्र पृथ्वी अप् तेज वायु प्रत्येक निगोद स्- क्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी अप् तेजो वायु निगोद	्रेअसंख्याते छोकके प्रदेशप्रमाण .	असंख्याते लोकके प्रदेशप्रमाण.
बे	प्रतरके असंख्यातमे भागमे कोडा कोड	एक प्रतर अंगुल के असंख्यातमे भागमें
* i so	असंख्यात जोजन प्रमाण तो चौडी अने	एक वेंद्री आदिक स्थापीये. इम स्थापना करता घनीकृत लोकनी एक प्रतर संपूर्ण
द्री	सात रजु प्रमाण छंबी ऐसी एक श्रेणी छीजे. तेहने प्रदेशोकी असत् कल्पना	भरायें इतने बेंद्री, तेंद्री, चारेंद्री है; अथवा
ते	६५५३६ की करीये तिसके वर्गमूल	आविलकाके असंख्यातमे भागमें जितने समय आवें तितने कालमें एकेक वेंद्री,
Ė	काढीयें. प्रथम वर्गमूल २५६ का, दृजा १६, तीजा ४, चौथा २. ए कल्पना करके	तेंद्री, चौरेंद्री अपहरीये तो असंख्याती
द्री	चार वर्गमूल है. पिण (किन्तु) परमार्थ	अवसर्पिणी उत्सर्पिणीमें संपूर्ण एक
चौ	थकी (से) असंख्याते वर्गमूल नीकले. ते सर्व वर्गमूल एकटा कर्या. अत्र तो २७८	प्रतरके बेंद्री अपहरे जावे. एवं तेंद्री, चौरिंद्री पिण जान लेने. एह समास अने
रिं	हूइ पिण परमार्थथी असंख्याते वर्गमूल	पिछना 'अनुयोगद्वार'ना समास एक ही
द्री	प्रमाण तो चौडी श्रेणीया अने सात रजु लंबीया. पहवी बेंद्रीयानी सूची	जानना. केवल प्रकारांतर ही है. परं परमार्थथी एक ही समजना. इत्यलं
नी	निपजे. तिस सूचीमे जितने आकाश-	विस्तरेण.
सं	प्रदेश है तितने वेंद्री जीव जान लेने. इति अनुयोगद्वारात् क्षेयं तथा पन्नवणा	
ख्या	पद बारमेथी है.	
सं		एक प्रदेशी श्रेणी सात रजु प्रमाण लंबी तिसमे सु अंगुल प्रमाण प्रदेश लंबे लीजे;
मू		तिसमे असत् कल्पना करे के २५६ प्रदेश;
ર્વિજી		तिसका प्रथम वर्गमूल १६, दूजा वर्गमूल ४ का, तीजा २ का. तिस तीजे कूं पहिले
म	श्रेणिके असंख्यातमे भाग.	वर्गमूळस् गुण्या ३२ होइ. परमार्थ तो असंख्यात का जानना. तिस ३२ प्रदेशके
म		खंडकूं एक संमूर्व्छिम मनुष्यके शरीर
चु		करके अपहरीये जो एक मनुष्य और हूइ
ष्य		तो सात रजु लंबी श्रेणिके प्रदेश अपहरे जाये. ते तो नहीं है.
गर्भज मनुष्य	पांचमे वर्गके घन प्रमाण.	

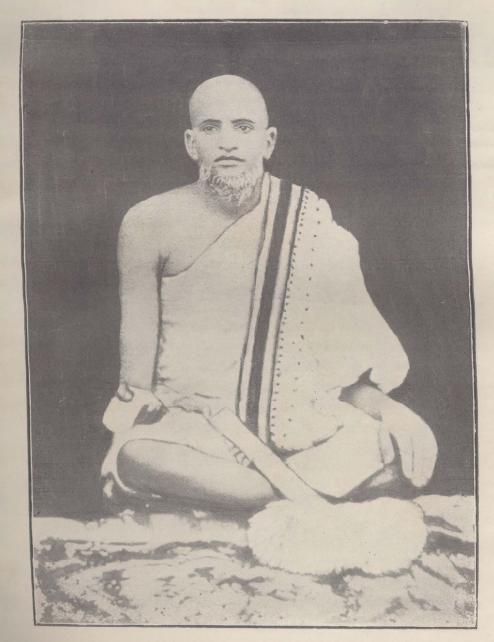
१ आ प्रमाणे अनुयोगद्वारथी जाणवुं।

ह्रा वर्ग प्रतरके असंख्यातमे भाग स्वेद्दा प्रमाण खंड स्वेत ते तरी अपहरता संपूर्ण प्रतर अ ह्रां संख्याते जोजन प्रमाण खंड स्वेत तरी अपहरता संपूर्ण प्रतर अ ह्रां संख्याते जोजन प्रमाण खंड स्वेत करी अपहरता संपूर्ण प्रतर अ ह्रां संख्याते जोजन प्रमाण खंड स्वेत करि जे प्रदर्श प्रतर अपहराय ध्वानक सर्वेत्र है. सौ " व्याप्त अपहराय ध्वानक सर्वेत्र है. सौ " अंगुल प्रमाण चोडी सात रजु अंग्रल प्रमाण चोडी, सात वर्गमूलक कर्ण प्रमाण चोडी, सात वर्गमूलक हु जे वर्गमूल सुण्या ८ परमार्थथी तो असंख्याती है. इम क सह (प) ८ श्रेणि प्रमाण चोडी, सात लंबी सूची नीपजे. तिस सूचीमें अकाशप्रदेश है तितने सीधमें देवलोक के देवता है वर्तमान क इस्तलम्. हिस अणिक प्रदेशोंक ग्यारमा वर्गमूल काडीनें ही श्रेणिक प्रदेशोंक ग्यारमा वर्गमूल काडीनें ही श्रेणिक प्रदेशोंक ग्यारमा वर्गमूल होवे ति का माग. हिस अणिका प्याप्त वर्गमूल होवे ति का माग. हिस अणिका प्रमाम चर्गमूल होवे ति का माग. हिस अणिक प्रमाण उपरवत्. श्रेणि ५ स्वमूल. भाग उपरवत्. श्रेणि ५ स्वमूल. भाग उपरवत् दे हिस प्रमान कात्रिश्च असंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके असंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके असंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके प्रहत्तर असंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके व्रहत्तर असंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके प्रसंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके प्रयोपमके व्रहत्तर असंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके प्रयोपमके प्रसंख्यातमे भाग ग्याय प्रयोपमके प्रयोपमक्या स्वयोपमक्य प्रयोपमके प्रयोपमके प्रवत्य स्वयोपमक्य स्वयोपमक्य स्वयोपमक्य स्वयोपमक्य स्वयोपमक्य स्वय	E	आ। नम्मानपुर्द्वार	द्वारा
संख्याते योजन प्रमाण खंड स्ति ते ते अपहरता संपूर्ण प्रतर अ हृद्दां संख्याते जोजन प्रमाण खंड स्ति ते अपहरता संपूर्ण प्रतर अ हृद्दां संख्याते जोजन प्रमाण खंड स्ति ते अपहराय स्ति कर के जपहराय प्रतर अपहराय प्रतर अपहराय प्रतर अपहराय प्रति कर के जपहराय प्रतर अपहराय प्रतर अपहराय प्रति कर के अपहराय प्रतर अपहराय प्रति कर के अपहराय प्रतर अपहराय प्रति कर के अपहराय प्रति के स्ति के स्ति अपी तिसकी असत् करपा श्रेणी, तिसका प्रथम वर्गमूळ १० दृजा वर्गमूळ १० दृजा वर्गमूळ १० दृजा वर्गमूळ १० दृजा वर्गमूळ १० प्रामार्थथी तो असंख्याती है. इम क सक्त (प) ८ श्रेणी प्रमाण चर्गमूळ स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति स्ति	भवनपति	प्रतरके असंख्यातमे भाग नैभःप्रदेश तुल्य जानने	अंगुल प्रमाण श्रेणीके प्रथम वर्गमूल के असंख्यातमे भाग प्रदेश प्रमाण.
त प्रतरके असंख्यातमे भाग. हां संख्याते जोजन प्रमाण खंड चर सह संख्याते कर जोतियी करके अपहर्णा प्रतर अपहराय. घनीकृत सर्वत्र है. सौ "अंगुल प्रमाण चौडी सात रहा छंबी श्रेणी तिसकी असन करणना श्रेणी, तिसका प्रथम वर्गमूल १४ हूजा वर्गमूल १४ का, तीजा २ का चर्गमूलकुं हुजे वर्गमूलस् गुण्या ८ परमार्थथी तो असंख्याती है. इम क सक (प) ८ श्रेणी प्रमाण चौडी, सात लंबी सूची नीपजे. तिस सूचीमे । आकाशप्रदेश है तितने सौधर्म । देवलेकके देवता है वर्तमान क हरललम्. स्वनत्कुमार महेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. हासदेव "श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. श्रेणिक प्रदेशांकु ग्यारमे वर्गम् भाग दीये जो हाथ लंगे तितने देव एवं जितर(ना)मा वर्गमूल होवे ति का भाग. हासदेव "श्रेणीक असंख्यातमे भाग है. श्रेणिक प्रमूल. भाग उपरवत्. सहस्रार "श्रेणी ५ स्वमूल. भाग उपरवत् देवि अपनिक असंख्यातमे भाग रामयः श्रेणी ५ स्वमूल. भाग उपरवत् देवि अपनिक असंख्यातमे भाग रामयः श्रेणी ५ स्वमूल. भाग उपरवत् देवि अपनिक असंख्यातमे भाग रामयः श्रेषी ६ स्वमूल. भाग उपरवत् देवि अपनिक असंख्यातमे भाग रामयः श्रेषी ६ स्वमूल. भाग उपरवत् देवि अपनिक असंख्यातमे भाग रामयः श्रेषी ६ स्वमूल. भाग उपरवत् देवि अपनिक असंख्यातमे भाग रामयः श्रेषी ६ स्वमूल संख्यातमे भाग रामयः स्वयातमे भाग रामयः श्रेषी ६ स्वमूल संख्यातमे भाग रामयः स्वयातमे भाग रामयः स्वयातमे भाग रामयः स्वयातमे भाग रामयः संख्यातमे संख्यातमे भाग रामयः संख्यातमे संख्य			संख्याते योजन प्रमाण खंड एकेक
हां संख्याते जोजन प्रमाण खंड चा जिति १५६ अंगुळ का खंड चारस. ि खंड एकें के जोतिणी करके अपहरीय प्रतर अपहरीय घनीकृत सर्वेत्र हैं. सौ " अंगुळ प्रमाण चोडी सात रजु शें अणी तिसकी असत् कल्पता धें भीं तिसकी प्रथम वर्णमूळ १० हूजा वर्णमूळ प्र का तीजा र का वर्णमूळ हें दूजा वर्णमूळ स्व गुण्या ८ परमार्थथी तो असंख्याती है. इम क सक्त(प) ८ श्रेणि प्रमाण चोडी, सात छंवी सूची नीपजे. तिस स्वीमें शिक्षा करें सूची नीपजे. तिस स्वीमें शिक्षा करें हैं तितने सौधर्म हें चळोकके देवता हैं वर्णमान क इस्तळम् । श्रेणिका असंख्यातमें भाग हैं. श्रीणिका प्रारमा वर्णमूळ हों वे ति का भाग.	त	प्रतरके असंख्यातमे भागः	व्यंतरे करी अपहरता संपूर्ण प्रतर अपहरे.
सौ "अंगुळ प्रमाण चोडी सात रजु : छंवी श्रेणी तिसकी असत् कल्पना श्रेणी, तिसका प्रथम वर्णमूळ १० टूजा वर्णमूळ ४ का, तीजा २ का. वर्णमूळकुं टूजे वर्णमूळस् गुण्या ८ प्रमार्थणी तो असंख्याती है. इम क सक (प) ८ श्रेणि प्रमाण चोडी, सात छंवी सूची नेपजे. तिस सूचीमें आकाशप्रदेश है तितने सौधर्म : देवळोकके देवता है वर्तमान क ह्रायळम्. अणीके असंख्यातमे भाग है. श्रीणिका ग्यारमा वर्णमूळ काढी ते ही श्रीणिक प्रदेशांकू ग्यारमे वर्णम् तितने देव एवं जितर (ना)मा वर्णमूळ होवे ति का भाग. महाद्य	₹		इहां संख्याते जोजन प्रमाण खंड चतुरस्र
सौ "अंगुळ प्रमाण चोडी सात रजु : छंवी श्रेणी तिसकी असत् कल्पना श्रेणी, तिसका प्रथम वर्णमूळ १० टूजा वर्णमूळ ४ का, तीजा २ का. वर्णमूळकू टूजे वर्णमूळस् गुण्या ८ प्रमार्थणी तो असंख्याती है. इम क सक् (ए) ८ श्रेणि प्रमाण चोडी, सात छंवी सूची नेपजे. तिस सूचीमें आकाशप्रदेश है तितने सौधर्म : देवळोकके देवता है वर्तमान क हरळम्. सनत्कुमार महेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. ह्म सहेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. ह्म सहेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. हम से श्रेणीके प्रदेशांकू ग्यारमें वर्णम नितने देव एवं जितर(ना)मा वर्णमूळ होवे ति का भाग. हम से श्रेणीक १ स्म मूळ. श्रेणीके प्रदेशों छंतिका २ सा मूळ. श्रेणीके प्रदेशों छंतिका भाग उपरवत्. हम सहाशुक्र श्रेणी ९ स्म मूळ. भाग उपरवत्. सहस्रार श्रेणी ९ स्म मूळ. भाग उपरवत् दे हिंशी अपि १ स्म मूळ. भाग उपरवत् से हिंशी अपि १ स्म मूळ. भाग उपरवत् दे हिंशी अपि १ स्म मूळ. भाग उपरवत् से हिंशी से १ स्म मूळ. भाग उपरवत् से हिंशी से १ स्म मूळ. भाग दे से हिंशी से १ से	ति	>5	२५६ अंगुल का खंड चउरस तितना खंड एकेक जोतिषी करके अपहर्या संपूर्ण प्रतर अपहराय. घनीकृत सर्वत्र है.
भ्रेणी, तिसका प्रथम वर्गमूल १९ ह्जा वर्गमूल ४ का, तीजा २ का. वर्गमूलकुं हुजे वर्गमूलस् गुण्या ८ एरमार्थथी तो असंख्याती है. इम क सक्(प) ८ श्रेणि प्रमाण चौडी, सात लंबी सूची नीपजे. तिस सूचीमें शिक्षा प्राप्त के देवता है वर्तमान क हस्तलम्. स्वन्कुमार महेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. ह्मा हैन्द्र २ श्रेणीक असंख्यातमे भाग है. हमा हैन्द्र २ श्रेणीक असंख्यातमे भाग हमा वर्गमूल होवे ति का भाग. हमा हमा हमा हमा हमा हमा उपरवत्. हमा हमा हमा हमा उपरवत्. हमा हमा हमा हमा हमा हमा हमा उपरवत्. हमा		"	अंगुल प्रमाण चौडी सात रजु प्रमाण
चर्गमूलकूं हुजे वर्गमूलस् गुण्या दे परमार्थथी तो असंख्याती है. इम क स्वरू(प) ८ श्रेण प्रमाण चौडी, सात तंवी सूची नीपजे. तिस सूचीमें शि आकाशप्रदेश हैं तितने सौधमें हेवलोकके देवता हैं वर्तमान क इस्तलम्. सनत्कुमार महेन्द्र २ अणीके असंख्यातमें भाग हैं. हा श्रेणिका ग्यारमा वर्गमूल काढीनें ही श्रेणिके प्रदेशांकू ग्यारमे वर्गम भाग दीये जो हाथ लगे तितने देव एवं जितर(ना)मा वर्गमूल होवे ति का भाग. हा हादेव "श्रेणिका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशों का भाग उपरवत्. हा हातुक "श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत्. सहस्रार "श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत् दे लि आनतादि श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत् दे लि स्वयं प्रमुल स्वयं तमे भाग रामयः	ध		श्रेणी, तिसका प्रथम वर्गमूल १६ का,
परमार्थथी तो असंख्याती है. इम क सक्त(प) ८ श्रेणि प्रमाण चौडी, सात तंदी सूची नीपजे. तिस सूचीमें शा स्नत्कुमार महेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमें भाग है. ह्मादेव हमादेव हमादेव	र्म		दूजा वर्गमूल ४ का, तीजा २ का. तीजे
लंबी सूची नीपजे. तिस सूचीमें शिक्षा आकाशप्रदेश है तितने सौधर्म देवलोकके देवता है वर्तमान कर हरालम्. सनत्कुमार महेन्द्र २ अणीके असंख्यातमे भाग है. शिक्षा श्यारमा वर्गमूल काढीने ही श्रेणिक प्रदेशांकू ग्यारमे वर्गम् भाग दीये जो हाथ लगे तितने देव एवं जितर(ना)मा वर्गमूल होवे ति का भाग. प्रह्मदेव "श्रेणिका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशों लागा. प्रह्मदेव "श्रेणिका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशों लागा. श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत्. सहश्चार "श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि आनतादि श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि आनतादि श्रेणि ९ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि स्वाम्ल श्रेणि ९ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि आनतादि श्रेणि ९ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि स्वाम्ल श्रेणे १ स्वम्ल १ स्वम्ल १ स्वम्ल १ स्वल श्रेणे १ स्वम्ल १ स्वल श्	· in		परमार्थथी तो असंख्याती है. इम कल्पना-
स्वत्कुमार महेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. श्रेणीका श्यारमा वर्गमूल काढीने ही श्रेणिके प्रदेशांकू ग्यारमे वर्गम् भाग दीये जो हाथ लगे तितने देव एवं जितर(ना)मा वर्गमूल होवे ति का भाग. श्रिष्ठीका ९ मा मूल. श्रेणिक प्रदेशों लेका भाग वर्गमूल होवे ति का भाग. श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत्. महाशुक्र ॥ श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत्. सहस्रार ॥ श्रेणि ७ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि स्वातादि । सामातादि ॥ पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामयः स्रोवेयक ९ ॥ पल्योपमके बृहत्तर असंख्यातमे भाग रामयः	शा		सिक्ष(प) ८ श्रेणि प्रमाण चौडी, सात रजु लंबी सची नीपजे. तिस सचीमे जितने
ह्त्यलम्. श्रेणिका ग्यारमा वर्गसूल काढीने ही श्रेणिके प्रदेशांकू ग्यारमे वर्गस् वर्गस् मार्ग है. श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. श्रिणीके प्रदेशांकू ग्यारमे वर्गस् भाग दीये जो हाथ लगे तितने देव एवं जितर(ना)मा वर्गमूल होवे ति का भाग. श्रिणीका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशों का भाग. श्रेणि ७ खमूल. भाग उपरवत्. महाशुक्र ॥ श्रेणि ७ खमूल. भाग देना उपरवत् सहस्रार ॥ श्रेणि ७ खमूल. भाग देना उपरवत् दे ि आनतादि ॥ पत्योपमके असंख्यातमे भाग ग्याया प्रत्ये दे ि आनतादि ॥ पत्योपमके असंख्यातमे भाग ग्याया प्रत्ये पत्योपमके वृहत्तर असंख्यातमे भाग ग्याया प्रत्ये पत्योपमके वृहत्तर असंख्यातमे भाग ग्याया प्रत्ये पत्योपमके वृहत्तर असंख्यातमे भाग ग्याया स्राप्त विकास स्राप्त विक	न		आकाशप्रदेश है तितने सौधर्म ईशान
सनत्तुमार महेन्द्र २ श्रेणीके असंख्यातमे भाग है. श्रह्मदेव " श्रेणिका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशोंक् ग्यारमे वर्गम् स्वाचित्र होते ति का भाग. श्रह्मदेव " श्रेणिका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशों का भाग. श्रेणि ९ स्वमूल. भाग उपरवत्. महाग्रुक " श्रेणि ९ स्वमूल. भाग देना उपरवत् सहस्रार " श्रेणि ९ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि सहस्रार " श्रेणि ९ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि सहस्रार " श्रिणे ९ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि सहस्रार " श्रेणि १ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि सहस्रार " श्रेणे १ स्वमूल. भाग उपरवत् दे ि सहस्रार " पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामयः श्रैवेयक ९ " पल्योपमके गृहत्तर असंख्यातमे भाग रामयः	R		
छांतक "अणि ७ खमूल. भाग उपरवत्. महाशुक्ष "अणि ५ खमूल. भाग देना उपरवत् सहस्रार "अणि ४ खमूल. भाग उपरवत् दे[ले आनतादि४ "पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामयः प्रैवेयक ९ "पल्योपमके बृहत्तर असंख्यातमे भा	सनत्कुमार महेन्द्र २	श्लेणीके असंख्यातमे भाग है.	श्रेणिका ग्यारमा वर्गमूल काढीनें तिस ही श्रेणिके प्रदेशांकू ग्यारमे वर्गमूलका भाग दीये जो हाथ लगे तितने देवता है. एवं जितर(ना)मा वर्गमूल होवे तिस ही का भाग.
महाशुक्त " श्रेणि ५ स्वमूल. भाग देना उपरवत सहस्रार " श्रेणि ४ स्वमूल. भाग उपरवत् दे[ले आनतादि४ " पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामया श्रैवेयक ९ " पल्योपमके बृहत्तर असंख्यातमे भा	ब्रह्मदेव	35	श्रेणिका ९ मा मूल. श्रेणिके प्रदेशो भाग.
सहस्रार ,, श्लेणि ४ खमूळ. भाग उपरवत् दे [ले आनतादि ४ ,, पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामयः श्लेवेयक ९ ,, पल्योपमके बृहत्तर असंख्यातमे भा	लांतक	35	श्रेणि ७ खमूल. भाग उपरवत्.
आनतादि ४ , पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामयः ग्रैवेयक ९ , पल्योपमके बृहत्तर असंख्यातमे भा	महाशुक्र	,,	श्रेणि ५ स्वमूल. भाग देना उपरवत्.
भैवेयक ९	सहस्रार	33	श्रेणि ४ खमूल. भाग उपरवत् दे[ले]णा.
	आनतादि ४	,,	पल्योपमके असंख्यातमे भाग रामयप्रमाण.
अनुत्तर ४ ,, पल्योपमके अतिवृहत्तम असंख्यातमे	ग्रैवेयक ९	***	पल्योपमके बृहत्तर असंख्यातमे भाग
	अनुत्तर ४	***	पल्योपमके अतिवृहत्तम असंख्यातमे भाग.
सर्वार्थसिद्ध संख्याते. संख्याते, क्षेत्रइस्वत्वात्.	सर्वार्थसिद्ध	संख्याते.	संख्याते, क्षेत्रइखत्वात्.

१ आकाश-प्रदेश।

मुनिमहाराज १०८ श्रीमान् श्रीहर्षविजयजी

ओसवाल रावलिंडी (पंजाब) के वासिदे. स्वर्भवास दीव्ही शहर, तारीख १ अप्रेल १८९०; उमर वर्ष ५०





वर्त्तमान आचार्य श्रीविजयवल्लभस्रिजीके गुरुदेव. श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजके बादमें संघाडाके सर्व साधुओंके विद्यागुरु

गुजरांवाला (पंजाब) निवासी लाला मानिकचंद छोटालाल दुगाडकी तर्फसे गुरुभक्ति निमित्ते

एह यंत्र श्री'*प्रज्ञापना' थकी तथा श्री'अनुयोगद्वार'थी प यंत्र 'प्रज्ञापना,' श्री'अनुयोगद्वार'थी तथा †श्री'पंचसंग्रहें' श्वेतांवर आस्नायके ग्रंथ थकी जान लेना

*"नेरइयाणं भंते! केवइया वेउन्वियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा!दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेलुगा य मुक्केल्लगा य, तत्थ णं जे ते बद्वेल्लगा ते णं असंखेजा, असंखेजाहिं उस्सिप्पिणिओसिप्पिणिहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखिजाओ सेढीओ पयरस्त असंखेजइभागो, तासि णं सेढीणं विक्लंभस्ई अंगुलपढमवग्गमूलं वितीयवग्गमूलपडुप्पण्णं अहव णं अंगुलवितीयवग्गमूलघणप्प-माणमेत्ताओ सेढीतो" । (सू. १७८) "असुरकुमाराणं भंते ! विक्खंभस् ई अंगुलपढमवरगमूलस्स संखेजातिभागो..... एवं जाव थणियकुमारा"। (सू. १७९) पुढविकाइयाणं भंते ! केवइया ओरालि-यसरीरगा प॰ ? गो॰ ! दुविहा प॰ तं०—बद्धेह्नगा य मुक्केह्नगा य, तत्थं णं जे ते बद्धेह्नगा ते णं असंखेजा, असंखेजाहिं उस्सपिणिओसप्पिणिहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेजा लोगा,..... तेया कम्मगा जहा एएसि चेव ओरालिया, एवं आउकाइयतेउकाइया वि । वाउकाइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा प०? गो०! दु० प० तं — बद्धेह्नगा य मुक्केह्नगा य, दुविहा वि जहा पुढविका-इयाणं ओरालिया, वेउव्वियाणं पुच्छा, गो० दु० तं०—बद्धेह्नगा य मुक्केह्नगा य, तत्थ णं जे ते बद्धेलगा ते णं असंखेजा, समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा पिलतोवमस्स असंखेजह-भागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति नो चेव णं अवहिया सिया,....वणप्पाइकाइयाणं जहा पुढिवका-इयाणं, णवरं तेयाकम्मगा जहा ओहिया तेयाकम्मगा। बेइंदियाणं भंते! केवइया ओरालिया सरी-रगा प० ? गो० ! दु० तं० - बंद्धे० मुक्के०, तत्थ णं जे ते बद्धे हुगा ते णं असंखेजा, असंखेजाहिं उस्सिपणिओसिपणिहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेजाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज-इभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसुई असंखेजाओ जोयणकोडाकोडिओ असंखेजाई सेढिवग्ग-मूलाइं । बेइंदियाणं ओरालियसरीरेहिं बद्धेछुगेहिं पयरो अवहीरति, असंखेजाहिं उस्सिष्पणी-भोसिष्पणीहिं कालतो, खेत्ततो अंगुलपयरस्य आवितयाते य असंखेज्जितिमागपलिमागेणं,..... एवं जाव चर्डारंदिया । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं एवं चेव ।.....मणुसाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरगा प॰ ? गो॰ ! दु॰ तं०-चद्धे॰ मुक्के॰, तत्थ णं जे ते बद्धेलगा ते णं सिय संखिजा सिय असंखिजा, जहण्णपदे संखेजा संखेजाओं कोडाकोडीओ तिजमलपयस्स उवरि चउजमलः पयस्स हिट्टा, अहव णं छट्टो वग्गो अहव णं छण्णउईछेयणगदाइरासी, उक्कोसपए असंखिजा, असंखिजाहिं उस्सपिणिओसिप्पणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ रूवपिक्खत्तेहिं सेढी अवहीरई, तीसे सेढीए आकासखेत्तेहिं अवहारो मिगजाइ असंखेजा असंखेजाहिं उस्सिप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अंगुलपढमवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पणं,.....। वाणमंतराणं जहा नेरइयाणं ओरालिया आहारगा य, वेउव्वियसरीरगा जहा नेरइयाणं, नवरं तासि णं सेढीणं विक्खंभस्ई संखेजजोअणसयवग्गपिलभागो पयरस्स.....। तासि णं सेढीणं विक्खंभसुई बिछण्पन्नंगुलसयवग्ग-पिलमागो पयरस्स, वेयाणियाणं एवं चेव, नवरं तासि णं सेढीणं विक्खंभस्ई अंगुलवितीयवग्गमूलं तद्दयवग्गमूलपदुणम्नं अहवण्णं अंगुलतद्दयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ,....।"(स्०१८०)

ं पंचसंग्रहन द्वितीय 'बंघक' द्वारनी गाथाओ—
"पत्तेय पज्जवणकाइया उ पयरं हरंति लोगस्स । अंगुलअसंखभागेण भाइयं भूदगतण् य ॥ ४३ ॥
आविलवग्गो अंतावलीय गुणिओ हु वायरो तेऊ । वाऊ लोगासंखं सेसितिगमसंखया लोगा ॥ ४४ ॥
पज्जत्तापज्जत्ता बितिचउअस्सिक्षणो अवहरंति । अंगुलासंखासंखण्पसभइयं पुढो पयरं ॥ ४५ ॥
सन्नी चउसु गईसु पढमाए असंखसेढि नेरइया । सेढी असंखेजंसो सेसासु जहुत्तरं तह य ॥ ४६ ॥
संखेजजोयणाणं सइपएसेहिं भाइओ पयरो । वंतरसरेहिं हीरइ एवं एकेकसेएणं ॥ ४७ ॥

(२) * वृद्धि-हानि भगवती द्या० ५, उ० ८

o	वंडुंति	ह ीयंति
जीव	o	o
नरकादि वैमानिक २४	उत्कृष्ट आविल असंख्य भाग	उत्कृष्ट आविल असंख्य भाग
सिद्ध	उत्कृष्ट ८ समय	o
जघन्य सर्वत्र	१ समय	१ समय

विरह सर्वत्र अँद्धा सिद्धक विरह तुल्य.

छण्पन्न दोसयंगुलसईपण्सेहि भाइओ पयरो। हीरइ जोइसिण्हिं सट्ठाणे त्थीउ संखगुणा॥ ४८॥ अस्संखसेढिखपण्सतुल्लया पढमदुइयकण्पेसु। सेढिअसंखंससमा उर्वारं तु जहोत्तरं तह य॥ ४९॥ सेढीण्केकपण्सरइयस्ईणमंगुल्ल्णिमयं। घम्माण भवणसोहम्मयाण माणं इमं होइ॥ ५०॥ छण्पन्नदोस्यंगुल्लम्ओ भूओ विगिज्झ मूल्लिगं। गुणिया जहुत्तरत्था रासीओ कमेण स्ईओ॥ ५१॥ अहवंगुल्ल्पण्सा समूलगुणिया उ नेरइयस्ई। पढमदुइया पयाइं समूलगुणियाइं इयराणं॥ ५२॥ अंगुल्लम्लासंखियभागण्पिया उ होंति सेढीओ। उत्तरविउव्वियाणं तिरियाण य सिन्नपञ्चाणं॥ ५२॥ सामण्णा पज्जत्ता पणतिरि देवेहि संखगुणा। संखेज्जा मणुया तहि मिच्छाइगुणा वि सट्ठाणे॥ ५४॥ उक्कोसपण् मणुया सेढीं ह्वाहिया अवहरंति। तईयमुलाहण्हिं अंगुल्लम्लण्यसेहिं॥ ५५॥ ४५॥

* आ तेमज आ पछीनां ने यंत्रो परत्वे नीचे मुजबनुं सूत्र छे:-

जीवा णं मंते ! किं वहंति, हायंति, अवद्रिया? । गीयमा! जीवा णो वहंति, नो हायंति, अवद्विया। नेरइया णं भंते! किं वहुंति, हायंति, अवद्विया?। गोयमा! नेरइया वहुंति वि, हायंति वि, अवद्विया वि; जहा नेरइया एवं जाण वेमाणिया। सिद्धा णं मंते ! पुच्छा, गोयमा ! सिद्धा वहृंति, नो हायंति, अवद्रिया वि ॥ जीवा णं भंते ! केवतियं कालं अवद्रिया वि] ? । सबद्धं । नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं वहुंति ? । गोयमा ! जहुन्नेणं एगं समयं, उक्को० आवलियाए असंखेजातिभागं, एवं हायंति, नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं अवद्या?। गोयमा! जह० एगं समयं, उक्को० चड-ब्बीसं मुहुत्ता, एवं सत्तस वि पुढवीस बहुति हार्येति भाणियव्वं, नवरं अवदिएस इमं नाणत्तं, तंजहा-रयणप्पभाए पुढवीए अडतालीसं मुहत्ता, सक्कर० चोहस रातिदियाणं, वालु० मासं, पंक० दो मासा, धूम० चत्तारि मासा, तमाए अट्ट मासा, तमतमाए बारस मासा । असुरकुमारा वि० वहंति हायंति जहा नेररया, अवद्रिया जहु० एकं समयं, उक्को अट्टचत्तालीसं मुहुत्ता, एवं दसविहा वि; एगिंदिया वहुंति वि हायंति वि अवद्रिया वि, एएहिं तिहि वि जह० एकं समयं, उक्को० आविल-याए असंखेजातिभागं, बेइंदिया वहुंति हायंति तहेव, अवद्रिया जह० एकं समयं, उक्को० दो अंतो-मुहुत्ता, एवं जाव चउरिंदिया, अवसेसा सब्वे वहूंति हायंति तहेव, अवट्रियाणं णाणत्तं इमं, तं० संमुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं दो अंतोमुद्दत्ता, गब्भवक्वंतियाणं चउव्वीसं मुद्दत्ता, संमु-च्छिममणुस्साणं अट्टचत्तालीसं मुहुत्ता, गब्भवक्वंतियमणुस्साणं चउव्वीसं मुहुत्ता, वाणमंतर-जोतिससोहम्मीसाणेसु अट्टचत्तालीसं मुहुत्ता, सणंकुमारे अट्टारस रातिदियाई चत्तालीस य मुहु०, माहिंदे चडवीसं राति० वीस य मु॰, वंभलोए पंचचत्तालीसं राति०, लंतए नडति राति०, महासुके

१ वधे छे। २ घटे छे। ३ काळ।

(३) अवस्थित(ति)यन्त्रम्-जीवानां सर्वाद्वा

नारकी	उत्कृष्ट २४ मुहूर्त	जोतिषी	उत्रुष्ट ४८ मुहूर्त
रत्नप्रभा	,, 8८ ,,	सु(सौ)धर्म ईशान	77 71 77.
शकर(र्करा)प्रभा	" १४ दिनरात्रि	सनत्कुमार	,, १८ दिन ४० मुहूर्त
वाछुक (का) प्रभा	"१ मास	महेंद्र	,, २४ दिन २० मुहूर्त
<u>पं</u> कप्रभा	,, २ .,	ब्रह्मलोक	,, ४५ अहोरात्रि
धूम्रप्रभा	,, ੪ ,,	छांतक	" ९० रात्रिदिन
तमप्रभा	,, ۷ ,,	महाशुक	,, १६० ,,
तमतमप्रभा	,, १२ ,,	सहस्रार	,, २०० रात्रि
भवनपति १०	" ४८ मुहूर्त	आनत प्राणत	,, संख्याते मास
पकेंद्री ५	,, आविलके असंख्यात	आरण अच्युत	,, संख्याते वर्ष
विगलेंद्री ३	,, अंतर्मुहूर्त (?)	(ग्रैवे०) पहिली त्रिक	" " सौ "
सम्मूर्चिछम पंचेंद्री तिर्यंच	,, २ ,,	मध्यम त्रिक	,, ,, हजार ,,
गर्भज पंचेंद्री तिर्येच	,, २४ मुहूर्त	उपर त्रिक	,, ,, लाख ,,
सम्मूर्चिछम मनुष्य	,, 8< ,,	विजयादि ध	,, पत्योपमनो असंख्या- तमो भाग
गर्भज मनुष्य	,, રધ ,,	सर्वार्थसिद्ध	,, पल्योपमनो संख्या- तमो भाग
व्यंतर	,, ४८ ,,	सिद्ध	"६ मास

जघन्य सर्वत्र एक समय इति.

सिंदुं रातिंदियसतं, सहस्सारे दो रातिंदियसयाइं, आणयपाणयाणं संखेजा मासा, आरणज्ञुयाणं संखेजाइं वासाइं, एवं गेवेज्जदेवाणं विजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं असंखिजाइं वाससहस्साइं, सव्वद्वसिद्धे य पिलेओवमस्स [अ]संखेज्जितिभागो, एवं भाणियव्वं, वहुंति हायंति जह० एकं समयं, उक्को० आविलयाए असंखेजितभागं, अविद्याणं जं भणियं। सिद्धा णं भंते!केवितयं कालं वहुंति?। गोयमा! जह० एकं समयं, उक्को० अट्ठ समया; केवितयं कालं अविद्या? गोयमा! जह० एकं समयं, उक्को० अट्ठ समया;

जीवा णं भंते! किं सोवचया, सावचया, सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया?। गोयमा! जीवा णो सोवचया, नो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया। एगिंदिया तितय-पए, सेसा जीवा चउहि वि पदेहि वि भाणियव्वा। सिद्धाणं भंते! पुच्छा, गोयमा! सिद्धा सोवचया,

१ जीवोनी सर्व काळ अवस्थिति छे।

(४) *(सोपचय आदि) भग० श० ५, उ० ८

	सीवचया	२ सेावचया	सोवचयसावचया	निरुव०निरवचया
जीव	o	o	o	सर्वाद्धा
पकेंद्री ५ वर्जी नरक आदि वैमानिक पर्यंत १९ दंडक		उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्कृष्ट आवलिके असंख्यातमे भाग	उत्क्रष्ट आपापणे विरहप्रमाण ज्ञातव्यम्
पकेंद्री ५	0	o	सर्वाद्धा	o
सिद्ध	८ समय	•	•	६ मास

ए उत्कृष्ट कालना यंत्र, जवन्य सर्वत्र १ समय ज्ञेयम्.

(५) (कृतादि युग्म) भग० श० १८, उ० ४

	जघन्य पद	मध्यम पद	उत्कृष्ट पद
पंचेंद्री १६ दंडक	कृतयुग्म १	कृतयुग्मादि ४ युग्म	त्रौ(त्र्यो)ज
पृथ्वी आदि ४ विगलेंद्री ३	33	"	ह्रापरयुग्म
वनस्पति १ सिद्धे च	0	77	0
स्रीसमुखय तथा १५ दंडकें जूदी जूदी	कृतयुग्म १	"	कृतयुग्म १

णो सावचया, णो सोवचयसावचया, निरुवचयनिरवचया । जीवा णं भंते ! केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया १। गोमया ! सवद्धं । नेरितया णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया १ गोयमा ! जहु० एकं समयं, उक्को० आवलियाए असंखेजइभागं । केवतियं कालं सावचया १ । एवं चेव । केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया १ । गोयमा ! जहु० एकं समयं, उक्को० बारस मु०, एगिंदिया सव्वे सोवचयसावचया सव्वद्धं, सेसा सव्वे सोवचया वि सावचया वि सोवचयसावचया वि निरुवचयनिरवचया वि जहु० एगं समयं, उक्को० आवलियाए असंखेजितिभागं अविद्यिष्टिं वकंतिकालो भाणियव्वो । सिद्धा णं भंते केवतियं कालं सोवचया शेयमा ! जहु० एकं समयं, उक्को० अट्ट समया, केवतियं कालं निरुवचयनिरवचया ? जहु० एकं, उ० छम्मासा"। (सू० २२२)

† "नेरइया णं भंते! किं कडजुम्मा, तेयोगा, दावरजुम्मा, कलियोगा?। गोयमा! जहन्नपरे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहन्नुकोसपदे सिय कडजुम्मा १ जाव सिय कलियोगा ४, एवं जाव थणियकुमारा। वणस्सइकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! जह० अपदा, उक्को० य अपदा, अजह० सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। बेइंदिया णं पुच्छा, गोयमा! जह० कड०, उक्को० दावर०, अजह०

९ वृद्धि सहित । २ हानि सहित ।

(६) (*योग विषयक अल्पबहुत्व) भग० द्या० २५, उ० १

• •	•		•				
योग	सूक्ष्म एकेंद्री	बादर पकेंद्री	बेइंद्री	तेइंद्री	चौरिंद्री	असंज्ञी पंचेंद्री	संशी पंचेंद्री
जघन्य अपर्याप्ता योग	स्तोक१ (थोडा)	२ असंख्य गुणा	३ असं.	४ असं.	५ असं.	६ असं.	७ असं.
जघन्य पर्याप्ता योग	८ असं.	९ असं.	१४ असं.	१५ असं	१६ असं.	१७ असं.	१८ असं.
उत्कृष्ट अपर्याप्ता योग	१० असं.	११ असं	१९ असं	२० असं.	२१ असं.	२२ असं.	२३ असं.
उत्कृष्ट पर्याप्ता योग	१२ असं.	१३ असं.	२४ असं.	२५ असं.	२६ असं.	२७ असं.	२८ असं.

सिय कड० किल्योगा, एवं जाव चतुरिंदिया, सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया, पंचिदियतिरिक्ख-जोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया, सिद्धा जहा वणस्सइकाइया। इत्थीओ णं भंते! किं कड० १ पुच्छा, गोयमा! जह० कडजुम्माओ, उक्को० सिय कडजुम्माओ अजह० सिय कडजुम्माओ जाव सिय किल्योगाओ, एवं असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारइत्थीओ, एवं तिरिक्ख जोणियइत्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं जाव वाणमंतरजोइसियवेमाणियदेवित्थीओ"। (सू० ६२४)

* "सन्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहन्नए जोए १, बादरस्स अपज्ज० जह० जोए असंखेजगुणे २, बेंदियस्स अपज्ज० जह० जोए असं० ३, एवं तेइंदियस्स ४, एवं चर्डारेदियस्स ५, असिन्नस्स
पंचिदियस्स अपज्ज० जह० जोए असं० ६, सिन्नस्स पंचि० अपज्ज० जह० जोए असं० ७, सुहुमस्स
पज्जत्तगस्स जह० जोए असं० ८, बादरस्स पज्ज० जह० जोए असं० ९, सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्को॰
सए जोए असं० १०, बादरस्स अपज्ज० उक्को० जोए असं० ११, सुहुमस्स पज्ज० उक्को० जोए असं०
१२, बादरस्स पज्ज० उक्को० जोए असं० १३, बेंदियस्स पज्ज० जह० जोए असं० १४, एवं तेंदिय, एवं
जाव सिन्नपंचिदियस्स पज्ज० जह० जोए असं० १८, वेंदियस्स अपज्ज० उक्को० जोए असं० १९, एवं
तेंदियस्स वि २०, एवं चर्डारेदियस्स वि २१, एवं जाव सिन्नपंचि० अपज्ज० उक्को० जोए असं० २३,
बेंदियस्स पज्ज० उक्को० जोए असं० २४, एवं तेइंदियस्स वि पज्ज० उक्को० जोए असं० २५, चर्डारेदियस्स पज्ज० उक्को० (जोए) असं० २६, असिन्नपंचिदयपज्जत० उक्को० जोए असं० २७, एवं सिन्नपंचि० पज्ज० उक्को० जोए असं० २८"। (सू० ७१७)

† १४ मा पाना उपरना सातमा यंत्र संबंधी सूत्र नीचे मुजब छे:-

"सन्वत्थोवे कम्मगसरीरजहन्नजोए १, ओरालियमीसगस्स जहन्नजोए असं० २, वेउन्विश्यमीसगस्स जहन्नए असं० ३, ओरालियसरीरस्स जहन्नए जोए असं० ४, वेउन्वियसरीरस्स जहन्नए जोए असं० ४, कम्मगसरीरस्स उक्कोसए जोए असं० ६, आहारगमीसगस्स जह० जोए असं० ७, तस्स चेव उक्कोसए जोए असं० ८, ओरालियमीसगस्स ९, वेउन्वियमीसगस्स १०, एएसि णं उक्को० जोए दोण्ह वि तुल्ले असं०, असन्चामोसमणजोगस्स जह० जोए असं० ११, आहारसरीरस्स जह० जोए असं० १२, तिविहस्स मणजोगस्स १५, चउन्विहस्स वयजोगस्स १९, एएसि णं सत्तण्ह वि तुल्ले जह० जोए असं०, आहारगसरीरस्स उक्को० जोए असं० २०, ओरालियसरीरस्स वेउन्वियस्स चउन्विहस्स य मणजोगस्स चउन्विहस्स य वहजोगस्स एएसि णं दसण्ह वि तुल्ले उक्को० जोए असं० ३०"। (स्० ७१९)

(७) पिंदर योग परत्वे अल्पबहुत्व भग० श० २५, उ० १

कार्मेष १५	१ स्तोक	ह असंख्य गुणा
आहा- आहारक- रक १३ मिश्र १८	७ असंख्य गुणा	८ असंस्य ह
आहा- रक १३	५ ३ ११ असंख्य असंख्य असंख्य	१३ असंख्य
वैक्रिय मिश्र १२	असं ख्य	जिल्य
औदा- औदा· वैक्रिय- सिक्र- सिक्र ९ सिश्र१० ११		% %
औदा- औदा स्कि स्कि ९ सिश्र१०	२ असंख्य	० असंख्य
औदा- रिक ९	ध असंख्य गुणा	१८ तुल्य
सत्य असत्य मिश्र व्यव- घचन- घचन- घचन- हार योग ५ योग ६ योग ७ बचन ८	द्ध द	% वि
मिश्र बचन- योग ७	१५ ५५	विद्यु १६
असत्य सिश्च घचन- घचन- योग ६ योग ७	१५ विस्त	क्ष क
सत्य बचन- योग ५	१२ प्रे	अ १८
मिश्र व्यव- मन- हारमन गेग ३ योग ४	१० असंख्य	भू कि
मिश्र मन- योग ३	्र ६०	अ रह
असत्य मनयोग २	विद्य	अंद्र
सत्य मन- योग १	१२ असं- ख्य गुणा	३३ टि
योग १५	अधन्य योग	उत्हर योग

* पंदरमा पाना उपरना आठमा यंत्र संबंधी सूत्र नीचे मुजब छे:---

सुहुमआऊअपज्ज० जह० ओगा० असं० ४, सुहुमपुढांवेअपज्जत्त० जह० ओगा० वि० ३६।३७।३८, सब्बेसि तिविहेण गमेणं भाणियब्बं, वाद्रिनगोयस्स पज्जसगस्स जह० ओगा० असं ३९, तस्स चैव अपज्जनगस्स उक्को० जह० ओगा० दोण्ह वि तुल्ला असं० १०-११, सुहुम्निगोयस्स पज्जनगस्स जह० आंगा० विसेसाहिया ८१, पत्तेयसरीरवाद्रवणस्सइकाइयस्स पज्जतगस्स असं० ५, बाद्रवाउकाइयस्त अपज्ञत्तास्त जह० ओगा० असं० ६, बाद्रतेऊअपज्ञत्जहांन्नेया ऑगा० असं० ७, बाद्रशाउअपज्ञत बादरपुढवीकाइयअपज्ञत्तज्ञद्विया औगा० असं० ९, पत्तेयसरीरवादरवणस्तइकाइयस्त वादरनिओयस्स यस्स पज्जत्तग० जहु० थोगा० थसं० १५, तस्स चेव थपज्ञत्त० उक्को० थोगा० वि० १६, तस्स चेव पज्जत्त० उक्को० वि० १७, एवं सुहुमते इयस्स वि० २७।२८।२९, एवं बादरतेऊकाइयस्स वि० ३०।३१।३२, एवं वादरआउकाइयस्स वि० ३३।३४।३५, एवं वादरपुढविकाइयस्स अपज्ञत्तरास्स जह० ओगा० असंखेज्जगुण तस्स चेव अपज्ञत्तगस्स उक्को० ओगा० वि० १४, सुहुमवाउकाइ विसेसा २४।२५।२६, एवं वाद्रवाडका जहु० ओगा० असं० ४२, तस्स चेव अपज्ञत्त० उक्को० ओगा० असं० ४३, तस्स चेव पज्जत्त उक्को० ओगा० असं० ४४"। (सू० ६५१. वि २१।२२।२३, एवं सुहुमपुडविकाइयस्स "सब्बत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्ञत्तस्स जहन्निया ओगाहणा १, सुहुमवाउक्नाइयस्स पज्जनगरम उक्को० ओगा० ओगा० विसेसा १३, २, सुद्दुमतेऊअपज्ञत्तस्त जदृ० ओगा० थसं० ३, उक्काइयस्त वि १८।१९।२०, एवं सुहुमआउक्काइयस्त असं० १२, तस्सेव अपज्ञत्तगस्स उक्नोसिया एएसि णं पज्जत्तगाणं एएसि णं अपज्जत्तगाणं ओगा० विसेसाहिया ४०, तस्स चेव जहांत्रया थोगा० असं० ८,

(८) (*सूक्ष्म पृथ्वीकायादिकी अवगाहना भग० श० १९, उ० ३)

		अपर्याप्ता जघन्य	पर्याप्ता जघन्य	अपर्याप्ता उत्कृष्ट	पर्याप्ता उत्कृष्ट
१	सुक्ष्म निगोद	१ स्तोक	१२ असं	१३ वि	१४ वि
ર	सूक्ष्म वायु	२ असं	१५ असं	१६ वि	१७ वि
3	सूक्ष्म तेउ	३ असं	१८ असं	१९ वि	२० वि
ક	सूक्ष्म अप्	४ असं	२१ असं	२२ ह्य	२३ वि
4	सूक्ष्म पृथ्वी	५ असं	२४ असं	२५ वि	२६ वि
६	वादर वायु	६ असं	२७ असं	२८ वि	२९ वि
હ	वाद्र तेउ	७ असं	३० असं	३१ वि	३२ वि
۷	बादर अप्	८ असं	३३ असं	३४ वि	३५ वि
٩	बादर पृथ्वी	९ असं	३६ असं	३७ वि	३८ वि
१०	बादर निगोद	१० असं	३९ असं	४० वि	ध१ वि
११	प्रत्येक वनस्पति	११ तुल्य	ध२ असं	४३ असंख्य	४४ असंख्य गुण

(?)*

	काइया (कायिकी)	अहिगरणी (आधिकरणिकी)	पाउ(दो)सिया (प्राद्वेषिकी)	परिताप	प्राणाति- पात
कारण	सारंभ	सारंभ	सारंभ	समारंभ	आरंभ
काइया संबंध	o	नियमा	नियमा	भजना	भजना
अहिगरणिया	नियमा	o	33	33	,,,
पाउ(दो)सिया	95	नियमा	o	55	"
पारितापनिका	3,	7,7	नियमा	0	"
माणाति पात	***	,,	,,	नियमा	•

^{* &}quot;जस्स णं भंते ! जीवस्स कातिया किरिया कजाइ तस्स अहिगरणिया किरिया कजाति, जस्स

(१०) पन्नवणा पद २२ मे (*सू० २८४) कियायस्त्रम्

	आरंभिता	परिग्रह	मायाप्रत्यया	सिध्यादर्शन- प्रत्यया	अप्रत्या- ख्यान.
कारण	प्रमाद्	प्रत्याख्यान चौक	संज्वलन ४	अनंत मिथ्यात्व	अप्रत्या- ख्यान ४
गुणस्थान कौनसेमें	દ	•	१०	3	ક
संबंधारंभ	. 0	भजना	नियमा	भजना	भजना
परित्रह	नियमा	0	55	33	25
मायाप्रत्यया	भजना	भजना	0	,,	"
मिथ्यादर्शन०	नियमा	नियमा	नियमा	o	नियमा
अप्रत्याख्यान- प्रत्यया	. 33	"	,,	भजना	0

अहिगरणिया किरिया कजाति तस्स कातिया कजाति?। गो०! जस्स णं जीवस्स कातिया किरिया कजाति तस्स अहिगरणी किरिया नियमा कजाति, जस्स अहि० किरिया क० तस्स वि काइया किरिया नियमा कजाति, जस्स णं मंते! जीवस्स काइया कि० तस्स पादोसिया कि०, जस्स पादोसिया कि० तस्स काइया कि क०?। गो०! एवं चेव, जस्स णं मंते! जीवस्स काइया किरिया कजाइ तस्स पारियावणिया किरिया कजाइ तस्स पारियावणिया किरिया कजाइ तस्स पारियावणिया किरिया कजाइ तस्स पारियावणिया किरिया कजाइ तस्स काह्या कि० क० तस्स पारियावणिया सिय कजाइ सिय नो कजाइ, जस्स पुण पारियावणिया कि० क० तस्स काइया नियमा कजाति, एवं पाणाइवायकिरिया वि, एवं आदिल्लाओ परोप्परं नियमा तिण्णि कजाति, जस्स आइल्लाओ तिन्नि कजाति तस्स उवरिल्लाओ दोन्नि सिय कजाति सिय नो कजाति, जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कजाति तस्स आइल्लाओ नियमा तिण्णि कजाति, जस्स पाणातिवायकिरिया क०, जस्स पाणातिव क० तस्स पारियावणिया किरिया कजाति तस्स पाणातिवायकिरिया क०, जस्स पाणातिवातकिरिया सिय क० सिय नो क०, जस्स पुण पाणातिपातकिरिया क० तस्स पारियावणिया किरिया नियमा कजाति"। (प्रज्ञा० सू० २८२)

* "कित णं भेते किरियाओ पण्णत्ताओ ?। गो०! पंच किरियाओ पं० तं०—आरंभिया, परिग्गहिया, भायावित्तया, अपचक्खाणिकिरिया, मिच्छादंसणवित्तया, आरंभिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्ञात ? गो०! अण्णयरस्स वि पमत्तसंजयस्स, परिग्गहिया णं भंते ! किरिया कस्स कज्ञ ?। गो०! अण्णयरस्स वि संजयासंजयस्स, मायावित्तया णं भंते ! किरिया कस्स क०?। गो०! अण्णयरस्सावि अपमत्तसंजयस्स, अपचक्खाणिकिरिया णं भंते ! कस्स क०?। गो०! अण्णयरस्स वि अपचक्खाणिस्स, मिच्छादंसणिव्स वि किरिया कस्स क०?। गो०! अण्णयरस्सावि मिच्छादंसणिस्स। ...जस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किया क० तस्स परिग्गहिया कि क०?। जस्स परिग्गहिया कि० तस्स आरंभिया कि० तस्स परिग्गहिया कि० तस्स आरंभिया कि० तस्स णं जीवस्स आरंभिया कि० क० तस्स मायावित्तया कि० क० पुच्छा, गो०! जस्स णं जीवस्स आरंभिया कि० क० तस्स मायावित्तया कि० क० तस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क०, जस्स पुण माया० कि० क० तस्स आरंभिया कि० तियमा क० सिय नो क० कस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क०, जस्स पुण माया० कि० क० तस्स आरंभिया कि० तिय क० सिय नो क० जस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया कि० तस्स अपचक्खाणिकिरिया पुच्छा, गो०! जस्स जीवस्स जाराभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क०, जस्स जीवस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क०, जस्स जीवस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क०, जस्स जीवस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क०, जस्स जीवस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क० जिल्ला कि० तस्स आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तियमा क० जिल्ला कि० तस्स आरंभिया कि० तस्य आरंभिया कि० तस्स आरंभिया कि० तस्य क

(११) *भगवती राते १ उद्देशे २ कालयम्रम्

•	शून्य काल	अशून्य काल	मिश्र काल	संतिष्ठन काल
नारकी	३ अनंत गुणा	१ सर्व स्तोक १२ मुद्दर्त		२ असंख्यात गुणा
तिर्थेच	•	१ सर्व स्तोक अंत- मुंहर्त त्रस आश्री "		४ अनंत गुणा
मनुष्य	३ अनंत गुणा	१ सर्व स्तोक १२ मुहूर्त	,,	१ सर्व स्तोक
देव	"	सर्व स्तोक १२ मुहूर्त १	,,	३ असंख्येय गुणा

(१२) अथ पट् लेइया द्वार उत्तराध्ययन ३४ मे वा श्रीपन्नवणा पद १७ परथी ज्ञेयं

नाम	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेख्या	तेजोलेश्या	पद्म-	शुक्क लेश्या
१	१	२	3	ક	लेश्या ५	દ
वर्ण द्रव्य-	काली घटा १ महिष	अशोक वृक्ष १	अलसीना फूल	हिंगुल १	हरिताल	संख १
	शृंग गुली २ शकटना	नील चासना	१ कोकिलानी	धातु	१ हलद्री	अंकरत्न २
अपेक्षा २	1					
	कीकी ४ इन सहरा	३ शुक पंक्ष ४	त्रीवा ३ ऐसा	शेष रक्त २	असन ए	पुष्प दिध
	वर्ण कुण	पेसा वर्ण		उगता सूर्य		रूपाना
				तेजोलेश्या		हारवत्
				वर्णतः	पीत	गुक्त

आरंभिया कि॰ तस्स अपच॰ सिय क॰ सिय नो क॰, जस्स पुण अपच॰ क॰ तस्स आरंभिया कि॰ णियमा क॰, एवं मिच्छादंसणवित्तयाए वि समं, एवं पारिग्गहिया वि तिहिं उवरिछाहिं समं संचारे-तब्वा, जस्स माया कि॰ तस्स उवरिछाओं दो वि सिय कजांति सिय नो कजांति, जस्स उवरिछाओं दो कि सिय कजांति सिय नो कजांति, जस्स उवरिछाओं दो कजांति तस्स माया॰ नियमा क॰ जस्स अपच॰ कि॰ क॰ तस्स मिच्छा॰ कि॰ सिय क॰ सिय नो क॰, जस्स पुण मिच्छा॰ कि॰ तस्स अपच॰ कि॰ णियमा कजाति"। (स्० २८४)

* "नेरइयसंसारसंचिट्टणकाले णं भंते! कितिविहे पण्णत्ते?। गोयमा! तिविहे पण्णत्ते, तं०— सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥ तिरिक्ख जोणियसंसारपुच्छा, गो०! दुविहे प० तं०—असुन्नकाले य मिस्सकाले य, मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाणं ॥ एयस्स णं भंते! नेरइयसंसार-संचिट्टणकालस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीसकालस्स य कयरे कयरे हिंतो अप्पा वा बहुए वा विसेसाहिए वा?। गो०! सन्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ॥ तिरिक्ख० भंते! सन्व० असुन्न०, मिस्स० अणंत०, मणुस्सदेवाण य जहा नेरइयाणं ॥ एयस्स णं भंते! नेरइयस्स संसारसंचिट्टणकालस्स जाव देवसंसारसंचिट्टणजाव विसेसाहिए वा?। गो०! सन्व० मणुस्ससंसारसंचिट्टणकाले, नेरइयसंसार० असंखेज्जगुणे, देवसंसार० असं०, तिरिक्खजोणिए अणंत०"॥ (स्०२३)

९ पांख ।

नाम १	कृष्ण लेश्या १	नील लेश्या २	कापोत लेक्या ३	तेजोलेश्या ४	पद्म- लेश्या ५	गुक्क लेश्या ६
रस द्रव्य-	कटुक उंब १ नींब २	यथा त्रिकूट रस	तरुण आम्ररस	पक्क आम्र	घर	यथा खज्जूर
लेश्या		१ हस्ती पीपलना	कचा कैविट्ट	रस १	वारुणी	रस १े
आश्री	रससे अनंत गुण	रस एहथी अनंत	फल रस	पाका कौठ	मद् १	द्राख रस २
3	कटुक रस	गुणाधिक	इनथी अनंत	फल २ रस	पुष्पका	खंड रस ३
		_	गुणा कषायला			मिसरी
	,		रस है	गुणाधिका	मधु मद्य	
					विशेष ३	अनंत गुणा
-				,	सिरका	
					इनसे	u .
					अनंत	
	The state of the s				गुणा	
गंध	मृतक गौ १ मृतक			पूक सुगंध-		
द्रव्य-	श्वान २ मृतक सर्प	ए	प्	वत् तथा	Ų	ए
लेश्या	३ इनके दुर्गध से	- >व	-> a	सुगंध पी- सता जैसी	ightarrowव	-> च
आश्री	अनंत गुणाधिक	म्	म्	सता जसा सुगंध इनसे	म्	펀
ક				अनंत गुणा	1	
स्पर्श	करवतनी धार १			यथा वूर		
द्रव्य-	गौ जिह्वा २ साम	प्	ए	वनस्पति १	ए	प्
लेक्या	वनस्पतिना पत्र			म्रक्षण २	į	
आश्री	इनके स्पर्शसे अनंत	-> च	—>च	शिरीष क्-	ं> व	-> a
બ	कर्कश स्पर्श		•	सुम इनसे		
;		म्	म्	अनंतसा	म्	म्
				कोमल है	<u> </u>	
परिणाम-	जघन्य १ मध्यम २			_		
412-114	उत्कृष्ट ३ इनका ९	प्	Ų	ए	ú	ए
समुचय	केर २७ केर ८१		_			
Ę	फेर २४३ इस तरे	-> a	-> a	−>व	⇒व	—>च
*	असंखवे २ करणा					
	नियमन करणाके	म्	म्	म्	म्	म्
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	इतने परिणाम है	<u> </u>	<u> </u>			
लक्षण	. २१ बोल	१५ बोल	१२ बोल	१३ बोल्	1 -	
विशिष्ट	पांच आश्रवना	ईर्ष्या-पर गुन	वांकां वोले १			आर्त रौद्र
लेड्यानी	सेवनहार ५ तीन	असहन १ अभि-		4)	वर्जे २ धर्म-
अपेक्षा	गुप्तियें अगुप्ति ३	निवेशकी १ तप		l .	1	í
इह ₹\$	षट्कायना अविरति			अकुतूहल		
लक्षण है	तीव आरंभी १	१ मायावी १	अपने दोष	विनयवंत प	५लाभ ४	ध्यावे ४

नाम	कृ ष्ण लेश्या	नील लेइया	कापोत लेइया	तेजोळेड्या	पद्म-	गुक्रलेश्या
8	कृत्वा (ठरवा १	गाळ <i>७१</i> ५। २	3	8	लेक्या ५	युक्तकरमा ६
पिण	सर्वकूं अहितकारी १	अहीकाता (१)	आच्छाद्क ५	विनय करे	प्रशांत	प्रशांत
देवता	साहसिक अनविचारें		कपटसें प्रवर्ते	_	चित्त ५	चित्त ५
आदिके	कार्यकारी १ जीव-	निर्लज्ज १	६ मिथ्यादृष्टि		दमिता-	दान्त
साथ	1	विषयका लांपट्य] _	पढीने उप-	त्मा ६ शुभ	आत्मा ६
व्यभि-	नही १ वा इसलोक	१ द्वेषी १ शठ १	उत्प्राशक ९	धान तप-	योगवान्	
चार	परलोकीना कष्टनी	जात्यादि मदवान्	आग लोक	वान्ं ८ प्रिय	७ शास्त्र	समिति
नही.	शंका नहीं ते निद्धंस-	१ रस लोलुप	लक आदिमे	धर्मी ९ द्रढ	पठन करीने	समिता ११
विशिष्ट	परिणामी कहिये १	१ सातागवेषी	फसे ऐसे	धर्मी १०	उपधान	तीन गुप्ते
उत्कट	अजितेंद्रिय १ स्र्ग	१ आरंभीसें	बोले ९ दुष्ट	पापसे डरे	1	गुप्ता १४
गुद्ध	रहित १ एवं २१	अवरति १	वचन बोले १०		८ अस्प-	!
अथवा	बोल	श्चद्रिक १ अन-	चौर ११	भिलाषी १२	भाषी ९ उपशम-	तथा वीत-
अशुद्ध.		विचारे कार्यना	मत्सरी पर-	शुभ योग-	वान् १०	राग १६
S		कारणहार ते	संपद् असहन	· -	जितेंद्रिय	ł
		साहसिक १	१२ द्रव्यके	तेजो ना	११ ए लक्षण	वान् १७
			सहचर करके	1	पद्मले-	जितेन्द्रिय
			तिसके उरंगते	1	श्याना	१८ एँतद्पि
			तद्रूप होना सो	लक्षण जान	ं धणी अनागा-	अनगार-
			प्र(परि)णाम	ेु छेना	रस्य	स्येति
			कहिये सर्वत्र	अनगारस्य	एतत्	लक्षणम्
				एतत्	सम्भ-	
					वति, नान्य-	
•].	स्येति	
स्थान	स्थान असंख्य					
. प्रकर्ष	कितने ? जितने	Œ	प्	प्	ď	ए
अपकर्ष रू						
अशुभना			—>व	−>व	⇒व	-> व
અ ગુમ શુમના	1 - •	1	77	11	TP	
શુન ા શુમ ૮	_	म्	म्	<u>म्</u>	म्	म्
स्थिति	जघन्य १० सागरो-	1	जघन्य १			
नारकीन	ी पम पल्योपमका	रोपम पल्योप-	सहस्रवर्ष	ļ.		

⁹ इन्द्रियना उपर काबू राखनार। २ साधुनुं आ। ३ साधुमां आ संभवे छे, निह के अन्यने विथे। ४ आ पण साधुनुं लक्षण छे।

0	श्रीविजयानदस्रिकृत						
नाम	कृष्ण लेश्या	1 _ 1	कापोत लेख्या	तेजोलेश्या	पद्म-	गुक्रुहेश्य	
₹	असंख्यातमा भाग अधिकः उत्कृष्ट ३३ सागरोषम	२ मना असंख्यातमा भाग अधिक उत्कृष्ट १० साग- रोपम पल्योपमना असंख्यातमा	३ उत्कृष्ट ३ सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक	0	ले इ या ५	ę. o	
तिर्येच	जघन्य उत्कृष्ट अंतर्भुहूर्त	भाग अधिक —>पवम्	→पवम्	→एवम्	≯एवम्	>एवम्	
मनुष्य	99	33	33	35	, ,,	खनस्य प्यम्, केवली जघन्य अंतर्भृद्धत् उत्कृष्ट् दे ऊन पूर्व कोटि	
भवनपति व्यन्तर	ज्ञ० दश हजार वर्षः उ० पल्योपमना असंख्यातमे भाग	जि॰ छण्णकी उत्क्रष्टसे १ समय अधिकः उ० पच्योपमना असंख्यातमे भाग	ज॰ नीलकी उत्कृष्टसे १ समय अधिक ड॰ पत्योप- मना असंख्या तमे भाग	सागरोपम	•	0	
जोतिषी	•	o	0	ज॰ पत्यो पमना ८ भागः उ० १ पल लक्ष वर्ष अधिक	0	•	
वैमानिक ९	•	•	0	ज० १ पल्योपमः उ० २ सागरोपम झझेरी	ज्ञुष्टी तेजोकी उत्कृष्टी से १ समय अधिकः उ०१० सागरो- पम् अंत मुद्दत	ज० १० सागरोप १ समय अधिक उ० ३३ सामरोप	

नाम १	कृष्ण लेह्या	नील लेह्या २	कापोत लेश्या ३	तेजोलेश्या ध	पद्म- हेश्या ५	गुक्क ु हे श्वा
गति १०	दुर्गतिगामी	दुर्गतिगामी	दुर्गतिगामी		क्यानि.	<u> </u>
बायु ११	आयुने अंते हैं न करे तदा मृत्यु.	अंतमुईर्त दोष सदश लेश्याका चरम समय काल	व आयु थाकते स्वरूप होवे ति इ अंतर्मुहूर्त ले	ास लेक्याके	प्रथम स	मय अथवा
खंघ १२	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी	अनंत प्रदेशी
अवगाहना १३	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश	असंख्य प्रदेश
वर्गणा १४	अनंती वर्गणा	एवम्	एवम् एवम्		एवम्	एवम्
अल्पबहुत्व द्रव्यार्थ प्रदेशा १५	३ असंख्य गुणी वर्गणा	२ असंख्य गुणी०	१ स्तोक	४ असंख्य गुणी	५ असंख्य गुणी	६ असंख्य गुणी
बिशुद्ध १६	अविशुद्ध	अविशुद्ध	अविशुद्ध	विशुद्ध	विशुद्ध	विशुद्ध
मशस्त १७	अप्रशस्त	अप्रशस्त	अप्रशस्त	प्रशस्त	प्रशस्त	प्रशस्त
ज्ञान १८	२ ।२।४	रा३।४	२।३।४	२।३।४	२।३।४	२ ।३।४।१
क्षेत्र १९	१ बहु	२ बहु	२ बहु	४ बहु	५ बहु	६ बहु
ऋद्धि २०	१ स्तोक	२ बहु	३ बहु	४ बहु	५ बहु	६ बहु
अल्पबहुत्व	७ विशेष	६ विशेष	५ अनंत गुण	३ संख्या	२ संख्या	१ स्तोक ६ अलेश्यी ४ अनंत

अथ स्थितिका खुलासा—समुचय कृष्ण लेक्याकी स्थितिमे ३३ सागरोपम अंत-में प्रमुद्धी अधिक ते पूर्वापर भवनी अपेक्षा है. अने नारकीने ३३ सागरोपम पूरी कही ते नरक मवनी अपेक्षा सत्र है. इसी तरेह देवतानी लेक्यामे पद्म आदिकमे तिस भव अने पूर्वापर भवनी अपेक्षा सत्रकारनी विवक्षा है. एह समाधान उत्तराध्ययनकी अवचृरिसें जान लेना.

भाव थकी १६ बोलकी (का) अल्पबहुत्वम्

१ जीवके योगस्थान जवन्य आदि सर्वसे स्तोक. २ एकेक कर्मप्रकृतिके मेद असंख्य गुणे.

३ कर्म स्थिति स्थान जघन्य आदि असंख्य गुणे. ४ पट् लेक्या स्थान स्थितिह्नप असंख्य गुणे. ५ अनुभागवंधके अध्यवसाय असंख्य गुणे. ६ कर्म प्रदेश दलह्नप असंख्य गुणे. ७ रस छेद जीव राससे अनंत गुणे. ८ मनःपर्यायज्ञानके पर्यव अनंत गुणे. ९ विभंगज्ञानके पर्यव अनंत गुणे. १० अवधिज्ञानके पर्याय अनंत गुणे. ११ श्रुतआज्ञानके पर्याय विशेष अधिक. १३ मतिअज्ञानके पर्याय अनंत गुणे. १४ मतिज्ञानके पर्याय विशेष अधिक. १५ द्रव्यकी अगुरुलघु पर्याय अनंत गुणे. १६ केवलज्ञाननी पर्याय अनंत गुणे कर्मग्रन्थात्.

(१३) (लेइयाका अल्पबहुत्व)

			;			1
अल्पबहुत्व	कृष्ण लेदया	नील लेश्या	कापोत छेइया	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्र लेश्या
जीव	७ वि	४ वि	४ अनंत	३ असंख्यात	२ संख्यात	१ स्तोक
नारकी	१ स्तोक	२ असंख्यात	३ असंख्यात	o	o	•
वनस्पतिकाय	४ वि	३वि	२ अनंत	१ स्तोक	0	0
पृथ्वीकाय १ अप् २	४ वि	३वि	२ असंख्यात	१ स्तोक	o	•
तेजस्काय वायुकाय विकलेन्द्रिय ३	३ वि	२वि	१ स्तोक	o	o	o
१ तिर्यंच पंचे- न्द्रिय	६वि	५वि	४ असंख्यात	३ संख्यात	२ संख्यात	१ स्तोक
२ संमूर्जिछम पंचेन्द्रिय तिर्यंच	३ वि	२वि	१ स्तोक	0	o	0
३ गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच	६वि	५वि	४ संख्यात	३ संख्यात	२ संख्यात	१ स्तोक
४ तिर्यंच स्त्री	६वि	५वि	४ सं	३सं	२सं	१ स्तोक
संमूर्चिछम तिर्यंच पंचेन्द्रिय	९ वि	८वि	७ असं	o	o	0
५ गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय	६वि	५वि	४सं	३सं	२ सं	१ स्तोक

अल्पबहुत्व	कृष्ण लेश्या	नील लेश्या	कापोत लेइया	तेजोलेश्या	पद्मलेश्या	शुक्त लेश्या
तंमूचिंछम तिर्यंच पंचेन्द्रिय	९वि	८ वि	७ असं	o	o	o
६ तिर्यंच स्त्री	६वि	५वि	४ सं	३सं	२ सं	१ स्तोक
गर्भज तिर्येच पंचेन्द्रिय	९वि	८ वि	७सं	५सं	३सं	१ स्तोक
७ तिर्येच स्त्री	१२वि	११ वि	१० सं	६सं	४ सं	२सं
संमूर्चिछम तिर्यंच पंचेन्द्रिय	१५ वि	१४ वि	१३ असं	o	0	o
८ गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच	९ वि	८ वि	७सं	५ सं	३सं	१ स्तोक
तिर्यंच स्त्री	१२ वि	११ वि	१० सं	६सं	४सं	२सं
तिर्येच पंचेन्द्रिय समुचय	१२ वि	११ वि	१० असं	५सं	३सं	१ स्तोव
९ तिर्येच स्त्री	८ वि	८ वि	७सं	६सं	४सं	२सं
तिर्यंच	१२ वि	११ वि	१० अनंत	५सं	३सं	१ स्तोव
१० तिर्यंच स्त्री	९ वि	८वि	७सं	६सं	४सं	२ असं
१ देवता	५वि	४ वि	३ असं	६सं	२ असं	१ स्तोव
२ देवी	३ वि	२ वि	१ स्तो	४सं	o	o
देवी	८वि	७वि	६सं	१० सं	•	o
३ देवता	५ वि	४ वि	३ असं	९ सं	२ असं	१ स्तोव
४ भवनपति देव ५ व्यंतर देव	४ वि	३वि	२ असं	१ स्तो	0	•
६ भवनपति देवी ७ व्यंतर देवी	४ वि	३वि	२ असं	१ स्तो	0	0

						,
अल्पबहुत्व	कृष्ण लेक्या	नील लेरया	कापोत लेइया	तेजोलेश्या	पश्चलेश्या	गुक्त लेश्या
भवनपति देव व्यंतर देव	५ वि	४ वि	३ असं	१ स्तो	o	•
८ भषनपति देवी ९ व्यंतर देवी	८ वि	७वि	६सं	२सं	o	o
१० जोतिषी देव	o	0	o	१ स्तो	o	0
१० जोतिषी देवी	o	0	0	२सं	Q	0
११ वैमानिक देव	0	o	0	३ असं	२ असं	१ स्तोक
११ वैमानिक देवी	0	•	0	संध	•	0
१२ भवनपति	ও ব্লি	६ वि	५ असं	४ असं	0	0
१२ व्यंतर	११ वि	१० वि	९ असं	८ असं	0	9
१२ जोतिषी	0	0	0	१२ सं	0	0
१२ वैमानिक	0	0	o	३ असं	२ असं	१ स्तोक
१३ भवन० देवी	५ वि	८ वि	३ असं	२ असं	0	0
१३ व्यंतर देवी	९ वि	वि ८ वि	७ वि	६ असं	0	0
१३ जोतिषी देवी	0	0	0	१० सं	0	0
१३ बैमानिक देवी	0	o	•	१ स्तो	•	0
१४ भवन० देव	९ वि	८ वि	७ असं	५ असं	0	0
१४ भवन०देवी	१२ वि	११ वि	१० सं	६सं	0	0
१४ व्यंतर देव	१७वि	१६ वि	१५ असं	१३ असं	0	0
१४ व्यंतर देवी	२० वि	१९वि	१८सं		0	0
१४ जोतिषी देव	•	0	•	२१ सं	•	0
१४ जोतिषी देवी	0	•	0	२२ सं	0	0
१४ वैमानिक देव	0	o	•	३ असं	२ असं	१ स्तोक
१४ वैमानिक देवी	0	o	•	४ सं	o	0

मनुष्यमे ९ बोलकी अल्पबहुत्व तिर्यंचवत् जान लेनी, दशमे बोलकी अल्पबहुत्व मनुष्यदंडकमे निह है. इस वास्ते ९ बोलकी तिर्यंचवत् अल्पबहुत्वं ज्ञेयम्. एह यंत्र *श्रीप्रज्ञाप-नाजीके १७ मे पदथी अने द्जे उदेशेथी षद लेक्याकी अल्पबहुत्व है.

शान्तमूर्ति मुनिमहाराज श्रीमान् इंसविजयजी महाराज

संवत १९१४ आषाढ वदि अमावास्या बडौदा, गुजरात.

जन्म:



मुनिपदः
संवत् १९३५
माह वदि ११
अम्बाला शहर,
पंजाब

पालणपुरनिवासी कान्तिलाल तरफथी तेमना पिताश्री स्व. झवेरी मोहनलाल वस्ताचंदना स्मरणार्थे.

(१४) श्रीपन्नवणा २ पदात् स्थानयंत्र क्षेत्र द्वारम्

जीवांके भेद	खस्थानेन- रहने करके	उपपातेन- उपजने करके	समुद्धात आश्री
पृथ्वी १ अप् २ तेज ३ वायु ४ वनस्पति ५. ए ५ सूक्ष्म पर्याप्ता ५ अपर्याप्ता ५. एवं १० वोल	े सर्वे लोकमे	सर्व लोकमे	सर्वे लोकमे
बादर पृथ्वी १ अप् २ वायु ३ वनस्पति ४. ए चारों का अपर्याप्ता	होकके असंख्यातमे भागमे	सर्विसिछोके- सर्वे छोकमे	सैर्वछोके असंख्यछोकके प्रदेशतुल्यत्वात्
बाद् र तेजस्काय अपर्याप्ता १	मनुष्यलोक	मनुष्यलोकके २ ऊर्ध्व कपाट तिर्यम् लोकका तट	सर्व लोकमे
बादर तेजस्काय पर्याप्ता १	"	लोकके असंख्य भाग स्तोकत्वात्	लोकके असंख्यातमे भाग
बाद् र घायुकाय पर्याप्ता १	लोकके घणे असंख्य भागमे	एवम्	एवम्
बाद् र वनस्पति पर्याप्ता १	लोकके असंख्यमे भाग	सर्व लोकमें वैद्युतमत्वात्	सर्वे लोकमे
रोष सर्व जीव	93	एवम्	एवम्

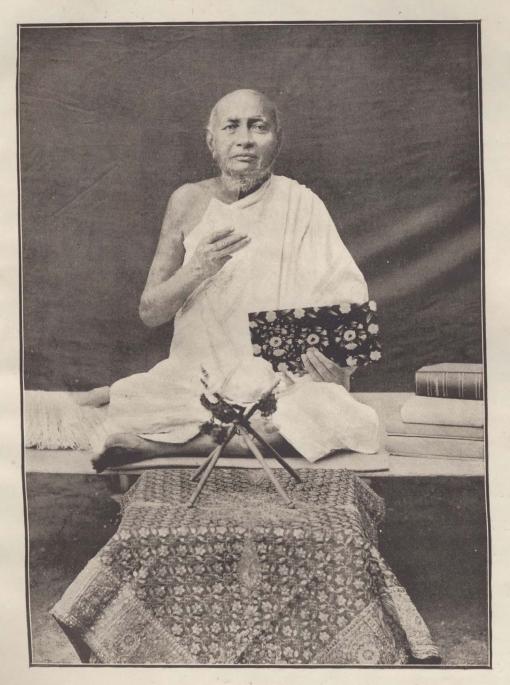
(१५) *श्रीपन्नवणा अवगाहना २१मे पदात् स्पर्शनाद्वारम्

१ समय लोकमां असंख्य लोकना प्रदेशोनी बराबर होवाथी। २ अल्प होवाथी। ३ अत्यंत अधिक होवाथी।

*"जीवस्स णं भंते मारणंतियसमुग्वाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा
पं०? गो०! सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभवाहलेणं आयाभ्रेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेजभागो,
उक्कोसेणं लोगंताओ लोगंते। एगिंदियस्स णं भंते! मारणंतिय० सरीरो० पं०? गो०! एवं चेव, जाव
पुढवि० आउ० तेउ० वाउ० वणप्फइकाइयस्स । बेइंदियस्स णं भंते! मारणंतिय० पं०? गो०!
सरीरपमाणमेत्ता विक्खंभवाहलेणं आयामेणं जह० अंगुलस्स असंखे०, उक्को० तिरियलोगाओ लोगंते,
पवं जाव चउरिंदियस्स । नेरइयस्स णं भंते! मार० जह० सातिरेकं जोयणसहस्सं, उक्को० अधे
जाव अहेसत्तमा पुढवी, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उद्घं जाव पंडगवणे पुक्खरिणीतो। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स णं भंते! गो०! जहा बेइंदियसरीरस्स। मणुस्सस्स णं भंते! गो०! समयखेत्ताओ
लोगंतो। असुरकुमारस्स णं भंते!० जह० अंगुलस्स असं०, उक्को० अधे जाव तचाए पुढवीए हिट्ठिले

Perererererererererererererer

पालनपुरनिवासी दोसी काळीदास सांकळचंद तरकथी तेमना पिताश्री स्व दोसी सांकळचंद दलळाचंदना स्मरणार्थे.



प्रवर्तक सुनिवर्य श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराज.

जन्म सं. १९०७ कार्तक सुद ३ वडोदरा

दीक्षा सं. १९३६ माह सुद ११ अंबाला प्रवर्तकपद सं. १९५७ माह सुद १५ पाटण

मरणांत समुद्धात तेजस अवगाहना	नारकी	भवन० व्यंतर जोतिषी सौधर्म ईशान	३-८ देवलोक	९-१२ देवलोक	९ ग्रैवे- यक ५ अनुत्तर	स्था व र ५	विकलेंद्री ३ तिर्यंच पंचेन्द्री	म च ष्य
ज घ न्य	१००० योजन साधिक पाताल- कलशकी भींति आश्री	अंगुलके असंख्या- तमे भाग स्व आभरण आदि अपेक्षा(से)	ख्यातभे भाग स्त्रीसे भोग करी मरी तिहां उपजे	अंगुळ असं- च्यातमे भाग स्त्रीसे भोग करी तिहां योनिमे पहिळा वीर्य है तिहां उपजे	श्रेणि	अंगुलके असंख्या- तमे भाग	->एवम्	>एवम्
उत्कृष्ट	सातमी नरक	त्रीजी नर- कका चरम अंत	पाताछ- कलशके उपरले २ भागे	अधो- ग्राममे	अधो- ग्राममे	६४ रज्जु प्रमाण	७ रज्जु	७ रज्ज
तिरछा	खयंभूरमण समुद्र	खयंभूरमण समुद्रकी वे(द)दिकांत	खयंभूरमण समुद्र	मनुष्य क्षेत्र	मनुष्य क्षेत्र	१ रज्ज	१ रज्जु	अध रज्जु
ऊध्वे ऊंचा	पंडग वन वापीमे	ईषत् प्राग्भार पृथ्वी	अच्युत देवलोक	अच्युत विमान वारमा देव०	अपना विमान	१४ रज्जु	७ रज्जु	७ रज्ज

चरमंते तिरियं जाव सयंभुरमणसमुद्दस्स वाहिरिल्ले वेदयंते, उहुं जाव द्रसीपन्भारा पुढवी, एवं जाव थिणियकुमारतेयगसरीरस्स । वाणमंतरजोद्दिस्यसोहम्मीसाणगा य एवं चेव। सणंकुमारदेवस्स णं भंते॰! जह॰ अंगु॰ असं॰, उक्को॰ अधे जाव महापातालाणं दोचे तिभागे, तिरियं जाव सयंभुरमणे समुद्दे, उहुं जाव अञ्चओ कप्पो, एवं जाव सहस्सारदेवस्स अञ्चओ कप्पो। आणयदेवस्स णं भंते॰! जह॰ अंगु॰ असं॰, उक्को जाव अधोलोद्दयगामा, तिरियं जाव मणूसखेते, उहुं जाव अञ्चओ कप्पो, एवं जाव आरणदेवस्स अञ्चअदेवस्स एवं चेव, णवरं उहुं जाव सयादं विमाणाति । गेविजागदेवस्स णं भंते !॰ जह॰ विजाहरसेढीतो, उक्को॰ जाव अहोलोद्दयगामा, तिरियं जाव मणूसखेते, उहुं जाव सगाति विमाणाति, अणुत्तरोववादयस्स वि एवं चेव"। (प्रज्ञा॰ सू॰ २७५)

(१६) श्रीपन्नवणा पद ३६मेथी समुद्धातयंत्रम्

७ समुद्धात	•	वेदनी	कषाय	मरणां- \ तिक	वैक्रिय	तैजस	आहारक	केवल	असम- वहता
स्वामी	o	४ गतिना	४ ग तिना	४गतिना	४ गतिना	३ नरक विना	१ मनुष्य	१ मनुष्य	ध गतिर जीव

७ समुद्धात	o	वेदनी	कषाय	मरणां- तिक	वैक्रिय	तैजस	आहारक	केवल	असम- वहता
काल	o	अंतर्भुहूर्त	अंत०	अंत०	अंत०	विना अंत०	अंत०	८ समय	o
अतीत	जघन्य	अनंती	अनंती	अनंती	अनंती	अनंती	१	१	0
काले ∫	उत्कृष्ट	91	,,,	"	,,	7,7	૪	१	
आगे (जघन्य	करे वीन ही वीजो १	नही १ करे	→	ए	व	म्	\rightarrow	0
करेगा, ते	उत्कृष्ट	अनंती करे	अनंत	अनंत	अनंत	अनंत	૪	१	0
अल्पबहुत्व	o	७ विशेष	६ असं०	५ अनंत गुण	४ असं०	३ असं०	१ स्तोक	२ संख्ये [.] य गुणा	८ असं ० गुणा
क्षेत्र	दिशा	દ્દ	દ્	૩, ૪,૬,	६	Ę	nx	Ę	o
विष्कंभ व	ाहुल्य	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	शरीर प्रमाण	सर्व छोक	o
आयाम ल	ां वपणें	,,	"	१४ रज्ज				"	o
विग्रह समय	संख्या	3	esa	३	३	ą	o	o	0
क्रिया	o	३,४,५	₹,੪,५	३,४,५	३,४,५	3,8,4	3,8,4	o	0

(१७) केवल(लि)समुद्धातयंत्रं

प्रथम आउजी(आवर्जी)करण करे—आत्माक्तं मोक्षके सन्मुख करेः पीछे समुद्धात करे. जिस समयमे आत्मप्रदेश सर्व लोकमे व्याप्त करे तिस समये अपने अष्ट रुचक प्रदेश लोकरुचक पर करे इति स्थानांगवृत्तौ ।

समय	8	٦	ર	ક	4	દ્	७	6
6	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय	समय
योग ३	औदारिक	औदारिक- मिश्र	कार्मण	कार्मण	कार्मण	मिश्र	मिश्र	औदारिक
करण ८	दंड करे	कपाट करे	मंथान करे	अंतर पूरे	अंतर संहरे	मंथान संहरे	कपाट संहरे	दंड संहरे शरीरस्थ

समय ८	१ समय	२ समय	३ समय	४ समय	५ समय	६ समय	७ समय	८ समय
ऊध्वे अधो	छोकां त	लोकांत	लोकांत	लोकांत	छोकांत	छोकांत	लोकांत	छोकांत
पूर्व पश्चिम	इारीर- प्रमाण	शरीर- प्रमाण	77	,,	77	शरीर- प्रमाण	शरीर- प्रमाण	शरीर प्रमाण
उत्तर दक्षिण	77	छोकांत	35	57	77	,,,	**	53
जीव- प्रदेश	सर्व इारीरमे	बाह्य स्तोक	अभ्यंतरे स्तोक	लोका- काश तुल्य	लोका [.] काश तुल्य	अभ्यंतर स्तोक	वाद्य स्तोक	सर्व शरीरमे

(१८) श्रीपन्नवणा पद ३६मे सात समुद्धात अल्पवहुत्वम्

द्वार	वेदनी १	कषाय २	मरणांतिक ३	वैकिय ४	तैजस ५	आहारक ६	केवल ७
नरक	३ एंखे	४ संखे	१ स्तोक	२ असं०	0	0	0
भवनपति	३ असं.	35	२ असं.	५ संखे	१ स्तोक	0	o
पृथ्वी	३ विशेष	२ संखे	१ स्तोक	0	o	0	0
अप्	,,	"	7,7	o	o	0	0
अग्नि	33	"	7,	0	o	o	0
वायु	४ वि	३सं	२ असं	१ स्तोक	0	o	o
वनस्पति	३ वि	२ सं	१ स्तोक	o	o	o	o
बेइंद्री	२ असं	३ संखे	55	o	o	0	0
तेंद्री	"	55	37	o	o	0	0
चौरिंद्री	"	"	55	0	o	o	0
तिर्यंच पंचेंद्री	४ असं.	५सं	३ असं	२ असं०	१ स्तोक	o	o
मनुष्य	६ असं	७ सं	५ असं	४ सं	३ सं	१ स्तोक	२ सं
व्यंतर	३ असं	४ सं	२ असं	५ सं	१ स्तोक	o	0
जोतिषी	"	77	7,7	55	55	•	•
वैमानिक	"	77	"	"	>>	0	0

(१९) पन्नवणा कषायपदे अल्पबहुत्वम्

क्रोध द्वार संख्या	मान	माया	लोभ	अकषाय
४ वि	३सं	२सं	१ स्तो	o
१ स्तो	२ सं	३सं	४ वि	0
२ वि	१ स्तो	93	55	•
1)	7,7	93	,,	0
57	55	55	,,,	0
,,,	33	,,	"	0
***	,,	37	***	o
71	,,	,,	59	0
53	,,	33	>>	o
27	33	3 5	,,	o
"	>>	7,5	17	•
				१ स्तो
१ स्तो	२सं	३सं	४ वि	o
77	>>	,,,	,,,	0
33	53	53	355	0

आचारांगात् षोडश (१६) संज्ञाखरूप

१ आहारसंज्ञा—आहार अभिलाषाह्मप तैजसग्ञरीरनामकर्म असाताके उदय. २ भय-संज्ञा—त्रासह्मप मोहकर्मकी प्रकृतिके उदय. ३ मैथुनसंज्ञा—१ स्त्री २ पुरुष ३ नपुंसक इन तीनो वेदांके उदय. ४ परिग्रहसंज्ञा—मूर्च्छाह्मप मोहनी(य)कर्मके उदय. ५ सुखसंज्ञा—साता-वेदनी(य)के उदय करके. ६ दुःखसंज्ञा—दुःखह्मप असातावेदनी(य)के उदय. ७ मोहसंज्ञा— मिथ्याद्र्यनह्मप मोहकर्मके उदय. ८ विचिकित्सासंज्ञा—चित्तविष्ठुतिह्मप मोहनी(य) अनं ज्ञानावरणी(य)के उदय. ९ क्रोधसंज्ञा—अप्रतीति(अप्रीति १)ह्मप मोहकर्मके उदय. १० सानसंज्ञा—गर्वह्मप मोहकर्मके उदय. १२ लोभ-

१ आचारांगमांथी सोळ संज्ञाओनुं खरूप ।

संज्ञा—गृद्धिरूपा मोहकर्मके उदय. १३ शोकसंज्ञा—विप्रलाप वैमनस्यरूपा मोहकर्मके उदय. १४ लोकसंज्ञा—स्वच्छंदे घटित विकल्परूपा लोकरूढि—श्वान यक्ष है, विप्र देवता है, काकाः पितामह(ाः) अर्थात् काक दादा पिडदादा है, मोरकी पांखकी पवनसे मोरणीके गर्भ होता है इत्यादि रूढि लोकसंज्ञा. ज्ञानावरणी(य)का क्षयोपश्चम मोहनी(य)के उदयद्धं है. १५ धर्मसंज्ञा—श्वांत्यादिसेवनरूपा मोहनी(य)के क्षयोपश्चमसे होय. १६ ओघसंज्ञा—अन्यक्त उपयोग-रूपा, वेलडी रूंख पर चडे है. ज्ञानावरणी(य) क्षयोपश्चमसे है. उपरी १५ संज्ञा तो संज्ञी पंचेंद्री, सम्यण्हिं वा मिथ्यादृष्टिने है यथासंभव. ओघसंज्ञा एकेंद्रादि जीवांके ज्ञान लेनी. ए सर्व निर्यक्ती.

(२०) अथ आहारादि संज्ञा ४ यंत्रं स्थानांगस्थाने ४ उद्देशे ४ वा पन्नवणा संज्ञापद

४ संज्ञा नाम	१ आहारसंज्ञा	२ भयसंज्ञा	३ मेथुनसंज्ञा	४ परिग्रहसंज्ञा
नारकी	२ संख्येय गुणे	४ संख्येय गुणे	१ स्तोक सर्वेभ्यः	३ संख्येय गुणे
तिर्यग्	ષ્ઠ ,,	₹ "	२ संख्येय गुणे	१ सर्वसें स्तोक
मनुष्य	₹ ,,	१ स्तोक सर्वेभ्यः	ષ્ઠ ,,	३ संख्येय गुणे
देवता	१ स्तोक सैर्वेभ्यः	२ संख्येय गुणे	₹ ,,	૪ ,,
कारण शः	कोठेके रीते हृया	धीं(घे)र्यहीनात्	मांस रुधिरकी पुष्टाइसें	मूच्छा होनेते(सें)
चार २	श्रुधा लगनेसें	भयके उदय	वेदके उदयते(सें)	लोभके उदयते(सें)
"	आहारके देखे सुनेसें	भयके वस्तुके देखनेसें	स्रीके देखे सुनेसें	उपगरणके देखे सुनेसें
"	आहारकी चिंता करे(रने)सें	भयकी चिंतासें	कामभोगकी चिंतोना करे(रने)सें	उपगरणकी चिंता करनेसें

(२१) सांतर निरंतर द्वारम्

गतिभेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता १ समय १२ मुहूर्त १ जीव एक समय उपजे	
अंतर जघन्य	१ समय	0	१ समय		
,, उत्कृष्ट	१२ मुहूर्त	o	१२ मुहूर्त		
जीवसंख्या जघन्य	१ जीव एक समये उपजे	प्रतिसमय अनंते उपजे	र जीव एक समय उपजे		

⁹ झाड । २ निर्युक्तिने विषे । ३ वधाथी । ४ धीरज ओछी होवाथी ।

गति भेद	नारकी	तिर्यंच	मनुष्य	देवता	
	श्रेणिके असंख्यातमे भाग	अनंते उपजे	पल्यके असंख्यमे भाग	श्रेणिके असंख्य मे भाग	
निरंतर प्रमाण जघन्य	२ समय निरंतर	सर्वे अद्धा	२ समय निरंतर	२ समय निरंतर	
" " उत्कृष्ट	आविकके असंख्यमे भाग	"	आवितके असं- ख्यमे भाग	आविलके असं ख्यातमे भाग	
जीवसंख्या जघन्य	२ जीव दो समयामे उपजे	अनंते समयसे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे	२ जीव दो समयामे उपजे	
,, उत्कृष्ट	श्रेणिके असंख्यमे भाग	सर्वे अद्धा	पल्यके असंख्यमे भाग	श्रेणिके असंख्यमे भाग	
सांतरोववन्नगा	२ असंख्य गुणे	o	२ असंख्य गुणे	२ असंख्य गुणे	
	१ स्तोक	0	१ स्तोक	१ स्तोक	

(२२) भाषाके पुद्गल ५ प्रकारे भेदाय ते यंत्रम् पन्नवणा पद ११

भेद	खें(खं)डा भेद १	प्रतरमेद २			उत्करिका भेद ५
अ		अभ्रकके पुद्रलवत् भाषा बोल्यां पछे भेदाय	अन्नके आटेकी तरे(ह) भाषा बोल्यां पछे भेदाय	तरोवरकी अत्रेड- वत् त्रेड हो कर भेदाय	एरिंडकी मटरकी मूंग उडदकी फली स्केसे दाणा उछलें
अल्पबहुत्व	५ अनंत गुणे	ध अनंत गुणे	३ अनंत गुणे	२ अनंत गुणे	१ स्तोक

भाषास्त्ररूपयंत्रं प्रज्ञापना पद ११

आदि—भाषाकी आदि जीवस्युं. २ उत्पत्ति—भाषाकी उत्पत्ति औदारिक १ वैक्रिय २ आहारि(र)क ३ शरीरसें. ३ भाषाका संस्थान—भाषाका संस्थान वज्रका आकार. जैसे वज्र आगे पीछे तो विस्तीर्ण होता है अने मध्य भागमे पतला होता है ऐसा संस्थान भाषाका. कंसात् ? लोकच्यापे तदलोक सरीषा संस्थान है. ४ (स्वर्श)—भाषाके पुद्गल तीत्र प्रयत्तसे बोलनहारके लोकके पट्ट दिग् चरम अंतक्तं चार समयमें स्वर्शे. ५ द्रव्य—भाषा द्रव्यथी अनंतप्रदेशी स्कंध लेवे. ६ क्षेत्र—भाषा क्षेत्रथी असंख्य प्रदेश अवगाद्या स्कंध ग्रहण करे. ७ काल—भाषा कालथी यथायोग्य अन्यतर स्थिति सर्व प्रकारनी. ८ भाव—भाषा भावथी वर्ण ५, गंघ २, रस ५, स्पर्श ८ एह ग्रहण करे. ९ दिशा—भाषाके पुद्गल षट्ट ६ दिशाथी लेवे.

१० स्थिति—भाषाकी स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अंतर्मुहर्त. ११ अंतर—भाषाका अंतर जघन्य अंतर्महर्त, उत्कृष्ट वनस्पित काल. १२ ग्रहण—भाषाके पुद्गल कायायोगसें ग्रहण करे. १३ च्युत्सर्ग—भाषाकी वर्गणाकूं वचनयोगसे तजे—छोडे. १४ निरंतर—भाषाके पुद्गल प्रथम समये लेवे, द्जे समय नवे ग्रहण करे अने पीछले छोडे. एवं प्रकारे तीजे ४।५।६ यावत् अंतर्महर्त ताइं लेवे पीछके छोडे; अंतसमये ग्रहण न करे, पीछले छोडे. इहां पहले समय तो लेवे ही अने चरम समयमे छोडे अने मध्यके असंख्य समयामे ले(वे) वी अने छोडे वी. ए दो बातें एकेक समयमे होवे.

(२३) दारीर पांचका यंत्रं श्रीप्रज्ञापना पद २१ मेथी.

नाम १	o	औदारिक १	वैकिय २	आहारक ३	तैजस ४	कार्मण
स्वामी २	o	मनुष्य १ तिर्येच २	४ गतिना	चौदपूर्वधर मनुष्य	४ गतिना	४ गतिना जीव
संख	ान ३	६ षट्	२ मूले सम० १, हुंड २ उत्तर नाना	समचतुरस्र	नाना संस्थान	नाना संस्थान
प्रमाण	जघन्य	अंगुलके असं- ख्यमे भाग	अंगुलके असं- ख्यमे भाग	देशोन १ हस्त	अंगुलके असं- ख्यमे भाग	अंगुलके असं- ख्यमे भाग
ય	उत्कृष्ट	१००० योजन	१,००,००० योजन	१ हस्त प्रमाण	१४ रज्जु प्रमाण	सर्व लोक प्रमाण
-	द्रल ना ५	३।४।५।६ दिशासे	६ षट् दिशासे	६ षट् दिशासे	३।४।५।६ दिशासे	३।४।५।६ दि शासे
	औदारिक	o	भजना है	भजना है	नियमा है	नियमा है
परस्पर पांच	वैक्रिय	भजना है	o	0	"	7,
शरीरका	आहारक	नियमा है	0	o	77	57
संयोग द्वार ६	तैजस कार्मण	भजना है	भजना है	भजना है	o	0
अल्प- बहु-	द्रव्यार्थे	३ असंख्येय गुणा	२ असंख्येय गुणा	१ सैवेंभ्यः स्तोक	ध अनंत गुणा	४ अनंत गुणा
^{त्व} ७	प्रदेशार्थ	>>	"	77	" "	دې ,,
೦ ಸ್ಟ್	त्रभी ।					

१ बधार्थी।

नाम १	0	औदारिक १	वैक्रिय २	आहारक ३	तैजस ४	कार्मण ५
द्रव्यार्थे	द्रव्यार्थे	३ असं० गुणा	२ असं० गुणा	१ स्तोक	७ अनंत गुणा	७ अनंत गुणा
प्रदेशार्थे उभय	प्रदेशार्थे	६ असंख्येय गुणा	در ,,	४ अनंत गुणा	٤ ,,	۹ ,,
	जघन्य	१ स्तोक	₹ "	४ असंख्येय गुणा	२ विशेषाधिक	२ विशेषाधिक
अव गाह- नाकी अल्प-	বক্ষেদ্	२संख्येय गुणा	३ संख्येय गुणा	१ स्तोक	४ असंख्येय	४ असंख्येय गुणा
बहुत्वम् ८	जघन्य	१ स्तोक	३ असंख्येय गुणा	४ असंख्येय	२ विदोषाधिक	२ विशेषाधिक
	उत्कृष्ट	६ संख्येय गुणा	७संख्येय गुणा	५ विशेषाधिक	८ असंख्येय	८ असंख्येय गुणा

योनियंत्र पन्नवणा पद ९ थी

१ संवृत योनि ते ढंकी हुई; देव, नरक, स्थावरनी. २ विवृत—उघाडी योनि, विकलेंद्रीनी. ३ संवृतविवृत—ढंकी वी उघाडी वी, विकलेंद्री वा गर्भजवत्. ४ सचित्त योनि—जीवप्रदेश संयुक्त, स्थावरादिवत्नी. ५ अचित्त—जीव रहित योनि, देवता नारकीनी. ६ मिश्र योनि—सचित्त अचित्त-रूप, गर्भजनी. ७ शीत योनि—शीत उत्पत्तिस्थान, नारक आदिनी. ८ उष्ण योनि—उष्ण उत्पत्तिस्थान; नरक, तेजस्काय आदिकनी. ९ शीतोष्ण—उभय उत्पत्तिस्थान; मनुष्य, देव, आदिकनी. १० शंखावर्त योनि, स्वीरत्वकी; जीव जन्मे नहि. ११ क्र्मों नत योनि—कंछवत् ऊंची; तीर्थकर, चक्री, बलदेव (और) वासुदेवनी माता. १२ वंशीपत्रा योनि; पृथग्जननी माता, सामान्य स्त्रीनी.

(२४) ८४ लाख योनिसंख्या

पृथ्वीकाय	७ लाख	डिइंदी	२ लाख
अप्काय	59 99	तेइंद्री	₹ ,,
तेजस्काय	,, ,,	चौरिंद्री	₹ "
वायुकाय	"	देवता	ક ,,
बादर निगोद	33 33	नारकी	૪ ,,
स्क्ष्म निगोद	» »	तिर्येच पंचेंद्री	8 ,,
प्रत्येक वनस्पति	₹o ,,	मनुष्य	રેક "

१ काचबानी पेठे।

(२५) कुल १९७५००००००००० एक कोडाकोडी ९७५० लाख कोड कुल है.

पृथ्वी	१२ लाख कोटि	जलचर	१२॥ छाख कोटि
अप्	9 ,, ,,	स्थलचर	₹o ,,,
तेउ	3 ,, ,,	खेचर	१२ ,, ,,
वायु	٥ ,, ,,	उरग	ξο,,
वनस्पति	२८ ,, ,,	भुजग	٩ - ,,, ، ، ,, ، ، ، ، ، ، ، ، ، ، ، ، ،
बेंद्री	9 ,, ,,	मनुष्य	१२ ,, ,,
तेंद्री	۷,	देवता	
चौरिंद्री	,, ,,	नारकी	5 8 7 4 5,5 2 ,5

अथ संघयणखरूपम्

१ वज्रऋषभनाराच—संहनन-अस्थिसंचय, वज्र तो कीली १, ऋषभ-परिवेष्टन २, नाराच-उभय मर्कटबन्ध ३, दोनो हाड आपसमें मर्कटबंधस्थापना, ऋषभ उपिर वेष्टन-स्थापना. वज्र उपिर तीनो हाडकी भेदनेहारी कीली ते स्थापना. काली रेषा वज्र कीली है.

२ ऋषभनाराच - ऋषभनाराचमे उभय मर्कट बंध १, नाराच उपरि वेष्टन, कीली नहीं, स्थापनार्डस.

- ३ नाराच-मर्कटबंध तो है; अने वेष्टन अने कीली एह दोनो नहीं. स्थापनाः
- ४ अर्धनाराच-एक पासे कीली अने एक पासे मर्कटबंध ते अर्धनाराच खापना.
- ५ की लिका—दोनो हाडकी वींधनेहारीनि केवल एक कीली, मर्कटबंध नही ते. की लिकाकी स्थापना.
- ६ सेवार्त दोनो हाडका छेहदाही स्पर्शे है, ते सेवार्त. छेदवृत्त छेयट इति नामांतर. स्थापना.

अथ षट् संस्थानखरूप यंत्रं स्थानांगात्

१ समचतुरस्र—सम कहीये शास्त्रोक्त रूप, चतुर् कहीये चार, अस्र कहीये शरीरना अवयव है जेहने विषे ते समचतुरस्र; सर्व लक्षण संयुत एक सो आठ अंगुल प्रमाण ऊंचा.

२ न्ययोधपरिमंडल - न्यग्रोध-वडवत् मंडल नामि उपरे. परि कहीये प्रथम संस्थानके लक्षण है; एतावता वडवत् नीचे नामि ते लक्षण हीन; वड उपरे सम तैसे नामि उपर सुलक्षणा.

३ सादि—नाभिकी आदिमे एत(ट)ले नाभिसे हेठे लक्षणवान अने नाभिके उपरि लक्षण रहित ते 'सादि' संस्थान कहीये.

४ कुन्ज—हाथ, पंग, मस्तक तो लक्षण सहित अने हृदय, पूठ, उदर, कोठा एह लक्षण हीन ते 'कुन्ज' संस्थान.

५ वामन—जिहा हृदय, उदर, पूठ ए सर्व लक्षण सहित अने शेष सर्व अवयव लक्षण हीन ते 'वामन'; कुन्जसे विपरीत.

६ हुंड-जिहा सर्व अवयव लक्षण हीन ते 'हुंड' संस्थान कहीये.

(२६) १४ बोलकी उत्पाद (उत्पात) भगवती (श० १, उ० २, सूं० २५).

असंयत भव्य द्रव्यदेव. चरणपरिणाम शुना सिथ्यादृष्टि भव्य वा	जघन्य	उत्कृष्ट
अभव्य द्रव्ये क्रियाना करणहार, निखिल समाचारी अनुष्ठान युक्त, द्रव्य	भवनपतिमे	उपरले ग्रैवेय
छिंगधारी पिण समदृष्टीना अर्थ न करणा ते निखिल किया केवलसे	उपजे े	कमे २१मे देव
अविराधितसंयम. प्रवज्याके कालसे आरंभी अभन्नचारित्रपरिणाम प्रमत्त गुणस्थानमे वी चारित्रकी घात नहीं करी.	प्रथम देवलोके	सर्वार्थसि- द्धिमे २६
विराधिक संयत. उपरलेसे विपरीत अर्थ अने सुकुमालका जो दूजे देवलोके गई सो उत्तर गुण विराधि थी इस वास्ते अने इहां विशिष्टतर संयम विराधनाकी है.	भवनपतिमे	प्रथम देव- लोक
श्रावक आराधिक. जिसने व्रत ग्रहण थूलसें लेकर अखंड व्रत पालक श्रावक	प्रथम देवलोके	१२ में खर्ग
विराधक श्रावक. उपरिले अर्थसे विपरीत अर्थ जानना.	भवनपतिमे	जोतिषीमे
तापस पड्यो हूये पत्रादिके भोगनेहारे बालतपस्त्री	"	93_
असंज्ञी. मनोलब्धि रहित अकाम निर्जरावान्	7,5	व्यंतरमे
कंदिंपि. व्यवहारमे तो चारित्रवंत भ्रमूह वदन मुख नेत्र प्रमुख अंग मटकावीने औरांकूं हसावे ते कंदिंपिक	"	प्रथम देव- लोके
चरगपरिवाजक. त्रिदंडी अथवा चरग-कछोटकायः परिवाजक- कपिल मुनिना संतानीया.	>>	ब्रह्मलोके ५ स्वर्गे
किल्विषिक. व्यवहारे तो चारित्रवान् पिण ज्ञानादिके अवर्ण बोले, जमालिवत्.	99	छट्ठे देवलोके
तिर्यंच. गाय घोडा आदिकने पिण देशविरति जानना इति वृत्तौ.	39	८ मे देव- लोके
आजीविकामति. पाखंडिविशेष आजीविका निमित्त करणी करे, गोशाळाना शिष्यानी परें.	,,,	१२ मे खर्गे
आभियोगिक. मंत्र यंत्रे करी आगलेकू वश करे. विशेषार्थ वृत्तौ.	7,9	7,7
स्वितंगी दर्शनव्यापन्न. िंग तो यतिका है, पिण सम्यक्त्वसे भ्रष्ट है, निह्नव इत्यर्थः.	,,	२१ में देव होक
	1	1

१ "अह भंते ! असंजयभवियद्व्वदेवाणं १ अविराहियसंजमाणं २ विराहियसंजमाणं ३ अवि-

(२७) कालादेशेन समदेशी अपदेशी

(कालकी अपेक्षासे सप्रदेशी अप्रदेशी)	आ हा र क	अ णा हा री		नो भ व्य नो अ भ व्य	सं	थ सं इी	नो सं हो असं ही	स हे शी	रू जी ल का पो त	ते जो हे इय	प स शुक्त	अ ले शी	म्य	ध्या ह	भि श्र हि	य त	सं	वे श हित		क षा यी	को ध क पा य	न	ले भ क पा य	अ क पा यी
जीवाणं	सप्रतेअ	स अ प्र	स	3	3	3	3	स प्र	स अ प्र	3	73	ą	3	3	દ્ધ	3	જ	3	3	3	स अ प्र स	अ भं ग	अ भ ग	3
नारकाणां	3	६	3	0	3	६	0	3	3	0	0	0	3	3	દ્દ	0	į	0	0	3	3	દ	ફ	0
देव-भवनपति १० व्यंत्र जोतिषी वैमार निक	3	ફ	त्र	0		હ	0	3	ą	સ્	3	0	ą	3	(Eq	0	3	0	•	3	æ	લ	3	0
पृथ्वी अप् वनस्पति	स अ प्र स	स अ प्र	स अ प्र	0	0	स अ प्र	0	स अ प्र	स अ प्र	લ	0	0	0	स अ प्र	•	0	स अ प्र	•	0	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	•
तेउ वायु	स अ प्र स	स अ प्र	स अ प्र	0	0	स अ प्र	c	"	59	0	0	0	0	,,	0	0	57	0	0	53	75	"	77	•
विगछेंद्री ३	3	દ્	3	0	0	3	0	જ	æ	0	0	0	દ્ય	3	0	0	સ	0	0	ર	3	a	ર	0
तिर्यंच पंचेंद्री	3	દ્દ	o 3	0	3	ર	0	ત્ર	3	3	3	0	3	3	દ્	•	n	Ą	0	ત્ર	3	34	3	•
मनुष्य	3	६	3	0	3	દ	3	3	3	3	3	६	3	3	દ	3	ગ	3	0	3	3	3	3	3
सिद्धानां	0	3	0	३	0	0	३	0	0	0	0	3	3	0	0	0	0	0	3	0	0	0	0	3

राहियसंजमासंजमाणं ४ विराहियसंजमासंजमाणं ५ असन्नीणं ६ तावसाणं ७ कंदिण्याणं ८ चरग-परिव्वायगाणं ९ किव्विसियाणं १० तेरिव्छियाणं ११ आजीवियाणं १२ आभिओगियाणं १३ सिंहः गीणं दंसणवावन्नगाणं १४ एएसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स किंहं उववाए पण्णत्ते १ गोयमा! अस्संजयभवियद्व्वदेवाणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं उविरागिविज्ञएसु १, अविराहियसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कृषे उक्कोसेणं सव्बद्धसिद्धे विमाणे २, विराहियसंजमाणं जहन्नेणं

भगवती श० ६, उ० ४, सू० २३९

वि भारति	ति	अ व धि	म नः पर्थ व	के व ल ज्ञा नी	ओ घ अ ज्ञा नी	श्रु	वि भं ग ज्ञा नी	स् यो गी	न	यो गी	यो गी	सा का रो प यु क	अ ना को प युक्त	स्वेदी	स्त्री एक व वे दी	न पुंज क वेदी	अ तेव दी	स शरीरी ते ज स का में ण	रि क	बैकिय शरीरी	आ हा र क शि	अ श री री	आ हा रादि ४ पर्या प्र	भाषा म न २ पर्या स	₹	री रादि व	भा षा म न अ प र्या स
, mar	, mar	34	3	સ	nv	तर	સ	स	ત્ર	a	સ	अ भं ग	अ भं ग	æ	34	m	ux	स ० अप्र	૱	ૠ	હ	જ	अ भं ग	ત્ર	अ भं ग	अ भं ग	3
3	જ	વ	0	0	3	3	a	3	3	3	0	3	3	3	0	3	0	३	0	3	0	0	3	3	દ્	દ	Ę
Ą	જ	4	9	0	જ	ga/	સ્	3	સ	જ	0	3	37	સ	na na	0	0	न्न	0	3	0	0	æ	ર	ફ	હ્ય	દ્ધ
0	0	0	0	0	 अ भं ग	अ भं ग	•	अ भं ग	•	अ भं ग	0	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	0	अ भं ग	0	अ भं ग	अ भं ग	o	0	0	अ भं ग	0	- अ भं ग	अ भं ग	0
0	0	0	0	0	"	"	0	57	0	"	0	17	,,	"	0	"	0	,,	"	0	0	0	"	0	17	"	0
Ę	દ્દ	0	0	0	a	ર	•	<u>ર</u>	० अ	3	0	3	ર	3	0	३	0	ર	3	•	0	0	3	3 0	દ્	na,	3.
3	ર	3	0	•	3	3	3	3	n	3	0	3	3	3	3	ર	0	3	3	3	0	0	3	ર	દ્	જ	3
त्य अ	3	3	३	3	3	3	3	3	3	3	દ્	3	3	3	3	3	રૂ	३	3	3	ફ	0	3	3	દ્દ	(CV	६
3	0	0	0	3	0	0	0	0	0	0	3	3	3	0	0	0	3	0	0	0	0	3	0	0	0	0	0

भवणवासीसु उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ३, अविराहियसंजमा० २ णं जह० सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं भच्चप कप्पे ४, विराहियसंजमासं० जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं जोतिसिएसु ५, असन्नीणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु ६, अवसेसा सन्वे जह० भवणवा०, उक्कोसगं वोच्छामि— तावसाणं जोतिसिएसु, कंदिपयाणं सोहम्मे, चरगपरिव्वायगाणं वंभलोए कप्पे, किव्विसियाणं हंतगे कप्पे, तेरिव्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं अचुए कप्पे, आभिओगियाणं अचुए कप्पे, सिंहंगीणं दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेवेजापसु ॥ १४॥" (सू. २५)

(२८) आहारी अणाहारिक

												-												
	रि क	व्य अ भ व्य	ने भ व्य नी अ भ व्य	सं श्री	सं श्री	नो सं शी नो अ सं शी	सलेशी कणनी ल कापो त	श्य		अ ले री	स म्य ह ष्टी	ह	मिध्या ह	य त	अ सं य त	श्रा व क	य	स क षा यी	क्रो घ	मा न मा या	भ क	अ क षा यी	नी	मिति श्रीत इसी
जीवानां	अ भं ग	अ भं ग	अ णा हा री	3	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	3	3	अ णा हा री	3	आ हा री	अ भं ग	3	अ भं ग	आ हा री	क अ	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	ą	2
नारकाणां	જ	na'	0	3	ફ	0	93	o	0	o	જ	""	m	0	3	0	0	३	સ	લ	cv	0	34	1
रेव-भवनपति यंतर जोतिषी वैमानिक	n	સ	0	æ	w w 0 0	•	חל חל 0 0	ર	3	0	W	77	na	0	ą	0	0	જ	હ	હર	Ą	•	n	D.
एकेंद्री पृथ्वी ुआदि ५	अ भं ग	भं	0	0	अ भं ग	0	अभंग	CC	0	•	0	•	अ भं ग	0	अ भं ग	0	0	0	अ भं ग	अ भं ग	अ भं ग	0	0	
विगलेंद्री	३	વ	0	0	3	0	3	0	0	0	દ્	0	३	0	ર	0	0	3	3	3	3	0	દ્	•
तियंच पंचेंद्री	nx	3	0	Ą	3	0	જ	Ą	3	0	સ	आ हा री	સ્	0	જ્ઞ	आ हा री	0	Ą	Ą	સ	સ	0	ર	
मनुष्याणां	R	3	. 0	n	હ્	Ą	3	3	સ્	अ णा हा री		,,	સ	ą	34	"	•	ત્ર	3	3	Ą	Ą	ą	
सिद्धानां	अ णा हा री		अ णा हा री		0	अ णा हा		0	0	"	अ णा हा री	0	0	0	0	0	अ णा हा री	0	0	0	0	अ णा हा री	अ णा हा री	

श्रीपन्नवणा पद २८ मे उ. २

व न	रः प्	के व ल ज्ञा नी	नी	वि भं ग ज्ञा ती	स्योगी	न च	गी	अ यो गी	साकारो- पयुक्त अना- कारोप- युक्त	संवेदी	स्त्रीत द प्रेश्व द	न पुरस् क वेदी	अ वे दी	री	रि क	वैकिय आहार करारीरी	तै ज स का मं ण	अ श्र री	आ- हार १ शरीर शन- प्राण ३ इन्द्रि- य ४ भाषा मन ५	र अ प्रश्नी ती	री र अ	न्द्र	न प्रा ण अ	भा पा म न अ प्रांगिती
	्र आ हा री	अ भं ग	अभंग	સ	अ भं ग	3	अ भ	अ . णा हा	अभंग	अ भं ग	24	अ भ ग	अ भं ग	अ भं ग	3	आ हा री	अ भं ग	अ णा हा	ą	अ णा हा री	अ भं ग	अभंग	अ भं ग	अ भं ग
	0	0	ą	3	સ	3	3		3	æ	0	34	0	3	0	"	3	0	आ हा र क	,,,	æ	ę	EG	ev.
36	0	0	ત્ર	3	3	3	3	0	ą	3	સ	0	0	3	0	"	32	0	"	>>	હ	ફ	Ę	E
•	0	0	अभंग	1 0	. 0		31	io	अभंग	थ भं ग	0	अभंग	1	अ भं ग	ह		अ भं ग	0	55	7:	अ भं ग	अभंग	अ । भे ग	भं
0	0	0	3	0	3	. 5		{ o	રૂ	3	0	3	0	3	. 99	0	3	. 0	"	,	, ર	3	3	3
आ हा री ०		0	a	अ ह री		-		\	3	3	3	W	0	*	51	अ हा र ०	3	0	, ,,	,	, 3	74	93	3
3	अ हा री	1	æ	,	,	1	3 3	अ ण ह री	τ ₃	n n	3	, a	3	, na	Da	अ हा र	3	0	32	,	, 8	ફ	8	ર ૬
	0	अ ण हा	T .		- - -	2	0	ο,	अणा-		•		अ ण हा	1	• 0	0	o	3	0		9			•

(२९) चरम अचरम यंत्र भगवती दा० १८, उ० १, सू० ६१६

	१ भा व	आहार २ संक्षी ७ असंक्षी ८ सलेशी १० यावत् शुक्क लेशी १६ मिथ्यादृष्टि १९ मिश्रदृष्टि २० संयत २१ असंयत २२ संयता- संयत-श्रावक २३ सकषायि २५ यावत् लोभकषायि २९ मति- क्षानी ३२ यावत् मनःपर्यवक्षानी ३५ अक्षानी ४० सयोगी ४१ यावत् कायायोगी ४४ सवेदी ४८ यावत् नषुंसक्वेदी ५१ सशरीरी	सम्य- ग्दृष्टि १८ सङ्गानी ३१ साकारो पयुक्त ४६ अना	भ व सि जि क	अभ व सि द्धि क ४	नोभव- सिद्धिक ६ नोअभव- सिद्धिक ६ नोसंयत नोअसंयत नोसंयता- संयत २४ अश्रीरी	नोअ- संज्ञी ९ अलेशी १७ केवल- ज्ञानी ३६	अक- षायी ३० अवेदी ५२
		यावत् नपुंसकवेदी ५१ सशरीरी ५३यावत् कार्मणशरीरी ५८पांच पर्याप्ती ६४ पांच अपर्याप्ती ६९ ५२	४६ अना कारोप- युक्त ४७ ५	२	হ	अशरीरी ५ ९ ३	३६ अयोगी ४५ ४	૨
जीवा- नाम्	चरम	चरम अचरम	अचरम	-	अच- रम	अचरम	अचरम	अचरम
२४ दं ड के	चरम अच- रम	"	चरम अ च रम	चरम अच- रम	"	o	चरम	चरम अचरम
सिद्धा- नाम्	अच- रम	•	अचरम	0	0	अचरम	अचरम	अचरम

(३०) पढम अपढम यंत्रम् भगवती शा. १८, उ. १, सू० ६१६

भा	आहारक २ मव्य २४ अमव्य ५ संज्ञी ७ असं- ज्ञी ८ सलेशी १० यावत् ग्रुक्कलेशी १६ मिथ्यादिष्ट १९ असंयत २२ सकपायी २४ यावत् लोभकपायी २१ यावत् लोभकपायी ४१ यावत् कायायोगी ४१ यावत् कायायोगी ४४ सवेदी ४८ यावत् नपुंसकवेदी ५१ सशरीरी ५३ औदारिक ५४ वैक्रिय ५५ तैजस आहारक ५६ ५७ कार्मण ५८ पांच पर्याप्ती ६४ पांच अपर्याप्ती ६९	साकारोप- युक्त ४६ अनाकारो- पयुक्त ४७	दष्टि १८ सज्ञानी २३	सिद्धिया (क) नो अभव- सिद्धिक नोसंयत नोअसं- यत यतासं- यत २४ अशरीरी ५९	नोसंक्षी नोअ- संज्ञी ९७ केवल- ज्ञानी ३६ अयोगी ४५	अं कः पा यी ३० अ वे दी ५२	सिश्रद्धि २० संयत २१ संयता- संयत २३ मतिज्ञान ३२ यावत् मनःपर्यव- ज्ञानी ३५ आहारक श्रीर ५६
	४६	ર	२	3	8	२	2

१ आतुं लक्षण भगवती (सू. ६१६)नी निम्नलिखित गाथामां नजरे पडे छेः— "जो जेण पत्तपुव्वो भावो सो तेण अपढमो होइ। सेसेसु होइ पढमो अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥"

जीव	अ प ढ म	अपढम	अपहम पढम	पढम अपढम	पढम	पढम	पढम [.] अप- ढम	पढम अपढम
४ दंडके	"	, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	51	पढम अपढम	′ 0	55	55	55
ाद्वानाम्	प ढ म	0	पढम	पढम	पढम	73	पढम	0

ंजीवाहारग १-२ भव ३ सण्णी ४ लेसा ५ दिहि ६ य संजय ७ कसाए ८। णाणे ९ जोगुवओंगे १०-११ वेए १२ य सरीर १३ पज्जत्ती १४॥"ए मूल गाथा (ए०७३३)॥ (३१) भगवती द्या० २६, उ०१ (स्व० ८२४)

	सम	यत्तवे १ वाद	मिश्रे २वाद	मिथ्यात्वे ३ वाद	ओघिके ४ वाद
जीव मनुष्य २ ४६	२ स याव ८ नो अवेदी	ति १ सम्यग्दृष्टि मुच्चयज्ञानी ३ त् केवलज्ञानी संज्ञोपयुक्त ९ ११० अकषायी अयोगी १२	सम्यग्- मिथ्याहर्षि	अज्ञानी ३ मति- श्रुत अज्ञानी ४-५	सलेशी प्रमुख ७ शुक्कपक्षी ८ संज्ञा ४।१२ सवेदी १३ कोधादि स्त्री पुरुष नपुंसक १६ सकषायी प्रमुख पांच २१ उपयोग दो २३ सयोगी प्रमुख ४, एवं सवे बोल २७ हूथे.
पंचेन्द्री तिर्यंच	३९	सम्यग्दिष्टि १ ज्ञानी २ मति- ज्ञानादि ३, एवं बोल ५.	>>	कृष्णपक्षी आदि उपरला ६ बोल	सलेशी प्रमुख उपरला २७ बोल जानना
भवनपति व्यंतर	३६	75	55	11	ए २७ माहिथी पद्म १ शुक्क २ लेक्या नपुंसकवेद ३, ए ३ वरजीने शेष बोल २४
नरक	38	33	25))	तेजो १ पद्म २ शुक्क ३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २, ए ५ वरजी शेष बोल बावीस २२

	सः	यत्तवे १ वाद	मिश्रे २वाद	सिथ्यात्वे ३ वाद	औघिके ४ वाद
चैमानिक	३५	सम्यग्दिष्टि १ ज्ञानी २ मति ज्ञानादि ३, एवं बोल ५.	सम्यग्- मिथ्यादृष्टि	कृष्णपक्षी आदि उपरठा छ बोल	प २७ माहिथी रुष्ण आदि ३ लेक्या नपुंसकवेद ४, प ४ वरजी शेष २३
जोतिष	33	"	***	***	ए २७ माहिथी कृष्ण आदि ३ लेश्या पद्म ४ ग्रुक़ लेश्या ५ नपुंसकवेद ६, ए ६ वरजी शेष २१
वाद	0	एक क्रियावादी छाभे १	अज्ञानवादी विनयवादी	ł	क्रिया १ अक्रिया २ अज्ञान ३ विनयवादी ४
आयुवंध	कि बांधे नव म १ के अयो बोटां देव	तुष्य तिर्यंच यावादी आयु एक वैमानिकना गुष्यमे अलेकी वली २ अवेदी अकषायी ४ गी ५ एवं पांच मे आयु न वांधे नारकी क्रिया- दी आयु बांधे मनुष्यना		मनुष्य तिर्येच आयु चारों गतिका बांघे; देवता, नारकी मनुष्य तिर्यंचना आयु बांधे	कियावादी मनुष्य तियंच कृष्ण आदि तीन ३ संक्षिष्ठ लेक्यामे आयु न बांधेः तेष बोलमे वर्तता आयु बांधेः वैमानिकना होष ३ समव-सरण च्यारों गतिका देवता नारकी कियावादी मनुष्य-आयु बांधेः होष समवसरण मनुष्य तियंचना एकेंद्री विकलेंद्रीमे समवसरण २ अकिया १ अक्षान २ विकलेंद्रीमे सक्षानी मति श्रुतक्षानी आयु न बांधेः अनेरो एकेंद्रीमे तेजोलेक्यामे आयु न बांधेः शेष बोलमे आयु बांधे मनुष्य, तियंचनाः आयु न बांधेः वोल्या हार ३ अनंतर पञ्चत्या अयु होषमे भजना। इति प्रथमोदेशकः अनतरो आहार ३ अनंतर पञ्चत्या ४. एहमे आयु २४ दंडके न बांधेः बोल जीनसे नही पावे अलेक्यादि १२ सो जानलेने और सर्व प्रथम उद्देशवत् अयरममे अलेक्या १ केवली २ अयोगी नहीं और सर्व प्रथम उद्देशवत् अयोगी नहीं और सर्व प्रथम उद्देशवत् अयोगी नहीं और सर्व प्रथम उद्देशवत् अयोगी नहीं और सर्व प्रथम उद्देशवाप भनाण ६ सन्नाओ ७। वेय ८ कसाय ९ उवओग १० जोग ११ एकारस वि टाणा ॥" (भग० स्० ८१०)

(३२) (गति वगैरेमे ज्ञान अज्ञान, भगवती श० ८, उ० २, सू० ३१९-३२१)

१	जीव ओघे	५ ज्ञान भजना	३ अज्ञान भजना	२-६	पृथ्वी आदि ५ काय	0	२ नि
	नीरकी भवन-		१	હ	त्रसकाय	५भ	३भ
१५	पति व्यंतर जोतिषी	३ नियमा	३ भजना	6	अकाय	१ नि	o
	वैमानिक			१	स्क्ष	0	२ नि
२०	पृथ्वी आदि ५	0	२ नि	ર	वादर	५भ	३भ
२३	विगलेंद्री ३	२ नि	२ नि	ર	नोस्कमनो-	१ नि	• •
રક	तिर्येच पंचेंद्री	३भ	३भ		बादर		
३ ५	भनुष्य	५ भ	३भ	१	जीव पर्याप्ता	५ भ	३ भ
२६	सिद्ध	१ नि	0	Q	पर्याप्ता नारक	३ नि	३ नि
	चाटे वहते पांच गतिना	ज्ञान	अज्ञान	१५	भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक पर्याप्ता	३ नि	३ नि
१-२	नरक गति देवगति	३ नि	३भ	२०	पृथ्वी आदि ५ पर्याप्ता	o	२ नि
३	तिर्यंच गति	२ नि	२ नि	२३	विगलेंद्री		२
૪	मजुष्यगति	३भ	२ नि		पर्याप्ता	····	नि
ૡ	सिद्धगति	१ नि	o	રક	पंचेंद्री तिर्यंच पर्याप्ता	३भ	३भ
	इन्द्रिय	श्चान	अज्ञान	२५	मनुष्य पर्याप्ता	५भ	३भ
१	सइंद्री	४ भ	३भ	१	अपर्याप्ता जीव	३ भ	३भ
२	पकेंद्री	0	२ नि	२	अपर्याप्त नरक	३ नि	३भ
Ċ,	वेंद्री, तेंद्री चौरेंद्री ३	२ नि	२ नि	१३	भवनपति व्यंतर अपर्याप्ता	३ नि	३भ
ફ		8 म	३भ	१८	पृथ्वीकाय आदि ५	o	२ नि
७	अनिद्री	१ नि	0		अपर्याप्ता		
	काय	झान	अज्ञान	- २१	बेंद्री, तेंद्री, चौरेंद्री	२ नि	२नि
१	सकाय	५ भ	३ भ	- ``	अपर्याप्ता	7.19	7 19

Q:O			ઝાાનળનાન	218/1/8-11			[2 and
	तिर्येच पंचेंद्री	۵.	- 4	१२	तस्य अलिध	४ भ	३भ
२२	अपर्याप्ता	२ नि	२नि	१३	अज्ञान लिब्ध	0	३भ
२३	मनुष्य अपर्याप्ता	३ भ	२नि	१४	तस्य अलिध	५भ	0
२५	जोतिषी वैमा- निक अपर्याप्ता	३ नि	३ नि	१५	मति श्रुत अज्ञान लिब्ध	0	३ भ
२६	नोपर्याप्त-नोअप- र्याप्त	१ नि	o	१७	तयोः अल- ब्धिकौ	५ भ	o
	नरक भवस्था	३ नि	३भ	१८	विभंग लिब्ध	0	३ नि
2	तिर्यंच भवस्था	३भ	३भ	१९ २०	तस्य अँलद्धिया	५भ	२ नि
३	मनुष्य भवस्था	५ भ	३भ	१	दर्शन लिब्ध	५ भ	३भ
ક	देव भवस्था	३ नि	३भ	2	तस्य अलिध	0	o
ધ	अभवस्था	१ नि	0		सम्यग्दर्शन-		
8	भव्य	५भ	३भ	3	लिंघ	५ भ	0
٦	अभव्य	O;	३भ	ક	तस्य अलिध	0	३भ
3	नोभव्य-नोअभव्य	१नि	0	4	मिथ्यादर्शन छन्धि	0.	३भ
१	संज्ञी	४ भ	३भ	६	तस्य अलिध	५ भ	३भ
2	असंज्ञी	२ नि	२ नि	8	सम्यग् मिथ्या- दर्शन लिब्ध	0	३भ
3	नोसंज्ञी-नोअ· संज्ञी	१ नि	o	6	तस्य अलिध	५भ	३ भ
१	ज्ञानल िघ	५भ	o	8	चारित्र लिब्ध	५भ	o
ર	तैस्य अलब्धि	•	३भ	२	तस्य अलिध	४भ	३भ
8	मतिश्रुतक लिध	४भ	o	३−६	सामायिक आदि ४	8 મ	o
६	तैयोः अलब्धि	१ नि	३भ		चारित्र लिब्ध ते अलब्धि	५भ	३भ
७	अवधि-लिध	४ म	0	१०	यथाख्यात		
۷	तस्य अलिध	४ भ	३ भ	११	छिंध	५भ	•
<u> </u>	मनःपर्यव-लिध	८ भ	0	१२	तस्य अलब्धि	५भ	३भ
१०	तस्य अलिध	४ भ	३ भ	१	चरित्राचरित्र लब्धि	३भ	o
११	केवल-लिध	१ नि	0	२	तस्य अलिध	५भ	३ भ_

₹-७	दान आदि ५ लब्धि	५भ	३भ	e ;	विभंग साकार	0	३नि
- १ 0	तस्य अलब्धि	१ नि	0	१०	१० अनाकार उप- योग		३भ
११	बालवीर्य लिध	३भ	३ भ		चक्षुर्दर्शन		_
१२	तस्य अलब्धि	५भ	o	११	अनाकार०	४ भ	३ भ
१३	पंडितवीर्य लब्धि	५भ	o	१२	अचक्षुर्दर्शन अनाकार०	४ भ	३भ
१४	तस्य अलब्धि	४ भ	३भ		अवधिद्र्शन		
१५	बालपंडितवीर्य लब्धि	३ भ	o	१३	अनाकार०	४ भ	३भ
१६	तस्य अलिध	५ भ	३भ	१४	केवलदर्शन	१ नि	0
. 8	इन्द्रिय लिब्ध	४ भ	३भ		अनाकार०		
२	तस्य अलिध	१ नि	0	१	सयोगी	५ भ	३भ
3	श्रोत्रेन्द्रिय लिब्ध	४ भ	३भ	। २	मनयोगी	५ भ	३भ
8	तस्य अलिब्ध	१ नि २ भ	२ नि	3	वचनयोगी	५ भ	३भ
५-६	चक्षुरिन्द्रिय प्राणेन्द्रिय लब्धि	४ म	३ भ	8	काययोगी	५ भ	३भ
		4.0	1 11	4	अयोगी	१ नि	
<u>۵-८</u>	तस्य अलव्धि	२भ	२ नि	१	सलेश्यी	५भ	३भ
Q	जिह्वेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३भ	Ę	कृष्ण आदि ५	४ म	३ भ
१०	तस्य अलिध	१ नि	२ नि	હ	शुक्त लेश्या	५ भ	. ३ म
११	स्पर्शनेन्द्रिय लब्धि	४ भ	३ भ	۵	अलेश्यी	१ नि	0
१२	तस्य अलिध	१ नि	0	१	सकषायी	४ भ	३भ
१	साकार उपयोग	५भ	३भ	२–५	क्रोध आदि ४	४ भ	' ३भ
२-३	मति श्रुत साकार०	४ भ	0	Ę	अकपायी	५भ	0
પ્ર	अवधि साकार०	८ भ	0	१	सवेदी	४ भ	३भ
ų	मनःपर्यव	४भ	o	२-४	स्त्री पुं नपुंसक	४भ	३भ
	साकार० केवल साकार०	१ नि	o	4	अवेदी	५ भ	0
	मति-अज्ञान श्रुत-		-	१	आहारिक	५ भ	३ भ
٧-८	अज्ञान साकार०		३ भ	२	अनाहारी	४ भ	३भ

(३३) (द्रव्यादि अपेक्षासे ज्ञानका विषय भग० द्या० ८, उ० २, सू० ३२२)

जाणे देखे	द्रव्यथी	क्षेत्रश्री	कालथी	भावश्री
मति	आदेशे सर्वद्रव्य	सर्व क्षेत्र	सर्वे काळ	सर्व भाव
श्रुत	उपयोगे सर्व	सर्व क्षेत्र	सर्वे काळ	सर्व भाव
अवधि	जघन्य-अनंत रूपी द्रव्य अने उत्कृष्ट- सर्वे रूपी द्रव्य	जघन्य-अंगुलका असंख्यातमा भाग; उत्कृष्ट-लोक सरीषा असंख्य अलोकखंड	उत्कृष्ट-असंख्य उत्स-	जघन्य-अनंता भाव; उत्कृष्ट-सर्वे भावके अनंतमे भाग जाणे देखे
मनःपर्यच	अनंतानंत प्रदेशी स्कंध, एवं उत्ऋष्ट पिण	समयक्षेत्र ऊंचा नवसे, ९ योजन नीचा, अधोलोकना छु(श्रु)छक प्रतर	जघन्य-पल्योपमनो असंख्यातमो भागः एवं उत्कृष्ट पिण	अनंता भाव; सर्व भावने अनंतमे भाग
केवळ	सर्वे द्रव्यम्	सर्व क्षेत्र	सर्वे काळ	सर्व भाव
मति अज्ञान	परिग्रह द्रव्य	परिग्रह	परिग्रह	परिग्रह
श्रुत अज्ञान	75	19	,,	,,
विभंग	"	"	55	7,9

स्थितिज्ञान—ज्ञानी दुप्रकारे—(१) सादि-अपर्यवसित, (२) सादि-सपर्यवसित, सादि-सपर्यवसित, सादि-सपर्यवसित, सादि-सपर्यव ज्ञान्य—अंतर्ग्रहूर्त, उत्कृष्ट–६६ सागर झाझेरा. मित श्रुत ज्ञान्य—अंतर्ग्रहूर्त, उत्कृष्ट–६६ सागर झाझेरा. अविध ज्ञान्य—१ समय, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझेरा. मनःपर्यव ज्ञान्य—१ समय, उत्कृष्ट ६६ सागर झाझेरा. मनःपर्यव ज्ञान्य—१ समय, उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोड. केवल सादि अपर्यवसित.

अज्ञानी त्रिधा—(१) अनादि-अपर्यवसित, (२) अनादि-सपर्यवसित, (३) सादि-सपर्यव-सित. जघन्य-अंतर्भ्रहूर्त, उत्क्रष्ट-अर्धपुद्गल देश ऊनः

मति, श्रुत एवं उपरवत् त्रिधा ज्ञातव्यानिः विभंगज्ञानी ज्ञवन्य-१ समय, उत्कष्ट-३३ सागर देश ऊन पूर्व कोड अधिकम्.

(३४) (अंतरद्वार जीवाभिगम प्रति० ९, उ० २, सू० २६७)

•	अंतर जघन्य	अंतर उत्कृष्ट	
झानी	अंतर्मुहर्त	देश ऊन अर्ध पुद्रलपरावर्त	
मति श्रुत ज्ञानी	35	,,	
अवधिश्वानी	37	35	
मनः पर्यव क्षानी	35	33	

व ओघथी, सामान्यथी। २ ए प्रमाणे उपरनी पेठे त्रण प्रकारे जाणवां।

۰	अंतर जघन्य	अंतर उत्कृष्ट
केवलज्ञानी	•	o
अज्ञानी	अंतर् <u>म</u> ुहूर्त	६६ सागर झाझेरा
मति श्रुत अज्ञानी	99	75
विभंगज्ञानी	"	वनस्पति काळ अनंता

(३५) (अल्पबहुत्वद्वार प्रज्ञापना प० ३, सू० ६८)

ज्ञान अज्ञान	अं ल्पबहु त्व	८ की अल्पबहुत्व	पैर्यव अल्पबहुत्व	८ का पर्यव अल्प- बहुत्व
मति ज्ञान	३ वि	३ वि	४ अनंत	७ वि
श्रुत ज्ञान	४ वि तु ३	४ वि तुल्य	₹ ,,	५ वि
अवधि	२ असं	२ असं	₹ ,,	३ अनंत गुण
मनःपर्यव	१ स्तोक	१ स्तोक	१ स्तोक	१ स्तोक
केवल	५ अनंत	५ अनंत	५ अनंत गुण	८ अनंत
मति अज्ञान	२ अनंत	६-७ अनंत	३ अनंत गुण	६ अनंत
श्रुत अज्ञान	तुल्य २ अनंत	तुल्य ६	२ अनंत	४ अनंत
विभंग ज्ञान	१ स्तोक	४ असं	१ स्तोक	२ अनंत

द्वार गाथा—''जीव १ गति ५ इंदी ७ काय ८ सुहम्म २ पज्जत्त २ भवत्य ५ भव-सिद्धिय २ सम्ना २ लड़ी ७ उवओग १२ जोगिय ५।१। लेसा ८ कसाय ६ वेदे ५ य आहारे २ नाण गोयरे १७ काले १ अंतर १० अप्पाबहुयं ८ पज्जवा ८ चेव दाराइं॥ २२ ॥"

ज्ञानसरूपं नन्दी प्रज्ञापना आवश्यकिन्धिक्ति भगवती नन्दीवृत्तिसे लिख्यते— मतिज्ञानके मुख्य भेद—१ अवग्रह, २ ईहा, ३ अवाय, ४ धारणाः

अर्थ अवग्रह आदि चारांका—सामान्यपणे अर्थने ग्रहे ते अवग्रह. यथा कोइ मार्गमें जातां दूरसे कोइ ऊंचीसी वस्तु देखी इम जाणे इह कुछ तो है ते 'अवग्रह' होयं। अवग्रहमें जे पदार्थ ग्रह्मा है तिसका सद्भुत अर्थ विचारे जो इह कया वस्तु है स्थाणु—उंठ है अथवा पुरुष है ऐसी विचारणा करे सो 'ईहा' जाननी. ईहा अनंतर काल पदार्थनो निश्चय करे जो इह तो हाले चाले इस वास्ते पुरुष है, पिण स्थाणु नहीं ते 'अवाय.' धारणा ते अवाय अनंतर कालें निर्णीत जे अर्थ तेह धरी राखे ते. यथा ओही पुरुष है जो मैं देखा था ते 'धारणा.' धारणाके भेद—१ अवि- च्युतिधारणा, २ वासनाधारणा, ३ स्मृतिधारणा. अर्थ तीनोंका—जो अर्थ धार्या है सो

उपयोगथी क्षणमात्र च्युति - भूले नही ते 'अविच्युतिधारणा' है. स्थिति अंतर्ग्रहूर्तनी. जे वस्तुने उपयोग था तेह तो अंस हुया है पणि संस्कार रह गया है पुष्पवासनावत् तेहने 'वासनाधारणा कहीये. स्थिति संख्यात असंख्यात कालनी. कालांतरे कोइक ताद्य अर्थ(ना) दर्शनथी संस्कारने प्रवोधेंकरी ज्ञान जागृत हुया जे में एह पूर्वे दीठा था ऐसी जो प्रतीति ते 'स्मृतिधारणा' झेयं

स्थित अवग्रह आदि ४ की—अवग्रह एक समय वस्तु देख्यां पछे विकल्प उपजे हं सा (१). ईहा अंतर्भृहूर्त विचाररूप होणें ते. अवाय अंतर्भृहूर्त निश्चय करणे करके. धारण वासना [श्री] संख्य असंख्य काल आयु आश्री. अवग्रहके दो भेद हे. दोनोका अर्थ—१ व्यंजनावग्रह. 'व्यंजन' शब्दना तीन अर्थ है. 'व्यंजन' शब्दनी व्युत्पत्ति करीने विचार लेना श्रोत्रादिक इन्द्रिय अने शब्दादिक अर्थनो जे अव्यक्तपणे—अप्रगटपणे संबंध तेहने 'व्यंजन कहीये. अथवा व्यंजन शब्दादिक अर्थने पिण कहीये. अथवा व्यंजन श्रोत्रादिक इन्द्रियनें पिण कहीये. एतलें एहवा शब्दार्थ नीपना—अप्रगट संबंधपणे करी ग्रहीये ते 'व्यंजनावग्रह' कहीये एह व्यंजनावग्रह प्रथम समयथी लेई अंतर्भुहूर्त प्रमाण काल जानना. २ अर्थावग्रह. प्रगटपणे अर्थग्रहण ते 'अर्थावग्रह' कहीये. ते एक समय प्रमाण.

व्यंजनावग्रह चार प्रकारे—१ श्रोत्र इन्द्रिय व्यंजन अवग्रह, २ घ्राण इन्द्रिय व्यंजन अव ग्रह, ३ रसना इन्द्रिय व्यंजन अवग्रह, स्पर्शन इन्द्रिय व्यंजन अवग्रह.

चार इन्द्रिय प्राप्यकारी कही तेहम्रं व्यंजनावग्रह होय. वस्तुने पामीने परस्परे अडकीने प्रकाश करे ते 'प्राप्यकारी' कहीये. अथवा विषय वस्तुथी अनुग्रह उपघात पामे ते 'प्राप्यकारी कहीये. ते नयन वर्जित चार इन्द्रियां जाननी. नयन, मन ते अप्राप्यकारी है, श्रोत्रेन्द्रियव्यंजना वग्रह—श्रोत्रेन्द्रिये अव्यक्तपणे शब्दना पुद्गल प्रथम समयादिकने विषे ग्राहीइ है ते 'श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह.' इसीतरे घाण, रसन, स्पर्शनके साथ अर्थ जोड लेना.

अर्थावग्रह ६ मेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रह, २ रसनेन्द्रियार्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह ४ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह, ५ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह, ६ नोइन्द्रियार्थावग्रह, स्पर्शनइन्द्रिये करी प्रक् टपणे स्पर्श सित पुद्गलने ग्रहीये ते 'स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह,' एवं सर्वत्र जानना, नोइन्द्रिय मन है

ईहा षद् भेदे—१ स्पर्शेन्द्रियेहा, २ रसनेन्द्रियेहा, ३ घाणेन्द्रियेहा, ४ चक्षुरिन्द्रियेहा, ५ श्रोत्रेन्द्रियेहा, ६ नोइन्द्रियेहा, स्पर्शन इन्द्रिये करी गृहीत जे अर्थ तेहनुं विचारणा ते 'स्पर्शन-इन्द्रिय-ईहा.' एवं सर्वत्र.

अवाय ६ भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियावाय, २ रसनेन्द्रियावाय, ३ घ्राणेन्द्रियावाय, ४ चक्षुरि न्द्रियावाय, ५ श्रोत्रेन्द्रियावाय, ६ नोइन्द्रियावाय. स्पर्शन इन्द्रिये गृहीत वस्तु विचारी तिसका निश्चय करना ते 'स्पर्शनेन्द्रियावाय.' एवं सर्वत्र क्षेयं.

श्वारणा षद् भेदे—१ स्पर्शनेन्द्रियधारणा, २ रसनेन्द्रियधारणा, ३ घाणेन्द्रियधारणा ४ चक्षुरिन्द्रियधारणा, ५ श्रोत्रेन्द्रियधारणा, ६ नोइन्द्रियधारणा, स्पर्शन इन्द्रिये जे बस्त ग्रही विचारी निश्चय करी धरी राखनी ते 'स्पर्शनेन्द्रियधारणा', एवं सुर्वत्र. ए छ चोक चौवीस अने चार व्यंजनावग्रह एवं २८ मेद श्रुतिनिश्रित मितज्ञानके है. अने अश्रुतिनिश्रित मितना मेद औत्पित्तकी आदि ४ बुद्धि सो तिनका विस्तार नन्दिसे बेयं. तथा श्रुतिनिश्रित मितज्ञानके ३३६ मेद है सो लिख्यते—१ बहुग्राही, २ अबहुग्राही, ३ बहुविध-ग्राही, ४ अबहुविधग्राही, ५ स्थिप्रग्राही, ६ अस्थिप्रग्राही, ७ अनिश्रित, ८ निश्रित, ९ असंदिग्ध, १० संदिग्ध, ११ ध्रुव, १२ अध्रुव. इनका अर्थ—कोइ एक क्षयोपश्रमना विचित्रपणाथी अव-ग्रह आदिके करी एक वेला बजाया जो मेरी, शंख प्रमुख तेहना शब्द न्यारा न्यारा जाणे ते 'बहुग्राही' अने एक अब्यक्तपणे तुर्यनी ही ज ध्विन जाणे ते 'अबहुग्राही'. अने जे बली स्नी प्रमुखनी बजाया मधुर आदि घणा पर्याये करी शंख प्रमुखनी ध्विन जाणे ते 'बहु-विधग्राही'. तेहथी एक विपर्यय जाणे ते 'अबहुविधग्राही'. जे शब्द आदि कह्या ते स्निप्र—उता-वला जाणे ते 'स्निप्रग्राही.' अने एक वली विमासीने मोडा जाणे ते 'अस्निप्रग्राही'. एक लिंगे जाणे ते 'निश्रितः' ध्वजा देखी देहरा जाणे. विपर्यय जाणे 'अनिश्रितः' जे संश्य विना जाणे ते 'असंदिग्धः' संशय सिहत जाणे ते 'संदिग्धः' अने जे एक वारनो जाण्यो सदा जाणे पिण कालांतरे परना उपदेशनी वांछा न करे ते 'ध्रुव' कहीये. विपर्यय 'अध्रुवः' एह बारे मेदस पिहले २८ मेदक गुणीये तो ३३६ मितज्ञानना मेद होय है.

१ ईहा, २ अपोहा, ३ विमर्शा, ४ मार्गणा, ५ गवेषणा, ६ संज्ञा, ७ स्पृति, ८ मति, ९ प्रज्ञा—मतिके एकार्थ(क) नाम. एह नव मतिके नाम है.

अथ मतिज्ञान नव द्वार करी निरूपण करीये है-

१ संत० (सत्०) छता पद प्ररूपणा—मितज्ञान किहां किहां लामे ? २ द्रव्यप्रमाण—एक कालसे कितने जीव मितज्ञानवंत लामे ? ३ क्षेत्र—मितज्ञानवंत कितने क्षेत्रमे है ? ४ स्पर्शना—मितज्ञानवान कितना क्षेत्र स्पर्शे है ? ५ काल—मितज्ञान कितना काल रहे है ? ६ अंतर—मितनो अंतर. ७ भाग—मितज्ञानी अन्यज्ञानीयोके कितमे (ने ?) भाग ? ८ भाव—मितज्ञान पर्भावमे कौनसे भावे है ? ९ अल्पबहुल—मितज्ञान पूर्वप्रतिपन्नाप्रतिपद्यमान, इनमे घणे कौनसे अने स्तीक कौनसे ?

(३६) छतापद द्वार वीसे भेदे यंत्र

सत् पद प्ररूपणा २० द्वारे	मति है वा नहीं ?	पृथ्वी अप् तेज वायु वनस्पति	नास्ति	जहां तीनो योग एकठेमे ४	अस्ति
घारो गतिमे १	है	त्रसकायमे ३	अस्ति	स्त्री पुरुष नपुंसक	अस्ति
एकेंद्री वेंद्री तेंद्री चौरेंद्रीमे प्राये	नही	एकांत काय- योगे	नास्ति	वेदे ५ अनंतानुवंधी	આસ્ત
पंचेंद्रीमे २	अस्ति	एकांत वचने काये	35	चौकडीमे	नही

वारां कषायमे ६	अस्ति	केवलद्र्यनमे १०	नास्ति	पर्याप्तामे	अस्ति
पहिली तीन भाव लेश्यामे	नास्ति	संयत ५ मे ११	अस्ति	लब्घि अपर्याप्तामे १६	नास्ति
उपरली तीन लेश्यामे ७	अस्ति	साकार अनाकार मे १२	77	स्क्षममे	" अस्ति
सम्यक्त्वमे	,,,	आहारी अनाहारी मे १३	,,	बादरमे १७ संज्ञीमे	आस्त
मिथ्यात्व ५ मे ८	नास्ति	भाषालिध्यवानमे	57	असंज्ञीमे प्राये १८	नास्ति
मति आदि ४ ज्ञानमे	अस्ति	जिसके भाषाकी लब्धि नहीं १४	नास्ति	भव्यमे	अस्ति
केवलज्ञानमे ९	नास्ति	प्रत्येक शरीरीमे	अस्ति	अभव्यमे १९	नास्ति
चश्च आदि ३ दर्शनमे	अस्ति	साधारण शरी- रीमे १५	नास्ति	चरममे अचरममे २०	अस्ति नास्ति

इति सत्पद् द्वार १

२ द्रव्यप्रमाणद्वार—मितज्ञानी सदा असंख्याता लाभेइति. ३ क्षेत्रद्वारे—मितज्ञानी सारे एकठे करे तो लोकके असंख्यातमे भाग व्यापे. ४ स्पर्चानाद्वार—मितज्ञानी लोकके असंख्यातमे भाग स्पर्धे; क्षेत्र जो एक प्रदेश ते स्पर्धना सात प्रदेशकी होती है. ५ कालद्वार—मितज्ञानकी स्थिति जयन्य अंतर्भुहूर्त, उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झझेराः उपयोग आश्री मितज्ञानी स्थिति अंतर्भुहूर्तः ६ अंतरद्वारे—मितका अंतरः, जयन्य अंतर्भुहूर्तः, उत्कृष्ट देश ऊन अर्ध पुद्रलपरावर्तः ७ भागद्वार—मितज्ञानी सर्व ज्ञानी अनंतमे भाग अने सर्व अज्ञानीके अनंतमे भागः ८ भावद्वार—मितज्ञान क्षयोपश्चम भावे है. ९ अल्पबहुत्वद्वार—नवा मितज्ञान पिंड वधनेवाले स्तोक है अने पूर्वे पिंड वध्या असंख्यात गुणेः इति मितज्ञानः अलम्

अथ अतज्ञानस्वरूप लिख्यते—१ अक्षर श्रुत, २ अनक्षर श्रुत, ३ संज्ञी श्रुत, ४ असंज्ञी श्रुत, ५ सम्यक् श्रुत, ६ मिध्या श्रुत, ७ अनादि श्रुत, ८ अपर्यवसित श्रुत, ९ सादि श्रुत, १० सपर्यवसित श्रुत, ११ गमिक श्रुत, १२ अगमिकश्रुत, १३ अंगप्रविष्ट श्रुत, १४ अनंगप्रविष्ट श्रुत.

अथ इन चौदका अर्थ लिख्यते—१ अक्षर श्रुत. जीवसे कदापि न क्षरे ते 'अक्षर'. तेह अक्षर श्रुत तीन प्रकारका है. संज्ञाक्षरं. जाणीये जिस करी ते 'संज्ञा' कहीये; तेहनुं कारण जे अक्षर—पंक्ति तेहने 'संज्ञाक्षर' कहीये. ते ब्राह्मी लिपि आदि करी अष्टाद्य (१८) मेदे ए द्रव्यश्रुत कहीये. एहथी मावश्रुत होता है. भावश्रुतका कारणने 'द्रव्यश्रुत' कहीये. २ व्यंजनाक्षरं. 'व्यंजन' ते अकारादि अक्षरना उचारने कहीये. ते अर्थका व्यंजक है—बोधक है. एतले अकारादि अक्षरना उचारने 'क्हीये. ते व्यंजन अक्षरश्रुत अनेक प्रकारका है. एक मात्राये उचरीए ते 'इस्न' कहीये. दो मात्राये उचरीये ते 'दीर्घ' कहीये. तीन मात्राए उचरीए ते 'खत' कहीये.

इत्यादिक भेद जैनेन्द्र व्याकरणसे जानना। ए पणि द्रव्यश्चत कहीये। ३ लब्ध्यक्षरं, अक्षर उच-रवानी लब्धि अथवा अक्षरार्थ समजावनेकी लब्धि ते 'लब्ध्यक्षर' किहये। तथा लब्ध्यक्षरश्चत छ प्रकारे हैं। स्पर्शनेन्द्रियलब्ध्यक्षरं, स्पर्शन-इन्द्रिये मृदु, कर्कश आदि स्पर्श पामीने अक्षर जाणे जे अर्क, तूंल आदि ऊर्ण, वस्त्र आदिक शब्दार्थने विचारे ते 'स्पर्शनेन्द्रियलब्ध्यक्षर' श्चत कहीये। एवं पांचे इन्द्रियनी विषयका समझना। एवं मनकी वस्तुके अक्षर समझने ते 'नोइन्द्रियलब्ध्यक्षर' श्चतः

अथ द्जा मेद अनक्षर श्रुत—जिहां स्पष्टपणे अक्षर मासे नही तेहने 'अनक्षर श्रुत' कहींये. ते उच्छ्वास निःश्वास निष्ठीवन काश श्रुत सीटी आदिक अनेक प्रकारे जानना.

अथ संज्ञी श्रुत—जेहने संज्ञा हुइ तेहने 'संज्ञी' कहीये. तेहनो श्रुत ते 'संज्ञी श्रुत' कहीये. ते संज्ञी श्रुत तीन प्रकारना है. तेहना स्वरूप यंत्रात्—

(३७) संज्ञीश्चतस्वरूपयंत्रम्

(३८) असंज्ञीश्चतस्रूपयंत्रम्

दीर्घ- कालिकी उपदेशेन	जो प्राणीने पूर्वापर अर्थनी दीर्घ विचारणा ह्रइ पूर्वे इम था, संप्रति इम है, आगे एवमस्तु-इम होवेगी ऐसा विचारे तेहने 'दीर्घकालिकी उपदेशेन—उपदेश करी संझी' क हीए. ते गर्भज मनुष्य, तिर्यंच, देव, नारकी, मनःपर्याप्तिना धारक जा-
हेतु उपदेशेन सं क्षी २	जे प्राणी खदेह पालनेके अर्थे इष्ट आहार आदिमें प्रवर्ते, अनिष्ट्यी निवर्ते इतनाही जाणें पिण ओर कछु पूर्वापर अर्थ न जाणे तेहने हित्पदेशेन संज्ञी कहीये.' ते संमू र्विछम पंचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंच, विकलेन्द्रिय प्राणी जानना.
दृष्टिवाद उपदेशेन संज्ञी ३	दृष्टिवाद् ० जे प्राणीने सम्यग्दृष्टि हुइ- वीतराग भाषित वचन उपरि रुचि हुइ ते 'दृष्टिवादोपदेशे करी संज्ञी.' चौथे गुणस्थानसे प्रारंभी सव जीव ज्ञेयं.

दीर्घ कालिकी उपदेशेन असंज्ञी १	जे प्राणी पूर्वापर विचार न जाणे तिसकूं 'दीर्घकालि(की) उपदेशे करी असंझी' कहीये. ते संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय मनुष्य, तिर्यंच, विकले न्द्रिय, एकेन्द्रिय जानना.
हेतु उपदेशेन असंज्ञी २	जे प्राणी खदेह पालनेके अर्थे इष्ट वस्तु आहार आदिकके वास्ते प्रवर्ती न शके अने अनिष्ट थकी निवर्ती न शके ते स्थावर-नाम-कर्मके उदय करी तेहने 'हितो(हेतू)पदेशे करी असंज्ञी' कहीये.
दृष्टिवाद उपदेशेन असंज्ञी ३	जे प्राणीने मिथ्यादृष्टि प्रवल हुइ वीतरागनां वचन अनेकांत-स्याद्वा- दृरूप जाण्यां नही ते प्रथम गुणस्था- नवर्ती जीव जानना ते दृष्टिवाद उपदेशे करी असंज्ञी.

अथ पांचमा मेद सम्यक्श्रतना कहीये हैं. सम्यक्श्रतं जे श्रीजिनेन्द्र देवने वचन अनुसारे गौतम आदि गणधर रचित जे द्वाद्य अंग ते 'सम्यक्श्रत' कहीये. तथा चौदा पूर्व धारीनो रच्यो यावत् द्यपूर्वधारीनो रच्यो ते पिण 'सम्यक्श्रत' जानना. द्य पूर्वमे किंचित् न्यून हुइ तेहनो भाष्यो सम्यक्श्रत हुइ अने नही पिण हुइ, ''अभिन्नदसपुन्वि जस्स समसुयं तेण परं भयणा" इति वचनात.

१ र । २ जन । ३ अभिन्नदशपूर्वाणि यस समश्रुतं तेन परं भजना ।

अथ छट्ठा मेद-'मिध्याश्चतं'. मिध्यादृष्टिनो माध्यो जे भारत आदि वेद ४ प्रमुख जानना. इहां वली एक विचार है. सम्यक्श्चत जो मिध्यादृष्टि पढे तो 'मिध्याश्चत' कहीए. ते कोइ नयभेद समजे नहीं, रुचि पिण न हुइ तिवारे अनेकांतकूं एकांत परूपीने विघटा देवे, इस वास्ते 'मिध्याश्चत' कहीये. अने जो सम(म्यग्)दृष्टि मिध्याश्चत पढे तो ते 'सम्यक् श्चत' कहीए. ते शास्त्र मणीने पूर्वापर विचारे तिवारे अणमिलता लागे वेदमे पूर्वे तो इम कह्या है जे—''न हिंसेत् (हिंस्यात्) सर्वभूतानि" पीछे फिर ऐसे कह्या है ''यज्ञे पश्चत्र हिंसेत्" ऐसा देखीने विचारे जो ए वचन तो परस्पर बाधित है तो धन्य श्रीवीतराग त्रिलोकपूजित जिहनी वाणी अनेकांत—स्याद्वादरूप किहां ही बाधित नहीं. एह छटा भेद श्चतना.

सादि श्रुत सातमा द्रव्ये, क्षेत्रे, काले, भावे करी चार प्रकारका है. द्रव्यथी एक पुरुष आश्री श्रुतनी आदि है. जिहां सम्यक्त पाइ तहांसे आदि है. क्षेत्रथी पंच भरत, पंच ऐरवतनी अपेक्षा आदि है; प्रथम तीर्थंकरने उपदेशे प्रगट हूया. कालथी अवसर्पिणी कालना त्रीजा आराके अंते, उत्सर्पिणीमे त्रीजे आरेके धुरे उपजे इस अपेक्षा आदि है. भावथी. अत्र भाव ते उपयोग कहीए. जद(ब) श्रुतमां उपयोग दीया तिहां आदि कहीये. इति सप्तमं.

(39)

	द्रव्यथी	क्षेत्रधी	कालथी	भावथी
सपर्यवसित श्रुतयंत्रं ८	एक पुरुष आश्री सम्यक्त्व वमी वा केवल पाम्या तदा अंत श्रुतनो.	पंच भरत, पंच ऐरवते जिनशासन विच्छेद आश्री अंत श्रुतनो	अवसर्पिणीमें पंचमे आरेके अंते, उत्सर्पिणीमें चौथेमें अंत	उपयोग नही तदा अंतश्रुत ज्ञाननो
अनादि श्रुत ९	घणे पुरुष आश्री अनादि श्रुत जानना	विदेह आश्री अनादि सर्वाद्धा तीर्थ	नोअवसर्पिणी- नोउत्सर्पिणी आश्री	क्षयोपराम भाव आश्री प्रवाह सदा अनादि
अनंत दशमा	सर्व पुरुष आश्री अंत नही श्रुतनो	सर्वे क्षेत्र आश्री अंत नहीं	नोअवसर्पिणी- नोउत्सर्पिणी आश्री अंत नही	क्षयोपराम भाव आश्री अंत नही

गमिक श्रुत एक सदृश सूत्र है, पिण किंचित् विशेष पामीने वार वार उचरे ते 'गमिक श्रुत' कहीए. ते बाहुल्येन दृष्टिवाद जानना अगमिक श्रुत बारमा गमिकथी विपरीत ते 'अगमिक' ते आचारांग आदि जानना कालिक श्रुत इति. अंगप्रविष्ट द्वादशांगी जानना अनंगप्रविष्टके दो मेद-आवश्यक अवश्य करीये ते 'आवश्यक' ते सामायिक आदि षड् अध्ययन द्जा भेद आवश्यकातिरिक्तं ते आवश्यकथी भिन्नना दो मेद-कालिक मे दिवस निशानी प्रथम पश्चिम

पोरसीमे पढीये ते 'कालिक'-उत्तराध्ययन आदि, नंदी से जानना. उत्कालिक-दशबैकालिक प्रमुख जानना. इन १४ मेदमे लौकिक लोकोत्तर मेद है सो समज लेना. एह चौदा मेद पुरा हूये.

अथ श्रुतज्ञान लेनेकी विधि लिख्यते—

(80)

सुस्स्सइ	पडिपुच्छइ	सुणेइ	गिणहरू	ईहए	अपोहद	धारेइ	करेडू
<u> </u>	ર	રૂ	8	4	દ્	9	6
11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	विनय करी नमन होकर फेरकर प्रके	संदेहना अर्थ कहै ते अछीतरे सावधान	हनो अर्थ गुरे कह्या ते अर्थ रूडी	पूर्वापर विरोध टा ळीने हृद् यमे विचार	विचारीने पछी निश्चय करे एह वात इम ही	अर्थ हियेमे	पछे जे अनु- ष्टान जिस विधिसे कह्या है तिस विधि- से करे ए आठमा गुण जानना.

(४१) सात प्रकारे शास्त्र सुननेकी विधियंत्रं

मूअ १	हुंकार २	वाढकार ३	पडिपुच्छ ४	विमंसा ५	पसंगपराय ६	परीयण ठिय ७
गुरु कन्हे अर्थ	सुणीने मस्तक नमाय कर	तीजी वार गाढा प्रगट वोले हे भगवन्! ए वात	चौथी वार संदेह ऊठे	पांचमी वार ते अर्थ	छठी वार ते	सातमी वारे

अथ शिष्य प्रते गुरु सिद्धांतना अर्थ किस रीतसे कहे ते वात कहीए है. गाथा—
''सुंत्तत्थो खल्ज पटमो बीओ निज्जित्तिमीसओ मणिओ ।
तइओ य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगो ॥''

सुत्त पहिलां गुरु सूत्रना अक्षरार्थ मात्र अछीतरे प्रकाशे; तिहां विशेष कांइ न कहइ. किस वास्ते १ पहिला विशेष कहतां शिष्यनी बुद्धि मृद हो जावे, कुछ भी समजे नही. पीछे दूजी वार अर्थ जाण्या पीछे निर्शुक्ति सहित सूत्र विशेष वखाणे. ते विशेष रूडी परे जाण्या पीछे वली तीजी वारे शिष्यने निरवशेष ते सूत्र माहिला विशेष अने सूत्रमे जो न कहा। गम्य शेष आदि सगला प्रकाशे. ए सिद्धांतना अनुयोग कहीए अर्थ कहेवानी विधि जाननी. इति श्रुतज्ञानस्त्ररूप संक्षेपथी संपूर्ण.

१ सूत्रार्थः खळु प्रथमो द्वितीयो निर्देक्तिमिश्रको भिषतः । तृतीयश्व निर्वशेष एष विधिर्भवत्यनुयोगः ॥

अथ अविधिज्ञानखरूप कथ्यते — अविधिना मेद असंख्य, अनंत है. ते सर्वका खरूप नाही लिख्या जावे हैं; इस वास्ते चौदे मेदे अविधिज्ञानन जिल्लेष कहीए स्थापना कहुं हुं (१) अने पंदरवे द्वारे ऋदिप्राप्त कहीए लिख्यंत, तिस वास्ते कितनीक लिख्या खरूप कहतुं. अविधना चौदे द्वारका नाम यंत्रसे जानना —

१ अवधि—अवधिज्ञानना प्रथम द्वारे नाम आदिक मेद कथन करियेंगे. २ क्षेत्रपरिमाण—अवधिज्ञानका क्षेत्रपरिमाण कथना. ३ संस्थान—अवधिज्ञानका संस्थान—आकारिवरेष कहना. ४ अनुगामी—अनुगामी एक अवधि लोचननी परे धणीके साथ जावे ते 'अनुगामी' लेहना स्वरूप. ५ अवस्थित—जैसा अविध उपज्या है तितना ही रहे, वधे घटे नहीं ते 'अवस्थित'. ६ चल—वधे घटे परिणामविरोषे ते 'चल' अविध कहीये. ७ तीत्र मंद—कितनाका अविध चोखा ते 'तीत्र', डोहलारूप ते 'मंद' कहीये. ८ प्रतिपाति—अविधनो उपजणो विणसनो ते 'प्रतिपाति'. ९ ज्ञान—ज्ञानद्वारे वखाणवो. १० दर्शन—दर्शनद्वारे वखाणवो. ११ विभंग—मिध्यात्वीका अविधज्ञान ते 'विभंग' १२ देश—अविध देश थकी उपजे अने सर्व थकी उपजे. १३ क्षेत्र—क्षेत्र विषे संबद्ध असंबद्ध विचाले अंतर हूइ ते. १४ गति—गइंदिकाये मतिज्ञानवत् वीस द्वारे. १५ ऋदिप्राप्त—लिधका स्वरूप. एह सामान्य प्रकारे द्वारनामार्थकथनम्.

(४२) अथ प्रथम अवधिज्ञानना नामद्वारमे नामादि छ प्रकारे स्थापनासार्थकयंत्रं

नाम-अवधि १	स्थापना-अवधि २	द्रव्य-अवधि ३	क्षेत्र-अवधि ४	काल-अवधि ५	भव-अर्वाध ६	भाव-अवधि ७
जीवका अथवा अजीवका 'अवधि' ऐसा नाम देवे ते 'नाम-अवधिः' अथवा अवधि	तिसका जो आकार अथवा अवधिनो धणी जे पुरुष तेहनो जे आकार	अवधिश्वाननो धणी पुरुष जिस अवसरमे असावधान होय तथा उपयोग रहित 'अवधि' राज्य उचरे ते 'द्रव्य अवधि.'	जिस क्षेत्रमें रहीने अवधिक्षाने करी वस्तु देखे ते 'क्षेत्र- अवधि' कहीए.	अवधि. जिस कालमे अवधि उपजे ते 'काल-अवधिः' अथवा जिस कालमे अवधिका	भवे अथवा देवताने भवविषये जे अवधि- श्चान उपजे ते 'भव- अवधि' झान कहिये	भाव-अवधि क्षयोपराम आदि भावे जे अवधिक्षान उपजे ते 'भाव- अवधिः' अथवा जे द्रव्यनापर्याय तेहने 'भाव' कहिये ते भाव आश्री जे अवधि ते
	कहीये.			कहीये		'भाव-अवधि.' इति सप्तार्थः

अथ द्जा क्षेत्रपरिमाणद्वार कहे है—तीन समयका उपनी आहारक सूक्ष्म पनक फूलिननो जीव तेहनो शरीर जितना बडा होवे ग्है (है ?) तितना अवधिक्षानी जघन्य क्षेत्र देखे. हिनै स्क्ष्म पनक जीव कहा ते कैसा ते कत कहे है. सहस्र योजन प्रमाण शरीर जे मत्स्य हुइ ते मत्स्य मरीने पहिले समय आपणा शरीर नऊं कडाह संहरीने सहस्र योजन प्रमाण प्रतर कहीये. मांडा (मादा) रूप थइ अने बीजे समये ते शरीर नउ प्रतर संहरीने सहस्र योजन प्रमाण स्वीने आकारे हुये अने तीजे समये ते स्वीरूप शरीर संहरीने सक्ष्म रूप थइने ते मत्स्यनो जीव आपणा शरीर बाहिर जे पनग हूये तिस माहे उपजे ते 'स्क्ष्म पनक' कहीए. जब तीन समयका उपना आहार करे तेहनो शरीर जितना बडा होवे तितना क्षेत्र अवधिक्षानी जघन्य जाणे. इति जघन्य अवधिक्षेत्रम्.

अथ अवधिका उत्कृष्ट क्षेत्र कहीये है-श्रीअजितनाथने वारे पंदरे कर्मभूमे उत्कृष्टा भणा मनुष्य हुइ अने अग्निनो आरंभ मनुष्य ज करे तिस वास्ते बादर अग्निना जीव पिण भणा हुइ; ते बादर अने सक्ष्म अग्निका जीवांकी श्रेणि माडीइ ते श्रेणि इतनी बडी नीपजे लोकमे न्यापी अलोकमे लोक सरीपा असंख्याता खंड न्यापे ते श्रेणि अवधिज्ञानीने शरीरे लगाइने चारो ओर फेरीये तिस श्रेणिने चारो ओर असंख्य रज्ज परमाणु जितना क्षेत्र स्पर्धा है तितना क्षेत्र उत्कृष्ट परम अवधिज्ञानी देखे. अलोकमे देखने योग्य वस्तु तो नही, पिण शक्ति इतनी है जो कर वस्तु होती तो देखता. इति उत्कृष्ट अवधिक्षेत्रम्.

अथ अवधिज्ञान आश्री क्षेत्रनी वृद्धिये कितना काल वधइ अने कालनी वृद्धिये कितना क्षेत्र वधे ते (४३) यंत्रात्—

77	क्षेत्रथी जाणे		ते कालथी कितना जाणे ?
१	अंगुलके असंख्यातमे भाग	१	ते आवलिके असंख्यमे भाग
2	" संख्यातमे "	२	" " संख्यातमे भाग
3	एक अंगुल प्रमाण क्षेत्र	3	पक आवलिका ऊणी
४	पृथक् अंगुल क्षेत्र देखे	પ્ર	,, ,, पूरी जाणे
ધ	एक इस्त ""	4	अंतर्भुद्धर्तनी वात जाणे
8	,, कोश ,, ,,	Ę	एक दिवस ऊणी किंचित्
v	,, योजन ,, ,,	૭	पृथक् दिवस ९ ताई
۷	२५ ,, ,, ,,	۷	एक पक्ष किंचित् न्यून

	क्षेत्रथी जाणे		ते कालथी कितना जाणे ?
9	भरतक्षेत्र परिमाण देखे	9	अर्घ मास कालग्री
१०	जंबूदीप देखे ते	१०	एक मास झाझेरा
११	अहाइ द्वीप परिमाण देखे	११	एक वर्ष कालश्री
१्२	रुचक द्वीप तेरमा	१२	पृथक् वर्ष
१३	संख्याते द्वीप देखे ते	१३	संख्याता कालकी वात
१४	संख्याते वा असंख्य द्वीप	१४	कालथी असंख्य काल

संख्याते योजन परिमाण द्वीप समुद्र असंख्याते देखे; असंख्य योजन परिमाण द्वीप संख्याते देखे.

हिवै द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एह चारोमे चृद्धि हुइ कौनसेकी वृद्धि हुइ अने कौनसे की न हुइ ते (४४) यंत्रम्—

काल वधे	क्षेत्र वधे	द्रव्य वधे	पर्याय वधे
द्रव्य "	क्षेत्र काल भजना	काल भजना	काल भजना
क्षेत्र "	द्रव्य वधे	क्षेत्र "	क्षेत्र "
भाव "	भाव "	पर्याय वधे	द्रव्य "

इस यंत्रका भावार्थ—काल आश्री जिवारे अवधिज्ञान शृद्धि हुई तदा क्षेत्र, द्रव्य, पर्याय एह तीनो वधे अने क्षेत्रकी शृद्धि हुये कालकी भजना कहनी—वधे वी अने नही वी वधे. िकस वास्ते १ क्षेत्र अतिम्रक्ष्म है अने काल स्थूल—मोटा कह्या है तिस वास्ते जो घणा क्षेत्र वधे तो काल वधे अने जो थोडा क्षेत्र वधे तो काल कुछ भी नही वधे इति भावः वली क्षेत्रनी शृद्धि होय तो द्रव्य अने पर्याय निश्चय ही वधे. िकस वास्ते १ क्षेत्रथी द्रव्य अतिम्रक्ष्म है. एक आकाशप्रदेश क्षेत्रमे अनंता द्रव्य समा रह्या है. अने द्रव्यथी पर्याय अतिम्रक्ष्म है. कंसात् १ एक द्रव्यमे अनंती पर्याय पीत रक्त आदि है तिस वास्ते क्षेत्र वधे द्रव्य, पर्याय दोनो वधे. तथा द्रव्य अने पर्याय क्षेत्र वधे क्षेत्र कालके वधनेकी भजनाः द्रव्य अने पर्याय म्हम्म है अने क्षेत्र काल मोटा है इस वास्ते वधे अने नहीं पिण वधे. तथा द्रव्य वधे पर्याय निश्चय वधे अने पर्याय वधे द्रव्य वधे वी अने नहीं पिण वधे. तथा द्रव्य वधे पर्याय निश्चय वधे अने पर्याय वधे द्रव्य वधे वी अने नहीं पिण वधे.

८०:८०:८०:८०:८०:८०:८०:८०:८०:८०:८० पालणपुरनिवासी दोसी काळीदास सांकळचंद तरफथी तेमनां मातुश्री स्व. वाई परसनवाईना स्मरणार्थे.

	-0
इयव्यक्षाः देवव्यक्षिय	अथवर्गणास्त्रस्य इङ्लीकसर्व् अलोक
कालवर्गणा३नावबर्गणार४	लग अञ्लेकरोनसाई ते अञ्चलिम २ है।
	तेक दिखे है अज्ञलको नगरी नपारी वर्गाणोही
ग्दारीकञ्च्यागपवर्गणा प	वर्गणाचाहे सरीषा इचनाष्ट्रीकडां कहीं।
उदारिक योग्यवर्गाण द	तेव्गणि इया हो असे काल्य नार्व्या भेचार्थ कारे है तेकिम एक प्रभा एक एक लाइमजि
उनसाऽस्रोग्पवर्गणा ७	<u>्रिया पर्वाप्रधादितद्वेन एक गाणा नानगा</u>
वैकिय योग्पवर्गणाट	दोदे। प्रमाणमिलरहेहे तेह्नी इजीवर्गण इमतीनतीन्नीतीजी एवंचार्यनी इमस्रका
उनयाऽयाग्यव्गणिए	ते।पर्माएक्ये असंख्यर्माण्वे अनंतपर माणुक्येतेव्हनीन्गरीय्वाणानानीक्रमद्व
आहारकयाग्यव् गीण १०	विगणञ्चनती हो यहे इति इयवर्गण र अध
उ ज्ञसाञ्ज्योग्पवर्गणारः	दाजाश्रीजेपर्माणा याञ्चघवामाटा इयर के आकाजाधदेवार स्नातसर्वनीएकवर्गणा
तेनसंबाग्यवर्गण १३	एमदे। बंदेशेर सानी इजीवर्गणा इसतालग्रे
	लेनाजालगञ्ज्सरव्यदेशवापेतेहनीनारी
उनय ञ्योगप्रवर्गण १३	वर्गणाही वाशी असंख्याती इन्हें २ तथा का ला श्रीते एक परमाणा दोपुरमाणा एवंती नवा
नावास्राग्यवगरेण रर्	"र पर्वात असरवात अनतमरमाएक एक विमान
उनयाः खाग्पवर्गण १५	लर्भन्दे जनमे जितन्याकी एकसमयकी स्वि तिङ्गिनसर्वकी एक व्याणा एक वदो समय
आन्धाणयाग्यवर्गणार	र्दितदेन इजीवर्गणा इमञ्ज्सरवसमयसि
ञ्चीनयञ्जयोग्पवर्गणार १	तिलगञ्जसंरव्यानीव्याणाजानलेनी वत्याले वाश्री नेहिजयरमाणाच्या कितनककालाकित
मनस्राग्पवर्गणा १ए	निस्धिवलाक्तननिलि कितनावीला इसव
उनसाऽस्रोग्पवर्गणा १७	ण रोधरसस्पर्दाकरीजेपरमाणान्याराञ्ज्ञ तैसर्वनीन्पारी२अनंतीव्याणाजान्ती४एव४व
कर्मयोग्पवर्गण२०	गिणातेथाकितनाकवज्ञलस्क्रध्योज्ञपरमाणी
क्षवबर्गणा २१	ञ्जनेवादरपरिणामेंदै ते ग्रदारिक शरीरमें श्र याग्पुदैतिसवास्त ग्रदारिक श्रयोग्पवगणा ॥ कद्मिया विस्तरीतिक श्रयोग्पवगणा ॥
याग्यक्षवबर्गण २२	कह्ये तिस्र शिक्षार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्तार्भुक्ता
अयोग्य क्षत्वर्गाण २३	
अक्षत्वर्गण २४	स्वम्परणामीहैते वदारिक ने योग्यनही अ विविक्तयात्री योजापरमाणाहे अने वाद्रप
श्रन्पतग्रवर्गणान्य	III TO
अ्थन्यतरवर्गणम् द	वैक्सवास्तेवनयाः योग्पवर्गणाकसीय व एवं कर्मयोग्पवर्गणाताकतीनतीन्वर्गणानान्नी
क्षवानंतरवर्गणा २९	एकञ्जूयोग्परज्ञजीयोग्परतीनी उत्तया योग
तन्त्रवर्गणा २० मिश्रसंत्र ४२ए	। विश्वयंत्रदारिकवत्एववर्गणा२०द्वातीहै अ
अवित्रमहास्क्रेष्ट्रि ॥	थरमी कववगणानास्त्रस्यकर्मवाणामा
The same of the sa	

ũ

?#:@#@#:@#:@#

जैनाचार्य श्री १००८ श्रीविजयानंदसूरीश्वरजीकृत नवतत्त्वसंग्रहनी स्वहस्ते लखेली प्रति उपरथी.

医多种的 医多种的 医多种的 医多种的

@#@#@#@#

CHARACH CARACES

CONCARON CONCARON CONCARON

हिनै पीछे कालथी क्षेत्र सहम कहा ते कितरमे भाग सहम है ते वात कहीये हैं. प्रथम तो काल सहम एक चुटकी वजातां असंख्य समय वीते तेह थकी क्षेत्र असंख्यात गुणा सहम. एक अंगुल मात्र क्षेत्रमे जितने आकाशप्रदेश है ते समय समय एकेक काढतां असंख्याती अवसर्पिणी बीते. क्षेत्रथी द्रव्य सहम अनंत गुणा एकेक प्रदेशमे अनंते द्रव्य हैं. ते द्रव्यथी पर्याय सहम अनंत गुणी एकेक द्रव्यमे अनंती है.

अथ हिवें जदा पहिलां अविध्वान उपजे तदा पहिलां कौनसा द्रव्य देखे ते वात कहीये हैं—ते पुरुष आदिकने जद पहिलां अविध्वान उपजे ते पहिलां तैजस शरीर योग्य जे द्रव्य अने भाषा योग्य जे द्रव्य ते दोनोके विचाले जे अयोग्य द्रव्य है, ते द्रव्य कैसा है ? कुछ भारी है, कुछ हलका है ते 'गुरुलघु' कहीये अने जे भारी पिण न हुइ अने हलका पिण न हुइ ते 'अगुरुलघु' कहीये. जघन्य अविध्वानना धणी गुरुलघु, अगुरुलघु ए दोनोही देखे. एक कोइ तेजस शरीरके समीप है ते गुरुलघु है अने जे भाषाद्रव्यके समीप है ते अगुरुलघु हैं। पीछे जे जघन्य अविध कह्या तिसके खरूपके वास्ते वर्गणाका खरूप लिख्यते—

(१) द्रव्यवर्गणा, (२) क्षेत्रवर्गणा, (३) कालवर्गणा, (४) भाववर्गणा, (५) औदारिक अयोग्य वर्गणा, (६) औदारिक योग्य वर्गणा, (७) उभय अयोग्य वर्गणा, (८) वैक्तिय योग्य वर्गणा, (९) उभय अयोग्य वर्गणा, (१०) आहारक योग्य वर्गणा, (११) उभय अयोग्य वर्गणा, (१८) तैजस योग्य वर्गणा, (१३) उभय अयोग्य वर्गणा, (१८) अभय अयोग्य वर्गणा, (१८) उभय अयोग्य वर्गणा, (१८) प्रमय अयोग्य वर्गणा, (१८) मन योग्य वर्गणा, (१९) उभय अयोग्य वर्गणा, (२०) कर्म योग्य वर्गणा, (२१) ध्रव वर्गणा, (२२) योग्य ध्रव वर्गणा, (२३) अयोग्य ध्रववर्गणा, (२४) अध्रववर्गणा, (२८) सिश्र स्कंध, (२०) अचित्त महास्कंध.

अथ वर्गणा स्वरूप—इह लोक सर्व अलोक लग पुद्रले करी मर्या है. ते पुद्रल किम किम है ते कहीय है. पुद्रलकी न्यारी न्यारी वर्गणा है. 'वर्गणा' शब्दे सरीषा सरीषा द्रव्यना थोकडा कहीए. ते वर्गणा द्रव्य, क्षेत्र, कारु, भावथी चार प्रकारे है. ते किम १ एक परमाणु एकला इम जितना परमाणुया है तेहनी एक वर्गणा जाननी. दो दो परमाणु मिल रहे है तेहनी द्जी वर्गणा. इम तीन तीननी तीजी. एवं चार चारनी. इम संख्याते परमाणुये, असंख्य परमाणुये, अनंत परमाणुये तेहनी न्यारी न्यारी वर्गणा जाननी. इम द्रव्यवर्गणा अनंती होय है. इति द्रव्यवर्गणा. अथ क्षेत्र आश्री जे परमाणुया अथवा मोटा द्रव्य एके आकाशप्रदेशे रह्या ते सर्वनी एक वर्गणा. एम दो प्रदेशे रह्यानी द्जी वर्गणा. इम तां लगे लेना जां लग असंख्य प्रदेश व्यापे. तेहनी न्यारी न्यारी वर्गणा क्षेत्र आश्री असंख्याती हुई है. तथा काल आश्री ते एक परमाणु, दो परमाणु एवं तीन, चार, संख्याते, असंख्याते, अनंते परमाणु एकठे

मिले रहे है. इनमे जितन्याकी एक समयकी स्थिति है तिन सर्वकी एक वर्गणा. एकत्र दो समय रहै तेहनी द्जी वर्गणा. इम असंख्य समयस्थिति लग असंख्याती वर्गणा जान लेनी. तथा भाव आश्री तेहि ज परमाणुया कितनेक काला, कितना ही धवला, कितना नीला, कितना पीला इम वर्ण, गंध, रस, स्पर्ध करी जे परमाणु न्यारा न्यारा हुइ ते सर्वेनी न्यारी न्यारी अनंती वर्गणा जाननी. एवं ४ वर्गणा. तथा कितनाक पुद्रहस्कंघ थोडा परमाणु अने बाद्र परिणामे है ते औदारिक शरीरने अयोग्य है तिस वास्ते 'औदारिक अयोग्य वर्गणा' ५ कहीये. तिसथी अधिकतर पुदुलस्कंघ औदारिक शरीरने परिणमावा योग्य है ते 'औदारिक योग्य वर्गणा.' ६ तेहथी अधिक पुदलमय स्कंध सक्ष्म परिणामी है ते औदारिकने योग्य नही अने वैक्रिय आश्री थोडा परमाणुँ है अने बादर परिणाम है तिस वास्ते वैक्रियके काम नही आवे; इस वास्ते 'उभय अयोग्य वर्गणा' ७ कहीये. एवं कर्म योग्य वर्गणा तांइ तीन तीन वर्गणा जाननीः-एक अयोग्य, द्जी योग्य, तीजी उभय अयोग्य. अर्थ औदारिकवत्. एवं वर्गणा २० होती है. अथ २१ मी ध्रुववर्गणाना खरूप—कर्मवर्गणाथी अधिक पुद्रलमय एकोत्तर वृद्धिंह अनंत परमाणुरूप ध्रुववर्गणा है. इह वर्गणा चउदा रक्ज्वात्मक लोकमें सदैव पामीये, इस वास्ते 'ध्रुव वर्गणा' २१ कहीये. पिण एह एकोत्तर दृद्धिये वधती अनंती जाननी. पीछे औदारिकादि वर्गणा जगमे सदैव लाभे; तिस वास्ते तिनका नाम 'योग्य ध्रुववर्गणा' २२ कहीये. अने ए २१ मी ध्ववर्गणा अतिस्रक्ष्म परिणाम बहुद्रन्यमय भणी औदारिकादिने योग्य नहीं, तिस वास्ते इसकीही संज्ञा 'अयोग्य ध्रुववर्गणा' २३ हैं. ते ध्रुववर्गणाथी अधिक पुद्गलमय वली एक अध्रुववर्गणा है. ते पुद्रलद्रव्य चउदे रज्ज्वात्मक लोकमे केदे पामीये कदे नहि पामीये, इस वास्ते इसका 'अध्ववर्गणा' २४ नाम. एह पिण एकोत्तर दृद्धि वाधती अनंती जाननी. एह पिण औदारिका-दिकने योग्य नही, सूक्ष्म अने बेहुद्रन्यत्वात्. तिसथी अधिक पुद्रलम्य 'शून्यतर वर्गणा' हे. शून्यतर क्या कहीये ? एक परमाणु, दो परमाणु, तीन परमाणु इम एकेक परमाणु करी वर्गणा वधे तां लगे जां लगे अनंता परमाणु मिले पिण ए वर्गणा वधतां वीचमे एकोत्तर वृद्धिनी हाण पडे अने वली पांच सात परमाणु लगे एकोत्तर वृद्धि वधे अने वीचमे वली एकोत्तर बुद्धिनी हाण पडे इम एकोत्तर बुद्धि आश्री वीचमे शून्य पडे; इस वास्ते 'शून्यतर वर्गणा.' २५ एह पिण अनंती जाननी. तथा तिसथी अधिक पुद्रलमय अशून्यतर वर्गणा है. ते वर्गणामे एकोत्तर दृद्धि आश्री वीचमे शून्य न पडे; इस वास्ते 'अशून्यतर वर्गणा' २६ ऐसा नाम. एह पिण औदारिकादिने योग्य नहीं. तेहथी अधिक पुद्गलमय चार प्रकारे 'ध्रुवानंतर वर्गणा' है. इस जगतमे सदैव लामे, तिस वास्ते ध्रुव अने आरंभ्या पीछे एकोत्तर वृद्धिका अंतर न पड़े, इस वास्ते अनंतर दोनोः मिली 'ध्रुवानंतर' नामः चार मेद मोटाः एकोत्तर इद्धिये अंतर पडे पहिली. एक फेर एकोत्तर इद्धि अनंत लग वधीने फेर मोटा अंतर ए दृजी। एवं चार जान लेनी. २७ ध्रुवानंतरथी अधिक पुद्रलमय एकोत्तर बुद्धिये वधती चार 'तनु

१ कचित्। २ घणां द्रव्यमय होवाथी।

वर्गणा' है. ते पिण ध्रुवानंतर वर्गणावत् बीच बीच अंतर पडनेसे चार प्रकारे जाननी. ते औदारिक आदि पांच शरीरने योग्य तो नही पिण अगले पुद्रलके विछडनेसे अने नवे पुद्रलके मिलनेसे घटती वधती शरीरने योग्यता अभिम्रख हुइ; तिस वास्ते ते 'तनु वर्गणा' २८ नाम. ध्रुवानंतर वर्गणावत् चार मेद जानने. तेहथी अधिक पुद्रलमय एक मिश्र स्कंघ है. एह स्कंघ घणा सक्ष्म है अने कुछक बादर परिणामे है. इन दोनो परिणामके वास्ते 'मिश्र स्कंघ' नाम. तेहथी अधिक पुद्रलमय 'अचित्त महास्कंघ' है. ते घणा पुद्रल एकठा मिली दिग रूप होता है. ते 'अचित्त महास्कंघ' विस्नसा परिणामे करी केवलिसमुद्धातनी परे चउदे रख्वात्मक लोक व्यापे अने चार समयमे पीछे फिर कर खख्यानमे आवे. इम सर्व समय आठ जानने. एह स्कंघ कदे हूये अने कदे नही बी होय. पुद्रल तो सर्व अचित्त ही है, तो इसका नाम 'अचित्त स्कंघ' कयुं कह्या इति प्रश्न. अथ उत्तरम्—केवली जद समुद्धात करे तदा जीवना प्रदेशे करी मिश्र जे कर्मना पुद्रल तिण करी सर्व लोक व्यापे ते 'सचित्त कर्म पुद्रल' कहीये. तिसके टालने वास्ते 'अचित्त' शब्द कीधा. इति संक्षेप करके वर्गणा खरूपम्.

इण औदारिक आदि द्रव्यमे कौनसा गुरुलघु है अने कौनसा अगुरुलघु है ए वात कहीये है. औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस ए चार द्रव्य अने तैजस द्रव्यके नजीक जे द्रव्य है (ते) सर्व द्रव्य 'गुरुलघु' है, बादर परिणाम करके; अने कार्मण, मनोद्रव्य, भाषाद्रव्य, आनप्राणद्रव्य अने भाषाद्रव्यके समीपका द्रव्य ते सर्व सक्ष्म परिणाम करके 'अगुरुलघु' कहीये। जघन्य अवधिके विषयके ए गुरुलघु अने अगुरुलघु द्रव्य जाने देखे।

हिवै द्रव्यकी वृद्धि ह्या क्षेत्र, काल कितना वधे ए वात कहीये है. (४५) यंत्रसे इसका स्वरूप—

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी
मनोद्र्य देखते	लोकका संख्यातमा भाग	पल्योपमका संख्यातमा भाग
कर्मद्रव्य ,,	2) 2) 2)	yy yy yy
ध्रुवानंतर वर्गणा, शून्यतर वर्गणा आदि देखे	चौद रज्ज्वात्मक लोक देखे	पल्योपम किंचित् न्यून देखे
तैजस, कार्मण शरीर तैजस- योग्य भाषायोग्य वर्गणा देखे.	असंख्य द्वीप, समुद्र देखे	असंख्य काल देखे

अथ परमानिध ज्ञानना घणी उत्कृष्टा कौनसा सक्ष्म द्रव्य देखे ते वात कहीये है— क्षेत्रके एक प्रदेशे रह्या परमाणु द्रचणुक आदिक द्रव्य परमानिधनो घणी देखे. अने कार्मण शरीर देखे. कार्मण शरीर असंख्याते प्रदेश नियमा अनगाहने है. उत्कृष्ट अनिधनो घणी जितना अगुरुलघु द्रव्य जगमे है ते सर्व देखे. जो तेजस शरीर अन्धिनो घणी देखे तो कालथी नव मन लगे देखे. ते नन भन असंख्य काल प्रमाणके जानने. हिंवे परमावधिनो धणी कितना क्षेत्र जाणे अने कितना काल जाणे ए वात कहीये है.

द्रव्यथी	क्षेत्रथी	कालथी	भावश्री
स्क्म, बादर सर्वे रूपी द्रव्य देखे	सर्व लोक अग्निके सर्व जीवाकी सूची प्रमाण अलोकमे देखे	असंख्याता अवसापणा	पकेक द्रव्य प्रते संख्याता पर्याय देखे परमावधि

एह अवधि मनुष्य आश्री कह्या. हिवै तिर्यंच आश्री अवधिज्ञान कहीये हैं. पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवधिज्ञाने करी औदारिक, वैकिय, आहारक, तैजस ए सर्व द्रव्य देखे अने इसके मापेका क्षेत्र, काल, भाव आपे विचारणा कर लेनी. एह मनुष्य तिर्यंचने क्षयोपशमक अवधिज्ञान कह्या.

(४७) हिवै भवप्रत्यय नारकी देवताना अवधिमे प्रथम नारकीना अवधि क्षेत्र यंत्र लिख्यते—

विषय	रत्नप्रभा	शर्कराप्रभा	वालुकाप्रभा	पंकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमतमप्रभा
जघन्य	३॥ गाउ	३ गाउ	२॥ गाउ	२ गाउ	१॥ गाउ	१ गाउ	ः॥ गाउ
उत्कृष्ट	ક "	રાા ,,	₹ "	રાા "	₹ "	श। "	۶ ,,

असुर-जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट असंख्य द्वीप समुद्र, नव निकायव्यंतर-जघन्य २५ योजन, उत्कृष्ट संख्याते द्वीप, जोतिषी-जघन्य संख्याते द्वीप, उत्कृष्ट संख्यतर द्वीप.

सौधर्म ईशान	३-४ खर्ग	५-६ स्वर्ग	७-८ स्वर्ग	९-१२ स्वर्ग	६ ग्रैवेयक	३ ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
रत्नप्रभाका नीचलाचरम अंत	दूजीका नीचला चरम अंत	त्रीजीका	चौथीका	पांचमीका चरम अंत	छठीका	सातमीका चरम अंत	किंचित् न्यून लोक सर्व

'सौधर्म' देवलोकथी नव ग्रैवेयक पर्यंत जघन्य अंगुलके असंख्यमे भाग देखे. पूर्व भव अविध अपेक्षा सर्व विमानवासी ऊंचा तो अपनी घ्वज तांइं देखे अने तिरछा असंख्य द्वीप, समुद्र देखे. असंख्यातके असंख्य भेद है.

(४८) हिवै आयु आश्री अवधिज्ञान कितना होवे है ते यंत्रात् ज्ञेयं.

अर्घ सागरथी ओछी आयुवाला	संख्याते योजन प्रमाण देखे उत्कृष्ट				
पूरी अर्घ सागरनी आयुवाला देवता	असंख्य	,,	55	,,	
अर्घ सागरसे उपरांत जिसकी आयु है ते	75	55	55	55	

(86)

o	जघन्य अवधि	उत्कृष्ट अवधि	मध्यम अवधि	अभ्यंतर	बाह्य	देश अवधि	सर्व अवधि
देव नरक	0	0	अस्ति	अस्ति	•	अस्ति	o
तिर्येच	अस्ति	0	,,	0	अस्ति	11	0
मनुष्य	59	अस्ति	,,,	अस्ति	7,7	"	अस्ति

(40)

0	अनुगामी	अननुगामी	वर्धमान	हीयमान	प्रतिपाति	अप्रति- पाति	अव- स्थित	अनव- स्थित
देव नरक	अस्ति	0	0	o	o	अस्ति	अस्ति	0
मनुष्य	,,,	अस्ति	अस्ति	अस्ति	अस्ति	,,	11	अस्ति
तिर्येच	***	"	55	35	"	53	55	,,

ए यंत्र दोनो प्रसंगात्. तथा उत्कृष्टा अवधिज्ञान दो प्रकारे है-एक प्रतिपाति, दूजा अप्रतिपाति. जो उत्कृष्टा चौद रज्ज्वात्मक लोक लगे व्यापे पिण अगाडी अलोकमे एक प्रदेश तक (भी) व्यापणेकी शक्ति नहीं तां लग अवधिज्ञान 'प्रतिपाति' कहीं ये; अने जे अवधि अलोकमे एके प्रदेशे व्यापे ते 'अप्रतिपाति.' इति क्षेत्रप्रमाण द्वार द्वितीय.

हियै तीजा संस्थान द्वार—जघन्य अवधिज्ञानका संस्थान पाणीके विंदुवत् गोल है. अने उत्कृष्ट अवधिज्ञान वर्तुल आकारे ज हुइ, पिण कुछक लांवे आकारे हुइ, कस्मात्? शरीरके चारों ओर अग्निके जीवांकी सूची फेरणे करी उत्कृष्ट अवधिका क्षेत्र कह्या है. अने शरीरका कोठा तो वर्तुल नहीं किन्तु कुछक लांवा है, इस वास्ते उत्कृष्ट अवधिज्ञानका संस्थान वर्तुल अने कुछक लांवा है. मध्यम अवधिज्ञानका संस्थान विचित्र प्रकारना है. ते यंत्रसे जानना किंचित् संस्थान ज्ञानका.

(५१) (नारक आदिका अवधिका संस्थान)

नारकीनो अवधि	भवनपति	मनुष्य तिर्यंच	व्यंतर	जोतिषी	१२ देवलोक	् ग्रैवेयक	५ अनुत्तर
त्रापाने आकारे जिस करके नदीना पाणी तरीये ते 'त्रापु' कहिये तद्वत्	धान्य भरणेका ठेका तेहने संस्थाने	नाना प्रकारना संस्थान असंख्य भेदे	पडहा बीचमे तो मोटा अने दोनो पासे सम तेहने	झालर ते डौरूवजंतर तेहने संस्थाने	मृदंगने आकारे एक पासे चौडा, दूजे पासे		बालिकानो चोल जे बाल- कने माथे उपर पिहरणनी परे इारीरे पहेरे
संस्थाने			संस्थाने		सांकडा		तद्वत्

भवनपति व्यंतरनो अविधिज्ञान ऊंचा घणा अने और देवताके नीचा घणा तथा नारकी, जोतिषीने तिरछा घणा अने मनुष्य, तिर्यंचने ऊंचा बी हुई अने नीचा बी होवे अने थोडा बी होवे अने घणा बी होवे; तिस वास्ते विचित्र कहा। इति संस्थानद्वार ३.

हिने चौथा अनुगामीद्वार. अवधिज्ञान दो प्रकारे हैं. एक अनुगामिक १ अनजुगामी २. जिस पुरुषक् अवधिज्ञान उपना ते पुरुषके साथ ही अवधिज्ञान चाले, अलग न रहे; जिम हस्तगत दीना जिहां जाय तिहां साथ ही आने तिम अवधिज्ञान पुरुषके साथ ही आने ते 'अनुगामिक'; अने जे अवधि पुरुषको जौनसे क्षेत्रे उपना है ते अवधिज्ञान तिस ही ज क्षेत्रे रहे, पुरुष साथ अन्यत्र जगे न जाय जिम सांकले बांध्या दीना जिहां है तिहां ही रहे तिम ते अवधिज्ञान जिस क्षेत्रे उपना तिहां ही प्रकाश करे, पुरुष चले साथ न चले अने तेही पुरुष जिद फिरकर तिस ही क्षेत्रमें आने तदा अवधिज्ञान फेर होने ते 'अननुगामिक' अवधिज्ञान कहीये. हिने तेहना स्वरूप लिखीये हैं—

अनुगामी १ अननुगामी २ मिश्र ३ मिश्र कया कहीए १ जे अवधिज्ञान उपना एक पासेका तो तिहां ही रहे अने द्जे पासेका पुरुषके साथ चाले ते 'मिश्र' अवधिज्ञान कहीये. फिरकर तिस ही क्षेत्रमे आवे तो चारो ओर फेर देखने लगे है. एह अवधि मनुष्य, तिर्यचने होता है. ए अनुगामी द्वार ४. (५२) हिवे अवस्थित द्वार पांचमा कहीये है.—

स्थिति	क्षेत्र आश्री	उपयोग आश्री	गुण आश्री	पर्याय आश्री	लिंघ आश्री
	स्थिति १	स्थिति २	स्थिति ३	स्थिति ४	स्थिति ५
अवधि- झानकी पांच प्रकारे	अनुत्तर विमानके	अंतर्मुहूर्त उपरांत एक द्रव्यमे उप- योग नही रहे है	उपरांत गुणमे	पर्याय सात समय प्रमाण उपयोग रहे	लब्धि आश्री ६६ सागर साधिक

हिनै चल द्वार ६ — जे अनिधज्ञान नधे बी अने घटे बी ते 'चल' अनिधज्ञान कहीये. ते छ प्रकारे नधे अने छ प्रकारे हान होय ते.

(५३) यंत्रसे खरूप हान अने ष्टद्धिका जानना-

संख्या	अनंत भाग १	असंख्य भाग २	संख्यात भाग ३	संख्यात गुण ४	असंख्य गुण ५	अनंत गुण
अधिक	असत् १०० कल्पना ९९	१०० ९८	१०० ९०	१०० १०	१०० २	१००
हीन	असत् ९९ कल्पना १००	९८ १००	९० १००	१० १००	२ १००	१

(५४) हिवै ए छ प्रकारमे अवधिज्ञाननी वृद्धि हान कितने प्रकारे है ते यंत्रमे सहप लिख्या—

संख्या	क्षेत्र आश्री हान	काल आश्री हान	द्रव्य आश्री हान	पर्याय आश्री हान
	वृद्धि	वृद्धि	वृद्धि	वृद्धि
हान ६ प्रकारे, वृद्धि ६ प्रकारे	असंख्य भाग हानि चृद्धि, असंख्य गुण हानि चृद्धि, संख्यात भाग हा० चृ०, संख्यात गुण हा० चृ० ४	असं० गुण हा० वृ०	अनंत भाग हा० वृ० अनंत गुणा हा० वृ० २ द्रव्य घणा वधे घटे असात् २	षेट्र प्रकारे हान वृद्धि छ प्रकारका खरूप यंत्रसे जानना

इति छठा चल द्वार संपूर्णम्।

हिने ७ मा तीन्न मंद द्वार कहीये है—िकताएक अवधिज्ञान फाडारूप हुइ थोडासा दीसे अने बीचमे वली न दीसे, थोडेसे अंतरमे फेर दीसे. स्थापना के इस फाडा रूप जानना जिम जालीमे दीवेका तेज पडे छिद्रमे तो तेज है अने ओर जगे नहीं ते तेज फाडा फाडा रूप दीसे तिम जे अवधिज्ञाने करी किहां दीसे अने किहां नहीं दीसे, लगत मार प्रकाश न हुइ ते 'फाडारूप' अवधिज्ञान कहाता है, ते अवधिज्ञानना फाडा कितना होवे ते वात कहीये हैं—

एक जीवने अवधिज्ञानका फाडा संख्याता अने असंख्याता हुई पिण ते जीव जदा एक फाडा देखे तदा सर्व ही फाडा देखे. जिस वास्ते जीवके उपयोग एक ज होय है. एक वार दो उपयोग न हुई, तिस वास्ते सर्व फाडयांमे एक वार एकठा ही उपयोग जानना. हिवै ते फाडा तीन प्रकारना है—कितनाक तो अनुगामिक १, कितनाक अनुगामिक २, कितनाक मिश्र ३. तीनाका अर्थ उपरवत्. तथा ते फाडा वली तीन प्रकारे है—एक प्रतिपाति है १, कितनेक अप्रतिपाति २, कितनेक मिश्र ३. हिवै जे अवधि उपजीने फाडारूप ते कितनाक काल रहीने विणसे ते फाडा 'प्रतिपाति' कहीये १; कितनाक न विणसे ते 'अप्रतिपाति' २; अने जे कितनेक फाडे प्रतिपाति अने अप्रतिपाति ते 'मिश्र' ३. ए अवधि मनुष्य, तिर्यचने हुई पिण देव, नरकने नहीं. अनुगामी अप्रतिपाति फाडारूप अवधिज्ञान 'तीव्र' चोखे परिणामे करी उपजे ते फाडा 'तीव्र' कहीये हैं. अने अननुगामी प्रतिपाति फाडारूप अवधि मंद परिणामे करी उपजे हैं, तिस वास्ते 'मंद' कहीये हैं. इति तीव्र मंद द्वार ७.

अथ प्रतिपाति द्वार—अवधिज्ञानका एक समयमे उपजणा अने विणसना कहीए हैं, जे अविध जीवके एके दिशे उपजे ते 'बाह्य' अवधिज्ञान कहीये. अथवा जे जीवके सर्व फा(पा)से फाडारूप अविध हुइ ते 'बाह्य' अवधिज्ञान कहीये. ते बाह्य अवधिका उपजणा अने विणसना अने दोनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आश्री एक समयमे हूइ ते किम द्रव्य आश्री ते बाह्य

अवधि एक समयेसे उपजणा बी विणसना बी अने दोनो बात पिण हुइ हैं. दावानलने दशंते करी जिम दवानल एक पासे बूझे अने द्जे पासे वधे तिम कितनाक अवधिज्ञान एक पासे नवा उपजे अने द्जे पासे आगला अवधि विणसे, इस वास्ते एक समयमे कदे दो वात पिण होय है. तथा कितनाक अवधिज्ञान जीवके शरीरके थकी सर्व पासे प्रकाश करे ते शरीर विचाले फाडा कुछ बी नहीं होय ते 'अभ्यंतर' अवधि कहीये. जिम दीवानी कांति दीवाथी अलग नहीं है, चारो ओर प्रकाश करे तिम अवधि पिण ऐसा हूये ते 'अभ्यंतर' अवधिज्ञाननो उत्पाद अने विनाश ए दो वाते एक समयमे न होवे, एक समयमे एक ज वात हूइ. जिम दीवा उपजे एक समय अने विणसनेका अन्य समय तिम अभ्यंतर अवधिके एक समय एक ही वात होय. हिवै अवधिज्ञाने करी जदा एक द्रव्य देखे तदा पर्याय कितना देखे ए वात कहीये हैं—जदा एक द्रव्य परमाणु प्रमुख अवधि करी देखे तदा द्रव्यना पर्याय संख्याता देखे अने असंख्याता देखे; जघन्य तो चार पर्याय—रूप, रस, गंध, स्पर्श ए चार देखे. एह आठमा उत्पाद प्रतिपातद्वार संपूर्णम.

(५५) हिंवे ज्ञान दर्शन विभंग एह तीन द्वार कहे है, ते यंत्रम्-

ज्ञान १	दर्शन २	विभंग ३
जिस अवधिक्षाने करी विशेष जाणे ते 'साकार क्षान' कहीए.	सामान्य जाणे, पिण विशेष न जाणे ते 'अनाकार दर्शन' कहीए	समदृष्टिका तो ज्ञान कहीए अने मिथ्यात्वीके ते 'विभंगज्ञान' कहीए.
स्वामी-समदृष्टि मिथ्यादृष्टि	समदृष्टि मिथ्यादृष्टि	मिथ्यादृष्टि

भवनपतिसे लेकर नव ग्रैवेयक पर्यंत ते सर्व देवताना अवधिज्ञान अने विभंग ज्ञान क्षेत्र, काल आश्री दोनो सरीखा जानना द्रव्य, पर्याय आश्री विशेष कुछ है. चोखे ज्ञान विना विशेष न जाणे ते समदृष्टिके चोखा है अने 'अनुत्तर' विमानवासी देवताने अवधिज्ञान होय है पिण विभंग नही. ते पांच 'अनुत्तर' विमानवासी देवताके जे अवधिज्ञान हुइ ते क्षेत्र, काल आश्री असंख्य विषय करके असंख्याता जानना; अने द्रव्य, पर्याय विषय आश्री ते ज्ञान अनंता कहीए. ए ज्ञान, दर्शन, विभंगरूप तीन द्वार वखाणेया. इति द्वारम् ९।१०।११.

अथ १२ मा 'देरा' द्वार लिख्यते—नारकी, देवता अने तीर्थंकर[पित]नो ज्ञानथी अबाध हुइ एहने शरीर द्वं मंबंध प्रदीपनी परे सर्व दिशे प्रकाशक इनका अविधिज्ञान जानना. एतले नारकी, देवता, तीर्थंकर ए अविध करी सर्व दिशे देखे; तथा शेष तिर्थंच, मनुष्य देशथी बी देखें अने सर्वथी बी देखें. तथा नारकी, देव, तीर्थंकर एहने अविधिज्ञान निश्चय होय; ओरोंके भजना जाननी. ए बारमा देशद्वार.

अथ क्षेत्रने मेले अवधिज्ञानका संख्यात असंख्यातपणा कैथ्यते के अवधि जीवना शरीरसं संबद्ध हुइ दीवानी कातिनी परे अलग न हुइ ते 'संबंध अवधिज्ञान' कहीए; अने जे

अवधि शरीरथी अलग होय ते अवधि 'असंबंध' कहीए. ते असंबंध अवधिका धणी दूरसे तो देखे पिण नवजीकसे न देखे. ते जीव अने अवधिज्ञानका क्षेत्रके विचाले अंतर पढे इति मावः.

हिंवे जे संबद्ध अवधिज्ञान होय तेह नउ क्षेत्र आश्री संख्याता अने असंख्याता योजन प्रमाण विषय है तिम जे असंबद्ध अवधिज्ञान होवे तिसका क्षेत्र आश्री इम हीज विषय जाननी, परंतु ते धणीके अने अवधिके क्षेत्रके विचाले अंतर पडे ते (५६) यंत्रसे—

असंबद्ध अवधि ४	संख्यात योजन	संख्यात योजन	असंख्य योजन	असंख्य योजन
अंतर ४	संख्यात योजन अंतर	असंख्य योजन अंतर	संख्येय "	99 99

एह असंबंध अवधिके ४ मंग है अने जे संबद्ध अवधि हूइ ते कितनाक तो लोकसंबंधे लोकान्ते जाय लागे पिण अलोकमे नहीं गया अने जो अलोक संबंध हुई तो अलोकमे लोक सरीखा खंड असंख्याता न्यापे. इति १३ मा क्षेत्रद्वार संपूर्णम्

हिवै गतिद्वार १४ मा. ते गति आदिक वीस द्वारे यथासंभवे मतिज्ञानवत् विचारणा इति. हिवै अवधि लब्धिसे अवधिज्ञान होय है. प्रसंगात् शेष लब्धिका स्वरूप लिख्यते— १ आमोसहि—जिनके शरीरके स्पर्शे सर्व रोग जाये. २ विप्पोसहि—विद्यसवण अर्थात् वंडीनीति लैघुनीति ही औषधि है. ३ खेलोसहि—श्लेष्म जिनका औषधि है. ४ जल्लो-सहि-जिनकी मैंयल ही औषधि है. ५ सच्चोसहि-शरीरका अवयव सर्व औषधिरूप है. ६ संभिन्नसोउ-एक इन्द्रिये करी सर्व इन्द्रियांनी विषये जाणे. ७ ओहि-सर्व रूपी द्रव्य जिस करी जाणे ते अवधि. ८ उज्जुम इ — अढाइ अंगुल ऊणा मनुष्यक्षेत्रमे मनके भाव जाणे. ९ विउलमइ—संपूर्ण मनुष्यक्षेत्रमे मनके भाव जाणे. १० चारण—विद्यासे विद्या-चारण, तपसे जंघाचारण आकाशमे उडे. ११ आसीविस—शाप देणे की शक्ति ते आशी-विष' लब्धि, १२ केवली—केवलज्ञान, केवललब्धि, १३ गणहर—गणधरपणा पामे ते गणधरलिब, १४ पुब्वधर—पूर्वाणां ज्ञान होना ते 'पूर्व' लिब्ध, १५ अरिहंत—त्रैलो-वयना पूजनीक ते 'तीर्थिकर' लब्धि. १६ चक्कवटी —चक्रवर्तिपणा पामे ते 'चक्रवर्ति' लब्धि. १७ बलदेव—बलदेवपणा पावणा ते 'बलदेव' लब्धि. १८ वासुदेव—वासुदेवपणा पावणा ते 'वासुदेव' लब्धि. १९ खीर-मह-सप्पिरासव—खीर-चक्रवर्तीना भोजन, महु-मिश्री द्ध, सप्पि-घृत ऐसा मीठा वचन २० कोठबुद्धि-जैसे कोठेमे बीज विणसे नहीं तैसे सत्रार्थ विणसे नही. २१ पयाणुसारी—एक पदके पठनेसे अनेक पद आवे. २२ बीयबुद्धि एक पदके पढनेसे अनेक तरे के अर्थ जाणे. २३ तेयग—जिणे तपविशेषे करी तेजोलेक्या उपजे. २४ आहारग—चवदेपूर्वधर आहारक शरीर करे (जब) शंका पडे. २५ सीयलेसाय— शीतलेक्या उपजे तपविशेषे करी. २६ वेयव्वदेह — घणे रूप करवानी शक्ति. २७ अक्खीण-महाणसी आहार जां लगे आप न जीमें तां लगे ओर जीमे तो खूटे नहीं. २८ पुलाय—चक्रवर्ती आदिकनी सैन्या चूर्ण करनेकी शक्तिः

१ पासेथी । २ पुरीष । ३ सूत्र । ४ मेल । ५ पूर्वी तुं।

अर्हत, चक्की, नासुरेव, बलदेव, संभिन्नश्रोत, चारण, पूर्वधर, गणधर, पुलाक, आहा-रक (ए) दश लिब्धमां भव्यस्तीने नहीं होती है. शेष १८ हुवै तथा ए अने केवली, ऋजमित, विपुलमित एवं तेरह लिब्धमां अभव्य पुरुषने न हुवै, शेष पंदर हुवै. तथा अभव्य स्त्रीयांने पिण १३ ए अने मधुश्वीरास्त्रव लिब्ध एवं चौद नहीं हुवै, शेष १४ हुवै. ए पंदरे द्वारे कहीं अवधिज्ञान नखाण्याः

मनःपर्यवज्ञानको दो भेद—ऋजुमित १ विपुलमित २. केवलज्ञानका एक भेद है. एह पांच ज्ञानका खरूप छेशमात्र लिख्या, विशेष नंदीमे.

(५७) अथ 'उपमा' प्रमाण लिख्यते — असंख्याताका मापे आठ.

8	पल्योपम स्र रू प	कृवा योजन १ लांवा चौडा तिसकी परिधि ३ योजन साधिक. इह योजन प्रमाणांगुलसे है. तिसकू वादर पृथ्वीके शरीर तुल्य रोमखंडसे भरिये ठांस कर जिसे (अग्निसे) जले नही, जलसे वहे नही, चक्रीसैन्याके उपर चलनेसे दवे नही; तिसमेसुं सौ सौ वर्ष गये एकेक खंड काढीये. जब ^१ रीता होवे सर्व कूवा तद एक पत्योपम कहीये.
ર	सा ग र	दस कोडाकोडी कूये खाली होइ तद एक सागरोपम क्षेयं.
3	स् <u>ची</u> अंगुल	पल्योपमके छेद जितने होइ उतने ठिकाणे पल्योपमके समय लिखके आपसमे गुणाकार कीजे. जो छेहदे आवे सो सूची अंगुलके प्रदेशांकी गिणती. तिसके छेद ६५५३६।१६ छेद.
8	प्रतर अंगुल	पत्य समय १६ छेद ४ १६ १६ १६ १६ सूची अंगुल ६५५३६ प्रदेश सूची अंगुलका वर्ग सो प्रतर अंगुल ४२९४९६७२९६; छेद ३२.
ų	घन अंगुल	प्रतर अंगुल ४२९४९६७२९६ कूं सूची अंगुल ६५५३६ थी गुण्या घन अंगुल होय. २८१४७४९७६७१०६५६; तिसके छेद ४८.
&	लोकाकाश- श्रेणि	पल्यके छेद जितने होइ तिनका असंख्यमा भाग लीजे. तितने ितकाने पर घन अंगुलके प्रदेश रखकर आपसमे गुणाकार कीजे. जो छेहदे आवे सो लोकाकाशके श्रेणी एकके प्रदेश होइ. ७९२२८१६२५१ ४२६४३३७५९३५४३९५०३३६; छेद ९६. पल्य छिद।असंख्य भाग घन अंगुल छिद।छेद।लोकाकाश-श्रेणि सम१६। ४ । २ १८१४७९७६७१०६५६।४८। छेद ९६
9	लोक- प्रतर	लोकश्रेणिका वर्ग कीजे सो लोकप्रतर. तिसके छेद १९२.
٤	लोक- घन	१९२ छेद प्रतरके हैं. तिनकूं श्रेणि छेद ९६ सुं गुणाकार कर्या 'लोक का घनं होय. तिसके छेद २८८ अंक. सर्व असत् कल्पना जानने.

अथ प्रकारांतरसुं श्रेणि करनेकी आझाय—जघन्य प्रतर असंख्यातक्कं दुगणा करे, उस पर पत्योपमकी वर्गशलाकाक्कं भाग दीजे. जो हाथ आवे उसक्कं घनांगुलकी वर्गशलाकामें मेल दीजे सो लोकाकाशकी श्रेणिकी वर्गशलाका हुई. इसकी असत् कल्पनाका (५८) यंत्रसे खरूप जानना—

जघन्य प्रतर असंख्य	दूणा	पल्यकी वर्ग- शलाका	भाग देतें हाथ लगे	घनांगुल वर्गरालाका	मेला कीये	छट्टा वर्ग
१	२	२	१	५	Ę	७९२२८१६५१४९६४३३७– ५९३५४३९५०३३६

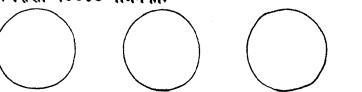
(५९) श्रीअनुयोगद्वार(सु० १४६)से संख्य असंख्य अनंत खरूपं

संख्यात	•	जघन्य	मध्यम	उत्कृष्ट
अ <u>-</u> :	परित्त	,,	,,	,,
सं ख ्या	युक्त	33	,,,	77
त	असंख्य	"	"	"
अ	परित्त	,,	>>	11
नं	युक्त	55	. 39	33
त	अनंत	33	71	55

एकका वर्ग भी एक तथा घन भी एक. गुणाकार एके से जिस राशिक् कीजीये सो जों की त्यों रहे तथा एकसं भाग जिस राशिक् दीजीये सो वी जों की त्यों रहे. तिस कारणसे एका गिणतीमे नही. द्येसे गिणती. सो द्या 'जघन्य संख्याता' कहीये. इसथी आगे २।४।५ यावत उत्कृष्ट संख्यातेमेसुं एक ऊणा होइ तहा ताइ सर्व 'मध्यम संख्याता' जानना. अब उत्कृष्ट संख्याता लिखीये हैं 'विस्तरात्—

सरसो १; यवमे ८, अंगुलमे ६४, हाथमे १५३६, दंडमे ६१४४, कोशमे १२२८८-०००, सूची-योजनमे ४९१५२०००, प्रतर-योजनमे २४१५९१९१०४००००००, घन-योज-नमे ११८७४७२५५७९९८०८००००००००.

विष्कंभ एक लाख योजन, गभीरपणा १०००, परिधि ३१६२२७ योजन झझेरी वेदका ८ योजन, शिखा २८७४८ योजनकी.



१ अनवस्थित पाला. २ शलाका पाला. ३ प्रतिशलाका पाला. ४ महाशलाका पाला.

अथ पाला १ तिसके योजन योजन प्रमाण खंड करणेकी आम्राय लिख्यते—इहा पाला एक योजन, लक्ष विष्कंभ जंबूद्वीप समान, जिसका भूमिमे अवगाढपणा १००० योजन तिस पालेकी तीन कांड तीनमे प्रथम कांड १००० योजनके अवगाढपणेका, द्जा कांड ८ योजनको जाड-पणेका, तीजा कांड २८७४८ योजनकी सिखा, तिसका मूलमे विष्कंभ तथा परिधि जंबूद्वीप समान, उपरि जाके सिखा बंधे तिहा सरसोका दाणा १ उसके उपरि दाणा द्जा नव हरे (रहे?).

(६०) इन तीन कांडका घन खंड यंत्रम्—

१ संख्या	३ कांड	विष्कंभ	अवगाढ	घनयोजन प्रमाण खंड
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	प्रथम कांड भूमिमे	एक लाख योजन मूल	१००० योजन	७९०५६९४१५० योजन १॥ कोस ६॥ हाथ १००० गुण्या कर्या ७९०५६९४१५०४३९ योजन १ कोस १६२५ धनुष घनयोजनके खंड हूये.
. 2	दूजा कांड भूमिसे उपरि वेदका ताइ	"	८ योजन	७९०५६९४१५० योजन १॥ कोस ६२॥ हाथ ८ गुणा कर्या ६३२४५५५३२०३ योजन २ कोस १२५ धनुष इतने घनयोजन प्रमाण खंड हूये.
# 1 mm 1	कांड तीजा वेदका से उपरि सिखा ताइ	,,,	२८७४८ योजन	२७७७९१६१६ योजन परिधिका छट्टा वांटा तिसका वर्ग होइ इसकूं सिखासूं २८७४८ गुणा कर्या घनयोजन प्रमाण खंड ७९८५३६५३५३६७६८.

अथ इन तीनो कांडाके घन योजन मिलाइये तदा अंक चवदे होय ८७८२२५९३-२४०४१० ए समस्त पालेके घनयोजन हूये. एक घनयोजनमे ११८७४७२५५७९९८०८-०००,०००,००० सरसों तिस थकी गुणाकार कीजे तब अंक अडतीस आवे. तितने १ पालेमे सरसुं जानने. अंक अग्रे-१०४२८६९१९४४५२१४५५२२८९७५८४१२८०००००-००००० अंक.

अनवस्थित पालेकूं असत्कल्पनाथी कोइ उठावै दाणा १ द्वीपमे, दाणा १ समुद्रमे इस तरे जंबूद्वीप आदिकमे प्रक्षेपे करी ठाली होवे तदा एक दाणा अनवस्थितका तो नहीं ओर दाणा १ शलाका पालामे प्रक्षेपिये. अब जैहां ताइ दाणे द्वीप समुद्रामे गये है तिण सर्व ही द्वीप समुद्रा प्रमाण पाला कल्पीये. तिणथी आगेके द्वीप समुद्रामे एकेक दाणा प्रक्षेपिये ज्दा रीता होय तदा १ दाणा शलाकामे फेर प्रक्षेपिये. ऐसेही अनवस्थित पालेके भरणे अने रिक्त करनेसे एकेक दाणे करी शलाका मरीये. अने जिहां छेहडला दाणा गया है तितने द्वीप समुद्रां प्रमाण अनवस्थित पाला भरीये; भरके उठाइये नहीं, किन्तु शलाका पाला उठाइये उठा करके ते अनवस्थित पत्यांक ते क्षेत्रथी आगे एक एक दाणा अनुक्रमे द्वीप समुद्रने विषे प्रक्षेपीये. जदा तिसका अंत आवै तदा प्रतिशलाका पालेमे प्रथम प्रतिशलाका प्रक्षेपी पछै

वली अनवस्थित पाला उठाके जिस जगे शलाका पाला पूरा हूया था ते क्षेत्रथी आगे द्वीप समुद्रामे एकेक सरसों अनुक्रमे प्रक्षेपीये. पछे वली शलाका पालामे एक दाणा प्रक्षेपीये. इसी तरे वली अनवस्थित पाला भरणे अने रीता करणेसे शलाका भरीये. तदा अनवस्थित अने शलाका ए दोनो भर्या हुंता; पछे शलाका पाला उठाइने पूर्वीक्त प्रकारे आगले द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपीये. पछे बली एक दाणा प्रतिशलाका पालामे प्रक्षेपीये. एवं अनवस्थित पालेके भरणे रीते करणेसे शलाका पाला भरीये अने शलाकाके भरणे रीते करणेसे प्रतिशलाका भरीये जदा प्रतिशलाका १ शलाका २ अनवस्थित ३ एवं तीनो पाले भरे होइ तदा प्रतिशलाका पाला उठाइने तिमज आगले द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपीये. जिहा पूरा होय तदा १ दाणा महाशलाका पालेमे प्रक्षेपीये. फेर शलाका पाला उठाइने तिमज आगे संचारीने प्रतिशलाका पल्यमे वली एक सरसव प्रक्षेपीये. पछे अनवस्थित उठाइने तिम ज शलाका पालानी समाप्तिना क्षेत्र आगे द्वीप समुद्रामे प्रक्षेपी तदा शलाका परवमे वली एक दाणा प्रक्षेपीये. एवं अनवस्थित पाला उठावणे अने प्रक्षेपणे करी शलाका पर्य भरणा तथा शलाका पर्यने उपाडवे प्रक्षेपवे करी प्रतिशलाका पाला भरणा. तथा प्रतिशलाका पालाने उपाडवे प्रक्षेपवे करी महाशलाका पर्य भरणा. इम करता जदा चारो ही परय भर्या हुइ और अनवस्थितादि चारो पालोंके जितने दाणे द्वीप समुद्रांमे प्रक्षेप करे है वे भी सर्व जब चारो पालोमे मेलिए तदा उत्कृष्ट संख्या-तेसे एक सरसव अधिक होय है. तिस एक सरसों सहित कीयां 'जवन्य परित्त असंख्याता' होय. इस जघन्य परित्त असंख्यकूं अन्योन्य अभ्यास कीजे तिसमेसुं दोय दोय निकासिये तहा ताइ 'मध्यम परित्त असंख्याते' होय. तिसमे एक भेलीये तब 'उत्कृष्ट परित्त असंख्याता' होय. तिसमे एक और मिले तब 'जघन्य युक्त असंख्य' होय.

अन्योन्य अभ्यासकी आझाय—यथा ५ का अन्योन्य अभ्यास करणा है। प्रथम ५ कूं विषे २ दीजे स्थापना-१११११. एकेकके उपरि वै ५।५ पांच पांच दीजे।

स्थापना-- १९१११ अब उपरिकी पंक्तिके अंकाकूं आपसमे गुणाकार कीजे.

स्थापना—	ષ	५	ų	ध्य	ધ
	8	१	?	१	8
	ષ	३५	१२५	६२५	३१२५

छेल्ला गुणाकार करते जे राशि आवे सो उत्पन्न राशि जाननी इस तरे अस्योन्य अभ्यासकी रीति जाननी

जघन्य युक्त असंख्य प्रमाण एक आविलके समय है. तिसका अन्योन्य अभ्यास करे तो अने दोय निकासिये तो तहा ताइ 'मध्यम युक्त असंख्याते' कहीये. तिसमें एक मेले 'उत्कृष्ट युक्त असंख्याते' होय. उत्कृष्ट युक्त असंख्यातेमें एक मेलीये तब 'जघन्य असंख्यात असंख्याते' होय. इसका अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिणमेसु दोय निकासिये तहां ताइ 'मध्यम असंख्यात असंख्याते' होय. उसमें एक मेले तब 'उत्कृष्ट असंख्यात असंख्याते' होते हैं. मत्यंतरे च—

अनेरा आचार्य वली 'उत्कृष्ट असंख्यात असंख्यातानो खरूप इम कहे है यथा जघन्य असंख्यात असंख्यातानी राशिनो वर्ग करीये, पछे ते वर्गित राशिना वली वर्ग करीये, पछे वली वर्गराशिना वर्ग करीये इम तीन वार करके तिसमे दस बोल असंख्यातांके मेलीये ते कौनसे ? (१) लोकाकाशना प्रदेश, (२) धर्मास्तिकायना प्रदेश, (३) अधर्मास्तिकायना प्रदेश, (४) एक जीवना प्रदेश, (५) स्क्ष्म बादर अनंतकाय वनस्पतिना औदारिक शरीर, (६) अनंतकायना शरीर वर्जीने शेष पृथ्वीकाय, अष्काय, तेजस्काय, वायुकाय, प्रत्येक वनस्पतिकाय अने त्रसकाय इन सबके शरीर, (७) स्थितिबंधना कारणभूत अध्यवसाय ते पिण असंख्याता, (८) अनुमागबंधके अध्यवसाय, (९) योगच्छेद प्रतिभाग, (१०) उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप कालना समय. एवं १० बोल पूर्वोक्त त्रिवर्गित राशिमे प्रक्षेपके फेर सर्व राशि तीन वार वर्ग करीये; जे राशि हुये तिसमेसुं एक काल्या 'उत्कृष्ट असंख्यात असंख्याता' होय.

(६१) मध्यम असंख्यात असंख्यातमे जे पदार्थ है तिनका यंत्रम्—

द्रव्यथी १	बादर पर्याप्त तेजस्कायसे लगाय के सर्व निगोदके शरीरपर्यंत ए सर्व मध्यम असंख्यात असंख्यात
क्षेत्रथी २	सुक्ष्म अपर्याप्त जीवके तीसरे संमेकी अवगाहना जितने क्षेत्रमे होवे तहांसे लगाय परम अविधिज्ञानका क्षेत्र ए मध्यम असंख्यात असंख्याते जानने. इहां प्रदेशा आश्री जानना.
	स्क्ष्म उद्घार परयोपमके समयथी लगाय ४ स्थावर वनस्पति विनाकी कायस्थितिके समय ए सर्वे मध्यम असंख्य असंख्य जानने.
भावधी ४	सूक्ष्म निगोदके जीवके योगस्थानस्ं लगाय के संज्ञी पर्याप्तके अनुभाग वंधके अध्यवसाः यके स्थानक ए सर्वे मध्यम असंख्यात असंख्याते. इति नव वोल असंख्याताके जानने.

उत्कृष्ट असंख्यात असंख्यातमे एक मेलीये तब 'जघन्य परित्त अनंता' होय. तिसका पूर्ववत् अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिसमेसुं दोय निकासिये तहां ताइ 'मध्यम अपरित्त अनंता' होय. तिसमे एक मेलीये तब 'उत्कृष्ट परित्त अनंता' होय. उत्कृष्ट परित्त अनंतमे एक मेलीये तब 'जघन्य युक्त अनंता' होय. अभव्य जीव इतने है. तिसका पूर्ववत् अन्योन्य अभ्यास कीजे. तिसमेसु दोय निकासिये तहां ताइ 'मध्यम युक्त अनंता' होय. तिसमे एक मेलिये तब 'उत्कृष्ट युक्त अनंता' होय. हिसयी आगे सर्व 'प्रस्थम अनंत अनंता' जानना. उत्कृष्ट अनंत अनंता नही.

अनेरा आचार्य वली इम वखाणे है - जधन्य अनंत अनंता पूर्वली परे तीन बार

वर्ग करी पीछे ए छ बोल अनंता प्रक्षेपीये. तद्यथा—(१) सर्व सिद्ध, (२) सर्व स्रक्ष्म बादर निगोदना जीव, (३) सर्व वनस्पतिना जीव, (४) तीनो कालके समय, (५) सर्व पुद्रल, (६) सर्व लोकालोकाकाग्र प्रदेश. एवं बोल छ प्रक्षेपी सर्व राशिकूं त्रिवर्ग करीये. जो राशि हुई तो पिण उत्कृष्ट अनंत अनंता न हूवे. तिवारे पछी केवलज्ञान दर्शनना पर्याय प्रक्षेपीये. इम कर्या उत्कृष्ट अनंत अनंता नीपजे. इस उपरांत और वस्तु नहीं. एणी परे एकेक आचार्यना मतने विषे कह्या. अने श्रीह्मजना अभिप्रायथी जो उत्कृष्ट अनंत अनंता नहीं. तत्त्व केवली जाणे. इति अनुयोगद्वार(स्. १४६) वृत्तिवाक्यप्रमाणात् अत्र लिखिता असाभिः।

(६२) मध्यम अनंत अनंतेमे जो जो पदार्थ है तिनका यंत्रम्

द्रव्यथी १	सम्यक्त्वके प्रतिपातिसे लगायके सर्व जीव तथा दोप्रदेशी स्कंधसे लेकर सर्व पुद्गल मध्यम अनंत अनंतेमे जानने
क्षेत्रथी २	आहारक दारीरके विखरे थके जितने स्कंध होय तिनकू 'मुकेलगा' कहीये. सो अनंत स्कंध है. तिणोने जितना क्षेत्र स्पर्शा तिससुं लगायके सर्व आकाशके प्रदेश ए सर्व मध्यम अनंत अनंते जानने.
कालथी ३	अर्ध पुद्रलपरावर्तथी लगायके तीनो कालके समय ए सर्व मध्यम अनंत अनंते जानने.
भावथी ४	सूक्ष्म अपर्याप्त निगोद जीवके जघन्य अज्ञानके पर्याय तिणसे लगायके केवलज्ञानके पर्याय ए सर्वे मध्यम अनंत अनंते जानने.

अथ जंबूद्वीपके उपिर सरसं शिखा चढे तिसकी आम्नाय लिख्यते गोमह(म्मट)सारात् दोहा—धान तीन है सुकओ, बादरनीका जोइ । नौ ९ दस १० ग्यारह ११ भाग, इह जो परिधिका होइ ॥ १ ॥ वेधक कहीये पुंजको, तासो करि गुणकार । परिधि छठे भाग कृति, घन फल कहों। निहार ॥ २ ॥

(६३) खरूपयंत्रं

सुक धान गेहु आदि	बादर धान चणा आदि	नीका धान सरसो आदि
वेस १	विषा १	क्ष १
परिधि ९	परिधि १०	3
२ ए घन फल ४	७ ए घनफल ९	१३ ए घनफल ३६

9 अनुयोगद्वारनी वृत्तिना वाक्यना आधारे अहीं अमे लखेल छे। २ गोम्मटसार नामना दिगंबरीय प्रंथमांथी।

(६४) वर्गके छेदांका खरूप निरूपक यंत्रम्-

वर्ग	प्रथम	दूजा	तीजा
अंक	४	१६	२५६
छेद	२	ઝ	6
स्थापना	स्थापना	स्थापना	स्थापना
	२,१	८,४,२	१२८,६४,३२,१६,८,४,२

अथ लोकोत्तर गिणती लिख्यते—

चौपाइ लोकोत्तर गिणती सिद्धांत, जासौ संख असंख अनंत ।
ताके भेद दोइ मन मानि, छेद गिणतओ वरग प्रमानि ॥ १॥
छेद राशिका आधा आधा, जब लग अंतमे एक ही लाधा।
राशिकूं आपही सौ गुणाकार, 'वरग' कहे इह बुद्धिविचार ॥ २॥

दोहा-धारा तीन ही जानीये, वरगधार घनधार । होइ घनघनाधार इम, पंडित कहे विचार ॥ १॥

(६५) अथ इन तीनो धारका जो प्रयोजन है सो यंत्रं गोमह(म्मट)सारात्

वर्गशलाका	वर्गधारा	छेदश्लाका
<u>`</u>	8	۲
२	१६	પ્ર
ર	२५६	6
8	६५५३६	१६
4	४२९४९६७२९६	३२
६	१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६	ફ્ષ્ટ
v	३९ अंक आवै	१२८
4	৩८ ,, ,,	२५६
संख्याते	संख्याते वर्ग जाइये तब जघन्य परित्त असंख्याते आवै	संख्याते
"	संख्याते वर्ग जाइये तव जघन्य युक्त असंख्याते आवै	17
असंख्याते	असंख्याते वर्ग जाइये तब जघन्य असंख्य असंख्याते आवै	असंख्याते
77	असंख्याते वर्ग जाइये तव स्हम अद्धापल्योपमके समय होय	33
33	असंख्य वर्ग जाइये तब सूची अंगुलके प्रदेश	,,
35	१ विरीया वर्ग कीजे तब प्रतर अंगुलके प्रदेश	57
77	असंख्य वर्ग जाइये तव जघन्य परित्त अनंत होय	"

असंख्याते	असंख्य वर्ग जाइये तब जघन्य युक्त अनंत आवे	असंख्यात
55	अनंत वर्ग जाइये तब जघन्य अनंत अनंते आवे	अनंत
अनंत	अनंत वर्ग जाइये तब जीवास्तिकाय	7,
"	अनंते वर्ग जाइये तब पुद्रलास्तिकाय	71
99	अनंते वर्ग जाइये तब अद्धा-काल	11
57	अनंते वर्ग जाइये तब सर्व आकाश श्रेणिके प्रदेश	35
: 55	१ विरिया वर्ग कीजे तब सर्व आकारा प्रतरके प्रदेश	17
>>	अनंते वर्ग जाइये तब धर्मास्तिकायके पर्याय	77
99	अनंत वर्ग जाइये तव १ जीवके पर्याय	15
55	अनंते वर्ग जाइये तब जघन्य अज्ञानके पर्याय	39
"	अनंत वर्ग जाइये तब क्षायिक सम्यक्त्वके पर्याय	,,
99	वर्ग अनंते जाइये तब केवलक्षान(के) पर्याय	"
षर्गरालाका	घ्रनधारा	छेदशलाका
<u> </u>	en e	3
ર	દ્દછ	६
3	४०९६	१२
8	१६७७७२१६	२४
4	२८१४७४९७६७१०६५६	४८
ફ	७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ गर्भज मनुष्य	९ ६
ঙ	५८ अंक	१९२
۷	११६ अंक	३८४
असंख्य	असंख्य वर्ग जाइये तब घनांगुलके प्रदेश आवै	असंख्य
55	असंख्य वर्ग जाइये तब लोकाकारा श्रेणिके प्रदेश आवै	"
99	१ विरिया वर्ग कीजे तब छोकाकारा प्रतर प्रदेश आवै	55
वर्गशाळाका १	घनाघन घारा ५१२	छेदशलाका ९
ર ્રં,	२६२१४४	१८
₹ ′	६८७१९४७६१३६	३६
8	२२ अंक	७२
4	४१ ,,	१४४
Ę	૮ર ,,	२८८
,- \& \	१६ 8 ,,	५७६

4	२२७	१०५३
असंख्य	असंख्य वर्ग जाइये तब लोकाकारा प्रदेश आवै	असंख्य
37	,, ,, ,, तेउकायके सर्व जीव राशि	99
5)	,, ,, ,, तेउकायकी कार्यस्थिति समय	55
77	१ विरिया वर्ग कीने तब परम अवधिक्रानका क्षेत्र आवै	13
77	असंख्य वर्ग जाइये तब स्थितिबंधके अध्यवसाय	57
55	,, ,, ,, अनुभागबंधके ,,	15
77	,, ,, ,, निगोदके शरीर औदारिक	59
55	,, ,, ,, निगोदकी कायस्थिति	55

दोहा—च्यारि ४ आठ ८ ओ पांचसे, बारह ५१२ आदि कहंत । धारा तीनो जाणिये, आगे वर्ग अनंत ॥ १ ॥ चौपइ—कृत धारामे वर्ग विचार, ताके धन लह्ये धनधार । धनाधन धारामे तस बुंद, इम भाषे सबही जिनचंद ॥ १ ॥

> दोइ २ तीन ३ अरु नौ ९ है छेद, आदि तिहुं धारा इम मेद । आगे दुगुण दुगुण सब ठाम, वरग कृति घन चन्दो नाम ॥ २ ॥ दूने कृतिमे तिगुने घणा, नौ गुण छेद घनाघन तणा ।

इक इक घारा तीन प्रकार, गुण १ प्रनि भाग २ अयसि ३ निहार ॥ ३ ॥

छेद जोग है इस गुणकार, तस विजोग है भागाहार। निजसम थल थापीजे रास, अन्नो अन्नताको अभ्यास॥ ४॥

दोहा—पहिले विरलन देय पुनि, तासौ है उत्पन्न।

विरलन जाहि विषे(खे)रीये, देय उपरजो दिन्न ॥

चौपइ—विरलन राशि करो गुणाकार, देय छेद सौ बुद्धिविचार ।

जो आवे सो छेद प्रमाण, उत्पन्न राशि इह विद्यमान ॥ १ ॥

विरलन राशि स्थापना—४। ११११, देय राशि स्थापना-४ ४ ४ ६ देय राशिके

8888

छेद २ सें देय राशिकूं गुण्या लब्ध ८ छेद. इतने उत्पन्न राशिके २५६ छेद होय.

दोहा-अर्ध अर्ध जो छेदको, कीजे सो कृति रास।

अपने छेद समान ही, वर्ग होय अम्यास ॥ १ ॥

राशि १६, छेद ४. चौथे ठिकाणे उत्पन्न राशि १८४४७४४०७३७०९५५१६१६.

(६६) अथ इन्द्रियस्वरूपयंत्रम् प्रज्ञापना १५ मे पदे

	निवर्तन इन्द्रिय	अभ्यन्तर इन्द्रिय १	५ इन्द्रियांका संस्थान कदंब पुष्प आदिका कह्या है. अंगुलके असंख्य भाग.
द्र	आकार	२	८ इन्द्रिय कर्ण २, नेत्र २, नासिका २, जिह्ना १, स्पर्श १, इनका संस्थान नाना प्रकारे
व्य इ न्द्रि	व्य बाह्य इन्द्रिय	खड़ धारा समान खच्छतर पुद्रल समूह रूप जैसे खड़धाराके सार पुद्रल काम करे है तैसे इन्द्रियाके सारता तिनके व्याघातसे अंधा, बहिरा आदि होता है.	
य		अभ्यंतर २	अभ्यंतर उपकरण शक्तिरूप जानने.
भा	लिध १	श्रोत्रेन्द्रि	य आदि विषय सर्व आत्माके प्रदेशामे तदावरणीय कर्मका क्षयोपशमः
न्द्रि य	उपयोग २	स्व स्व विषय	ामे लिब्बरूप इन्द्रियाके अनुसारे आत्माका व्यापार ते 'उपयोग इन्द्रिय' कहीये. इति नैन्दीवृत्तोः

(६७) श्रीप्रज्ञापना पद १५ से इन्द्रिययन्त्रम्

personal and the second second						
इन्द्रिय	जघन्य आदि	श्रोत्रेन्द्रिय	चश्च	झाण	रसनेन्द्रिय	र पर्शन
संस्थान	0	कदंब पुष्पका	मसूर चंद्र	अतिमुक्त	छु (खु) रप्प	नाना संस्थान
जाडपणा	0	अंगुल असंख्य भाग	\rightarrow σ	च	म्	\rightarrow
विस्तार	0	";	एवम्	एवम्	पृथक् अंगुल	शरीरप्रमाण
स्कंध	0	अनंत प्रदेश	o $ au$	व	म्	\rightarrow
अवगाहन	असंख्य प्रदेश	\rightarrow	ए	व	म्	\rightarrow
अ ल्प	अवगाहना	२संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्य	४ असंख्य	५ संख्यस्वरूप टीकामे
ब -	प्रदेश	७ संख्येय	६ अनंत	८ संख्येय	९ असंख्येय	१० संख्येय
हु त्व	कर्कश गुरु	२ अनंत	१ स्तोक	३ अनंत	४ अनंत	५ अनंत
म्	मृदु लघु	९ अनंत गुणे	१० अनंत गुणे	८ अनंत गुणे	७ अनंत गुणे	६ अनंत गुणे
स्पृष्ट	0	स्पृष्ट	अस्पृष्ट	स्पृष्ट	स्पृष्ट	स्पृष्ट
प्रविष्ट	0	प्रविष्ट	अप्रविष्ट	प्रविष्ट	प्रविष्ट	प्रविष्ट
	जधन्य	अंगुल असंख्य	o $ au$	व	म्	\rightarrow
विषये	उत्कृष्ट	१२ योजन	लाख योजन झझेरी	नव योजन	नव योजन	नव योजन

१ नन्दीसूत्रनी बृत्तिमां ।

(६८) अथ इन्द्रियांकी उत्कृष्ट विषय

श्रोत्रेन्द्रिय	१२ योजन	८०० धनुष्य				
चक्षु	लक्ष "	५९०८ "	२९५४ धनुष्य			
व्राण	۹ ,,	800 ,,	२०० ,,	१०० धनुष्य		•
रसना	۹ ,,	५१२	२५६ ,,	१२८ "	६४ घ.	
स्पर्शन	۹,,,	<i><u>६</u>४००</i>	३२०० ,,	१६०० ,,	८०० घ.	४०० घ.
0	श्रोत्रेन्द्रिय संज्ञी	पंचेन्द्रिय असंशी	चौरेंद्री	तीनेंद्री	बेइंद्री	एकेंद्री

(६९) अध श्वासोच्छ्वासस्रूपयंत्रम्

आणमंति	ध्यानमे जो ऊंचा सास (श्वास) लेवे सो 'आणमंति' कहीये.
पाणमंति	ध्यानमे जो नीचा सास लेवे सो 'पाणमंति' कहीये.
उसास	ध्यान विना जो ऊंचा सास छेवे सो 'उसास' (उच्छ्वास).
निसास	ध्यान विना जो नीचा सास लेवे सो 'निःश्वास' कहीये.

(७०) (द्रव्यप्राणादि)

भावप्राण ४	द्रव्यप्राण १०
ज्ञानप्राण १	ज्ञानप्राणसे ५ इन्द्रिय- प्राण उत्पत्ति ५
वीर्यप्राण २	वीर्यप्राणसे मनबल, चचन, काया

भावप्राण ४	द्रव्यप्राण १०
सुखप्राण ३	सुस्रपाणसे श्वासोच्छ्- वास प्राण १
जीवितव्यप्राण ४ सर्वे ४ हूये	जीवितव्यप्राणसे आयु प्राण; एवं १०

(७१) *आठ आत्मा भगवती श० १२, उ० १० (सू० ४६७)

	द्रव्यात्मा	कषायात्मा	योगात्मा	उपयो- गात्मा	श्चानात्मा	दर्श- नात्मा	चारि त्रात्मा	वीर्यात्मा
द्रव्यात्मा १	. 0	नियमा	नि	नि	नि	नि	नि	नि
कषायात्मा २	भजना	0	भ	भ	भ	भ	भ	भ
योगात्मा ३	भं	नि	o	भ	भ	भ	भ	भ
उपयोगातमा ४	नि	नि	नि	0	नि	नि	नि	नि
ज्ञानात्मा ५	भ	भ	भ	भ	0	भ	नि	भ
द्शनात्मा ६	नि	नि	नि	नि	नि	0	नि	नि
चारित्रात्मा ७	भ	भ	भ	भ	भ	भ	0	भ
वीर्यात्मा ८	भ	नि	नि	भ	भ	भ	नि	0

*अल्पबहुत्व-"सन्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायाओ अणंत०,

(७२) भगवती श० १२, उ० ९ (सू० ४६१-४६६), पंच देव

पंच	गुण	आग- ति	तिर्च-	मनु-	देवगति	स्थिति	रूप	काल	संतिष्ठन	अं	अहप-	अव-
देव-			च	ष्य	· •	*	विकु-	करी कटां	काय-	त	बहुत्व	गाह-
नाम		नर- कथी	गति	गति			र्वे	कहां जावे	स्थिति	₹	3	ना
भव्य-	तिर्य	सातो	युगल	युग-	सर्वार्थ-	ज० अंत•	ज०.		ज० अंत-	ज० दश	8	ज॰ अंगु-
द्रव्य- देव	च,	नर-	वर्जी	ल	सिद्धि	र्मुहूर्त;	१,२,३	तके	र्मुहूर्तः	हजार वर्ष,अंत-	· अ	लके
देव	मनु-	कका	शेष	वर्जी	वर्जी २५	उ० तीन	उ०	देव-	उ० तीन	वष,अत-	सं	असंख्य
१	ष्य,	आवे	सर्व	रोष	देवलो-	पल्योपम	असं-	तामे	पल्योपम	र्मुहूर्त	ख्या	भाग;
	देवता होणे-		आवे	सर्व माहे-	कादि	2	ख्य	ऐक-		अधिकः उ० वन-	त	उ०
	हाण <u>-</u> वाला		-	थी	सर्व देव	-		स्मिन्		स्पति-	गु	हजार
	41001			आवे						काल	णा	योजनकी
न		प्रथम			सर्व देव-	ज० सात	ज०	भोग	ज० ७००	ज०१	१	ज० ७
₹	वर्तीं	नरक	•		तानो	सो वर्षः	राश	न	वर्षः; उ०	सागर	स्वी	धनु-
दे	İ	थी	नही	0	आव्यो	उ० चार-	३; उ०	त्यागे	८४ लक्ष	झझेरा;	स्तोक	ष्यकी;
्व २		आवे	गरा			लक्ष पू-	अ	तो	पूर्व	उ० देश	,	उ० ५००
•						वेनी	सं	नरक-		ऊन अर्घ		धनु-
•	-						ख्य	मे		पुद्रल		ष्यकी
धर्म-	साधु	पहि-	तेज,	युग-	वैमानिक	ज० अंत-		वैमा-	ज०१	ज० पृथ-	३	ज० १
देव		ली	वायु	ल	प्रमुख	र्मुहूर्त,		निक-	समय;	क् पल्यो-	संख्या-	हाथ
3		पाच	युगल	<u> २ २ -</u>	2	उ० देश	5,	मे	उ० देश	पमः उ०	त-	झझेरी;
•		नरक थी	वर्जा शेष	ने शेष सर्व	देवथी	ऊन पूर्व		तथा	ऊन पूर्व	देश ऊन अर्घ	गु- णा	उ० ५००
		था आवे	शुष आवे	आवे	आवे	कोटि		मोक्षे	कोटि	पुद्रल	of f	धनुष्य
देवा-	ती	पहि				ज० ७२	शक्तिः	मुक्ति-	1		२	ज० ७
धिदे-	र्ध	ली					तो है,	मे	वर्षः उ०		संख्यात	1 _
व	क	तीन	0	0	वैमा-	८४ छक्ष	परंतु	1	८४ लक्ष	0	गुणा	30400
8	₹	नरक थी			निकथी	पूर्वनी	विकुर्वे	जावे	पूर्व		3.11	धनु-
J		थ। आवे					नही			•		ष्यकी
भा	चार		एकें-	संमू-		ज० दस	ज०	पृथ्वी	ज० दस	५०० ध-	4	ज० १
घ	प्रका-		द्वी ५.	चिछम		हजार	१,२;	अप्	हजार	नुष्यकी	अ	हस्तकी
दे	रना		विग-	मनुष्य वर्जी	1	वर्षः; उ०	उ०	वन-	वर्षः उ०	ज० अंत-	सं	उ० ७
व	देवता	[लेंद्री			३३ सा-	अ-	रपात	33 277-	र्मुहूर्त;	ख्या	हाथ;
Ŋ		0	3	शेष	0	गरोपम	संख्य	तिर्यच	गरोपम	उ० वन-	त	उत्तर
			वर्जी	सर्व- थी				3;		स्पति-	गु	वैक्रिय
			द्रोप	आवे				मनु-		काल	णा	लाख
- '		,.	आवे			<u> </u>		ष्यमे				योजन
_			-00			1	•		20 0		2 2 11	

जोगायाओ वि०, वीरियायाओ वि उवयोगद्वियदंसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ वि०"—भगवती स्० ४६७।

(७३) (पुद्गलपरावर्तन) भगवती द्या० १२, उ० ४ (सू० ४४८)

पुद्रलपरा- वर्तन ७	औदारिक १	वैकिय २	तैजस पुद्रल ३	कार्सण ४	मनपुद्रल ५	वचनपुद्रल ६	आनप्राण ७
स्तोक काळ सर्वमे किस का ?	३ अनंत	७ अनंत	२ अनंत	१ स्तोक	५ अनंत गुणा	६ अनंत	४ अनंत
थोडा पुद्रल कौनसा [कस्य] अने बहुता कौनसा ?	५ अनंत गुणा	१ स्तोक	६ अनंत गुणा	७ अनंत	३ अनंत	२ अनंत	ध अनंत

(७४) अथ पर्याप्तियंत्रम्

		प्र	ारंभक	ालयंत्र	म्	सर्वे पर्याप्तिका		₹	तमाप्ति	कालयं	त्रम्		
प्रथम समय १	२ समय	३ समय	ध समय	५ समय	६ समय	समुचय- काल	स्वामी	१ स्तोक	२ असं- ख्य	३ वि शेष अधि- क	४ विशे- ष	५ विशे ष	६ वि- शेष
आ- हार	आ- हार	आ- हार	आ- हार	आ- हार	आ- हार	समय	संशी पंचे- न्द्रिय	आ- हार	शरी र	इन्द्रि- य	श्वा- सो- च्छ- वास	भाषा	मन
	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	शरीर	अंतर्भुहूर्त	विक ले- न्द्रिय	77	***	,,	"	77	
		इन्द्रि- य	इन्द्रि: य	इन्द्रि- य	इन्द्रि- य	11	एके- न्द्रिय	33	39	77	"		•
			सासो	सासो	सासो	33	ल- ब्धि- अपर्य	"	55	"			
				भाषा	भाषा	0	0	0	0		•		
					मन	0	0	0		,			

विश्वयनयमतेन सर्व पर्याप्ति एक साथ प्रारंभे पिण व्यवहार नय मते एक समयांतरः आहार पर्याप्तिने एक समय लगे अने अन्य सर्वने अंतर्धहूर्त कालम् पृथक् पृथक्.

१ निश्वय नयना अभिप्राय अनुसार ।

(७५) (पर्याप्ति अपर्याप्ति षट्र)

		22		
द्वार	मेद	पर्याप्ति	षट् ६	
•	•	प्रारंभ— सर्वे पर्याप्ति साथ मांडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे	प्रारं सर्वे ए म
	लिध्य अपर्याप्त	o	0	४ साः
एकेन्द्रिय	पर्याप्ता	४ साथ मांडे	४ अनुक्रमे पूरी करे	
षेदंद्री, सेदंद्री, खौरिंद्री,	लिध अपर्याप्त	o	•	५ साः
असं ज्ञी पंचेंद्री	लिब्ध पर्याप्त	५ साथ मांडे	३।४।५ अनुक्रमे पूरी करे	
गर्भज मनुष्य, गर्भज	करण अपर्याप्त	६ साथ मांडे	17	
तिर्यंच पंचेंद्री	करण पर्याप्त	" " "	६ अनुक्रमे पूरी करे	
नैरयिक १ देवता	करण अपर्याप्त	" " "	५ अनुक्रमे पूरी करे	
	करण पर्याप्त	57 55 55	६ पूरी करे	

and the state of t							
अपर्याप्ति षट् ६							
प्रारंभ— सर्वे एक साथ मांडे	समाप्ति— अनुक्रमसे पूरी करे						
४ साथ मांडे	३ पूरी करे						
o	0						
५ साथ मांडे	४ अनुक्रमे पूरी करे						
0	9						
0	0						
o	q						
9	9						
0	0						

(७६) पर्याप्तिके सर्व कालकी अल्पबहुत्व

आहार पर्याप्ति १ १ स्तोक		शरीर प	र्याप्ति २	इन्द्रिय	पर्याप्ति ३	श्वा वास	सोच्छ्- पर्याप्ति ४	भाषा	ग्यांति ५	मन पर्याप्ति ६
		२अ	संख्य	३ विशेष	। अधिक	8	विशेष	9		0
11	55	"	"	"	"	"	"		0	•
- 33	55		55	11	"	४वि.	काल करे	५वि.व	नाल करे	•
		5,	55	5>	15	39 33	77 77 75	" "	99 99	0
55	73	55	"	35	59	ક	वि.	५ ह	त्रेशेष	६ किञ्चित् न्यून
***	,,	"	**	"	77	55	99	99	55	६ विशेष अधिक
"	"	99	55	55	55	"	53	15	"	६ अधूरी ते किञ्चित् न्यून
	11	"	99	. 99	>5	55	99	55	19	६ तुल्यम्

(७७) श्रीप्रज्ञापना पद २८ मेथी पर्याप्ति खरूपयंत्रमिदम्

पर्याप्ति ६	आहार १	शरीर २	इन्द्रिय ३	श्वासोच्छ्- वास ४	भाषा ५	मन ६
अपर्याप्ति	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त	अपर्याप्त
आहारक अनाहारी	नियमात् अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी	आहारी अनाहारी

(७८) आहारयंत्र पन्नवणा पद २८

द्वार	भेद	स्वामी	संख्या	
मे	सचित्त १	तिर्येच १ मनुष्य २	१	
ंद तीन	अचित्त २	देव १, नरक, २, तिर्येच ३, मनुष्य ४	ર	
Ź	मिश्र ३	तिर्यंच १, मनुष्य २	ş	
भे	ओज १	अपर्याप्त अवस्थामे १	૪	
द	रोम २	रोम पर्याप्त २	५	
तीन ३	कवल ३	वेंद्री, तेइंद्री, चौरेंद्री, तिर्येच पंचेंद्री, मनुष्य	Ę	
भे द	आभोगनिवृत्तितः	रोमशाहारी कवळ आहारी	(9	
द बो २	अनाभोगनिवृत्तितः	ओज आहारी, रोम आहारी	۷	
भे द	मनोञ्च	देवता आदिक	٩ .	
द दो २	अमनोज्ञ	नरक आदिक	१०	

अथ १४ गुणस्थान स्वरूप लिख्यते—(१) मिध्यात्व गुणस्थान, (२) सास्नादन गु,, (३) मिश्र गु., (४) अविरति सम्यग्दृष्टि गु., (५) देशविरति गु., (६) प्रमत्त संयत गु., (५) अप्रमत्त संयत गु., (८) निवर्त्य वादर (अपूर्वकरण १) गु., (९) अनिवर्त्त वादर (अनिवृद्धि) गु., (१०) स्रक्ष्म संपराय गु., (११) उपशांतमोह गु., (१२) श्लीणमोह गु., (१३) स्त्रीगी केवली गु., (१४) अयोगी (केवली) गु. इति नाम.

अथ लक्षण—प्रथम गुणस्थानका लक्षण—कुदेव माने; कुदेवके लक्षण—पर्थ विषयी होवे, पुण्य प्रकृति भोग ले, राग द्वेष सहित होवे तेहने देव माने १. कुगुरू—चारित मर्म रहित जे अन्यलिंगी तथा खलिंगी गुणभ्रष्ट, परिग्रहना लोभी, अभिनिवेशकी(श्री), प्राम महात्रते रहित तेहने गुरु माने. धर्म—यथार्थ आत्मपरिणित केवलिमापित अनेकांत—स्याद्वादरूप जिम है तिम न माने, अपनी कल्पनासे सदहणा करे, पूर्व पुरुषांका मत अंग्र करे, सत्र अर्थ विप-रीत कहै, नय प्रमाण न समजे, एकांत वस्तु प्ररूपे, कदाग्रह छोडे नही ते. मिथ्यात्वमोहनीयके उदये सत्पदार्थ मिथ्या भासे जैसे धत्तुरा पीये हूथे पुरुषक् श्वेत वस्तु पीत भान होने तथा जैसे ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचि नहीं होती है तैसे मिथ्यात्वके उदय करी सत् पदार्थ जूठा जाने है ते प्रथम गुणस्थानके लक्षण.

जैसे पुरुषने खीर खंड खाके वम्या, पिण किंचित् पूर्वला खाद वेदे हैं तैसे उपश्रमस-

जैसे 'नालिकेर' द्वीपका मनुष्यका अन्नके उपिर राग नहीं, अने द्वेष वी नहीं तिनोने कदें अन्न देख्या नहीं इस वास्ते. ऐसे जैन धर्म उपिर राग वी नहीं द्वेष वी नहीं ते मिश्र गुणस्था-नका लक्षण जानना. इति तृतीय.

अठारें द्वण रहित सो देव, पांच महात्रतधारी शुद्ध प्ररूपक सो गुरु, धर्म केवलि-भाषित साद्वादरूप, चौकडी द्जीके उदये अविरति है इति चतुर्थ.

१२ (?) अनुव्रत पाले, ११ पिडमा आराघे, ७ कुच्यसन, २२ अभक्ष्य टाले, ३२ अनंत-काय वर्जे, उभय काले सामायिक, प्रतिक्रमणा करे, अष्टमी, चौदस, अमावास्या, पूर्णमासी, कल्या-णक तिथि इनमे पोषध करे ओर तिथिमे नहीं अने इकवीस गुण धारक ए (पांचमाका) लक्षण-

छठा—सतरे मेदे संयम पाळे, पांच महावत पाले, ५ समिति, ३ गुप्ति पाले, चारि-विया, संतोषी, परहित वास्ते सिद्धान्तका उपदेश देवे, व्यवहारमे कले (रह?) कर चौदा उपगरणधारी परंतु प्रमादी है. एह लक्षण छठेकों.

सातमे—संज्वलन कषायना मंद्रपणाथी नष्ट हुया है प्रमाद जेहना, मौन सहित, मोहके उपश्चमावनेक अथवा क्षय करनेक प्रधान ध्यान साधनेका आरंभ करे, ग्रुख्य तो धर्मध्यान हुइ, अंशमात्र रूपातीत शुक्त ध्यान पिण होवे है, पडावश्यक कर्तव्यसे रहित, ध्यानारूढलात्.

अष्टमा—क्षपक श्रेणिके लक्षण—आसन अकंप, नासिकाने अग्रे नेत्रयुगल निवेशी कलुक उचाड्या है नेत्र ऐसा होके संकल्प विकल्परूप जे वायुराजा तेहथी अलग कीना है चित्त, संसार छेदनेका उत्साह कीधा है ऐसा योगीन्द्र शुक्त ध्यान ध्यावा योग्य होता है पीछे पूरक ध्यान, कुंभक ध्यान, स्थिर ध्यान ए तीनो शुक्तके अंतरमें वमे है. इति अष्टम लक्षण.

नवमे गुणस्थानके नव भाग करके प्रकृति क्षय करे. इति नवमा. दसमे सक्ष्म लोभ संज्वलन रह्या और सर्व मोहका उपश्चम तथा क्षय कीया. सर्वथा मोहके उपश्चम होणे करके उपश्चांतमोह गुणस्थान कहीये हैं. ११ मा. सर्वथा मोहके क्षय होणे ते क्षीणमोह गुणस्थान कह्या. १२ मा.

१ ध्यानमां आरूढ होवाथी ।

च्यार घातीया कर्म क्षय किया, केवल ज्ञान, केवल दर्शन, यथाख्यात चारित्र, अनंत वीर्य इन करके विराजमान, योग सहित इति सयोगी.

मन, वचन, काया योग रूंघीने पांच इस अक्षर प्रमाण काल पीछे मोक्ष. (७९) आगे गुणस्थान पर नाना प्रकारके १६२ द्वार है तिनका खरूप यंत्रसे—

		१	ર	3	8	ષ	હ	9	2	९	१०	११	१२	१३	१४
१	जीव मेद १४	१४	9	१	२	१	१	१	१	१	१	8	१	१	8
२	योग १५	१३	१३	१०	१३	११	१३	११	९	९	९	९	९	9	0
3	उपयोग १२	ų	ų	દ્	ફ	દ	_Q	G	9	0	9	9	9	२	२

जीवभेदमे दुजे गुणस्थानमे बादर एकेंद्रीका भेद १ अपर्याप्त कह्या है सो इस कारण-ते एकेंद्रीमे साखादन सम्यक्त है अने स्त्रे न कही तिसका समाधान-एकेंद्रीमे साखादन कोइक कालमे होइ है, बहुलताइ करके नहीं होती, इस कारण ते स्त्रमे विवक्षा नहीं करी. अने कर्मग्रंथमे कोइ कालकी विवक्षा करके कहा है. इस वास्ते विरोध नही. एह समाधान भगवतीकी वृत्तिमे कहा है. दुजे गुणस्थानमे अपर्याप्तका भेद है ते करण अपर्याप्ता जानने, लिब्ध अपर्याप्ता तो काल करे हैं. अने द्जे गुणस्थाने अपर्याप्ता काल नहीं करे. तथा योगद्वारमे पांचमे छट्ठे गुणस्थानमे औदारिकमिश्र योग कर्मग्रंथे न मान्यो, किस कारण? ते तिहां वैक्रिय आहारककी प्रधानता करके तिनो ही का मिश्र मान्याः अन्यथा तो १२ तथा १४ योग जानने. परंत गुणस्थानद्वार तो कर्मग्रंथकी अपेक्षा है: तिस वास्ते कर्मग्रंथकी अपेक्षा ही ते सर्वत्र उदाहरण जानना. तथा उपयोगद्वारमे पहिले १, द्जे गुणस्थाने ५ उपयोग कहै है सो तीन अज्ञान, चक्षु, अचक्षु दोइ दर्शन; एवं ५ उपयोग जानने, द्रजे गुणस्थानमे ज्ञान मलिन है, मिथ्यालके अभिग्रुख है। अवश्य मिथ्यालमे जायगा, तिस कारण ते अज्ञान ही कहाः अन्यथा तो तीन ज्ञान, तीन दुर्शन जानने. अविधिद्र्शन अविधिज्ञान विना न विवक्ष्यी. इस कारण ते ५ उपयोग कहै; अन्यथा तो प्रथम गुणस्थाने ३ अज्ञान, ३ दर्शन जानने तथा तीजे गुगस्थानमे ज्ञान अंशकी विवक्षा ते तीन ज्ञान, तीन दर्शन है; अने अज्ञान अंशकी विवक्षा करें तीन अज्ञान, तीन दर्शन जानने,

, 8	द्रव्य लेश्या ६	દ્	છ	w	દ્ધ	દ્	હ	na na	٩	٤	Ŕ	१	१	१	0
4	भाव [.] लेश्या ६	દ્	Ę	Ę	હ	3	3	3	8	१	8	१	8	2	0

भावलेश्या तीन-कृष्ण, नील, कापीत; एह तीन लेश्या वर्तता सम्यक्त्व न पैडिवजे अने सम्यक्त आया पीछे तो तीनो भावलेश्या होइ है इति भगवतीवृत्तौ अने तीन अप्रशस्त भावलेश्यामे देशवृत्ती (विरति?) सर्ववृत्ती (विरति?) नहीं होइ.

१ पासे.

					_										
६	मूल हेतु ४	ક	3	3	3	3	2	२	२	ર	ৰ	2	१	8	•
૭	उत्तर हेतु ५७		५०	४३	४६	३९	२६	રક	२२	१६	१०	٥,	٥,	و	•
, o	सि थ्या- त्व ५	ų	0	0	0	0	0	0	0	0	o	0	0	o	•
•	अवि- रत १२	१२	१२	१२	१२	११	o	o	0	0	•	0	0	0	0
0	कषा: य २५	24	२५	२१	२१	१७	१३	१३	१३	७	१	0	0	o	0
o	योग १५	१३	१३	१०	१३	११	१३	११	۹,	९	९	९	ę,	७	o
۷	अल्प- बहुत्व	अनंत गुणा १४	असं. १०	अ सं. ११	असं. १२	असं.	सं. ८	सं.	वि. ३ ५	वि. ३ ४	वि. ३ ३	थोवा १	सं. २	सं.	अनं- त गु- णा १३
۹,	मूल [.] भाव ५	. 78	ą	3	4	eq.	લ	ષ	4	લ	· G	ષ	૪	3	2
१०	उत्तर भाव ५३	३४	32	३३ ३२	3¢	३४ ३५	३४ ३३	३० ३१	२७ २८	२८ २९ २७	२३ २२ २१	२१ २०	२० १९	१३	१२
0	उप- शम २	0	0	0	8	8	१	१	१	२	२	२	0	0	o
•	क्षा- यिक ९	o	0	0	१	१	१	१	१	श२	शिर	ર	२	९	8
•	क्षयो- पराम १८	१०	१०	११	१२	श्व श्व	१४ १५	१४ १५	१३ १४	१२ १३	१२ १३	१२ १३	१२ १३	o	0
	औद- यिक १२	२१	२०	२० १९	१९	१७	१५	१२	१०	१०	૪	13 .	Ŋ	ર	ર
0	परि णामी ३	ą	३	ર	ર	ર	3	-	ર	ર	ą	ર -	ર	2	१ _

मूल मान ५, तद्यथा—(१) औपश्चमिक, (२) श्वायिक, (३) श्वायोपश्चमिक, (४) औद-यिक, (५) पारिणामिक, उत्तर भेद ५७—औपश्चमिकके दो भेद-(१) उपश्चमसम्यक्त्व, (२) उपशमचारित्र, एवं दो; क्षायिक भाव ९ भेदे—(१) केवलज्ञान, (२) केवलदर्शन, (३) क्षायिक सम्यक्त्व, (४) क्षायिक चारित्र, (५) दानान्तराय, (६) लाभान्तराय, (७) मोगान्तराय, (८) उपभोगान्तराय, (९) वीर्यान्तराय एवं ५ क्षय करी, एवं ९; क्षयोपशमके १८ भेद—(१) मित, (२) श्रुत, (३) अवधि, (४) मनःपर्यव, (५—७) तीन अज्ञान, (८—१०) तीन दर्शन केवल विना, (११—१५) पांच अन्तरायका क्षयोपशम, (१६) देशविरति (१७) सर्वविरति, (१८) क्षयोपशमसम्यक्त्व, एवं १८; औदियकके २१ भेद—गित ४, कषाय ४, वेद ३, लेक्या ६, मिध्यात्व १, एवं १८, (१९) अज्ञान, (२०) अविरति, (२१) असिद्धपणउ, एवं सर्व २१; परिणामिकके ३—(१) जीव, (२) भव्य, (३) अभव्य, एवं ३; एवं सर्व ५३. नवमे गुणस्थानमे उपशमचारित्र अने क्षायिकचारित्र जो कहे है सो तीसरी चौकडीके क्षय तथा उपशमकी अपेक्षा है; उपशम क्षयक श्रेणि आश्री; अन्यथा तो चारित्र क्षयोपशमभावे है. तेरमे १४ मे एक जीव परिणामिक भाव जानना.

११	समुद्धात ७	ધ	ч	ર	ધ્ય	બ	દ્દ	१	الإ	र	१	१	१	0	१	0

सातमे गुणस्थानमे ५ समुद्धात कही है ते पूर्व अपेक्षा करके जाननी, सातमे (१) वेदनीय, (२) कषाय, (३) वैकिय, (४) आहारक ए चार समुद्धात करता तो नही, पिण वैकिय, आहारक शरीर विना समुद्धातके होते नहीं, इस वास्ते ५; एक होवे तो मारणान्तिक समुद्धात जाणवी. इति अलं विस्तरेण.

,												
• ध्यान पाया			•			1		9		_	8	
रेश भेटा भेट	6	4	१२	१२ ।	છ	8	ધ	, 8	१	१	_	12
े १६	1		• •	• •				प्रथम	•	•	दूजा	'

छठे गुणस्थानमे ७ पाये कहे है सोइ आर्तध्यानका प्रथम पाया नही ते. यथा सेवे भोगे है जे कामभोग तिनका वियोग न वंछै. तैन्वं बहुश्रुतात गम्यम् ।

१३	दंडक २४	રઇ	२२	१६	१६	ર	१	१	१	१	१	१	१	१	18
१४	वेद स्त्री आदि	3	3	3	3	3	3	3	3	3	0	0	0	0	0
१५	चैारित्र ७	१	१	१	१	१	3	3	२	२	१	१	8	ş	8
१६	योनि लक्ष ८४	८४	५६	२६	२६	१८	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
१७	কুন্ত १९७५- ০০০০,০০০, ০০০	१९७	११६॥ १८७	११६॥	११६॥	દ્દપા	१२	१२	१ २	१२	१२	१२	१२	_	Ì
१८	आश्रव मेद ४२	ध१	४१	ध१	४०	४० ३९	३२ २७				9	१	१	१	0

छठे गुणस्थानमे बत्तीस भेद आश्रवके हैं, तद्यथा—(१) पारिग्रहिकी किया, (२) मिध्यादर्शनप्रत्यया, (३) अप्रत्याख्यानिकया, (४) सामंतोपनिपातिकी किया, (५) ईर्याप-

१ विस्तारभी सर्युं। २ तत्त्व बहुश्रुतथी जाणवुं। ३ असंयम, देशविरति अने सामायिक आदि ५ चारित्र।

थिकी किया, (६) प्राणातिपात, (७) मृषावाद, (८) अदत्तादान, (९) मैथुन, (१०) परिग्रह; एवं दश नास्ति अने सत्तावीसमे पांच इन्द्रिय टली.

१९	संवर मेव ५७	0	0 0	१२	१२	40	40	५७	919	ક ક્ષ	પ્રધ	४५	30	३०
	ए सर्व	संवर	ना मे	र स्वंधि	या वि	चारि	तच्यं-	सर्वगुष	गस्थान	उपर	विच	ार लेन	IT.	
२०	ध्रुवबंधी ४७	ઇહ	४६	३९	३९	३५	38	३१	३१ २०	२९ १८	१८	१४	0 0	0 0

ध्रुवंधी प्रकृति ४७ लिख्यते—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, कषाय १६, भय १, जुगुप्सा १, मिथ्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, अंतराय ५, एवं ४७. जां लगे एहना वंध है तां लगे अवश्यमेव वंध होह है; इस वास्ते इनका नाम 'ध्रुवंधी' कहीये. द्जे गुणस्थानमे एक मिथ्यात्व टली. तीजे गुणस्थानमे अनंतानुवंधी ४, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानार्द्ध १ एवं सात टली. त्रीजेवत् चोथे. पांचमे अप्रत्याख्यान ४ नही. छठे प्रत्याख्यानावरण चार नही. एवं सातमे तथा आठमेके प्रथम भागमे तो सातमेवत्; द्जे भागमे निद्रा १, प्रचला १, ए, दो टली, त्रीजे भागमे तेजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, एवं ९ टली. चोथे भागमे भय १, जुगुप्सा १, एवं २ टली, १८ का वंध. एवं नवमे दसमे ४ टली. संज्वलनका चौक, पांच ज्ञान, चार दर्शन, पांच अंतराय, एवं १४ का वंध; आगे नौस्ति.

२१	अध्रववंधी १३	७०	લ્લ	३५	३८	३२	३२	ર ૮	રહ ૪	ઝ જ	ર	१	१	१	0
************	<u> </u>		<u>'</u>	·					,				,	i !	l .

अध्ववंघी प्रकृति ७३ है.—हास्य १, रित १, श्लोक १, अरित १, वेद ३, आयु ४, गित ४, जाति ५, औदारिक १, वैक्तिय १, आहारक १ इन तीनोहीके अंगोपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगित २, पराधात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, तीर्थंकर १, त्रसद्शक १०, स्थावरद्शक १०, गोत्र २; एवं सर्व ७३. अर्थ—कारण तो मिध्यात्व आदि वंधनेका है अने ए ७३ प्रकृतिका वंध होय बी अने नही बी होय; इस वास्ते इनका नाम 'अध्ववंधी' कहीये. प्रथम गुणस्थानमे तीन टले—आहारक १, आहारक-अंगोपांग १, तीर्थंकर १; एवं ३. द्जे गुणस्थाने १५ टली—नपुंसक वेद १, नरकत्रिक ३, जाति ४, पंचेन्द्रिय विना, छेहला संहनन १, छेहला संस्थान १, आतपनाम १, थावर १, सक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, एवं १५ टली. तीजेमे २० टली—स्नीवेद १, आयु ३, तिर्थंच गित १, तिर्यंच

१ पोतानी मति प्रमाणे । २ त्रीजानी पेठे । ३ नथी ।

आनुपूर्वी १, मध्यके ४ संहतन, मध्यके ४ संस्थान, उद्घोत १, अशुभ चाल १, दुभंग नाम १, दुःखर १, अनादेय १, नीच गोत्र १, एवं २० टली. चोथेमे तीन वधी—मनुष्य-आयु १, देव-आयु १, जिन-नाम १. पांचमे ६ टली—मनुष्यत्रिक ३, औदारिक १, औदारिक अंगोपांग १, प्रथम संहनन, एवं ६ टली. छठे पांचमे वत्. सातमे आहारक तदुपांग २ वधी, ६ टली—असातावेदनीय १, शोक १, अरति १, अस्थिर नाम १, अशुभ १, अयश्च १; एवं ६. आठमेके दो भाग. प्रथम भागमे एक देव-आयु टली. दूजे भागमे चारका बंध—सातावेदनीय १, पुरुषवेद १, यशकीर्ति १, ऊंच गोत्र १, एवं ४ का बंध, शेष २३ टली. नवमेके प्रथम भागे ४, दूजे भागमे १ पुरुषवेद टला, तीनका बंध. देशमेऽपि एवं ३ का बंध. आगले तीन गुणस्थानमे एक सातावेदनीयका बंध. १४ मा अबंधक जानना.

વર	ध्रुव उदयी	२७	२६	२६	२६	રહ	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	१२	0
5	1. 7.5		1 -		1	. "		1	1	1 "	ļ	1	4	- 1	

ध्रुव उदयी प्रकृति २७ है, ते यथा—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ५, चक्षु आदि ४, मिध्यात्व १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, अगुरु-रुष्ठ १, स्थिर १, अस्थिर १, छुम १, अग्रुम १, अंतराय ५, एवं २७. एह प्रकृति जां लगे उदय है तां लगे अवस्य उदय है, अंतर न पड़े; इस कारणसे इनका नाम 'ध्रुव उदयी' कहीये. द्जेमे मिध्यात्वमोहनीय टली. एवं यावत् १२ मे गुणस्थान ताइं २६ का उदय. तेरमे १४ टली—पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पांच अन्तराय, एवं १४. चौदमे ध्रुव उदयी कोइ प्रकृति नहीं है.

						, ,								
२३	अधुव उदयी ९७	९०	८५	હક	૭૮	६१	५५	५०	કદ	४०	३४	33	38 30	१२

अध्रव उदयी ९५ प्रकृति है, तद्यथा—निद्रा ५, वेदनीय २, मोहकी २७ मिथ्यात्व विना, आयु ४, गति ४, जाति ५, शरीर ३, अंगोपांग ३, संहनन ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगित २, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, तीर्थकर १, उपघात १, प्रसादि ८, स्थिर १, श्रुम १, ए दो विना आठ, स्थावर ८, अस्थिर १, अशुम १, ए दो विना गोत्र २; एवं सर्व ९५. कदेक उदय हूइ, कदेक उदय नहीं होय; इस वास्ते 'अध्रव उदयी' कहीये. पहिलेमे ५ नही—सम्यकृत्वमोह १, मिश्रमोह १, आहारक शरीर १, तदुपांग १, जिननाम १; एवं ५ नही. द्जेमे ५ नही—नरक-आनुपूर्वी १, आतप १, सक्ष्म नाम १, साधारण १, अपर्याप्त १; एवं ५ नही. तीजेमे १२ टली—अनंतानुवंधी ४, तीन आनुपूर्वी, च्यार जात, स्थावर नाम १, एवं १२ टली; अने एक मिश्र मोहनीय वधी. चौथेमे चार आनुपूर्वी, सम्यक्त्वमोहनीय १, एवं ५ वधी, अने एक मिश्र मोहनीय टली. पांचमेमे १७ टली—

अप्रत्याख्यान ४, नरकित्रक ३, देवित्रक ३, वैक्रिय शरीर १, तदुपांग १, दुर्भग १, अना-देय १, अयश १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, मनुष्य-आनुपूर्वी १; एवं १७ नही. छठेमे आठ टली—प्रत्याख्यानावरण ४, तिर्यच आयु १, तिर्यच गति १, उद्द्योत १, नीच गोत्र १, एवं ८ टली; अने दोय वधी—आहारक १, तदुपांग १ सातमे पांच टली—निद्रा ३, आहारक १, तदुपांग १; एवं ५ टली. आठमे ४ टली—सम्यवत्वमोहनीय १, छेहला तीन संहन्त ३; एवं ६ टली. नवमे ६ टली—हास्य १, रति १, शोक १, अरति १, भय १, जुगुप्सा १; एवं ६ टली. दशमे ६ टली—वेद ३, लोभ विना संज्वलनकी ३; एवं ६ टली. ग्यारमे एक संज्वलनका लोभ टला. चारमे संहनन २ टले. अने दिचरम स(म)य दोय निद्रा टली. तेरमे एक जिननाम वध्या. चौदमे १८ टली, १२ रही तिन वारांका नाम—साता वा असाता १, मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, सुभग १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थकर १, मनुष्य-आयु १, उंच गोत्र १; एवं १२ है. छेहले समय एक वेदनीय १, उंच गोत्र १; एवं २ टली. तीर्थंकरकी अपेक्षा एह १२. तथा ९ का उदये.

ध्रुव सत्ता १३० है, तद्यथा—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, सम्यक्-त्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, ए दो विना २६ मोहकी, तिर्यंच गति १, जाति ५, वैक्रिय १, आहारक विना शरीर ३, औदारिक अंगोपांग १, पांच बंधन-(१) औदारिक बंधन, (२) तैजस वंधन, (३) कार्मण वंधन, (४) औदारिक तैजस कार्मण वंधन, (५) तैजस कार्मण बंधन, एवं ५, इम पांच ही संवातन, संहनन ६, संस्थान ६, वर्ण आदि २०, तिर्येच-आनुपूर्वी १, विहायोगति २, प्रत्येक ७ तीर्थंकर विना, त्रस आदि १०, स्थावर आदि १०, नीच गोत्र १, अंतराय ५, एवं १३०.१३० बंधना मध्ये पांच बंधन टले है ते लिख्यते—वैक्रिय बंधन १, आहारक बंधन १, वैकिय तैजस कार्मण बंधन १, आहारक तैजस कार्मण बंधन १, औदा-रिक आहारक तैजस कार्मणबंधन १: एवं ५ बंधने टले. एवं संघातन ५. ध्रव सत्ताका अर्थे—जां लगे ए प्रकृतिकी सत्ता कही है तां लगे सदाइ लामे; इस वास्ते 'ध्रव सत्ता' कहीये. सातमे गुणस्थान ताइ १३० की सत्ता. आठमे क्षपक उपशम श्रेणिकी अपेक्षा दो प्रका-रकी सत्ता जाननी — १३० की सत्ता उपशम सम्यक्तवकी अपेक्षा ग्यारमे ताइ जाननीः अने क्षपककी अपेक्षा आठमे पांच टली, तद्यथा—अनंतानुबंधी ४, मिध्यात्वमोहनीय १; एवं ५ टली. नवमे ३३ टली-निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, स्त्यानिद्धे १, मोहकी १९ संज्वलनके माया, लोभ विना, तिर्थेच गृति १, पंचेन्द्रिय विना जाति ४, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, आतप १, उद्योत १, स्थावर १, स्रहम १, साधारण १; एवं ३३ टली. नवमेके नव भाग करके ३३ टालनी, यथा—प्रथम भागमे तो आठमे गुणस्थानवत्. दुजे भागमे १४ टली—तिर्यचिद्रक

२, जाति ४, थीणत्रिक ३, उद्दोत १, आतप १, स्थावर १, सक्ष्म १, साधारण १; एवं १४ टली; तीजे भागे ८ टली—दो चौकडी; चोथे भागे नपुंसकवेद १; पांचमे भागे स्निवेद १; छठे भागे हास्य आदि ६; सातमे भागे पुरुषवेद १; आठमे भागे संज्वलन कोध १; नवमे भागे संज्वलन मान १; एवं सर्व भागोमे ३३ टली. दशमे गुणस्थाने एक संज्वलननी माया टली. बारमे संज्वलन लोभ टला. तेरमे १६ टली—निद्रा १, प्रचला १, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १६ टली. चौदमे ७४ की सत्ता तो तेरमेवत. छेहले समय सातकी सत्ता—त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, सुभग १, पंचेन्द्रिय १, साता वा असाता १, एवं ७ रही. मुक्ती गमने सर्व प्रकृतिका व्यवच्छेद मंतव्यं.

२५ अधुव सत्ता	ર ૮	२७	२७	२८	२८	ર ૮	२८	२८ २८ ३३ २१ २१	२८	२१	२१ ^{२१}
76	<u> </u>	<u> </u>		1	<u> </u>	!	<u> </u>	166121 22		1	

अध्व सत्ता २८ प्रकृति लिख्यते—सम्यक्त्वमोह १, मिश्रमोह १, आयु ४, तीन गित तिर्यच विना, वैक्रिय शरीर १, तदुपांग १, आहारक शरीर १, तदुपांग १, बंधन ५, संघातन ५, इनका खरूप ध्रुव सत्तामे लिख्या है, तिर्यंच विना तीन आनुपूर्वी, तीर्थंकर १, उंच गोत्र १; एवं २८. अध्रुव सत्ताका अर्थ—सदा सत्तामे न लामे, इस वास्ते 'अध्रुव सत्ता'. द्केमे एक तीर्थंकर नाम टला. एवं त्रीजे. चौथेथी मांडी ११ मे ताइ २८ की सत्ता, तीर्थंकर नाम एक मिला. आठमे गुणस्थाने क्षपक श्रेणि अपेक्षा २३ की, सत्ताः ५ टली—सम्यक्त्व-मोहनीय १, मिश्रमोह १ मनुष्य विना आयु ३; एवं ५. नवमे २ टली—नरकगति १, नरक आनुपूर्वी १, दशमे, बारमे, तेरमे, चौदमे २१ तो नवमेवत्, अने पांचवी सत्ता छेहले समय—मनुष्यित्रक १, उंच गोत्र १, तीर्थंकर १. एवं ५ की सत्ता जाननी.

२६	सर्वेघाती २०	२०	१९	१२	१२	4	ક	ક	ઇ ૨	2	2	0	0	0	0

सर्वघाती २०—केवलज्ञानावरणीय १; केवलदर्शनावरणीय १, निद्रा ५, कषाय १२ संब्वलन विना, मिध्यात्वमोहनीय १; एवं सर्व २०. सर्वघातीका अर्थ—आत्माका सर्वथा गुण हणे है, इस वास्ते 'सर्वघातिक' नाम. दूजे मिध्यात्वमोहनीय टले. तीजे, चोथे अनंतानु-वंधी ४, निद्रा ३; एवं ७ टली. पांचमे अप्रत्याख्यान ४ टली. छठे, सातमे तीजी चौकडी टली. आठमे सातमेवत्, आगे दो रही—केवलज्ञानावरणीय १, अने केवलदर्शनावरणीय १. एह द्वार वंध अपेक्षा है.

रेख रेखाता रेख रेड	वेशघाती
--	---------

१ मोझे जतां तो बधी प्रकृतिनो उच्छेद मानवो ।

देशघाती २५—मित आदि ज्ञानावरणीय ४, तीन दर्शनावरणीय केवल विना, संज्वलन ४, हास्य आदि ६, वेद ३, अंतराय ५; एवं २५. अर्थ—देश थकी आत्माना गुण हणे, नै तु सर्वथा. दूजे नपुंसकवेद टला. तीजेसे लेइ छठे ताइ स्त्रीवेद टल्या. सातमे अरति १, श्लोक १ टले. एवं आठमे, नवमेमे हास्य १, रति १. भय १, जुगुप्सा १; एवं ४ टली. दशमे संज्वलनका चौक ४, पुरुषवेद १; एवं ५ टली. आगे बंध नही.

२८	अघाती ७५	७२	५८	રૂલ	ક ર	३६	३६	રૂક	३३	જ	સ્	ę	१	१	a
	33														

अघाती ७५ है—वेदनीय २, आयु ४, नामकी ६७, गोत्र २; एवं ७५. अर्थ ज्ञान, दर्शन, चारित्र इनक् न हणे; इस वास्ते 'अघाती' कहीये. पहिलेमे आहारकद्विक २, जिननाम १; एवं तीन नहीं. दूजे १४ टली—छेनट्ट (सेवार्त) संहनन १, हुंडक संस्थान १, एकेन्द्रिय जाति १, स्थावर १, स्क्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, आतप १, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३; एवं १४. तीजेमे १९ टली—दुभग १, दुःस्तर १, अनादेय १, संहनन ४ मध्यके, संस्थान ४ मध्यके, अप्रशस्त विहायोगित १, तिर्यच गित १, तिर्यच-आतुपूर्वी १, आयु २ नरक विना, उद्योत १, नीच गोत्र १; एवं १९. चौथे २ मिले—मतुष्य-आयु १, देव-आयु १, जिननाम १; एवं ३. पांचमे ६ टली—प्रथम संहनन १, औदारिक १, तदुपांग १, मनुष्य-आयु १, मनुष्य-आयु १, मनुष्य-आनुपूर्वी १; एवं ६. एवं पांचमेवत् छठे. सातमे ४ टली—असाता १, अस्थिर १, अशुभ १, अयश १; एवं ४ टली. आहारक १, तदुपांग १, मिले. आठमे एक देव-आयु टली. नवमे ३० टली, अने ३ रही तेहनां नाम—सातावेद-नीय १, यश्च १, उंच गोत्र १, एवं दशमे, ११ मे, १२ मे एका सातावंध.

-															
ર ९	पुण्य मेद ४२	३९	३८	રુક	३७	३१	३१	३३	३२	ba,	સ	१	१	१	0

पुण्यप्रकृति ४२—सातावेदनीय १, नरक विना आयु ३, मनुष्य-देव-गति २, पंचेनिद्रय जाति १, शरीर ५, अंगोपांग ३, प्रथम संहनन १, प्रथम संस्थान १, श्रुम वर्ण आदि
४, मनुष्य-देव-आनुपूर्वी २, श्रुम चाल १, उपघात विना प्रत्येक ७, त्रस दशक १०, उंच
गोत्रः एवं ४२. सुखदायक अने श्रुम है, इस वास्ते 'पुण्यप्रकृति' कहीये. पहिलेमे ३ टली—
आहारकद्विक २, तीर्थंकर नाम १; एवं ३. दूजे एक आतापनाम टला. तीजे चार टली—
तीन आयु ३, उद्योत १; एवं ४. चोथे तीन मिली—मनुष्य-देव-आयु २, जिननाम १.
पांचमे ६ टली—मनुष्यत्रिक ३, प्रथम संहनन १, औदारिक १, तदुपांग १; एवं ६. एवं छठे,
सातमे आहारक १, तदुपांग १; एवं दो मिली. आठमे एक देव-आयु टली. नवमे २९ टली;

१ नहि के बधी रीते। २ एकलो।

तीन रही—साता १, यश १, उंच गोत्र १. एवं दशमे. आगे एक सातावेदनीयका बंध. चौदमे गुणस्थानमे बंधका व्यवच्छेद है.

३० पापप्रकृति ८२ ८२ ६७ ४४ ४४ ४० ३६ ३० २८ २३ १४ ० ० ० ०

पापप्रकृति ८२-- ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असाता १, मोहकी २६, नरक-आयु १, नरक-तिर्यंच-गति २, जाति एकेन्द्रिय आदि ४, संहनन ५, संस्थान ५, अग्रुभ वर्ण आदि ४, नरक-तिर्यंच-आनुपूर्वी २, अशुभ चाल १, उपवात (आदि) स्थावर दशक १०, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ८२. अर्थ-दुःख भोगवे अथवा आत्माना आनंदरस शोपे ते 'वाव.' द्जेमे १५ टली—मिथ्यात्व १, हुंडक संस्थान १, छेवट्ट संहनन १, नपुंसक वेद १, जाति ४. स्थावर १, सक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, नरकत्रिक ३; एवं १५. तीजे २३ टली-अनंतानुबंधी ४, स्त्यानिधंत्रिक ३, दुभग १, दुःखर १, अनादेय १, संहनन ४ मध्यके, संस्थान ४ मध्यके, अञ्चम चाल १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १; एवं २३. एवं चौथे पिण. पांचमे दूजी चौकडी ४ टली. छठे तीजी चौकडी ४ टली. सातमे ६ टली-अस्थिर १, अशुम १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १; एवं ६. आठमे २ टली—निद्रा १, प्रचला १. नवमे ५ टली—वर्णचतुष्क ४, उपघात १. दशमे ९ टली—हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १, संज्वलनचतुष्क ४, पुरुषवेद १; एवं ९. न्यारमे १४ टली—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १४ टली, बंध नही. ३१ परावर्तिनी ९१ ८९ ७४ ४७ । ४९ 39 38 38

परावर्तिनी ९१—निद्रा ५, वेदनीय २, कषाय १६, हास्य १, रित १, शोक १, अरित १, वेद ३, आयु ४, गित ४, जाित ५, औदारिक, वैक्रिय, आहारक शरीर ३, अंगोपांग ३, संहनन ६, संस्थान ६, आनुपूर्वी ४, विहायोगित २, आतप १, उद्योत १, त्रस १०, स्थावर १०, गोत्र २; एवं ९१. अर्थ—'परावर्तिनी' ते कहीये जे अनेरी प्रकृतिनो बंध, उदय निवारीने अपना बंध, उदय दिखावे [ते परावर्तिनी] यतः (पंचसंग्रहे बन्धव्यद्वारे गा. ४२)—

"विणिवारिय जा गच्छइ बंध उदयं व अण्णपगईए। सा हु परियत्तमाणी अणिवारं(रें)ति अपरियत्ता[ए]॥"

पहिलेमे २ टली—आहारक द्विक २. दूजेमे १५ टली—नरकत्रिक ३, जाति ४ पंचेनिद्रय विना, छेवड संहनन १, हुंडक संस्थान १, नपुंसकवेद १, स्थावर १, स्रक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १, आतप १; एवं १५ नहीं. तीजेमे २७ टली—अनंतानुबंधी ४, स्त्यानिधं
त्रिक ३, तिर्यचित्रिक ३, देव-मनुष्य-आयु २, स्त्रीवेद १, दुभग १, दुःखर १, अनादेय १,
संहनन ४ मध्यके, संस्थान ४ मध्यके, दुर्गमन १, नीच गोत्र १, उद्द्योत १; एवं २७ टली
चोथेमे २ मिली—देव-आयु १, मनुष्य-आयु १, पांचमे १० टली—दूजी चौकडी ४, प्रथम

९ छाया—विनिवार्थ या गच्छति बन्धमुद्यं वाऽन्यप्रकृतेः । सा खळ परावर्तमाना अनिवारयन्ती अपरावर्तमाना ॥

संहनन १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३; एवं १०. छठे ४ टली—तीजी चौकडी ४. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अश्रुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १; एवं ६ टली; आहारकद्विक २ मिले. आठमे एक देव-आयु टली. नवमे २२ टली, ८ रही (ता)का नाम—संज्वलनचतुष्क ४, पुरुषवेद १, साता १, यश १, उंच गोत्र १; एवं ८ रही. दशमे ५ टली, ३ रही (ता)का नाम—साता १, यश १, उंच गोत्र १; एवं ३ रही. ग्यारमे, बारमे, तेरमे एक सातावेदनीयका बंध मंतैच्यम्—

३२ | अपरावर्ति २९ | २८ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | १४ | १४ | ० ० ० ०

अपरावर्ति २९ लिख्यते—ज्ञानावरणीय ५, चक्षु आदि ४, भय १, ज्रगुप्सा १, मिथ्यात्व १, तेजस १, कार्मण १, वर्ण आदि ४, पराघात १, उच्छ्वास १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, निर्माण १, उपघात १, अंतराय ५; एवं २९. जे परनो वंध, उदय निवार्या विना आपणा वंध, उदय दिखलावे ते 'अपरावर्तिनी.' पिहलेमे एक तीर्थंकरनाम टल्या. दूजे तथा तीजे एक मिथ्यात्व टली. चौथेसे लेइ ८ मे ताई १ तीर्थंकरनाम मिल्या. नवमे तथा दशमे १४ टली, १४ रही—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १४ रही. आगे वंध नही. इति एवं वंध अधिकार. अथ उदय अधिकार जानना—

क्षेत्रविपाकी चार—आनुपूर्वी ४. जिस क्षेत्रमे जावे तिहां वाट वहता उदय होइ ते 'क्षेत्रविपाकी,' "पुच्वी उदय वंके" इति वचनात्. आनुपूर्वी वक्रगतिमे उदय होइ.

३४ भवविपाकी ४ ४ ४ ४ ४ ४ २ १ १ १ १ १ १ १ १

भवविपाकी आयु ४—जिस भवमे उदय होइ तिहां ही रस देवे, नै तु भवांतरे इति.

३४ जीवविपाकी ७८ ७५ ७२ ६४ ६४ ५५ ४९ ४६ ४५ ३९ ३२ ३२३२ १७११

जीवविपाकी ७८—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, वेदनीय २, माहे २८, गति ४, जाति ५, विहायोगति २, उच्छ्वास १, तीर्थंकर १, त्रस आदि त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, समग आदि ४, स्थावर १, सक्ष्म १, अपर्याप्त १, दुर्भग आदि ४, गोत्र २, अंतराय ५; एवं ७८. जीवने रस देवे पिण शरीर आदि पुद्रलने रस न देवे, तस्मात् 'जीवविपाकी' नाम पहिले ३ टली—सम्यक्त्वमोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, जिननाम १. दृजे ३ टली—सक्ष्मनाम १, अपर्याप्त १, मिथ्यात्वमोहनीय १; एवं ३. तीजे ९ टली—अनंतानुवंधी ४, एकेंद्री १, वेइंद्री १, तेंद्री १, चौरेंद्री १, स्थावर १; एवं ९ मिश्रमोहनीय मिली. चौथे एक मिश्रमोहनीय टली, सम्यक्त्वमोहनीय मिली—पांचमे ९ टली—दृजी चौकडी ४, गति २,

१ मानवो । २ नहि के अन्य भवमां। ३ तेथी।

दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ९. छठे ६ टली—तीजी चौकडी ४, तिर्थंच-गति १, नीच गोत्र १; एवं ६ टली. सातमे ३ निद्रा टली. आठमे एक सम्यक्त्वमोहनीय टली. नवमे हास आदि ६ टली. दशमे ३ वेद, लोभ विना तीन संज्वलनकी; एवं ६ टली, ११ मे संज्वलनका लोभ टला. बारमे ३२ तो ग्यारमेवत. अंतके द्विसमयेमे दो निद्रा टली. तेरमे १४ टली—ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, अंतराय ५; एवं १४; तीर्थंकरनाम मिल्या. चौदमे ६ टली—एक तो वेदनीय साता वा असाता १, विहायोगित २, सुखर १, दुःखर १, उच्छ्वास १; एवं ६ टली; ११ रही—साता वा असाता १, मनुष्यगित १, पंचेन्द्रिय १, सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १, उंच गोत्र; एवं ११.

-									~~~~			,			
३५	पुद्गलविपाकी ३६	રૂઝ	३२	३२	३२	30	३०	38	२६	રદ	રદ	२६	રક	રક	१०

पुद्गलिविपाकी ३६—शरीर ५, अंगोपांग ३, संहनन ६, संखान ६, वर्ण आदि ४, पराघात १, आतप १, उद्दोत १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, प्रत्येक १, साधारण १, स्थिर १, ग्रुम १, अस्थिर १, अग्रुम १; एवं ३६. पहिले २ टली —आहारक-द्विक २. दृजे २ टली —आतप १, साधारण १. एवं तीजे, चौथे. पांचमे वैकियदिक २. छठे १ टली —आहारक १; अने आहारकदिक २ मिले. सातमे २ टली —आहारकदिक २. आठमे ३ टली — अंतके ३ संहनन. एवं ११ मे ताइ. १२ मे २ टली — द्जा, तीजा संहनन. एवं तेरमे वारमेवत्. (अर्थ) — पुद्गलने रस देवे पिण जीवने नही.

38	ज्ञानावरणीयके बंघस्थान	ધ્યુ	હ	બ	ઝ	બ	ų	ų	ષ	ų	ષ	0	0	0	o
30	ज्ञानावरणीयके उदयस्थान १	५	५	ધ	ષ	ų	ધ્ય	५	ધ	ષ	· પુ	ષ	ધ	0	o
३८	ज्ञानावरणीयके सत्तास्थान १	५	५	५	५	4	ધ્યુ	4	५	ષ	લ	ધ	લ	0	0

ज्ञानावरणीय कर्मना बंधस्थान १, पांच प्रकृतिना, एवं उदयस्थान १, सत्तास्थान १ पांच रूप.

३९ दर्शनावरणीयके वंघस्थान ३	९	९	ĘĘ	œ	હ	ĸ	દ્દ	er 33	ક	ક	o	0	0	0
--------------------------------	---	---	----	---	---	---	-----	-------	---	---	---	---	---	---

नवनो बंधस्थान प्रथम. द्जे गुणस्थानमे १. छका बंधस्थान त्रीजासे लेकर आठमे गुण-स्थानके प्रथम भागमे होई है. छके बंधमे ३ टली—निद्रानिद्रा १, प्रचलापचला १, स्त्या-नार्घ १; एवं ३ टली. चारनो बंधस्थान अपूर्वकरणके द्जे भागथी लेकर दशमे ताई है. चारके बंधस्थानमे २ प्रकृति टली—निद्रा १, प्रचला १. एवं दर्शनावरणीयके बंधस्थान ९।६।४.

૪૦	दर्शनउदयस्थान २	ડ ૪	હ ઝ	ક ઝ	ક ઝ	५ ४	ષ ઝ	ઝ ઝ	લ ઝ	હ ઝ	ઝ ઝ	५ ४	3 3	0	0
		9				•] •		-

चारका उदयस्थान होवे तो चक्षु आदि ४. जो पांचका उदयस्थान होवे तो तिहां निद्रा एक कोइ जिसका जिस गुणस्थानमे उदय है सो प्रक्षेपीये तो पांचका उदयस्थान.

										0			ء		
धर	द्शनसत्ता- स्थान ३	९	९	९	९	९	९	९	લ	Ę	Ę	V W	४	0	0

मिध्यात्वसे लेकर उपशान्तमोह लगे नवकी सत्तानो एक स्थान, उपशपश्रेणि अपेक्षा अने क्षपकश्रेणि आश्री नवमे गुणस्थानके प्रथम भाग लगे नवनी सत्ता, नवमेके दूजे भागथी प्रारंभी बारमेके छेहले दो समय लगे स्त्यानार्धि त्रिक क्षये ६ नी सत्तास्थान, बारमेके छेहले समय दो निद्रा क्षये ४ का सत्तास्थान ज्ञातच्यम्.

ઇર	वधास्थान १	साता वा अ- साता	ए	ए वं	ए∙व	एंवं	एःवं	सा ता	एःवं	एं	एःबं	ए वं	एवं	एःचं	0
----	------------	-----------------------	---	---------	-----	------	------	----------	------	----	------	---------	-----	------	---

वेदनीयका बंधस्थान १-साता वा असाता. आपसमे विपर्ये(र्यय) है. इस वास्ते बंधस्थान १ जानना.

ध३	वेदनीयका उदयस्थान १	साता वा अ- साता	ए वं	एंवं	ए वं	ए वं	ए व	ए वं	ए वं	ए वं	एवं	ए वं	ए वं	ए वं	ए वं
j	,	aiai			1			İ	ŀ		ĺ			1	

वेदनीयका उदयस्थान १-साता वा असाता. दोनो(का) समकालमे उदय नही, इस वास्ते एक स्थान.

ઇઇ	वेदनीयके सत्तास्थान २	१ वा १	१	2, 2,	00 مر	01° 01°	مر مر	2, 2,	१	8, 8,	8,	2 2	Q, Q,	24.24	22
----	--------------------------	--------------	---	-------	-------	---------	-------	-------	---	-------	----	-----	-------	-------	----

वेदनीयके सत्तास्थान २ साता वा असाताः जो साता क्षय कीनी होइ तो असाताकी सत्ताः असाता क्षय करी होइ तो साताकी सत्ताः इस वास्ते दो सत्तास्थान ब्रेयम्

ઇ પ્	मोहके बंध- स्थान १०	२२	२१	१७	१७	१३	٩	٩	९	5 30 114 14 04	0	0	0	ø	0
-------------	------------------------	----	----	----	----	----	---	---	---	----------------	---	---	---	---	---

मोहनीयके दश बंधस्थानः तत्र २२ नो बंध किम् १ २८ माहेथी ६ काटे—सम्यक्त्व-मोहनीय १, मिश्रमोहनीय १, वेद २, हास्ययुगल २ अथवा अरतियुगल २; इनमे (से) एक युगल लीजेः; एवं ६ टली. २१ के बंधे मिथ्याल १ टली. १७ ने बंधे प्रथम चौकडी ४ टली. १३ ने बंधे द्जे चौकडी ४ टली. ९ ने बंधस्थाने तीजी चौकडी ४ टली. ५ ने बंधे ४ टली— हास्य १, रति १, भय १, जुगुप्सा १; एवं ४. नवमेके पहिले भागे ५ बांधेः द्जे भागमे पुरुषवेद टलाः तीजे भागे संज्वलनक्रोध टलाः चौथे भागे संज्वलनमान टलाः पांचमे भागे माया टली.

४६	मोहके उदय- स्थान ९	७ ८० १०	9 \ 0	9 2 0	& 9 V 80	5 W 9 V	30 50 00 90	30 50 00 90	30 5° 60°	2 2 2 2 2 2	१	0	o	0	o
----	-----------------------	---------------	-------	-------	----------	---------	-------------	-------------	-----------	-------------	---	---	---	---	---

उदयस्थानमे पश्चातुपूर्वी समजना. दसमे एक संज्वलन लोभनो उदय. एवं एक स्थान. नवमे संज्वलना एक कोइ उदय; एवं १. जो चार जमे एकेकका अंक लिख्या सो चार तरे(ह) उदय—कोध १ वा मान १ वा माया १ वा लोभ १. दोके उदयमे एक कोइ वेद घालीये तो २. अपूर्वकरणे हास्य १, रित १, घाले ४ का उदय. भय प्रक्षेपे ५ का उदय; जुगुप्सा प्रक्षेपे ६ का उदय; सातमे तथा छठे प्रत्याख्यानीया कोइ एक घाले सातका उदय; पांचमे अप्रत्याख्यानीया कोइ एक घाले ८ नो उदय; अविरित मिश्र गुणस्थाने अनंतानुबंधी एक कोइ घाले ९ नो उदय. मिथ्यात्वगुणस्थाने एक मिथ्यात्व घाले १० का उदय. एवं उदय-स्थान नव.

अथ सुगमताके वास्ते फिर लिखीये हैं—मिध्यात्वगुगस्थानमे चार उदयस्थान. प्रथम सातका उदय—मिध्यात्व १, कोइ अप्रत्याख्यान चारोंमें १, कोइ प्रत्याख्यान १, कोइ संज्व-लन १. कोइ किस वास्ते १ एक चौकडीना कोध आदि वेदातां सघलाइ कोध वेदे कोध, एवं मान आदि वेदे मान; जातके सद्द्यपणे करी तीन वेद माहे एक कोइ वेद १, हास्य १, रित १ वा चोक १, अरित १ इनमे एक युगल लीजे; एवं ७. आठके उदयमे भय वा जुगुप्सा; अथवा अनंतानुवंधी चारमे(से) एक इन तीनो माहेथी एक, सात पूर्वली; एवं ८. नवके उदयमे अनंतानुवंधी १, भय १ लीजे; अथवा अनंतानुवंधी १ जुगुप्सा १ लीजे; अथवा मय १, जुगुप्सा १ लीजे; एवं ९. दशमे तीनो—अनंतानुवंधी १, भय १, जुगुप्सा १; ए तीनो सातमे घाले. द्जेमे सातका उदयमे चारों चौकडीका खजातीया एकेक; एवं ४; हास्य १, रित १, शोक १, अरित १, इनमेसुं एक जुगल २, एक कोइ वेद १; एवं ७. आठमे भय १ वा जुगुप्सा १ घाले ८. भय १, जुगुप्सा १ दोनो घाले ९. एवं मिश्रे जानना. चौथे गुणस्थाने ६ नो उदय उपश्रमसम्यक्त्व वा क्षायिक सम्यक्त्वना धणीने है. अत्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, संन्वलन १, इनमेसुं एकेक खजातीया २, एक कोइ वेद १, एक कोइ गुगल; एवं ६. सातमे

भय १ वा जुगुप्सा १ वा सम्यक्त्वमोहनीय १ घाले ७. सम्यक्त्वमोह १, भय १ वा सम्यक्त्वमोह १, जुगुप्सा १ वा भय १, जुगुप्सा १ घाले ८; तीनो घाले ९. पांचमे गुणस्थाने प्रत्याख्यान १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २; एवं ५. भय १ वा जुगुप्सा १ वा सम्यक्त्वमोह १ घाले ६; भय १, वा जुगुप्सा १ वा भय १ सम्यक्त्वमोह १ घाले ७; तीनो घाले ८. छठे गुणस्थानमे संज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २; एवं ४. क्षायिक तथा उपश्रमसम्यक्त्वना धणीने ४ का उदय; भय १, जुगुप्सा १ सम्यक्त्वमोहनीय पीछली तरे घालीये तो ५।६।७ का उदय होवे. छठे गुणस्थानवत् सातमा. आठमे नवमेका पहिले लिखाही है.

છ૭	मोहके सत्ता- स्थान १५	२८ २७ २६	ર ૮	२८ २७ २४	२८ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २३ २२ २१	२८ २४ २१ १	સ્ટારક રશશ્ર શ્રાશ્શ પાકારા ૧	२८ २४ २४ २१ १	0	0	0	
----	--------------------------	----------------	------------	----------------	----------------------	----------------------------	----------------------------	----------------------------	---------------------	---	---------------------------	---	---	---	--

मोहनीयके सत्तास्थान १५. सर्व सत्ता २८. सम्यक्त्वमोहनीय रहित २७, मिश्र रहित २६. ए छन्वीसनी सत्ता अभन्यने हुइ है. तथा २८ मे चार अनंतानुबंधी क्षये २४ नी सत्ता, मिश्रमोह क्षये २२ नी सत्ता, सम्यकत्वमोहनीय क्षये २१ नी सत्ता, दूजी, तीजी चौकडी क्षये १३ नी सत्ता, नपुंसकवेद क्षये १२ नी सत्ता, स्त्रीवेद क्षये ११ नी सत्ता, हास्य आदि ६ क्षये ५ नी सत्ता, पुरुषवेद क्षये ४ नी सत्ता, संज्वलनकोध क्षये ३, मान क्षये २, माया क्षये १; एवं १५ सत्तास्थान गुणस्थान पर सुगम है.

૪૮	आयुना बंध- स्थान १	१	१	o	१	१	१	१	o	0	0	0	0	0	0
ક ર	उदयस्थान १	१	१	१	१	१	१	१	१	१	\$	१	१	१	8
40	सत्तास्थान १	१ वा २	१ वा २	ए व	ए वं	ए वं	एःवं	ए वं	ए वं	ए वं	ए वं	ए वं	१	१	8

जहां ताइ पर भवनो आयु बांध्या नही तहां ताइ जौनसे आयुका उदय है तिसही की एक सत्ता १; पर भवना आयु बांध्या पीछे दोकी सत्ता. नरकआयु बांध्या छै तो भी ग्यारमा गुणस्थान आ जावे है; इस वास्ते चार आयुमे एक कोइकी सत्ता है.

५१ नामकर्मके बंध २३।२५ २८ २८ २ स्थान ८ २६।२८ २९ २९ २ २९।३० ३० २९ ३	२८ २८ २९ २९ २९ ३० ३१	ि इं ११०००	_ > ^
--	----------------------------	------------	----------

नामकर्मके बंधस्थान ८. तिर्येच-गति योग्य सामान्ये पांच बंधस्थान ते कौनसे ? २३। २५।२६।२९।३०, ए पांच बंधस्थान, प्रथम एकेन्द्रिय योग्य तीन बंध स्थान २३।२५।२६. प्रथम तेवीस कहे छै-तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, एकेन्द्रिय जाति १, औदारिक १, तैजस १, कार्मण १, हुंड संस्थान १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, स्थावर १, स्म १ वा बादर १ एकतरं, अपर्याप्त १, प्रत्येक साधारण १ एकतरं १, अस्थिर १, अग्रुभ १, दुर्भेग १, अनादेय १, अयश १, निर्माण १; एवं २३ एकेन्द्रिय अपर्याप्त माहे जाणे(ने)-वाला मिथ्यात्वी हुइ ते बांधे. एहीमे पराघात १, उच्छ्वास १ सहित कीजे तो २५ होइ है. अपर्याप्ताकी जगे पर्याप्ता जानना. ए २५ का बंध जे मिथ्यात्वी पर्याप्त एकेन्द्रियमे जाणे-हारा बांघे: परं इतना विश्लेष स्थिर १ वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ, यश वा अपयश, इनमेस्रं तीन कोइ ले लेनी. अथ २६ का बंध तेरां तो पहली तेवीसकी लेनी अने परघात १, उच्छ्वास १, आतप १ वा उद्द्योत १, बादर १, स्थावर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १ वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश वा यश १, निर्माण १; एवं २६. जो मिथ्यात्वी एकेन्द्रिय बादर पर्याप्त माहे जाणेवाला है ते बांधे. हिवे बेइंद्रीने बंधस्थान तीन-२५।२९।३०. प्रथम २५-तिर्यंच-गति १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, बेइंद्री जाति १, उदीरी (औदा-रिक ?) १, तैजस १, कार्मण १, हुंड संस्थान १, सेवार्त संहनन १, औदारिक अंगोपांग १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, त्रस १, बादर १, अपर्याप्त १, प्रत्येक १, अस्थिर १, अञ्चम १ दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, निर्माण १; एवं २५. जे मिध्यात्वी अपर्याप्त बेइंद्रीमे जाणेवाला है ते बांघे. २५ मे चार घाले २९. पराघात १, उच्छ्वास १, अग्रुभ चाल १, दुःखर १; एवं ४ घाले २५ मे २९ होइ. अने अपर्याप्तने ठामे पर्याप्त जानना अने स्थिर वा अस्थिर एक १, शुभ वा अशुभ एक १, यश वा अयश १; एवं २९. जे मिध्यात्वी वेइंद्री पर्याप्ता माहे जाणेवाला है ते बांधे. तीसके बंधमे एक उद्द्योतनाम घाले २०. एह पण उपर-वत् बेइंद्रीमे जाणेवाला बांधे. एवं तेइंद्री, चौरिंद्री; नैवरं जाति न्यारी न्यारी कहनी. हिंवै तिर्येच पंचेंद्रीने तीन बंधस्थान--२५।२९।३०. पचीसका बंध बेइंद्रीवतः विशेष जातिका. २९ का बंध-तिर्यच-गति १, तिर्यच-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १, औदारिकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, छ संहननमे एक कोइ १, संस्थानमे छमे एक कोइ १, वर्ण आदि ४, अगुरु-लघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त, अप्रशस्त गतिमे एकतर १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर वा अस्थिर १, श्चम वा अशुभ १, सुभग वा दुर्भग १, सुखर वा दुःखर १, आदेय अनादेय एकतरं १, यश वा अयश १, निर्माण १; एवं २९; जे मिथ्यात्वी पर्याप्त तिर्यंच पंचेन्द्रियमे जाणेवाला बांधे अने जो २९ का साखादनमे बांधे तो हुंड, छेवट्ट वर्जीने पांचा माहे एक कोइ लेना. २० के बंधमे एक उद्घोत नाम प्रक्षेपे २०; जे मिथ्यात्वी तिर्येच पंचेन्द्रिय पर्याप्तमे जाणेवाला बांघे. हिवै मनुष्यने तीन बंधस्थान—२५।२९।

१ बेमाथी एक । २ विशेष ।

३०. प्रथम पचीसने बंध बेइंद्रीने कह्या तीम जानना. मिध्यात्वी मनुष्य अपर्याप्तमे जाणेवाला बांधे; नवरं मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १. एकहनी(१) २९ का बंध तीन प्रकारे है-एक तो मिध्यात्वगुणस्थान आश्री, दूजा साखादन आश्री, तीजा मिश्र अविरति आश्री मिध्यात्व, साखादनमे २९ का बंध बेइंद्रीवत जानना मिश्र अविरतिका २९ बंध लिखीये है-मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १, औदारिक-द्विक २, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र संस्थान १, वज्रऋषभनाराच संहनन १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त विहायोगित १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर वा अस्थिर १, धुभ वा अधुभ १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १ यश वा अयश १, निर्माण १; एवं २९. ए २९ मनुष्यगति योग्य तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे ३०. एवं ४ मनुष्य पर्याप्ताने है, हिवै देवगति प्रयोग चार वंधस्थान—२८।२९।३०।३१. देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम संस्थान १, वर्ण आदि चार ४, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, ग्रुभ चाल १, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, पर्याप्त १, स्थिर वा अस्थिर १, शुभ वा अशुभ १, सुभग १, सुखर १, आदेय १, यश वा अयश १, निर्माण १; एवं २८. एह २८ नी वंध पहिलेसे छठे ताइ है. देवगतिके जाणेवाले आश्री तथा कोइ एक मंग अपेक्षा ७ मे, ८ मे गुणस्थाने है. एक तीर्थकरनाम प्रक्षेपे २९ का बंध देवगति योग्य चौथेसे आठमे ताइ ७।८ मे मंग अपेक्षा तीर्थंकर रहित कीजे. आहारकद्विक २ मिले २०. ते यथा—देव-गति १, देव-आनु-पूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, तैजस १, कार्मण १, प्रथम संस्थान १, वर्ण आदि ४, अगुरुलघु १, पराघात १, उपघात १, उच्छ्वास १, <mark>शुभ चाल १, त्रस</mark> १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, सुमग १, सुस्तर १, आदेय १, यश १, निर्माण १; एवं २०. सातमे, आठमे देवगति योग्य बांधे. तीर्थंकर नाम प्रक्षेपे २१. सातमे, आठमे देवगति योग्य एक बांधे तो यशकीर्ति नवमे, दशमे तथा आठमे कोइ भागमे ईति नामकर्मस्य(णः) बन्धस्थानानि अष्टौ समाप्तानि.

५२		२७।२८	२१।२४ २५।२६ २९।३० ३१	30	२१ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१	२५।२७ २८।२९ ३०।३१	२५ २५ २५ ३०	120	३०	३०	३०	३०	३०	२० २६ २८ ३०	ર્	८०
----	--	-------	-------------------------------	----	----------------------------------	-------------------------	----------------------	-----	----	----	----	----	----	----------------------	----	----

नामकर्मके उदयस्थान १२. ते यथा—२०।२१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ८।९; एवं १२. प्रथम एकेन्द्रियने उदयस्थान पांच—ते कौनसे १ २१।२४।२५।२६।२७. प्रथम २१ उदय कहीये हैं. नामकर्मकी ध्रुवोदयी १२—तेजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १,

१ आ प्रमाणे नामकर्मना आठ बंधस्थानो समाप्त थयां.

अस्थिर १, स्थिर १, शुभ १, अशुभ १, वर्ण आदि ४, निर्माण १; एवं १२; तिर्येच-गति १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, स्थावर १, एकेन्द्रिय जाति १, सक्ष्म १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, यश वा अयश १, एवं ९. बारां उपरली एवं २१ प्रकृति. एके-न्द्रिय विग्रहगतिमे होय तदा २१ का उदय होइ. हिवै शरीर कीथे २४ का उदय होइ ते किम ? औदारिक शरीर १, हुंड संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक या साधारण १, ए चार प्रक्षेपे, तिर्यगानपूर्वी १ काढे २४ का उदय एकेन्द्रिये शरीरपर्याप्ति पूरी कीधा पीछै. २४ मे पराघात प्रक्षेपे २५ का उद्य. बादर वायुकाय वैक्रिय करतां श्ररीरपर्याप्ति पूरी हुइ. एही २५ का उदय औदारिकने ठामे वैक्रिय घालीये. पचवीसमे उच्छवास घाले २६ होइ अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी हुइ जो कर उच्छ्वासनो उदय नही हुइ तो उच्छ्वास काढीने आतप तथा उद्योत एक लीजे; एवं २६. जीनसी छन्वीसमे उच्छ्वास है तिन छन्वीसमे आतप तथा उद्धोत एक प्रक्षेपे २७. अथ बेइंद्रीने उद्यस्थान ६, ते यथा—२१।२६।२८।२०।३१. प्रथम २१ का उदय, बारां तो ध्रुवोदयी १२ नामकर्मकी अने तिर्थंच-गति १, तिर्यंच-आनु-पूर्वी १, वेइंद्री जाति १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, येश वा अयश १, एवं सर्व २१. बेइंद्री वक्रगति करे तद २१ का उदये अथ शरीर कीधे २६ का उदय-औदारिक शरीर १, तदुपांग १, हुंड संस्थान १, सेवार्त संहनन १, उपघात १, प्रत्येक १. एवं ६ प्रक्षेपे २१ मे अने तिर्यगानुपूर्वी १ काढे २६ रही. इन २६ मे अशुभ चाल १, पराघात १ ए २ घाले २८. इनमे उच्छ्वास १ घाले २९ [जो कर उच्छ्वासनो उदय न ह्या हो तो उद्द्योत घाले २९ तथा शरीरपर्याप्ति हुइ है] तथा उच्छ्वासवाली २९ मे दःखर तथा सुखर घाले २० श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूरी हुइ अने खरनो उदय नहीं हुया तो उद्योत घाले २० होइ. २९ मे सुखर १, उद्योत १, अथवा दःखर १, उद्योत १ घाले ३१ होय. एवं तेंद्रीने ६ स्थान, एवं चौरिंद्रीने; नवरं जाति आपापणी लेनी. अथ पंचेन्द्रिय तिर्यंचने उद्यस्थान ६, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०।३१; एवं ६. बारां तो भ्रुवोदयी १२ पीछेकी अने तिर्येच-गति १, तिर्यगानुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, त्रसनाम १, बादर १, पर्याप्त वा अपर्याप्त १, सुभग वा दुर्भग १, आदेय वा अनादेय १, यश वा अयश १, बारां पीछली: एवं २१. तिर्यंच विग्रहगतिमे होइ तद २१ (का) उदय. शरीर कर्यो २१ माहेथी आनुपूर्वी १ काढी औदारिकदिक २, पद संस्थानमेसुं एक कोइ संस्थान १, छ संहननमे एक कोइ संहनन १. उपघात १, प्रत्येक १, ए ६ घाले २६ होइ. हिवै शरीर पर्याप्त इंबो तदा पराघात १, प्रशस्त १, अप्रशस्त १ ए दोनोमे एक १ घाले २८ होइ. हिवै २८ में उच्छ्वास घाले २९ अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी हुइ अने उच्छ्वासनो उदय न हूया होइ तो उद्द्यीत १ घाले २९. अने २९ में खर घाले २०; उद्द्यीत घाले २१. हिवै तिर्येच पंचेन्द्रिय वैक्रिय करतां उदयस्थान ५, ते यथा--२५।२७।२८।२९।३०, प्रथम २५ का

वर्णन-तिर्यचने २१ कही है ते माहेथी एक आनुपूर्वी काढे २० रही अने वैक्रियद्विक २, प्रथम संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे २५. हिनै शरीरपर्याप्ति पूरी हुये प्रशस्त गति १, पराघात १ ए २ प्रक्षेपे २७. उच्छ्वास १ घाले २८. अथवा शरीरपर्याप्ति पूरी है अने उच्छासनो उदय नही ह्या तो उद्योत घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हुये उच्छ्वास सहित २८, सुखर घाले २९; अथवा उच्छ्वासनी पर्याप्ति (पूरी) हूइ अने खरनो उदय न हूया तो उद्घोत १ घाले २९, सुखर घाले पिण २९, उद्द्योत घाले २० होय है. अथ सामान्ये मनुष्यने उद्यस्थान ५, ते यथा—२१।२६।२८।२९।३०. हिवै २१।२६।२८ तीनो तिर्थंच पंचेन्द्रिय-वतः नवरं मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १ ए २ कहनी हिवै २९ का उदय उद्घोत सहित होवे. उच्छ्वास १, सुखर तथा दुःखर ए २ अठावीसमे घाले ३०. तथा २९ होइ इहां उद्घोत वैक्रिय तथा आहारककी अपेक्षा है; अन्यथा तो नही. हिवै मनुष्य वैक्रिय करे तदा उदयस्थान ५ है, ते यथा---२५।२७।२८।२९।३०. प्रथम २५ कहुं--मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, वैक्रियद्विक २, प्रथम संस्थान १, उपघात १, त्रस १, बाद्र १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, सुभग वा दुर्भग १, आदेय तथा (वा १) अनादेय १, यश वा अयश १, एवं १२; अने नारां ध्रुवोदयी, एवं २५. देशवृती(विरति) अने संयतने वैक्रिय करतां सर्व प्रकृति प्रशस्त जाननी. शरीरपर्याप्ति थये पराघात १, प्रशस्त चाल १, ए २ घाले २७; उच्छ्वास १ धाले २८. अथवा संयत उत्तर वैक्रिय करतां शरीरपर्याप्ति कीधां जो उच्छ्वासनो उदय नही हूया तो उद्द्योत १ घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी कीधे उच्छ्वास १, सुखर १ ए २ सत्तावीसमे घाले २९. संयतने जो खरनो उदय नहीं तो उद्योत घाले २९. सुखर सहित २९, उद्योत १ घाले २०. हिवै आहारकशरीर करतां साधुने उदयस्थान ५, ते यथा---२५।२७।२८। २०. प्रथम २५ नो कहुं. पां(पी)छे मनुष्यगते २१ कही ते माहेथी आनुपूर्वी १ काढी पांच घाले-आहारकद्विक २, प्रथम संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे २५, पिण इहां दुभेग, अनादेय, अयश नहीः प्रशस्त तीनो जानने. शरीरपर्याप्ति कीधां पराघात १, प्रशस्त खगित १, ए २ घाले २७; उच्छ्वास घाले २८; अथवा उच्छ्वासना उदय नही तो उद्घीत १ घाले २८. भाषापर्याप्ति हुयां उच्छवास सहित २८, सुखर सहित २९, अथवा उच्छवास-पर्याप्ति हुइ है अने खरनो उद्य नहीं तो उद्योत घाले २९. खर सहित जो २९ तो उद्योत घाले २०. हिवै केवलीने १० उद्यस्थान, ते यथा—२०।२१।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ९।८. प्रथम २० का कहुं--मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय जाति १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुमग १, आदेय १, यश १, एवं ८; अने बारां १२ ध्रुवोदयी, एवं २०. इह उदय अतीर्थ-कर केवली समुद्धात करतां त्रीजे, चौथे, पांचमे समय केवल कार्मण काययोगे वर्ततां एह उदयस्थान होता है. तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे २१. तथा बीसमे औदारिकद्विक २, छ संस्थानेमे एक कोइक संस्थान १, प्रथम संहनन १, उपघात १, प्रत्येक १; एवं ६ प्रक्षेपे २६. अतीर्थ-कर केवली दुजे, छठे, सातमे समय औदारिक मिश्र योगे वर्ततां हूइ तद २६ का उदय हूइ,

सो तीर्थंकरनाम सहित २७, तीर्थंकर केवली औदारिक मिश्र योगे वर्ततां ए मंग होइ तथा २६ मे पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त वा अप्रशस्त खगित १, सुखर तथा (वा) दुःखर १, ए चार प्रक्षेपे ३० होइ है. अतीर्थंकर केवली सयोगी पहिले आठमे समये औदारिक काय-योगे वर्ततां उदय जानना. ३० मे तीर्थंकरनाम प्रक्षेपे ३१. ए सयोगी केवली तीर्थंकर औदा-रिक योगे वर्ततां हुइ. सयोगी केवली वचनयोग हुंचे तदा ३० का उदय उच्छ्वास हुंचे तद २९ का उदय हिंवे सामान्य केवलीने पाछे ३० का उदय कह्या है तेमेसं वचनयोग हुंचे २९, उच्छ्वास हुंचे २८. हिंवे ९ का उदय कहीये है—मनुष्यगित १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, तीर्थंकर १; एवं ९. चौदमेके छेहले समय तीर्थंकरने ए उदयस्थानः सामान्य केवलीने तीर्थंकरनाम रहित ८ का उदय हिवे देवताने उद्यस्थान ६, ते ए—२१।२५।२५।२८।२८।३०. देव-गित १, देव-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, सुभग तथा दुर्भग १, आदेय तथा अनादेय १, यश वा अयश १, ए नव अने वारां ध्रुवोदयीः एवं २१. ए विग्रहगितमे २१ का उदय

अथ अपर्याप्तपणे शरीर करतां वैक्रियद्विक २, उपघात १, प्रत्येक १, समचतुरस संस्थान १, ए ५ प्रक्षेपे, देव-आनुपूर्वी काढे २५ का उदय शरीरपर्याप्ति पूरी हुयां पराघात १, प्रश्नस्त गित १, ए २ घाले २७. इन २७ मे उच्छ्वास घाले २८. जो कर उच्छ्वासनी उदय नहीं तो उद्द्योत घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हुयां स्वर घाले २९. जोकर स्वरनो उद्द्यात नहीं हूंया तो उद्द्योत घाले २९. देवताने दुःस्वरनो उदय नहीं है. उत्तर वैक्रिय करतां देवताके उद्द्योत लाभे, २८ मे स्वर सहित २९, उद्द्योत घाले २०. हिव नारकीने उदय-स्थान ५, ते यथा—२१।२५।२७।२८।२९. नरक-गित १, नरक-आनुपूर्वी १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ९; अने बारां ध्रुवोदयी, एवं २१. अपर्याप्तपणे शरीरपर्या(प्ति) करतां वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १, हुंड संस्थान १, उपघात १, प्रत्येक १, ए ५ प्रक्षेपे, नरक-आनुपूर्वी १ काढे २५. पराघात १, अप्रश्नस्त खगति १ घाले २७, उच्छ्वास घाले २८. भाषापर्याप्ति पूरी हुया दुःस्वर घाले २९. गुणस्थान पर एकेन्द्रिय आदि देइ विचार लेना. एह उदय अधिकार गहन है सो भूल चूक सप्ततिस्त्रसे श्रुद्ध कर लेना. मेरी समजमे जितना आया है सोइ तितना ही लिख्या है. श्रुद्ध अश्रुद्ध शोध लेना.

पदे नामकर्मके ९२। सत्तास्थान १२ ८८।	९ ६ ८ ८	93 93 93 93 94	९३ ९२ ९२ ८९ ८९ ८८	९३९२८९८९८८	3 < 3 < < < < < < < < < < < < < < < < <	२ ९३ ९३ ९ ९२ ९२ ९ ८९ ८९ ५ ८८ ८८	८० ७१ ७१ ७१ ७५ ९।८
--	------------------	---	----------------------------------	--	---	--	--------------------------------

नामकर्मके सत्तास्थान १२, ते ए—९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५। ९।८; एवं १२, सर्व सत्ता तो ९३, तीर्थंकर टले ९२, तथा ९३ माहेथी आहारक शरीर १

आहारक अंगोपांग १, आहारक संघातन १, आहारक बंधन १, ए ४ रहित कीयां ८९ की सत्ता. तीर्थकर टले ८८. नरक गति १, नरक-आनुपूर्वी १, ए २ टले ८६. देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १, वैक्रिय संघातन १, वैक्रिय बंधन १; एवं ६ टले ८०. नरकगति योग्य ८० मे ६ घालीये ८६ की जे नरक-गति १, नरक-आनुपूर्वी, वैक्रिय चतुष्क ४, एवं ८६ नी सत्ता; अथवा ८० मे ६ घाले देव-गति १, देव-आनुपूर्वी १, वैक्रिय ४; एवं ६ घाले ८६ देवगति योग्य जाननी तथा ८० मे मनुष्य-गति १, मनुष्य-आनुपूर्वी १, ए २ टले ७८ नी सत्ता. ए पूर्वीक्त सात ठाम संसारी जीवने न हूइ. पिण [क्षपक श्रेणे नहीं] क्षपक श्रेणे ए सत्ता जाणवी. ९३ माहेथी १३ रहित की जे, ते नरकि दिव १, साधारण १; एवं १३ टली ८० ए सत्ता क्षपक श्रेणे. तीर्थकर टाले ७९. ८९ मे तेरां एही टले ७६ की सत्ता. क्षपके ८८ माहेथी तेरें टले ७५ की सत्ता क्षपकने. हिव नवनी सत्ता मनुष्यगति १, पंचेन्द्रिय १, त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, सुभग १, आदेय १, यश १, तीर्थकर १; एवं ९. अयोगी गुणस्थानके छेहले समय तीर्थकरने ए सत्ता; सामान्य केवलीने तीर्थकरनाम विना ८ नी सत्ता. गुणस्थान उपर सुगम है.

48	गोत्रका बंध- स्थान १	उं वा नी	उं वा नी	उं	उं	उं	उं	उं	उं	उं	उं	0	0	0	o
५५	गो० उदयस्थान १	77	\rightarrow	ए	व	म्	7,5	"	"	"	55	उं	उं	उं	उं
	गो० सत्तास्थान २	उं १ नी १				\rightarrow	Ų	व	म्					\rightarrow	१ १ २१
५७	अंतरायका वंध- स्थान १	ч	ų	ઝ	ų	ષ	५	५	५	પ	4	0	o	0	0
५८	अं० उदयस्थान १	c,	ષ	ષ	५	५	4	ų	५	ષ	c,	વ	4		0
५९	अं० सत्तास्थान १	Ŋ	ų	५	ų	५	५	५	ષ	ų	ષ	ષ	4	0	0
६०	ज्ञानावरणीय भंग २	१प	१प	१प	१प	१प	१प	१प	१प	१प	१प	०८ द	२ ह	0	0

ज्ञानावरणीयके भंग २. बंध ५ का उदय ५, सत्ता पांचः १ बंध नही, उदय ५, सत्ता ५; एवं २ भंग.

६१	दर्शनावरणीयके भंग ११	२ १ १ १ १	<i>م</i>	מע אם	מצ אם	m 30	מצ אט	m 35	מש אם שר ער	5° 60° 90	5 W 9		१० 0 ११ 0	0 0 0 0
----	----------------------------	-----------------------	----------	-------	-------	------	-------	------	-------------	-----------	-------	--	--------------	---------

अंकसंख्या	१	ર	3	ક	५	દ	ی	6	९	१०	११	0
वंध	९	९	દ્દ	ફ	૪	ક	ક	0	0	0	0	0
उद्य	8	५	ક	५	ક	4	ક	ક	ų	ક	8	0
सत्ता	९	९	९	९	9	९	६	६	९	६	ક	0

एह उपरले यंत्रमे दर्शनावरणीयके ११ भंग है, सोइ विचार लेना सुगम है.

वेदनीयके भंग ६२ गुणस्थान उपर ८	a a a a a	a 2 12 30	a a m 3	थ त क अ	2 2 2 2 3	a a m 3	m 30	ભ ઝ	n 3	<i>A</i> 3	m' 30	સ્ ઝ	क्र अ	ડ હ છાડ
--------------------------------------	-----------	-----------	---------	---------	-----------	---------	------	-----	-----	------------	-------	------	-------	---------------

अंक	भंगरचना अंक	१	ર	ર	૪	હ	Ę	હ	۷
0	वंध	असाता	असाता	साता	साता	0	•	0	•
0	उद्य	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	साता	असाता	"	असाता	साता	असाता	साता
o	सत्ता	असाता साता	\rightarrow	प्	व	म्	\longrightarrow	"	"

एह वेदनीयका यंत्र अयोगीके द्विचरम समये पांचमा ६ भंग चरम समये साता क्षय ७ मा असाता क्षय ८ मा.

देवताना यंत्र ५

मनुष्य-यंत्र ९

1								
લ	૭	۷	९	१०	११	१२	१३	१४
0	दे	म	ति	न	0	0	0	o
म	म	म	म	म	म	म	म	म
म	मदे	म म	म ति	म न	म दे	म म	म	म न

तिर्यंच-यंत्र ९

१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
0	दे	म	ति	न	0	o	o	0
ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति	ति
ति	ति दे	ति म	ति ति	ति न	ति हे	ति म	ति ति	ति न

नरक-यंत्र ५

રક	રષ	२६	२७	ર૮
0	म	ति	o	0
न	न	न	न	न
— न	न म	न ति	न म	न ति

६३	यु	२८	११२ ३१४ ५१६ ९१११ १२११५ १८११७ १८१२० २११२२ २५१२६	००६७८०५६ ए व	. ७ २ २ ४ ४ म ंब ८ न क्रीकी	१ ५ ६ ० १ २ ३ ए वं	१४ ए वं ६ है	६७११३१ ए च ६ म मही	११ ह २ २	ण ए । गोत्र कायमेः सास्तादः भंग एक द्विचरम सुगमता	के दूर ने दूर संदे	सा ना ने साथ है	त के से	भंग विकास	ा, स्था स्था होर	पास् २मे नो गी	वाद , ३ मे; के	(नरे छेट अंत	ो; । उ । स	तीः मे, पश मय	जा ५मे मिश् मे	ो; पां गी अ	यात्व चमा योगी अथ
			२७।२८ एवं २६;	१२ न	ष २०	१२				अंकसंग् वंध		-	च	्२ नीच	1 -	३ चि		₃ च	<u>ं</u> ज	-		0	0
			दो नहीं १०।१९	न ही, शे	२०		ı			 उद्य			,	"	-	उच	-	-	,			च	उंच
				१६						सत्त	T		,,	नीच उंच		च उंच		च च	नी उं		र्न	चि उच	***
8	ક	गो	त्रके भं	ग	2 3	१ अ	ર,	3 4	8	8 4	४	- 1	ષ		١.	ષ	હ	ų,	(K	ફ		દ્ધ	६७
ş	દ્રંપ્ય	9	विदाभं	ग		१	१		१	१	१		१	\$	\	१	१	१	अं त १	ें क क	τ τ	o	o
•	देद	एक	त्जीव र ₹पर्श	रज्जु		্ত জ	१	२	₹	्ट रजा	र		ए दे इ	तु -	>	ए	व	म्			>	१४	७ रज्ज देश ऊन

द्जे गुणस्थानवाला बारां रज्ज स्पर्शे तिसकी युक्ति लिख्यते—'खयंभूरमण' समुद्रके पश्चिमका मत्स्य सास्वादनवाला मरीने सातमी नरककी पृथ्वीमे अथवा घनोद्धिमे समश्रेणि जाइने पीछे तिरला पूर्वक् जावे साढे तीन रज्ज, पीछे क्र्णेमे जावे अढाइ रज्ज, एवं १२ रज्ज होइ घनोद्धिमे वा पृथ्वीमे उपजे. तथा चोक्तं पश्चसङ्कहे (द्वितीये बन्धकद्वारे गा० ३२)—गाथा—

''छेट्ठाए (छट्टीणं १) नेरइउ(ओ) सासणभावेण एइ तिरिमणु[लो]ए । लोगंतनिक्खुडेसु जंतते (तिन्ने) सासणगुणट्टा(त्था) ॥''

श्राया—षष्ट्या नैरियकः साखादनभावेन एति तिर्यञ्जानुष्ये(षु) ।
 लोकान्तनिष्कृटेषु यान्त्यन्ये साखादनगुणस्थाः ॥

इस गाथासे जैसे १२ रज्ज स्पर्शे तैसे विचार लेना. मैने पंचसंग्रहका अर्थ नहीं देखा; अपनी विचारसे लिखा है. विचारसे लिखना यथायोग्य होय अने नहीं भी होइ, इस वास्ते पंडितें शुद्ध विचारके जैसें होय तैसें लिख देना, मेरे लिखनेका कुछ प्रयोजन नहीं समजना; अर्थमे जैसा लिखा होइ सो लिख देना.

त्रीजे चोथे गुणस्थानवाला ८ रज्ज स्पर्शे तिसकी युक्ति (पंचसङ्गहका द्वितीय बन्धक-द्वारकी) इस (३१ मी) गाथासे समज लेनाः—

गाथा—"सहसारंतियदेवा णारयणेहेण जंति तइयभुवं । निञ्जंति अचुयं जा अचुयदेवेण इयरसुरा ॥"

बारमे देवलोकका देवता मिश्रवाला वा चौथे गुणस्थानवाला नारकीके नेह कही चौथी नरककी पृथ्वी लगे जाये. तीन रज्ज तो नीचेके हूये अने ५ रज्ज बारमा देवलोक हैं; एवं ८ रज्ज. त्रीजी नरक तो सारी अने चौथीके नरकावास ताइं एवं ३ रज्ज; आगे पंचसंग्रहके अर्थ ग्रुजब लिख देना. मेरी समजमें आया तैसे लिख्या है. श्रावक बारमे देवलोकके क्र्णेमे उपजे, त्रसनाडीके अभ्यंतर तिस आश्री ६ रज्ज. सर्वत्र पंचसंग्रहसे शंका दूर कर लेनी.

६७	संज्ञी असंज्ञी द्वार	सं असं	सं असं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं '	सं	o	o
६८	शाश्वते गुणस्थान	शा	अशा	अशा	शा	शा	शा	शा	अशा	अशा	अशा	अशा	अशा	शा	अज्ञा

सातमा गुणस्थान जैन मतके शास्त्रमे किहां ही अशाश्वत नहीं कहा, अने जो कोइ कहैं है सो इ भूल है, उक्तं पंचसंग्रहे (द्वितीये बन्धकद्वारे गा० ६)—

"मिच्छा अविरयदेसा पमत्त अपमत्तया सजोगी य । सन्बद्धं" इति वचनात अशाश्वता नही है. इति अलं विस्तरे(ण).

દ્દ	जघन्य स्थिति द्वार	अंत- भुंद्वर्त	१ स म य	अं त मुहूर्त	अं त र्मुहूर्त	अं त र्मुहूर्त	१ स म य	\rightarrow	ए	व	म्	\rightarrow	अं त मुहूर्त	अं त मुहूर्त	अंत मुं हुर्त
७०	उत्कृष्ट स्थिति द्वार	अणा अप १ अणा।स २ सा सा देश ऊन अर्घ पुद्रल	६ आ व व लिका	75	३३ सागर झझेरी एक	देश ऊन पूर्व कोड	अं त मुंहूर्त	<i>→</i>	ų	व	म्		->	देश ऊन पूर्व कोड	"

भ सहस्रारान्तिकदेवा नारकस्रेहेन यान्ति तृतीयभुवम् । नीयन्तेऽच्युतं यावत् अच्युतदेवेनेतरसुराः ॥

२ मिथ्याविरतदेशाः प्रमत्ताप्रमत्तकौ सयोगी च । सर्वाद्धम्

इहां छठे गुणस्थानकी उत्कृष्ट स्थिति अंतर्भ्रहूर्तकी कही है. सो प्रमत्त गुणस्थान अंतर्भुहूर्त ही रहे है. अने जे श्रीभगवतीजीमे प्रमत्त संयतिके कालकी पूछा करी है तिहां गुणस्थान आश्री नहीं है. तिहां तो प्रमत्तका सर्व काल एकठा कर्या देश ऊन कोड पूर्व कहा है.
पणि छठे गुणस्थानकी स्थिति नहीं कही. छठे गुणस्थानककी स्थिति अंतर्भ्रहूर्तकी कही है. उक्तं
पंचसंग्रहे (गा० ७८)—

गाथा—"समया अंतमहु(म्रहू) पमत्त अ(म)पमत्तयं भयंति म्रणी । देखणा पुव्वकोडीओ (देखणपुव्यकोडिं) अण्णोणं चिट्ठेहिं (चिट्ठंति) भयंता ॥'

अर्थ—समयसे लेइ अंतर्ग्रहृत ताइं प्रमत्त अप्रमत्तपणा भने-सेवे ग्रुनि देश ऊन पूर्व कोड आपसमे दोनो ही गुणस्थानमे रहे, प्तावता छठे सातमे दोनोहीमे देश ऊन पूर्व कोड रहे, पतंतु एकले छठे अथवा एकले सातमे देश ऊन पूर्व कोड नही रहे. इति गाथार्थः शंका होय तो भगवतीजीकी टीकामे कह्या है सो देख लेना. अने मूल पाठमे देश ऊन पूर्व कोडकी कही है सो प्रमत्तका सर्व काल लेकर कही है. परंतु छठे गुण आश्री स्थिति भगवनिजीमे नहीं कही तथा सातमे गुणस्थानकी स्थिति जयन्य एक समयकी कही है. अने श्रीभगवतीजीमे सर्व अप्रमत्तके काल आश्री जयन्य तो अंतर्ग्रहते, उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोडकी. तिसका न्याय चूर्णिकारे ऐसा कह्या है—सातमे गुणस्थानसे लेइ कर उपशांतमोह लगे सर्व गुणस्थान अप्रमत्त कहीथे। तिन सर्वका काल जयन्य एकठा करीये ते जयन्य अप्रमत्तका काल लामे। इस अपेक्षा जयन्य स्थिति है, पिण सातमेकी अपेक्षा नही। तथा टीकाकारने मते अप्रमत्त गुणस्थानवाला अंतर्ग्रहूर्त पहिला काल न करे, इस वास्ते अंतर्ग्रहूर्तकी स्थिति है। आगे तन्व केवली विदंति, स्त्राग्रय गंभीर है।

৩१	प्रमाण द्वार	अनंते	पल्योप- मके असंख्य भागे	ए	व	म्	सं ख्या त		\rightarrow	ष	व	म्			
७२	लोकस्य (द)र्दान द्वार	सर्व लोक	लोकके असंख्या तमे भाग	_		\rightarrow	ए	व	म्				>	सर्व लोक	दूजे वत्

समयादन्तर्भुहूर्तं प्रमत्ततामप्रमत्ततां भजन्ति मुनयः ।
 देशोनपूर्वकोटिमन्योन्यं तिष्टन्ति भजमानाः ॥

२ एटला पूरतं । ३ गाथानी अर्थ । ४ सर्वज्ञ जाणे छे ।

৬২	मार्गणा द्वार गुणस्था- नका आवे	રા રા ઇ પાદ	કાપ દ	શાક બાદ્દ	શરૂ બહ હાટ રાશ્ગશ્ર	w 33 w	و	१।४ ५।६ ८	9	१०	११	१०	१०	१२	१३
હેશ	गुणस्थानमे जावे	રાષ્ટ્રા પાછ	१	१	१।२ ३।५ ७	श्व इा४ ७	श ३।४ ५।७	8.	9 0, 3	८०३	्र ११।१२ ४	१०	१३	१४	मोक्षमे

पहिले गुणस्थानकी गत(ति) मार्गणामे २।४।५।७; एह गति तो सादि मिथ्यात्वी आश्री है; अने जिस जीवने पहिलाही मिथ्यात्व गुण० छोड्या है तिसकी गत ४।५।७ मे होइ, औरमे नही.

ড৭	परिषह- द्वार २२	0	0	o	0	0	રર	રર	રર	२२	१४	१४	१४	११	११
७६	आत्मद्वार ८	६ ज्ञान चारित्र विना	६ ज्ञान चारित्र विना	७ चारित्र विना	g	ø	۷	۷	۷	۷	۷	9	હ	9	æ

द्जे तथा त्रीजे गुणस्थानमे ज्ञान अज्ञानकी चर्चा उपयोग द्वारसे समज लेनी.

७७	आहारी १	आहारी है	१हे				\rightarrow	प्	व	म्	_	_		 	० नही
હ૮	अनाहारी १	१हे	55	१ नही	क श्रीह	१ नही		\rightarrow	ए	व	म्	_	\rightarrow	१हे	१हे
७९	शरीरद्वार ५	ន	ક	ż	૪	ક	५	ų	ર	3	3	३	3	3	3
Co	नियंठाद्वार २६	0	o	. 0	. 0,	. 0	ક	3	१	१	१	१ नि	श् नि	१ स्ना	१ स्ना

सातमे गुणस्थान अलब्धोपजीवी है, एतले लब्धि न फोरवे, अप्रमत्तलात्.

८१	संयतद्वार ५	0	0	o	0	0	3	3	२	२	१	१	8	१	8
८२	सम्यक्त्व- द्वार ५	0	सास्ता- दन	, 0	ន	ક	ક	ક	२	२	२	२	१	१	१
८३	वेदद्वार ३	æ	ર	સ	3	3	¥	· RX	ą	३ तथा नही	उ प श्ली	87	क <u>्ष</u> य	क <u>्ष</u> य	क्ष
S 8	संशाद्वार ४	ઝ	ય	૪	૪	ક	४ तथा नो- सन्ना	नो	नो	नो	नो	नो	नो	नो	नो

८ ५	गति ४ मे जावे	ક	३ नरक विना	0	मनुष्य देव	देव		\rightarrow	ष	वम्		>	0	0	मो क्ष
८६	भंग सन्नि- पातके ६	१ त्रिक छठो	१ एवम्	१ एवम्	तीन भंग	\rightarrow	ए	वम्	\rightarrow	æ	es.	ક	સ	8	
८७	भाषक अभाषक २	ર	ર	१भा	ર	٩	Q	१	ę	ę	१	१	१	સ	२ अ भा प्र
<u>دد</u>	पढम अपढम	2	2	2	ર	2	ર	સ	ર	2	٦.	ર	प ढ म	ए व म्	ए व म्
८९	चरम अचरम	२	ર	2	2	2	ર	સ	ર	ર	સ	२	चरम	च र म	च र म
९०	भव्य अभव्य	२	१	٤	१	8	१	१	१	१	१	१	१	१	१
९१	आयुवंध करे	૪	3	0	ર	१	१	१	0	0	o	0	0	o	0
९२	परिणामकी हान वृद्धि ६ स्थान	६ स्थान		\rightarrow	ए	व	म्		\rightarrow	तुख्य	प	व	म्	>	0

बंधी बंधित बंधिस्सित १, बंधी बंधित न बंधिस्सित २, बंधी न बंधित बंधिस्सित ३, बंधी न बंधित बंधिस्सित ४, बंधी न बंधित न बंधिस्सित ४; ए चार भंग सर्व कर्म आश्री सर्व गुणस्थानमे विचार लेना.

९३	५ कर्म आश्री भंग चारमे	१ २	१	& 2	ર .	2	१	१	ર ર	2 2	2 2	3	ક	ક	ક
૧ ૪	वेदनीय आश्री	१	ર ૨	र २	१	2	१ २	२	२	2	2 2	2 2	a, 1	2 2	8
९५	मोह आश्री भंग	१२	१२	१ २	१२	१	१२	२ २	१२	2 2	क्र अ	ૠ	ક	ક	ક
९६	आयु आश्री भंग	१ २ ३ ४	2 4 3	क्र ४	१ २ ३ ४	१ ३ ४	१३	१३	સ્ છ	३ ४	क्र अ		ક	8	ક
९७	खिंग, अन्य- लिंग, गृहि- लिंग, ३ द्रव्ये	વ	3	574	32	a	ą	३	ra,	n	æ	3	3	a	3

१ जुओ भगवती (श॰ ८, उ॰ ८, स्॰ ३४३)।

९८	संघयण ६	દ	E	દ	દ્	ફ	દ્	દ્	३	3	3	3	8	8	१
९९	संस्थान ६	દ્	६	દ્	६	ફ	ંદ	६	६	६	६	દ્	દ	છ	६
१००	ईरियावहिया भंग ८	₹, ७ ८	9 9	न्न ७	3 4 9	રૂ ૭	3 9	३	3 9	34 9	n 9	80 35	ર	ર	૪
१०१	सराग वीत- राग २	सराग	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स उ प शा	वी	<u>ची</u>	ची
१०२	द्षष्टिद्वार ३	मि	स	मि श्रि	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
१०३	पर्याप्त अपर्याप्त २	ર	ર	१	ર	१	१	१	१	१	१	8	१	१	8
१०४	प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी २	अप्र	अप्र	अ प्र	अ प्र	प्र अ प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	प्र	Я
१०५	सूक्ष्म बादर २	ર	वादर	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	3
१०६	त्रस स्थावर २	त्र० स्था०	त्र० स्था०	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र	त्र
१०७	गति कौन- सीमे ?	૪	ઝ	30	૪	म	म	म	म	म	म	H	H	म	Ħ
१०८	परत अपरत संसारी	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	8	१

प्रथम गुगस्थानमे परत संसार हो जावे है, मेचकुमारके हाथीके भववत् ज्ञेयं.

१०९	गुणस्थानमे काल करे	काल करे	करे	करे नही	क	क	क	क	क	क	क	क	न	न	क
११०	परभव साथ जाये	जाये	जाये	न	जाये	न	न	न	न	न	न	न	न	न	न
१११	इन्द्रियद्वार ५	१।२।३।४।५	શારાર કાપ	ч	ષ	ષ	ધ્યુ	५	S.	ષ	ષ	લ	ધ	0	o
११२	गति जाये देवलोक	२१	१२	0	१२	१२	૨ १	२६	0	0	o	ò	0	0	0

११३	अवगाहना- द्वार	जघन्य अंगुः लके असं- ख्यातमे भाग, उत्कृष्ट-ह- जार योजन झझेरी	ए	च	म्	ए व म्	ज-१ हाथ झझे- री, उ ५०० धनु-		ज-२ हाथ उ- ५०० धनुः		→	एव	म्		\rightarrow
११४	द्रव्यप्रमाण संख्याद्वार	अनंते	असं- ख्याते	प च म्	ए व म्	प च म्	पृथक् हजार कोड								:
११५	काल स्थिति छता	सर्वोद्धा	ज-१ स मय, उ- पल्यके असं- ख्यातमे भाग	ए व म्	स र्वा द्धा	स र्वा द्या	स र्वा द्धा	स र्वा द्धा	य, उ-	ए व म्	ए व म्	ए व म्	७८ स म य	स वी द्धा	अंत- र्मुहूर्त ७स- मय
११६	निरंतर गुणस्थानमे आवे	पल्योपमके असंख्या- तमे भाग ताइं	एवम्	एवम्	आव ⁻ लिका के अ- सं- ख्या- तमे भाग ताइ	ए व म्	८ समय			→	Ų.	वम्			\rightarrow
११७	एक जीव आश्री अंतरा	ज-अंतर्मु- इर्त, उ-६६ सागर झझेरा	ज-अंत मुंहूर्त, उ अध पुद्ग- ल देश ऊन			→	प	व	म्				→	o	o
११८	घणा जीव आश्री अंतर	नही	ज-१ स मय, उ- पल्यका असंख्य भाग	ए व म्	न ही	न ही	न ही	न	उप- शम श्रेणि पृथक् वर्ष क्षपके ६ मास	व	ए व म्	पृथ क वर्ष	६ मा स	न ही	६ मास
११९	उतरे चडे	चडे	उतरे	2	2	ર	3	ર	२	2	3	उ त रे	च	च	च

`	l deine		1				1	1				1			
१ २०	चडत पडत गति	दूहर गति	पाणी नीधी २	इलका उहां- घिका	8	३ इल- का विना	३ दूहर विना	प	व	म्	૪	पा णी नी उल्लं	इ ल का	इ ल का	0
१ २१	सिद्ध जीव केते गुण- स्थान स्पर्शे ?	नि य मा	भ ज ना	भ	नि	भ	नि	नि	नि	नि	नि	भ	नि	नि	नि
१२२	संस्परों गुणस्थान सामान्येन	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१३	१४
१२३	नियमा संस्पर्शे	१	વ	ત્ર	२	त्र	8	3	ષ	દ્ધ	હ	۷	۷	۹,	१०
१ २४	भजना स्पर्शे	१०	۷	2	९	٤	ø	۷	६	વ	ક	સ્	૪	૪	છ
१२५	भव केते करे ?	अनंते	अनंते	अनंते	असं· ख्याते	असं- ख्याते	<u>و</u> د	9	3	3	ર	२	१	2	१
१२६	विरहद्वार	नही	ज-१ स- मय, उ- अंतर्मुहुर्त	प व म्	न ही	न ही	म ही	न ही	ज-१ सम- य, ङ पृथक् वर्ष वा ६ मास	व	ए व म्	ज-१ सम- य, उ- पृथक् वर्ष	ज १ स उ ६ मा स	ही	ज- १ समय उ-६ मास
१२७	वीर्य ३	बालवीर्य	बाल	बाल	बाल	बाल पं डि त	पं	ψ	पं	पं	पं	पं	पं	पं	0
१ २८	समोहिया असमोहिया २	ર	2	अ- समो	ર	ર	ર	१	१	ş	२	१	१	ર	१
१२९	विप्रहगति ऋजुगति २	ર	2	o	ર	3	ર	ર	ર	ર	ર	ર	0	0	ऋजु
१३०	तीर्थमे अतीर्थमे	अतीर्थ	एवम्	एवम्	२	ती	ર	ર	ર	२	ર	ती	ર	ર	સ
१३१	हिंग स्त्री आदि तीन	34	ষ্	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3
१३२	प्राण १०	धादा ७ ।८। ९।१०	धादा ७।८ ९।१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	ષ	ę

१३३	आहार दिग् ६ ना	રાષ્ઠા ધાદ	રાષ્ટ્રા પાદ	६	દ્	Ę	६	દ્	ફ	દર	દ્	Ę	ફ	દ્દ	0
१ ३४	ओज रोम कवल आहार ३	3	રૂ	ર	3	ર	ર	ર	ર	ર	ર	2	ત	સ	0
१३५	सचित्त अचित्त मिश्र आहार ३	3	מע	tra,	M	ą	ą	જ	१ अचि- त्त	ए व म्	ए व म्	१	84	ર	O 6
१३६	समवसरण ४	3	ą	२	8	१	१	१	१	१	१	8	8	8	१
१३७	जघन्य स्थिति बांधे ८ कर्मकी	आयु जघन्य	•	0	0	0	•	0	0	मो ह ज	अ कर्म	वे द नी य	वे द नी य	ते व द नि य	0
१३८	मध्यम बंध आठ कर्म	٤	۷	9	۷	૮	د	9	v	E	0	.0.	0	0	0
१३९	उत्कृष्ट बंध ८ कर्म आश्री	૮	•	0	0	0	0	आ यु	0	0	0	•	0	0	0
१४०	मूल कर्मका बंध	<i>ن</i> د	<i>و</i> د	હ	٥ د	2	<i>و</i> د	9	y	9	e,	१	2	१	•
१४१	मूल उदय	٤	۷	6	2	٤	6	2	6	6	6	و	9	8	૪
શ કર	मूल उदी- रणा	9	<i>9</i>	2	2	و د	9	Ę	દ્	હ	80 9	وم	उथ	२	0.
१४३	मूल सत्ता	૮	۷	6	۷	٤	٤	2	૮	6	6	2	૭	8	ક

त्रीजे गुणस्थानमे ८ कर्मकी उदीरणा इस वास्ते कही है, उदीरणा ८ कर्मकी तब ताइ होइ है जब ताइ एक आविलका प्रमाण उदय काल प्रकृतिका रह्या होइ अने जिवारे आविलके माहे प्रवेश करे तिवारे उदीरणा नहीं होय अने तीजा गुणस्थान आविल प्रमाण आयु शेष रहेसे पहेलेही आवे हैं; आविल प्रमाण आयु शेष रहे तीजा गुणस्थान ही आवे हैं, इस वास्ते ८ की उदीरणा सत्यं. ऐसे ही दशमें गुणस्थानमें मोहकी उदीरणा टली आविलमें प्रवेश करे. असेही १२ में ५ की तथा २ वेदनीय उपर इह संज्ञा न जाननी. इति अलं विस्तरेण.

उत्तर प्रक्त- १४४ तिका १२० बंध	1	१०१	ષ્ટ	৩৩	६७	६३	५९	५८ ५६ २ ६	२२ १८	१७	१	१	१	0
--------------------------------------	---	-----	-----	----	----	----	----	------------------------	----------	----	---	---	---	---

पहिलेमे तीन टली-आहारकदिक २, तीर्थंकर १; एवं ३. द्जेमे १६ टली-मिथ्यात १, हुंड संस्थान १, नपुंसकवेद १, सेवार्त संहनन १, एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १, सक्ष्म १, साधारण १, अपर्याप्त १. विकल ३, नरकत्रिक ३; एवं १६. त्रीजे २७ टली--अनंतातुवंधी ४, स्त्यानधित्रिक ३, दुर्भग १, दुःखर १, अनादेय १, संस्थान चार मध्यके, संहनन चार मध्यके, दुर्गमन १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यचित्रक ३, उद्द्योत १, मनुष्य-आयु १, देव-आयु १; एवं २७. चौथेमे तीन मिली--तीर्थंकर १, मनुष्य-देव-आयु २: एवं २. पांचमे १० टली-अप्रत्याख्यान ४, प्रथम संहनन १, औदारिकद्विक २, मनु-ष्यत्रिक ३; एवं १०. छठे ४ टली—प्रत्याख्यान ४. सातमे ६ टली—अस्थिर १, अशुभ १, असाता १, अयश १, अरति १, शोक १; एवं ६. दो मिली—आहारकद्विक २ अने जो आयु १ टले तो ५८. आठमेके प्रथम भागमे एवं ५८, द्जे भागमे निद्रा २ दो टले ५६, तीजे भागमे ३० टली - तीर्थंकर १, निर्माण १, सद्गमन १, पंचेन्द्रिय १, तैजस १, कार्मण १. आहारकद्विक २, समचतुरस्र १, वैक्रियद्विक २, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १. उपघात १. पराघात १, उच्छ्वास १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, ग्रम १, सभग १, सुखर १, आदेय १; एवं ३०. नवमेके प्रथम भागमे ४ टली — हास्य १, रति १, भय १. जुगुप्सा १; एवं ४; नवमेके दुजे भागमे पुरुषवेद १, संज्वलनित्रक ३; एवं ४. दसमे एक संज्वलननो लोभ टल्यो. ग्यारमेमे १६ टली—ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५. यश १, उंच गोत्र १; एवं १६. आगे १ साता बांधे. १४ मे नही.

१४५	उत्तर प्रक्त- तिना उदय १२२	११७	१११	१००	१०४	৫৩	૮१	७६	૭૨	६६	६૦	५९	५७ ५५	કર	१२
-----	----------------------------------	-----	-----	-----	-----	----	----	----	----	----	----	----	----------	----	----

पहिले ५ टली—आहारकदिक २, तीर्थंकर १, मिश्र मोहनीय १, सम्यक्त-मोहनीय १, एवं ५ टली. द्ते ६ टली—मिध्यात १, आतप १, सक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, एवं ५, नरक-आनुपूर्वी १, एवं ६ टली. तीजेमे १२ टली—अनंतानुवंधी ४, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, स्थावर १, आनुपूर्वी ३, एवं १२. अने चौथे मिश्र मोह १ टली अने ५ मिली—आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्व-मोह १, पांचमे १७ टली—अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियदिक २, नरकित ३, देवित्रक ३, मनुष्य आनुपूर्वी १, तिर्यगानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयग्र १, एवं १७. छटे ८ टली—प्रत्याख्यान ४, तिर्यच-आयु १, तिर्यच-गति १, उद्योत १, नीच गोत्र १, एवं ८ टली अने आहारकदिक मिले. सातमे ५ टली—स्त्यानिर्दित्रक ३, आहा-

www.jainelibrary.org

रकदिक २; एवं ५. आठमे ४ टली-सम्यक्त्वमोहनीय १, अंतके संहनन ३; एवं ४. नवमे ६ टली-हास्य १, रित १, शोक १, अरित १, भय १, जुगुप्सा १; एवं ६. दसमे ६ टली-वेद ३, संज्वलना क्रोध १, मान १, माया १; एवं ६. ग्यारमे संज्वलना लोभ टल्या. बारमे २ संहनन टले; द्विचरम समय निद्रा १, प्रचला १ टली. तेरमे १४ टली-ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५; एवं १४ टली; तीर्थकरनाम मिला १. चौदमे ३० टली-असाता वा साता १, वज्रक्रपभनाराच १, निर्माण १, स्थिर १, अस्थिर १, जुभ १, अग्रुभ १, सुखर १, दुःखर १, प्रशक्त खगित १, अप्रशक्त खगित १, औदारिकद्विक २, तेजस १, कार्मण १, संस्थान ६, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रत्येक १; एवं ३०. चौदमे १२ रही तिनका नाम—साता वा असाता १, मनुष्यगित १, पंचेंद्री १, सुभग १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, यश १, तीर्थकर १, मनुष्य-आयु १, उंच गोत्र; ए १४.

१४६	उत्तर प्रकृ- तिका उदी- रणा १२२		१११	१००	१०४	९७	૮१	७३	६९	६च	५७	પદ પ છ	३९	o
-----	--------------------------------------	--	-----	-----	-----	----	----	----	----	----	----	---------------	----	---

पहिलेसे छठे ताइ उदयवत् उदीरणाः सातमेसे तेरमे ताइ तीन टली-वेदनीय २, मनु-ध्य-आयु १, और सर्व उदयवत् उदीरणा जाननीः चौदमे उदीरणा नास्ति इत्यलम् ।

१४७	उंत्तर प्रकृति सत्ता १४८				,										
१४८	आकर्ष गुण- स्थान कितनी विरीया आवे ?	सय; घण	ज. उ. १ घणे भवे आश्री ज. २, उ. ५ वार	ज. १, उ. पृथक् सय; घणे भव ज. २, उ. असंख	п	ए व म्	ज. १ उ.सं ख्या: ती वार	व	ज. १ उ. ४; घणे ज. २ उ. ९	एव	म्	ज. १, उ. ४; घणे ज. २, उ. ५ वार	क वा	ए क वा र	प क वा र
१४९	कर्मनिर्जरा	0	असंख. गुणी			\rightarrow	ए	व	म्		_		_		>
१५०	हीयमान वर्धमान २ अवस्थित	३	સ	જ	સ	ર	æ	Ą	fra⁄	na e	3	,	वर्ध	वर्ध अव स्थि	वध्य मा
१५१	स्थानक	असंख्य स्रोकः प्रमाण		\longrightarrow	ष	व	म्		\rightarrow	अंत- मुहूर्त सम- प्रमा- ण	ए व	ę	2	१	१

⁹ नथी । २ आ कोष्ठक तेमज तेना स्पष्टीकरण माटे मूल प्रतिमां जग्या रखायेली छे, परंतु तेनो उपयोग प्रन्थकारे कर्यो नथी ।

१५२	श्रेणि उपराम क्षपक	o		o	•	0	0	٥	0	२	3	ર	7	१ इ ग श	१ श प क	1	१	१
१५३	कल्प ५	0		0	0	0	0	५	ष	8	८	ક	_	૪	४		ક	८
१५४	चवके दंडके जावे	રધ	}	૨ ₹	٥	१६	१	१	१	१	१	१		१	o		0	मो क्ष
१५५	पर्याप्ति ६	ઝ	ફ	દ્	ફ	६	8	ŧ	દ્	દ	६		દ	દ્દ	ફ	ફ	१ ह	 ग्रा
१५६	अनुवत १२	o	0	0	0	१२	-	•	0	0	0		0	0	0	0	0	
१५ ६ १५७	महावत ५	0	0	0	0	0			L q	ષ	े ५		५	۲	Cq	4	· ·	,
१५८	सम्यक्त्व- सामायिक १,श्रुतसामा- यिक २,देश- वतीसामा- यिक ३ सर्व- वतीसामा- यिक ४	0 0	0 0 0	0 0 0	~ ~ ~	בא בא בא לא	8887		פאים פאים פאים לצאק	מי, טי, טי, טי, על,	8, 84, 84, 84		04 04 04 WA	er er er th	S, S, S, W,	מי מי מי תו	2, 2, 2, W	
१५९	मोहना बंध- भंग २१	२२ ने बंधे भंग ६	२१ ने बंधे भंग ४	१७ ने बंधे भंग २	१७ ने बंधे भंग २	१३ ने बंधे भंग २	९ न बंध भग २	;	९ ने बंधे भंग २	९ ने बंधे भंग २	10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1	२ २ २	0	0	0	0	o	

बावीसवी बंधस्थाने पीछै लिख्या है । अथ मंगखरूप—हास्य रित वा अरित शोक २ ए दो मंग पुरुषवेद साथ; एवं २ स्नीवेद साथ; एवं २ मंग नपुंसकवेद संघाते; एवं २२ ने बंधे मंग ६. इकीसेके बंधे मंग ४—अरित शोक पुरुषवेद १, हास्य रित पुरुषवेदसे बंधे २; एवं पुरुषवेद काढीने स्नीवेदसुं दो मंग करणा; एवं ४. नपुंसकवेदका बंध सास्वादने नही. १७ ने बंधे मंग २—हास्य रित पुरुषवेद १, अरित शोक पुरुषवेद २; एवं २; स्नीका बंध नही. तेराके बंधमे ए ही दो मंग जानने. छठे गुणस्थानमे ९ के बंधमे ए ही दो मंग; एवं ९ के बंधमे, आगे पिण ए ही दो मंग अने नवमेमे ५ ने बंधे एक मंग १,४ ने बंधे १ मंग, ३ ने बंधे मंग १, २ ने बंधे मंग १, अने १ ने बंधे मंग १, यद्यपि सातमे आठमे गुणस्थानमे अरित १ शोकका बंध नही है तथापि भंगनी अपेक्षा सप्तिस्त्रमे बंध कह्या है इित अलम्—

१६० मोहके उद्य- भंग ९९५	ર હર હર હ ર રક્ષ	ર ૪૮ ૨૪	રક કડ રક	२४ ७२ ७२ २४	२४ ७२ ७२ २४	२४ ७२ ७२ २४	રક કડ રક	१२ ४	१	0	0	0	o	0
----------------------------	-------------------------------------	---------------	----------------	----------------------	----------------------	----------------------	----------------	---------	---	---	---	---	---	---

उद्यभंग रचना. प्रथम गुणस्थानमे २२ ने बंधे सात आदि ७।८।९।१० उदयस्थान ४; इनका खरूप पीछे उद्यक्षानमें लिख्या है सो जान लेना. इहां सातने उदयमे मंग २४ ते किम? हास्य रति प्ररुपवेद १ अरति शोक प्ररुपवेद २; एवं दो २; ए ही दो स्त्रीवेदसुं २; ए ही दो नपुंसकवेदसुं, २; एवं ६ हुये; ए ही ६ कोधसुं; एवं ६ मानसुं; एवं ६ मायासे; एवं ६ लोभसे; एवं सर्व २४ हुये. हिवे आठने उदय तीन चौवीसी ३ ते किम १ अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, मिथ्यात्व १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, हास्य १, रति १; अथवा एहने ठामे अरित शोक इणमें भय घाले एतले आठने उदय एक चौबीसी: इम भय काढी जुगुप्सा घाले आठमे दूजी चौवीसी; जुगुप्सा काढी अनंतानुबंधीयासुं तीजी चौवीसी; एवं ८ ने उदय ७२ भंग. हिवै नवने उदय तीन चौवीसी ते किम? सातमे भय जुगुप्सा घाले ९. ए नवने उदय भय जुगुप्सा संघाते पीछे कहा ते छ विकल्प क्रोध, मान, माया, लोभसे एक चौबीसी १; अथवा जुगुप्सा काढे भय, अनंतानुबंधीसुं नवने उदय दूजी चौवीसी २; अथवा भय काढी जुगुप्सा, अनंतानुबंधीयासुं तीजी चउवीसी ३; एवं भंग ७२. हिवे सात्मे भय, जुगुप्सा, अनंतानुबंधी १ घाले १० ने उद्य एक चौवीसी. पुरुषवेद आदिकसुं, हिवै २१ ने बंधे सात आदि ७।८।९ लगे तीन उदयना ठाम. सातनो उदय अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, ए चार (१) ए कोइ एक कोइ वेद १, हास्य रित १, अरित शोक ए दोनोमे एक कोइ; एवं ७. एही पाछला छ विकल्प क्रोध १, मान १, माया १ लोमसुं एक चउवीसी १; सातमे भय घाले आठनो उदय, भय संघाते एक चौवीसी १; भय काढी जुगुप्सासुं एक चौवीसी; एवं भंग ४८. सातमे भय, जुगुप्सा समकाले घाले नवनो उदय. नवने उदय एक चौवीसी. एसास्वादन गुणस्थानमे जाणवा. प्रथम सत्तराने बंधे मिश्र गुणस्थानमे तीन उदयना ठाम; तिहां चौवीसी चार ते किम? अप्रत्याख्यान १, प्रत्यख्यान १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, कोइ एक जुगल मिश्र; एवं ७ नो उदय. ध्रुव पाछला ६ विकल्प, क्रोध १, मान १, माया १, लोभसुं छ गुणा एतले एक चौवीसी. सातमे भय घाले एतले आठने उदय पीछली परे एक चौवीसी १; भय काढी जुगुप्सासे आठने उदय द्जी चौवीसी २; सात मध्ये भय, जुगुप्सा समकाले घाले नवने उदय पाछली तरे एक चौवीसी १; एवं मिश्र गुणस्थाने ४ चउवीसी. हवै अविरतिने ६।७।८।९ ए चार उदयठाम उपशम अथवा क्षायिक सम्यक्त्वना भणीने ए ६ ना उदय हुये अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, संज्वलन १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २; एवं ६ ने उदय एक चउवीसी. ए छ मांहे मय घाले सातने उदय एक चउवीसी १; भय काढी जुगुप्सासे सातने उदय दूजी चउवीसी २; जुगुप्सा काढी वेदक सम्यक्-त्वसुं सातने उदय त्रीजी चौवीसी ३; अत्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, संन्वलन १, वेद १, युगल ६; ए छ माहे भय, जुगुप्सा घाले एतले आठने उदय एक चौवीसी १; जुगुप्सा काढी भय, वेदक, सम्यक्त्वसुं आठने उदय दूजी चउवीसी २; भय काढी जुगुप्सा वेदकसुं आठने उदय तीजी चौवीसी ३. अप्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यान १, संन्वलन १, वेद १, युगल २,

भय १, जुगुप्सा १ वेदक १; एवं ९ ने उदय एक चौवीसी. तेराने बंधे पांच आदि देइ आठ लगे. चार उदयना ठाम हुइ ५।६।७।८ प्रथम ५ ते किम १ प्रत्याख्यान १, संज्वलन १, वेद १, एक कोइ युगल, ए पांचने उदय पाछली परे एक चौवीसी १; ए पांच माहे भय घाले ६ ने उदय एक चौबीसी १; भय काढी जुगुप्सा घाले ६ ने उदय पाछली तरे एक चौबीसी १; ए दुजी चौवीसी २; जुगुप्सा काढी वेदकसुं त्रीजी चौवीसी ३. प्रत्या० १, संज्व० १, एक ²केहु वेद १, एक कोइ युगल २, भय १, जुगुप्साः एवं ७ ने उदय एक चौवीसीः, अथवा जुगुप्सा काढी भयने वेदकसुं सातने उदय दुजी चौवीसी; भय काढी जुगुप्साने वेदकसुं सातने उदय तीजी चौवीसी ३; प्रत्या० १, संज्व० १, एक कोइ वेद १, एक कोइ युगल २, भय १, जुगुप्सा १, वेदक १; एवं आठने उदय पूर्ववत एक चौवीसी १. नवने बंधे प्रमत्त १, अप्र-मत्त १, अपूर्वकरण १ ए चार गुणस्थानमे नवने बंधे चार आदि ४।५।६।७ ए उदयस्थान. प्रथम चारका किम ? संज्वलन एक कोइ २, एक कोइ वेद २, एक कोइ युगल २, ए चार प्रकृतिना उदय क्षायिक वा उपशम सम्यक्त्वना घणीने प्रमत्त आदि चार गुणस्थानना घणीने हुइ. एवं नवने बंधे चारने उदय पूर्ववत एक चौवीसी; ए चार माहे भय घाले; एवं पांचने उदय पूर्ववत एक चउवीसी; भय काढी जुगुप्सा घाले पांचने उदय दृजी चौवीसी; जुगुप्सा काढी वेदकरें पांचने उदय त्रीजी चौवीसी २; संज्व०१, वेद एक केंद्र १, युगल एक केंद्र २, एह चारमे भय, जुगुप्सा घाले छने उदय एक चौवीसी १; अथवा जुगुप्सा काढी भय १ वेद-कसुं दुजी चौबीसी २; भय काढी जुगुप्सा वेदकसुं छने उदय तीजी चौबीसी ३. संज्व० १, एक केहु वेद १, एक युगल २, भय १, जुगुप्सा १, वेदक १; एवं सातने उदय एक चौवीसी. पांचने बंधे दो उदयना स्थान ते किम ? संज्वलन १, एक कोइ वेद १, ए दोने उदय त्रिण वेद ३, क्रोध १, मान १, माया १, लोभ १ से चार गुणा कीजे तो बारां भंग होइ. हिवै पांचने बंधे संपूर्ण. चारनु बंध १, तीननो बंध, दोनो बंध, एकनो बंध. ए चारोमे एकेक प्रकृतिन(उ) उद्य ते किम? पांचना बंधमेसं पुरुषवेद विच्छेद कीधे चार रहै; ते चारने बंधकाले एक कोइ संज्वलननो उदय इहां चार भांगा उपजे ते किम? कोइ क्रोधने उदय श्रेणि पिडवर्जा; एवं मान १, माया १, लोम १. इहां कोइ एक आचार्यने मते इम कह्यो ६ बांधवाने काले एक कोइ वेदनी इच्छा करे तेह भणी तेहने मते बांधवाने पहिले समये चार त्रिक बारां भंग उपजे; तेह भणी तेहने मते २४ भंग हुइ ते किम १ बारा मंगा पांचना बंधना, बारा एहना मतना; एवं २४. चौवीसी सर्व ४१. संज्वलना कोध छेदे तीनका बंध, क्रोध टाली एक कोइनो उदय जो संज्वलना क्रोधनउ उदय तु संज्वलना क्रोधनो बंध हुइ. ''जो बंधइ सो वेध(द ?)इ'' इति वचनात्. संज्वलना मान छेदे दोनो उदय; मान टाली एक कोइनो उदय. माया छोदे लोभनो बंध, लोभनो उदय. संज्वलना क्रोध थकी ४ मंग, मानसे ३, मायासे २ मंग, लोमसे एक मंग; एवं मंग ११. पिछली ४१ चौवीसी अने एह ग्यारा, सर्व एकत्र कीया ९९५ मंग मोहोदयके हैं।

१ कोइ। २ यो बधाति स वेदयति।

१६१	नाम- कर्मके बंध भंग १३९४५	3	८ ६४०० ३२०० ९६०८ सर्व संख्या	८ ८ सर्व संख्या १६	८ १६ ८ सर्व संख्या ३२	८ ८ सर्व सं- ख्या १६	ए व म्	ए व म्	००००० स्वि ४	とととなる 女母	Q	00000	00000	00000	000000
१६२	नाम- कर्मके उदय- भंग (७७९१)	७७०४ ७७६८ ७७६८ ७६०२ ७७७३ सर्व ४६३८८	३४६४ ४०९७ ४ ०९७ ११६५८ सर्वे	३४५६ ९ सर्व ३४६५	२१(?) ७५४८ ७६६१ ७६६१ सर्व २२९०६	४४३ १४८ सर्व ५९१	१५८ १५८ सर्व ३१६	१४८ १४८ १४८ १४८ सर्व ५९२	७२ ७२ ७२ ७२ ७२ सर्व ३६०	હર	७२	७२	ર ક	११६१२३५ सर्व ६०(?)	१ १ स्व २

इन दोनो यंत्रका विस्तार बहुत है, इस वास्ते भांगा लिख्या नही; जोकर भांगे विचारणे अरु सीखनेकी इच्छा होइ तो सप्ततिस्त्र(गा० २६;२९)नी दृत्ति अवलोकनीयं इति अलम्. इति नवतत्त्वसंग्रहे आत्मारामसंकलता(ना?)यां प्रथमजीवप्रभेद संपूर्णम्.



अथ अजीबतत्त्वसंग्रह लिख्यते

(८०) भगवती

अजीव द्रव्य	द्रव्यथी	क्षेत्रश्री	कालथी	भावधी	गुणथी
धर्म्मास्तिकाय १	पक	लोकप्रमाण	अनादि अनंत	वर्ण नही, गंध, रस, स्पर्श नही, अरूपी	चलनसहाय
अधर्मास्तिकाय २	,,	35	,,	वर्ण आदि पांचो नहीं, अरूपी	स्थितिसहाय
आकाशास्तिकाय ३	"	लोकालोकप्र- माण	77 77	वर्ण आदि ५ नही, अक्रपी हैं	अवगाहसहाय

अजीव द्रव्य	द्रव्यथी	क्षेत्रथी	का	लथी	भावथी	गुणश्री
काल ४	अनंता	मनुष्यलोक- प्रमाण	"	"	वर्ण आदि ५ नही	वर्तन(ना) गुण कालस्य
पुद्गलास्तिकाय ५	अनंत	लोकप्रमाण	"	"	वर्ण, गंध, रस, स्पर्श है	ग्रहणलक्षण

(८१) अनुयोगद्वार(सू० ७४,८०-८९)से पुद्गलयंत्रम्

\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	13 11 18/11/18	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,							
	आनुपूर्वी १	अनानुपूर्वी २	अवक्तव्य ३						
सत्पद्प्ररूपणा	नियमात् अस्ति								
द्रव्यपरिमाण	अनंते	अनंते	अनंते						
क्षेत्र	संख्य भाग १, असंख्य भाग २ घणे, संख्ये घणे, असंख्ये सर्वे छोक	असंख्यमे भाग छोकके	असंख्यमे						
स्पर्शना	क्षेत्रवत् पांच वोल जानने; वरं स्पर्शना कहनी	असंख्यमे भाग	असंख्यमे भाग						
काल	एक द्रव्य आश्री असंख्य काल; नाना आश्री सर्वोद्धा	→ एवम्	\rightarrow						
अंतर	एक द्रव्य आश्री अनंत काल; नाना आश्री सर्वोद्धा	एक० असंख्यः नाना सर्वोद्धा	एक अनंत कालः नाना सर्वोद्धा						
भाग	रोष द्रव्यके घणे असंख्य भाग अधिक	रेाष द्रव्य० असंख्य भाग हीन घणे	\rightarrow						
भाव	सादि पारिणामिक भावे है	→ एवम्	\rightarrow						
अल्पबहुत्व द्रव्यार्थे	४ असंख्येय गुण	२ विशेष अधिक	१ स्तोक						
,, प्रदेशार्थे	५ अनंत गुणे	अप्रदेश स्तोक २	विशेष अधिक ३						
स्वरूप	त्रिप्रदेशी धापादाणाटा९ यावत् अनंत	परमाणु	द्विप्रदेशी						

जिस स्कंघमे आदि, अंत पाइये, मध्य पाइये सो 'स्कंघ आजुपूर्वी' कहीये १. जिस स्कंघमे तीन बोलमेसु कोइ बी न पाइये सो 'अनाजुपूर्वी' कहीये. जिस स्कंघमे आदि, अंत पाइये पिण मध्य न पाइये सो 'अवक्तव्य' कहीये.

अथ अग्रे लोकखरूप व्यवहार नयके मतसे लिखिये हैं; निश्रयमे तो अनियत प्रमाण हैं।

	В	8	४	ક	U	೪	છ	ઇ	૪	B	છ	ઇ	B	ઇ	જ	૪	8	8	૪	४	૪	૪	
	છ	•	-	0	6	ਰ	ব	उ र		दि	्ड अ	नं	<u>ं</u> त	<u>े</u> ज़े	यं	3	0	-	-	~	0	8	
\vdash	8	-	-	 				91	***	।५	31	-	71	₹'	۲		-					8	
	ક																					છ	
	ર	अ	ना	दि	स	प	र्य	व	स्य	त	२	2	•	स्या	दि	·34	प	र्य	a	स्य	ਜ	ર	
1-1	2		L		``	`					2	2			,,4		-				,,	ર	
	P				ש					૪			ક					ध्		-		8	
	१				<u>돾</u>					ક			8					-=-			<u> </u>	3	
	3				₽Ď.			8	0	-				0	C			क				ર	
	3,				भा			8							6			4				ર	
	2				34		ર્	-								१०		3H			<u> </u>	ર	
	ર						2									80						ર	
	٦,						ą									१०						ર	
	ર							8	0					0	3							3	
	3			K						8			8						É			8	
	P			٠ /د			15			પ્ર			છ			4			4		_	8	
	ર			<u>ች</u>			标				'२	ર				त्र	<u>_</u>		त्र	<u> </u>		ર	_
	ર			如			π			<u></u>	ર	२			_	当.	<u> </u>		श्र	<u> </u>		ર	ļ
	१			F			·15:			ક			8		ļ	7		ļ	١.	<u> </u>	1_	3	
	3			B			क्र			४	ļ		છ		_	半		ļ 	24	_	<u> </u>	१	
	8						Ħ		ર		<u></u>			E	<u> </u>	र्घ	_		<u> </u>			8	
	8				t				ર		ļ			٤	_	 	_	_	ļ	-	 	४	<u> </u>
\sqcup	3,				·ht		<u> </u>	ध			<u> </u>		-		6	-	-	4		-	-	3	_
	ચ				F			8		<u> </u>	ļ	ļ	-	-	5	 -		त्र	ļ	<u> </u>		13	 -
	૨				\$50		२				_	ļ	-	ļ	-	30	 	न्र	<u> </u>	<u> </u>	-	२	<u> </u>
	ર				द्ध		3			<u> </u>		ļ 	ļ	-		150	 	4.	ļ	ļ	 	1	_
	ર						Q.		<u> </u>	ļ		ļ	↓	-	-	50		7	<u> </u>	-	_	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	-
	ર						₹	<u> </u>		ļ	<u> </u>	<u> </u>	-	ļ	 	१०	 		-	-	-	२	-
 	?	<u> </u>	-	-	_	8					-	<u> </u>	-	-	-		१३२		-	-	-	8	
 	१		<u> </u>		Je Je	8		 					 	 		-	१२		-	+-	+-	1	-
-	ક				3	_	-	_	-		<u></u>	-	_	-		-	_	\$8	┿	┼	-	8	<u> </u>
	છ	-	<u> </u>	_	<u>२</u>	0	0	0	0	Ç	3	0	13	2	3	G	0	68	-	4	+	8	-
	8	-		 		ļ	 	<u> </u>	├	 		-	ļ			 		 -	+	-	+-	8	#-
	8						-		<u> </u>		<u> </u>			-	+	-		_	-	-	 	8	<u> </u>
	8		-	-	-				-	-		<u> </u>	<u> </u>	 	 	ļ.,	<u> </u>		<u> </u>	1	-	8	<u> </u>
	૪	ક	છ	8	8	8	४	४	8	ધ	ક	9,	ક	8	្ង	ક્ષ	8	8	8	18	8	8	

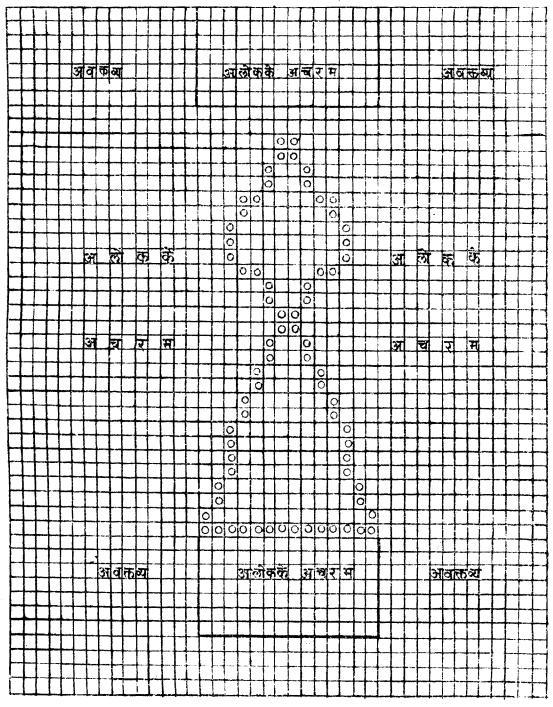
सातमी नरकके आकाशक तले अर्थात् नीचे दोय मतर आपसमे सदश अने सात राज (रज्जु)-को लंबे चींडे हैं. तिसके ऊपर एक मदेश हीन दोय मतर हैं। तिनके ऊपर एक मदेश हीन चार मतर सरीपे हैं. तिनके ऊपर एक मदेश हीन दोय मतर सरीपे हैं, तिन के ऊपर एक मदेश हीन दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर दोय मतर हैं. एक मदेश हीन कर देश मतर चढ़े कर वारा मदेश चढ़े सर्व ही सात स्वाधित होते अहिं होते अहिं होते अहिं ही सो मतरके मदेशांकी संख्याके कृतयुग्म अने दापर युग्म क्षेयं. इति अलम्.

लोकश्रेणि				ग्रलो कश्रीरी	
	0	ऊंची	तिरछी	तिरछी	ऊंची
संख्य, असंख्य,अनंत	द्रव्यार्थे	असंख्य	असंख्य	अनंत	अनंत
सख्य, असंख्य, अनंत	7		>>	,,	"
युग्म ४		संख्य, असंख्य	कृतयुग्म	कृतयुग्म	कृतयुग्म
19 23	प्रदेशार्थे	कृतयुग्म	੪	धा३।२।१	४।३।२।१
चतुर्भगी	श्रेणि अपेक्षा		सादि सांत	श्रण अप अण् सं ३ सा अप ३	श्रग् त्रप श्रग् स स श्रप स सप ४

(८७) श्रीभगवती दशमे शते प्रथम उद्देशके दस दिग् स्वरूपयंत्रम्

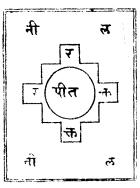
0	इन्द्रा पूर्व दिग्र	आग्ने कूण	यमा वृक्षिण		वरुणा पश्चिम	वायव्य कृण	सोमा उत्तर	ईशान क्रुण	तमा अधो	विमला ऊर्ध्व दिग्
उद्भव उत्पास	रुचकसे				प	च	म्			
संस्थान	जूया	मुक्ता- त्रल	ज़्था	सुक्ता०	ज़ूया	सुका०	ज्या	मुक्ता०	गोस्तन	गोस्तन
लोक देश	एक दशमे	बहु	ę	बहु	۶	वहु	१	बहु	ę	*
आयाम लंबी	३॥ रज्ज २॥ ,,		π	a	म्	३ रज्जु २॥ ११ ॥ ११	३॥ रज्जु २॥	३॥ रज्जु २॥ ५५ ॥ ५५	७ झझेरी	प्रदेश ऊन सात राज
द्रज्यार्थे	सर्व स्तोक १	2	ę	ę	Ŗ	?	•	ş		•
ព្រះ cation Internat	असंख्य ionह्यमी ५	अ संख्य ४	असंख्य ^५	3	असंख्य & Personal	£ .	असंख्य '	असंख्य ४	विशेष ३ ""	अ संख्य w.jainelibrary.or

(८४) लोकका स्वरूप



अथ लोकस्वरूप विचार इस २ भूमि १४ विश्लेष की घे १२ रहै। एवं १४ प्रदेशके चढे बारां प्रदेशकी हान होय है। उदाहरण यथा -आदिमे चीदा प्रदेश है। अने अंतमे २ प्रदेश है। सो चीदाका नाम भूमि 'है अने दोका नाम भूस्व 'है। सो छुख २ चवदे माहिथी कारे १६

अथ श्रीपन्नवणाजीमें १० में पदे १२ बोस्टकी अल्पबहुत्व लिस्पते—सर्वसे थोडा लोकका एकेक अचरम खंड १, लोकके चरम खंड असंस्थ गुणे, तेभ्यः अलोकके चरम खंड विशेषाधिक ४, तेभ्यः लोकके चरम मदेश असंस्थात गुणे ५, तेभ्यः अलोकके चरम प्रदेश विशेषाधिक ६, तेभ्यः लोकके अचरम प्रदेश असंस्थात गुणे ५, तेभ्यः अलोकके चरम प्रदेश विशेषाधिक ६, तेभ्यः लोकके अचरम प्रदेश असंस्थ गुणे ७, तेभ्यः अलोकके अचरम प्रदेश अनंत गुणे ८, तेभ्यः लोक अलोकके चरमाचरम प्रदेश विशेषाधिक १०, ते किम १ जीव, पुद्रल, काल अनंते अनंते हैं, इस बास्ते,तेभ्यः सर्व प्रदेश अनंत गुणे १७ (१), अवक्तव्य प्रदेश मिले लोक खल्पमें जो पीले रंग करे हैं चार खंड तिस यकी सर्व पर्याय अनंत गुणी १ प्रति प्रदेश अनंती हैं; एवं १२० इह खल्प १०।११ में बोलका केवली जाणे पिण बुद्धि समजमे आया तेसे लिख्या हैं; आगे जो बहुश्रुत कई सो सत्यः सुत्राशय अति गंभीर ई.



अथ चरमाचरम स्वरूप लिख्यते—गोल अने पीला तो लोकका अचरम खंड है. अने जे लाल रंग के आठ खंड है तिनकूं लोकके 'निखुड 'कहीये हैं तिनकूं ही लोकके 'चरम खंड 'कहीये हैं तिनके ऊपर बारां खंड नीले 'अलोकके चरम खंड 'कहीये हैं तिन बारां खंडसे परे जो अलोक है सो सर्व अलोकका एक अचरम खंड हैं इन चाराके प्रदेशांक 'चरम तथा अचरम 'कहीये हैं. एतावता चरम खंडाके सर्व 'चरम प्रदेशन् अचरम खंडके 'अचरम प्रदेश' जानने असत् कल्पना करके आठ अने बारा खंड लोकालोकके कहे हैं. परमार्थथी असरंक्य निखुड जानने असने ए जो निखुड है सार्थ हैं म

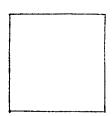
श्रीणि सर्व नदी है। तिमका यथा स्वरूक्की स्थापना-°ः, ुः ऐसा स्वरूप है ए वात श्रीअनुयोगद्दारे हैं. अने सम वी है इति अस्रम्. हिवै पुद्रस्के छन्वीस भंग्याकी स्थापना पन्नवणा जीको (श्रीमलयगिरिस्रिकृत) टीकासे है ते यथा-परमाणु - पुदूरुमें १ भंग पावें तीजा अवक्तव्य, इदं (यं) च-स्थापमा 🖸 दोप्रदेशीमें मंग २ पार्वे चरम एक, अवक्तज्य एक, इदं च स्थापना 🔯 🔯 त्रि-प्रदेशीमें भंग ४ पावें १।३।९।११. स्थापना र्लंग के र्लाग किंगू चारप्रदेशीमें भंग सात १।३।९ १०।११।१२।२३। एस्थापना लेल हैं लिंग लिंग लेंग लेंग लेंग लेंग पांचप्रदेशीमें १९ भंग स्थापना ११३१७११११०११११११३१२३१२४१२५ . लंग है। जिल्ले लंग लंग लंग लंग लंग २५।२६ एवं १५ इदं चस्थापना ाँ। ाँ ांग ांग ांग तांग तांग वांग इदं -य स्थापना ां है कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि रिक्ति विकास करिया विकास करिया विकास करिया विकास करिया के अनिकास करिया करि चस्थापना 🗓 🛅 😋 किंग केंग्र केंग्र केंग्र केंग्र केंग्र केंग्र केंग्र क्षित किंदी क्षित्र क्षिति क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र अनंतप्रदेशी पर्यत झेयम. (८६) श्री भमवतीके को हशमे शते ८ मे उहेरी श्रीमज्ञापना दशमे पदात यंत्रं द्रव्यार्थे क्षेयं प्रदेशार्थे **प्रदेशार्थे** द्रव्यार्थे 0 संख्येय गुणे असंख्येय चार दिशा अपरम अचरम चरमाणि चरम प्रदेश प्रदेश ग्रुणे २ चरमांत 4 सर्व स्तोक संख्येय असंख्य असंख्य असंख्य लोक अधो चरमांत सर्व स्तोक १ गुणे ५ गुणे २ गुणे ७ गुणे ४ विशोषा-असंख्येय विशेषा-अनंत गुणेट अलोक सर्व स्तोक ऊध्व ,, 99 गुणे ३ धिक ३ धिक ६

तदुभय

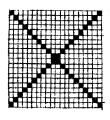
विशेषाधिक ४

विशेषाधिक ९

0



जेसे क्षुळक मतरका स्वरूप है तैसी स्थापना; जैसा एह प्रतर है जैमा ही इसके ऊपर दूजा प्रतर है इन दोनों का नाम 'क्षुळक प्रतर 'है इनके मध्यके आठ प्रदेशाकी ' रुचक ' संज्ञा है इनसे १०दिशा.



(८८) श्री भगवत्यां १० मे शते प्रथम उद्देशे, ११ मे शते दसमे उद्देशे, षोडशमे शते ८ मे उद्देशे

जीब अजीब द्रव्यम्	देश प्रदेश	चार दिग्	चार विदिग्	उज्ध्वी दिग	अधी दिग्	अधो लोक	तिर्यग् लोक	ऊर्ध्व लो ब	लोकन १प्रदे- इामे	चरमा-	लोकच	लोकच	बीस बोल-दिझा १० लोक ३ प्रदेश १, जरमांतह एवं सर्व २०
जीव	o	अनंत	٥	0	0	अनंत	अनंत	अनंत	ာ	o	0	O	^७ ब्रोलमे अनंते; १३ बोलमे शून्य .
एकेन्द्रिय	देश	ફારૂ			<u>></u> -	ए	त्र	म्				->	२० बोलमे घणे एके- न्द्रियांके घणे देश ३३
>>	प्रदेश	,,	३३	33	३३	33	33	33	३३	33	₹ ३	33	२० ब्रोलमे भंग ३।३
बेंद्री,तेइंद्री, बीरिंद्री, पंचेंद्री	देश	23	? ? ? 3 ? 3	8 9 8 3 3 3	११ १३ ३३	>>	20	23	• • • • • •	११ १३ २३	? * 00 33	88 20 33	७ जोल्डमे ३३,१० बो- लमे १९।१३।३३; बोल ३मे १९।१३
ब्रें.,ते.,ची.,पं.	प्रदेश	37	00 83 33	00 83 33	90 83 33	>>	33	73	00 83 33	00 83 83	20 83 33	00 83 33	७ बोलमे ३३, बोल १९मे १३।३३
अनिन्द्रिय	देश	77	११ १३ ३३	89 83 33	११ १३ ३३	>>	77	53	११ ०० ३३	00 83 33	33	33 33	८मे ३३ ब्रोल; ६मे १९।१३।३३; ४ मे ९३। ३३; दोने १९।१३.
77	प्रदेश	23	00 93 33	०० १३ ३३	20 83 33)) ,	23	77	88 83 33	00 83 33	23	00 83 33	८मे ३३ बोल ; १९मे १३।३३ ; १मे १९।१३।३३
<u> अजीव</u>	स्पी	ક	૪	૪	૪	૪	૪	ક	પ્ર	૪	ઝ	૪	२० मे चार
37	अस्पी	و	v	હ	६ काल विना	و	و	દ્ય	£,	Ę	٤.	Ę	१३ बोलमे ७; सान ब्रोलमे ६

जिहां ११ लिख्ये है तिहां प्रथम एकातो एक जीव परला एका देशके कांठेमे एक देश अने पदेशके कोठेमे एक पदेश तीनका अंक है जहां तिहां बहुवचन जानना. इति अलम्. (९०) भगवती शते १२मे, उद्देशक १०मे पुदूलभंग (९१) भगवती शते ८ उद्देशे १०मे पुदूलके भंग ८

• • •				(V		22
सद्भाव	eri autoro o cui Teri					?
						ર
स						ર
17	अस					१२
3 2	स					१३
अ स	27					રરૂ
33	2.1	अस				१२२
स	अस	स				११२
33	स	33				१३३
23	3)	79				११३
33	अस	77				રકુર
अस	स	अस				૨ ૨३
सं	अस्य	स				१२३
33	77	77	अस्य			११२२
37	स	רר	स			११३३
अस	33	अस	33			૨ ૨૩્૩
स	"	77	31			१२३३
23	अस	स	अस			१ २२३
>3	٠, ٦	>>	स			११२३
23	33	57	अस	स		१२२३३
33	स	अस	स	77		११२३३
>>	अस	स	अस	77		११२२३
79	77	23	स	अस	स	११२२३३
	स्सङ्ग्रा '' अस '' अस '' '' अस स '' अस स '' '' '' '' '' '' '' '' ''	'' अस '' स अस '' स अस '' अस अ अस '' अस	स्मद्भाव स्म	सद्भाव	सद्भाव	स्सद्भाव

22) de		उद्देश ३३	134/2011
१	द्रव्य		0
૨	द्रव्यहे	হা	田
3,	दब्बाइं		0 0
૪	द्ववदे	सा	
બ	द्व्यं 📲	दब्बड्स	$\circ \coprod$
Ę	द्व्वच	देखा	
૭	दब्बाइं	च दम्बदेसे य	$^{\circ}$ \oplus
૮	द्वाइं +		
	भगवती ५	मे शते उद्दे	हो ७मे भंग ९
8	देसेणं	देसं फुसड़	
વ	23	देस	田
3	77	सर्व	
ઇ	देसेहिं	देख	田
બ	23	देस	
દ્	33	सम्बं	田
ف	सब्बेणं	देसं	ш
૮	11	देसे	
९	7.3	सम्बं	Ш
		,	

(९२) भगवती उातक ५ मे उहेडो ७ स्पर्शनायन्त्रम्

			8	૨	ેર	ક	ંબ	E	৩	C	9 (
?	- परमाणु-पुद्गल	परमाणु स्यर्श	o	0	0	0	0	0	٥	٥	3/2
2	3 3 3 3 3	द्भि प्रदेशी स्कंध	0	o	3	C	0	o	. ن	0	/55
34	3) 11	तिप्र. स्पर्दी	o	0	0	0	0	0	75	6	37
8	द्विप्रदेशी स्कंध	परः स्पर्धे	0	0	3	0	0	٥	٥	0	>>
4	3 3 5 5	द्भिप्रदे. भ	ş	٥	37	٥	0	0	v	0	33
Ę	,, ,,	तिप्रदे. भ	27	ર	22	C	0	0	לנ	C	22
9	तिप्रदेशी ''	पर. भ	0	0	23	o	0	દ્	0	0	33
4	22 23	द्विप्र. ''	\$	c	23	B	0	3.3	v	0	7,7
9	53 33	ति प्रदेशी बूं	17	२	77	22	ų	53	17	٥	22

द्रब्य देश करके ८ भांगे हैं. सी परधालुमें २ पार्वे - १।२; द्विमदेशीमें भंग ५ पार्वे - १-५; क्रिमदेशीमें भंग ५ पार्वे - १-५; चार मदेशीमें भंग ८ पार्वे - १-८; एवं पांचसे लेकर अनंत -

प्रदेशीपर्यंत एही ८ भंग है.

(९३) श्रीभगवतीके (श. २५, उ. ३) मे ५ संस्थानस्वरूप तथा देशयंत्रस्थापना.

संस्थान	स्र			तर	घ	न	जुर	म
प्रदेश	ओज मुदेश	युर्म	ओजशश्राध	युग्म	ओजशश्	युग्म ।६	जुम्मे	000
परिमंडल	00	00	00	२० प्रदेश	00	^४ प्रदेश	४ क सयुग्म	000
वह	0 0	0 0	S	१२ः	પ્ર	३२	शरु।४	000
त्र्यस	0 0	0 0	વ	٠, نو	३५	Ş	२।३।४	000
चतुरस्र	00.	00	٩.	y 22	૨૭	V	१।३।४	000
आयतन	34	ર	१५	ધ્ય ::	४५	१२	शशाशा	0000

	2					1	8				3	Τ	व	ट्ट	Γ	T	ર	३	1		T	1	1	1	8	9	9	18	T	T	Π
?	3	1			?	3	8	8	Π	8	3	8		-		2	8	8	2		T			3	8	1		8	_		1
	?				8	8	3	2		ŕ	8	Ť	1-	1	1	२	४	8	2,	<u> </u>	1	1-	\vdash	3	 `	-	+-	+	18	 	╁
_	श्यं	स				8	3		1			1	1		 	+-	2	2	<u> </u>	†	+	\vdash	-	?	┼-	-	+-	+	1 8	+	├
_	र्थ					च	3	ŧ	स		1	\vdash	1	-	-	†	Ť	•	-	1	-	1-		3	१	-	\vdash	8	4		-
_	8	8				?	8	8	\	3	?	 	†	-	 	+-	 	\vdash	 	+	┼─	 	╁╌	1	3	१	3	8	+	+-	-
_	9	ŕ			-	2	2	8	 	8	5	 	 -	ļ		†-	一	╁	+-	†-	+-	┢	-	-	١,	 	1	+	+-	1	-
			┢			3	5	8	_	\	Τ,	1	†	-	 	+	\vdash	╁╴	 	 	+	-	\vdash	 	 		-	\vdash	╁	 	-
	9	9	8			<u> </u>	1		-	-	 	-	 	 	-	1	-	\vdash	TT	B	मं	7	=	 	\vdash	-	\vdash	 	\vdash		
_	9	8	r <u>.</u>	М		_	3	3	3		2	2	1	-		+-	\vdash	 	1	1 <u>7</u> 7	╁╌	*	<u> </u>	<u> </u>	-	 	-	+-	+	-	Н
	8	<u> </u>				-	3	3	3	-	2	2	 		-	-	 	 	+	-	†-	-	 	-	-		-	\vdash	-	-	
_	۲	Г				\vdash	3	3	3		Ť	Ť	 		<u> </u>	+	-	 		-	\vdash	-	\vdash	ર	2	2	ર	\vdash	\vdash	-	
	प	ए	3	ર	8	-	Ť	<u> </u>	,	\vdash	-	-	-		 	-	-	1	+	-	-	-	2	ર	 	Ť	ر	2	-	-	_
	8	3	2	?		-	आ	य	त	न	-		<u> </u>			-	 		-	_		-	2	├-			È	2	†		
	3	2	8	Ė		?	2	5	· · · ·	8	१	2	 		٦,	٤,	٦,	-	-	-	 -	-	3	-	-	-	\vdash	2	1	-	-
7	<u>२</u>	2	1		-	宀	<u> </u>	Η.		8	2	6	-	-	2	2	ر	-	 			├-	3,	ર	-	-	२	2	+-	-	┝╌
_	8	-					9	8		١,	1	7			-	+	Ļ	-	\vdash	-	-		Ť	2	ર	2	2	+	+	-	-
	•		-		<u> </u>	一	7	Η.		-	-	-	-	-		-		-	├		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	ર	8	-		-	\vdash	-	-	8	१	8	१	9	_	-	3	3	3	3	3		-	┢╌	-	-	-	-	-	├-	├-	-
-	8	-	-		-	-		-	5	8	5	8	5	-	_	3	3	3	3	3	-	-	-	-				-	-	-	
-	,		-		-	-		 	8	8	8	8	8		-	3	3	3	3	3				-			-	-	-	├	
-	Н			-		├	-	-	-	1	1	7)	\dashv	L	1	3	3	13	-	\vdash	-							\vdash		L
_	ę		5	 	૨	 	ર	┝一	3		-	-				Н		-					-					=	7	वा	7
٦						\vdash		070			-			-		Н		H	4		\vdash		-	27			-	4			-
٦				<i>(1111</i>	44	-				 	-	-				\vdash		Н		-	Н		_	444	///_		H	H			
۲	#	\vdash		-	-	\vdash				 	-	-				જ		-			0/0						\vdash				
-		-		┢	-	\vdash		-	-					\dashv		3	600						1111		-	T.	\vdash				
٦		\vdash	经	-		\vdash		\vdash	-	-	 —		<u>ي</u>	-		-				v							$\vdash \vdash$				WB
4			12 IC	\vdash		\vdash		-	-	-	-	\vdash			6		\mathscr{H}		-	5						70			अ	<i>''</i>	
4		H			\vdash	\vdash	U	 	-	ર					\$ 2777	772			-	L									জ গায়	ધ	=
4	能包	Н		_	-	\vdash		<u> </u>	_	Н			Щ								4									110	च ४
4							TO ME	<u> </u>	\vdash			-	3		万万克	\sqcup		ર			TO A			an							
4					100								-	_	\mathbb{Z}_{4}			_			4							777			वा
لي		170						3	(i)	S	20	2			Ŧ						3		_							ल.	isiin.

ऋजुगित में एक समय पर भव जातां लागे, अनाहारिक नास्ति. एक वक्रमें दो समय लागे; प्रथम समय अनाहारिक, द्जे समये आहार लेवे. दिवक्रमें तीन समय लागे; प्रथम तीन समय अनाहारी, तीजे समये आहार लेवे. तीन वक्रमें चार समय लागे, प्रथम तीन समय अनाहारी, वांथे समय आहार लेवे. चार वंकामें पांच समय लागे, प्रथम चार समय अनाहारी, पांच मे समये आहार लेवे. श्रीभगवतीजी (स.) मे तो तीन समय अनाहारिक कह्या है तो चार समय कैसें ह्ये तिसका उत्तर—श्रीभगवतीजीमें बहुलताहकी विवक्षा करके तीन समय कहे हैं. अल्पताकी विवक्षा नहीं करी, कदे कदे इक चार समय अनाहारिक होता है. कोई कहें जो पांच समयकी गति न मानीये तो क्या काम अटके हैं तिसका उत्तर—प्रथम तो पूर्वाचार्योंने पांच समयकी गति मानी है, श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण आदि देई सर्व वृत्तिकारोंने मानी है, इस वास्ते सल्य है. तथा सातमी नारकीके स्थावरनाडीकें क्रणेवाला जीव मरीने 'ब्रह्मदेव' लोककी स्थावर नाडीके क्रणे मे उपजणहार पांच समयकी विग्रह विना उपज नहीं सकता, एह विचार सक्ष्म बुद्धिसे विचार लेना. इस विना काम अटके हैं. इसकी साख भगवती-की वृत्तिमें तथा पन्नवणाकी वृत्तिमें वा (बृहत्)संघयणी (गा. ३२५–३२६)में हैं.

(८९) श्रीभगवती शते १३मे चतुर्थ उद्देशके प्रदेशांकी परस्परस्पर्शनायंत्रम्

							•		•				
	1	0		धा	र्गास्तिव	कायके	अध	र्मास्ति	कायके	आका- शास्ति- कायके	जीवके	पुद्रलके	कालके
धर्मारि	त्तकाय	का ए	क प्रदेश	श ३।	अ५।६ स्पर्वे	प्रदेश- ी		કા પા દા	હ	v	अनंते	अनंते	अनंते
अधर्म	स्तिक	ायका	",	,	કા પા દ	्।७		રાઇાપ	ફ	"	,,	,,	,,,
आका	शास्ति	कायव	π,,,	, शः	રારાષ્ટા	पा ६।७	१।२	ારાષ્ટા	।६।७	Ę	53,		57
	जीवक	T	73 3	,	કા પાદ	्।७		કા પાદ	७	७	33	33	"
	परमा	णुपुद्गल			કા પા દ	શ		કાષાદ	10	- 35	/ 55	55	55
१	२	३	8	4	६	७	۷	९	१०		पुद्रलपद् ज्ञेयम्		
8	६	6	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	जघन्य पद			
9	१२	१७	२२	२७	32	30	४२	८७	५२	उत्कृष्ट ,,			

चूर्णिकारे नयमते करी एक अवग्रही प्रदेशना दोय गिन्या है अने टीकाकारे माणु करी व्याख्यान कर्या है, इति रहस्यं पुद्गलकी स्पर्शनामे, परमाणु जवन्य क्ष्म अधर्मके स्पर्शे, तिनका स्रह्म पीछे लिख्या ही है; अने दोय प्रदेशी आदिक स्

⁹ प्रंथकारे १२४ मा पृष्ठनी पछी आनी योजना करी छे, परंतु छपावती वेळा ए पृष्ठमां समावेः आ यंत्र अहीं आपेळ छे.

स्पर्शनामे दो दो प्रदेश बधा लेने अने उत्कृष्टी स्पर्शनामे पांच पांच प्रदेशानी सर्वत्र युद्धि जान लेनी. इति अलं विस्तरेण.

(९४) भगवती २१० २५, उ० ४ (सू० ७४०) परमाणु द्विपदेशादि १३ बोलाकी

					প্	. पष्ट	त्पप	त्रभ्					
द्रव्य• यंत्रम् १	परमाणु १	द्विप्र- देशी २	त्रिप्र- देशी ३	शी ४		६प्रदे- शी ६ स्कंध		८ प्रदे शी ८	ें हेडी	१० प्र देशी १०	संख्यात प्रदेशी ११	अ- संख्यात प्रदेशी १२	अनंत- प्रदे- शी १३
द्रव्यार्थे	११ वि	१० वि	९ वि	८ वि	<u>७</u> वि	क् वि	<u>५</u> वि	੪ ਬਿ	३ वि	२ अनंत गुणा		१३ असंख्य गुणा	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	२ अनंत गुणा	व	ध वि	<i>५</i> वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० वि	१ १ वि	१२ वि	१३ असंख्य गुणा	१ स्तोक
क्षेत्र- यंत्रम् २	एक प्रदे शाव- गाढा १	२ प्र. गा. ३२	३ प्र. गा. ४३	४ प्रदे वग ४	शा- हा ग				८ प्र. ९ ॥. ८ ग	. Я. ∣	० प्र. संख्य गाः प्र. १ १० १	गा. प्रदे	संख्य- रशाव- डा १२
द्रव्यार्थे	१० वि	९ वि	८ वि	ভ		६ वि	५ वि	४ वि	३ वि	२ वि	सर्व १ से संख् तोक गु		१२ तंख्येय रुणा
प्रदेशार्थे	१ स्तो	२ वि	३ वि	अ वि	1	५ वि	६ वि	७ वि	८ वि	९ वि	१० १ वि संख्य	१ यात अस	१२ तंख्यात
	्क समय	स्थि	तेक ३	गादि	१२ बं	ोलका	यंत्र	ना क्षे	त्रवत्	निर्वि	शेष ॥ भ	वियंत्र ए	क गुण

्र समय स्थितिक आदि १२ बोलका यंत्रना क्षेत्रवत् निर्विशेष ॥ भावयंत्र एक गुण निर्ण आदि यावत् अनंत गुण १३ बोल. वर्णना ५, गंध २, रस ५, शीत स्पर्श १, उष्ण र, स्निग्ध ३, छ(रू)क्ष ४, एवं १६ बोलमेथे एकेक बोलना तेरां तेरां बोल करके द्रव्य

-		<u> </u>	जा	१ एग	l+				<u>''</u>	17)						
		_ 3	प्ट	ह गुण		مركب										•
		_			1832	्रीयु-	८ ग्र-	५ गुः	६ गु-	७ गु-	८ गुः	९ गु	१० गु-	संख्येय	असंख्य	
-		-		भादि	पार	A. 3	ण ४	ण५	ण६	ण ७	ण८	ण९	ण रु०	ग्रुण ११	गुण १२	१३
-								<u> </u>								
-		H		—' —	वि	वि	े वि	वि	धिव	७ वि	वि	र वि	१० सं.	<i>११</i> असं.	४२ असं.	४२ बहु
1	I		南		२	3	ध	- Cq	६	9	9	१०	88	१२	83	१३
					वि	वि	वि	वि	वि	वि	वि	वि	बहु	बहु	बहु	बहु

(९६) भगवती शतक २५, उ. ४ सू. ७४१

द्रव्य	परमाणु १	संख्यातप्रदेशी २	असंख्यातप्रदेशी ३	अनंतप्रदेशी ध
द्रव्यार्थे	२ अनंत गुणा	३ संख्यात गुण	४ संख्येय गुण	१ स्तोक
प्रदेशार्थे	,, ,, ,,	,, संख्येय ,,	" असंख्येय "	11 11
द्रव्यार्थे	₹ ,,	४ संख्यात "	६ असंख्यात	77 77
प्रदेशार्थे	0	د و ,, ,,	9 ,,	अनंत २

क्षेत्रयंत्र	एकप्रदेशावगाढा १	संख्यातप्रदेशावगाढा २	असंख्यप्रदेशावगाढा ३
द्रव्यार्थे	१ स्तोक	२ संख्येय गुणा	३ असंख्येय गुणा
प्रदेशार्थे	,, ,,	,, ,, ,,	99 99 99
द्रव्यार्थे	,, ,,	>> >> >>	8 ,, ,,
प्रदेशार्थे	0	3 ,, ,,	٠, ,,

क्षेत्रयंत्रवत् कालयंत्र कालयंत्रमे एक समय स्थिति आदि कहनी.

भाव एक गुण कर्कश आदि ४	१ गुण	संख्येय गुण	असंख्येय गुण	अनंत गुण
द्रव्यार्थे	,, स्तोक	२ संख्येय	३ असंख्येय	४ अनंत
प्रदेशार्थे	37 37	,, असंख्येय	75 75	55 55
द्रव्यार्थे))	" [अ]संख्येय	૪ ,,	ξ ,,
प्रदेशार्थे	0	રૂ ,,	٤٩ ,,	৩ ,,

सोले बोलना यंत्र परमाणु आदिवत् जान लेना द्रव्यवत्.

(९७) परमाणु आदि अनंतप्रदेशी स्कंघ चल अचल स्थिति भगवती (श० २५, उ० ४, सू. ७४४)

	जघन्य	स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
चल (सैज) एकवचने	१	समय	आवितके असंख्यातमे भाग
अचल (निरेज) "	,,,	55	असंख्याता काल

(९८) अंतरयंत्रं भग० सू. ७४४

		परमाणु	द्विप्रदेश आहि	(-अनंत प्रदेश पर्यंत	
	ज	घन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
चल	खस्थाने	१ समय	असंख्य काल	१ समय	असंख्यात काल
एकवचने	परस्थाने	33 33	"	77 77	अनंत ,,
अचल एकवचने	स्रशान	"	आविल असंख्य भाग	" "	आविल असंख्य भाग
	परस्थान	57 39	असंख्य काल	55 55	अनंत काल
	ਚ ਲ	नास्ति अंतरं	नित्थ	नित्थ	नित्थ
बहुवचने	अचल	55 55	7	गस्ति अंतरं स	वित्र
अंतर समुचये	१ समय	असंख्य काल	असंख्य काल	१ समय	उत्क्रष्ट असंख्य काल

(९९) कालमान स्थितिमान यंत्रम् भग० श. २५, उ. ४ (सू. ७४४)

		प	मा णु	द्विप्रदेशादि-स	भनंत प्रदेशी पर्यन्त
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
	देशैज	•	o	१ समय	आवितिके असं- ख्यमे भाग
एकवचने	सर्वेज	१ समय	आवितके असं- ख्यमे भाग	" "	11 11 11
	निरेज	99 99	असंख्य काल	,, ,,	असंख्य काल
बंहुवचने	देशैज	0	सर्वाद्धा		सर्वाद्धा

(१००) अंतर मानका यंत्र (भग० सू. ७४४)

		पर	माणु	द्विप्रदेशादि-अ	ानंत प्रदेशी (पर्यन्त)		
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट		
2.0	खस्थाने	0	0	१ समय	असंख्य काल		
देशैज	परस्थाने	•	0	55 55	अनंत ,,		
 सर्वेज	खस्थाने	१ समय	असंख्य काल	17 17	असंख्य "		
सपज	परस्थाने	", ",	35 35	53 33	अनंत "		
			सर्वाद्धा		सर्वाद्धा		

१ परमाणुपुद्रलो तेमज द्विप्रदेशादि स्कंघो सर्व अंशे सदा काल कंपे तेमज सदा काल निष्कंप रहे।

(१०१) भगवती (श. २५, उ. ४, सू. ७४४, पू. ८८५)

	0	परमाणु १	संख्यात प्रदेश	२ असंख्य प्रदेश ३	अनंत प्रदेश ४
<u> </u>	देशैजा	0	७ असंख्य	८ असंख्य	३ अनंत
<u>व्या</u>	सर्वेजा	६ असंख्य	٤,,,	४ अनंत (? असं.)	१ स्तोक
ર્થે	निरेजा	۹ "	१० ,,	११ असंख्य	२ अनंत गुणा
प्र	देशैज	•	Ę "	· ,,	₹ "
<u>चे</u>	सर्वेज	0	۲, ,,	૪ ,,	१ स्तोक
शा र्थे	निरेज	o	٠,,	۹ ,,	२ अनंत
द्र	देशैज	0	१२ "	१४ ,,	۴ ,,
व्या	सर्वेज	११ असंख्य	۹ ,,	७ अनंत	१ स्तोक
र्थ	निरेज	१६ ,,	१७ संख्यात	१९ असंख्य	३ अनंत
प्र दे	देशैज	0	१३ ,,	१५ ,,	ξ "
शा	सर्वेज	0	રે૦ ,,	۷ ,,	٦ ,,
र्थ	निरेज	0	१८ ,,	२० ,,	પ્ર ,,

(१०२) परमाणुपुद्गल सैज निरेज (अल्पबहुत्व) भग० श. २५, उ. ४ (सू. ७४४)

अल्पबहुत्व	परमाणु यावत् असंख्य- प्रदेशी स्कंघ	अनंतप्रदेशी स्कंघ
चला	१ स्तोक	१ स्तोक (?)
अचला	२ असंख्य गुण	२ अनंत गुणा (?)

(१०३) अल्पबहुत्व

	अल्पबहुत्व	परमाणु	संख्यात	प्रदेशी	असंख्या	तप्रदेशी	अनं	तप्रदेशी
	सैजा	३ अनंत गुण	४ असंख	य गुणा	५ अस	र् ख्यात	२ अ	नंत गुण
द्रव्यार्थे	निरेजा	६ असंख्य	७ संग	ख्य ,,	6	95	१	स्तोक
22_2	सैजा	अप्रदेश०	३ असं	ख्य ,,	ध	"	२ अ	तं गुणा
प्रदेशार्थे	निरेजा		५	77	६	55	१	स्तोक
~~~~	सैजा	५ अनंत	ફ	"	6	>5	3	अनंत
द्रव्यार्थे	निरेजा	१० असंख्य	११	"	१३	,,	१	स्तोक
2	सैजा	0	७	,,	९	95	૪	अनंत
प्रदेशार्थे	निरेजा	0	१२	,,	१४	,,	२	55

१ भा संबंधी उल्लेख विचारणीय जणाय छ ।

(808)

परमाणु संख्येय प्रदेश असंख्येय प्रदेश अनंत प्रदेशी से(सि)या चल निरेया अचल अल्पबहत्त्व.

परिणाम	जीव	मूर्त्त	सप्रदेश	एक	अक्षेत्री	किरिया	नित्य	कारण	कर्ता	सर्वगत
२ मेद	१	१	પ	3	४ (५?)	२	૪	· ·	१	१
पुद्रल	जीव १ एक जीव १	मूर्त्तवंत पुद्रल १	धर्म, अधर्म, आकारा, जीव, पुद्गल	धर्म, अधर्म, आकाश	धर्म, अधर्म, पुद्रल, जीव, काल	जीव १, पुद्रल २ प क्रिया चंत	काल,	धर्म, अधर्म, आकारा, काल, पुद्रल	एक जीव कर्ता	आकाश १
ध अपरि- णाम	अजीव ५	अमूर्त ५	अप्र- देशी १	अनेक ३	क्षेत्री १	अकि रिया ४	अनित्य २	अकारण १	अकर्ता ५	असर्व- गत ५
धर्म,	धर्म,	धर्म,	काल-	पुद्रल १,	एक	धर्म,	जीव १,	जीव	धर्म,	धर्म,
अधर्म,	अधर्म,	अधर्म,	द्रव्य		आकाश-	अधर्म,	पुद्रल-	एक	अधर्म,	अधर्म,
आकारा,	आका-	आकाश,	१	जीव ३;	द्रव्य		पर्याय २;	अकारण	आकाश,	जीव,
काल ए;	হা,	काल,		ए अनेक					काल,	काल,
४ अपरि- णामी	काल, पुद्रल	जीव ए ५				૪	अपेक्षया		पुद्गल	पुद्रल

'पैरिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एग ५ खित्त ६ किरिया ७ य ।

निचं ८ कारण ९ कत्ता १०, सन्वगय ११ इयर हि यपएसा ॥ १ ॥

दुन्नि २ य एगं १ एगं १, पंच ५ ति ३ पंच ५ ति ३ पंच ५ दुन्नि २ चउरो ४ य ।

पंच ५ य एगं १ एगं १, दस १० एय उत्तरगुणं २ च ४ ॥ २ ॥

पण ५ पण ५ इग १ य तिन्नि ३ य, एग १ चउरो ४ दुन्नि २ एक १ पण ५ पणगं ५ ।

परिणामेयरभेया, बोद्धन्वा सुद्धचुद्धि ॥ ३ ॥"

(१०५) भगवती ( ज्ञा. २५, उ. ४ )

युग्म	धर्म	अधर्म	आकाश	जीव	पुद्रल	काल
द्रव्यार्थे	ş	१	१	ય	કાર રા <b>ર</b>	ક
प्रदेशार्थे	४	४	8	55	४	0
प्रदेशावगाढ	"	17	"	,,	93	o
समयस्थिति	"	"	13	"	75	0

१ परिणामजीवमूर्ताः सप्रदेशा एकक्षेत्रिकयाश्व । नित्यं कारणं कर्ता, सर्वगत इतरे हि चाप्रदेशाः ॥ १ ॥ दे च एकं एकं पच त्रि पच त्रि, पञ्च दे चलारि च । पञ्च च एकं एकं दश एते उत्तरगुणाश्व ॥ २ ॥ पञ्च पञ्च एकं त्रीणि च एकं चलारि दे एकं पञ्च पञ्च । परिणामेतरमेदा बोद्धन्याः ग्रद्धबुद्धिभिः ॥ ३ ॥

	युग्म	धर्म	अधर्म	आकारा	जीव	पुद्रल	काल
अ ल्प ब	द्रव्यार्थे	१	१	१	३ अनंत गुण	५ अनंत गुण	७ अनंत गुण
हु त्व	प्रदेशार्थे	२ असंख्य	२ असंख्य	८ अनंत	४ असंख्य	६ असंख्य	0

#### (१०६)

१	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय ३	द्रव्यार्थ	स्तोक
२	धर्मास्तिकाय, अधर्मास्ति- काय २	पएस (प्रदेश)	असंख्य
<b>ર</b>	जीवास्तिकाय १	द्रव्यार्थ	अनंत
ઇ	,, ,,	पएस	असंख्य
4	पुद्गलास्तिकाय ,,	द्रव्यार्थ	अनंत
Ĝ	3, 3,	पएस	असंख्य
૭	काल	द्रव्यार्थ	अनंत
-	आकाशास्तिकाय १	प्रदेश	55

#### अथ कालकी अल्पबहुत्व ६२ बोला

(१) सर्वसें स्तोक समयनो काल, (२) आविलनो काल असंख्य गुण, (३) जघन्य अंतध्रहूर्त १ समय अधिक, (४) जघन्य आयुवंधकाल संख्येय गुण, (५) उत्कृष्ट आयुवंधकाल
संख्येय गुण, (६) जघन्य अपर्यायी एकेन्द्रिय न संख्येय, (७) उत्कृष्ट अपर्याप्त एकेन्द्रियनो
विशेष, (८) पर्याप्त एकेन्द्रियनो जघन्य काल विशेष, (९) पर्याप्त निगोद उत्कृष्ट विशेष अधिक,
(१०) उत्कृष्ट त्रसकायविरह सं०, (११) जघन्य अपर्याप्त वेहंद्रीनो विशेष०, (१२) उत्कृष्ट अपर्याप्त वेहंद्रीनो विशेष०, (१४) जघन्य तेहंद्री अपर्याप्त
काल विशेष०, (१५) उत्कृष्ट अपर्याप्त तेहंद्रीनो विशेष०, (१६) जघन्य पर्याप्त तेहंद्रीनो विशेष०,
(१७) उत्कृष्ट पर्याप्त चौरिंद्रीनो विशेष०,(१८) उत्कृष्ट अपर्याप्त चौरिंद्री विशेष०, (१९) जघन्य
पर्याप्त चौरिंद्री विशेष०, (२०) जघन्य अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२०) जघन्य पर्याप्त पंचेंद्रीनो विशेष०, (२१) उत्कृष्ट अपर्याप्त पंचेंद्रीनो काल संख्येय, (२४) महर्तनो काल समय १ अधिक विशेष०, (२५) अहोरात्रनो काल संख्येय गुण, (२८) मासनो काल संख्येय गुण, (२९) तेहंद्रीनी उत्कृष्ट स्थिति विशेष०, (२०) ऋतुनो काल विशेष०, (३१) आयन वा चौरिंद्री उत्कृष्ट स्थिति सं०, (३२) वर्षनो काल संख्येय गुण, (३३) युगनो काल संख्येय

गुण, (३४) बेइंद्री उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३५) वायुकाय उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३६) अप्काय उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३७) वनस्पति उत्कृष्ट या देव, नरक जयन्य वि०, (३८) पृथ्वीकाय उत्कृष्ट स्थिति संख्येय, (३९) उद्घार पल्यनो असंख्य भाग संख्येय, (४०) उद्घार पल्यनो काल असंख्य गुण, (४१) उद्घार सागरनो काल संख्येय, (४२) जयन्य अद्धा पल्यका असंख्य भाग असंख्य, (४३) अद्धा पल्यका असंख्य भाग असंख्य, (४३) अद्धा पल्यका असंख्य भाग असंख्य, (४६) अद्धा पल्यको काल असंख्य गुण, (४५) उत्कृष्ट मनुष्यनी कायस्थिति संख्येय, (४६) अद्धा-सागरनो काल संख्येय, (४७) उत्कृष्ट देव-नारक-स्थिति संख्येय, (४८) अवसर्पिणी उत्स-पिणी काल सं०, (४९) क्षेत्र पल्यनो काल असंख्य गुण, (५०) क्षेत्रसागरनो काल संख्येय गुण, (५१) तेउनी उत्कृष्ट कायस्थिति असंख्य, (५२) वायुनी उत्कृष्ट कायस्थिति विशेष०, (५५) कार्मण गुद्रलपरावर्तन अनंत गुण, (५६) तेजस गुद्रल परावर्तन अनंत गुण, (५०) औदारिक गुद्रल परावर्तन अनंत, (५८) अतात अद्धा अनंत गुण, (६०) वनस्पतिनी उत्कृष्ट कायस्थिति असंख्य, (६१) अतीत अद्धा अनंत गुण, (६२) अनागत अद्धा विशेष अधिक.

### (१०७) द्रव्य ६; गुण चार २ एकेकना नित्य है

धर्म	अरूपी	१	अचेतन	ર	अक्रिया	રૂ	गतिसहाय ध
अधर्म	55	,,	53	55	77	"	श्थितिस्त्रभाव ,
आकाश	35	39	37	15	33	77	अवगाहदान ,
काल	33	,,	"	"	,,	"	वर्तमान व जीर्ण,
पुद्रल	रूपी	77	77	"	सिक्रिय	77	पूरण-गलन ,
जीव	अनंत ज्ञा	न ,,	अनंत दः	र्शन ,,	अनंत चारित्र	₹,,	अनंत वीर्य ,

### (१०८) पर्याय षट् द्रव्यना चार चार

धर्म १	स्कंध नित्य	देश अनित्य	प्रदेश अनित्य	अगुरुलघु		
अधर्म २	33 33	", "	,, ,,	79		
आकाश ३	55 51	,, ,,	" "	<b>9</b> 9		
काल ४	अतीत	अनागत	वर्तमान	99		
पुद्रल	वर्ण	गन्ध	रस	स्पर्श		
जीव	गुरु	लघु	अगुरुलघु	अव्याबाध		

पुद्रलका वर्ण आदि, धर्म अगुरुलघु पर्याय.

#### (१०९) पुद्गलयंत्रं भगवती ( श० २०, उ. ४)

	वर्ण	गन्ध	रस	स्पर्श	संस्थान	भंग
परमाणु	4	ર	4	8	१	२००
२ प्रदेश	१५	३	१५	९	२	
ર ,,	४५	4	४५	२५	३	
૪ "	९०	Ę	९०	३६	ध	
۲,,	१४१	95	१४१	"	4	
ε,,	१८६	95	१८६	६	>>	
৩ ,,	२१६	55	२१६	77	***	
۷ ,,	२३१	3,5	२३१	59	***	
۹,,	२३६	35	२३६	33	35	
१० ,,	२३७	55	२३७	11	55	
२० ,,	,,	***	55	7,7	६	

#### (११०) भगवती राते ८ उद्देशे १ मे पुद्गलयंत्र

पुद्रल	प्रयोगपरिणत	मीसा (मिश्र)	विस्नसा
अस्पबहुत्व	१ स्तोक	२ अनंत गुणा	३ अनंत गुणा

जीवे ग्रह्मा 'श्रयोग,' सा जीवने तज्या परिणामांतरे परिणम्या नही ते 'मीसा,' खभावे परिणम्या अभवत् ते 'विस्नसा;' एवम् ३.

नरक ७, भवनपति १०, व्यंतर ८, ज्योतिषी ५, देवलोक २६, स्रक्ष्म ५, स्थावर बादर ५, बेइंद्री १, तेइंद्री १, चौरिंद्री १, असंज्ञी पंचेंद्री ५, संज्ञी पंचेंद्री तिर्येच ५, असंज्ञी मनुष्य १, संज्ञी मनुष्य १, एवं सर्व ८१, ए प्रथम दंडक. इनकूं अपर्याप्तसे गुण्या ८१, पर्याप्त अपर्याप्त १६१, ज्ञरीरसे गुण्या ४९१, जीवेंद्रीसे गुण्या ७१३, ज्ञरीरेंद्रीसे गुण्या २१७५. १६१ कूं पांच वर्ण, पांच गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, पांच संस्थानसे गुण्या ४०२५, ४९१. कूं इन पचीससे गुण्या ११६३१ (१२२७५ १), ७१३ कूं इन वर्ण आदि २५ से गुण्या १७८२५, २१७५ कूं इन २५ से गुण्या ५१५२३ (५४३७५ १).

#### इति आत्मरामसंकलता(ना?)यां अजीवतत्त्वं द्वितीयं संपूर्ण ।।



### अई नमः॥ अथ 'पुण्य' तत्त्व लिख्यते—

नव प्रकारे बांघे पुण्य, ४२ प्रकारे भोगवे. सातावेदनीय १, देव २, मनुष्य ३ तिर्यंचना आयु ४, देवगति ५, मनुष्यगति ६, पंचेन्द्रिय ७, औदारीक ८, वैक्रिय ९, आहारक १०, तैजस ११, कार्मण शरीर १२, तीन अंगोपांग १५, वज्रक्रपभनाराच संहनन १६, समचतु-रस्न संस्थान १७, शुभ वर्ण १८, गंध १९, रस २०, स्पर्श २१, देव-आनुपूर्वी २२, मनुष्य-आनुपूर्वी २३, प्रशस्त खगति २४, पराघात २५, उच्छ्वास २६, आतप २७, उद्योत २८, अगुरुलघु २९, तीर्थंकर ३०, निर्माण ३१, त्रस ३२, बादर ३३, पर्याप्त ३४, प्रत्येक ३५, स्थिर ३६, शुभ ३७, सौभाग्य (सुभग) ३८, सुखर ३९, आदेय ४०, यशकीर्ति ४१, उच्चेशित्र ४२; ए प्रकारे पुण्य भोगवे.

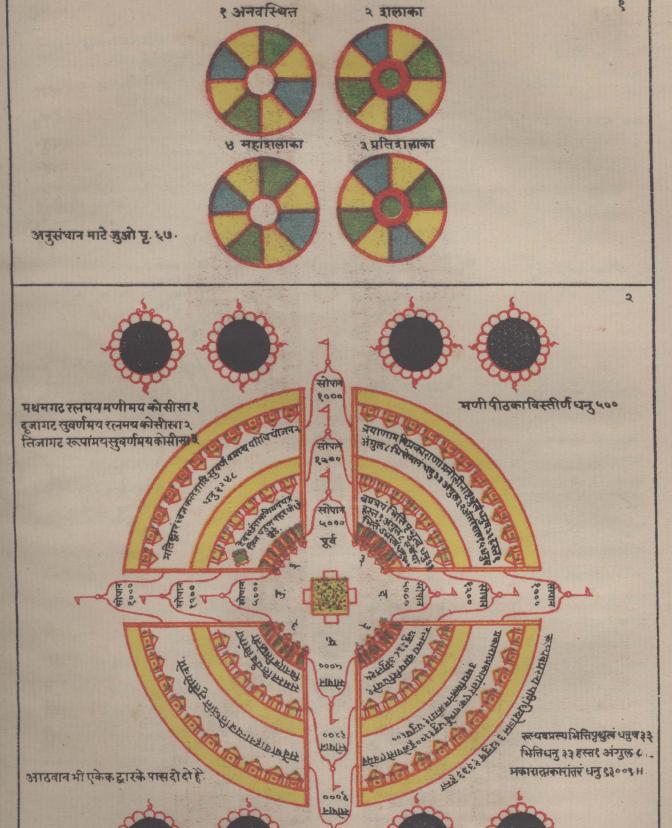
अथ उत्कृष्ट पुण्य प्रकृतिवान् तीर्थंकर महाराजका समवसरणखरूप लिख्यते—
''ग्रंणि वेमाणिया देवि साहुणि ठंति अग्गिकोणंमि ।
जोइसिय भवण विंतर देवीओ हुंति नेरईए ॥ १ ॥
भवणवणजोइदेवा वायन्वे कप्पवासिणो अमरा ।
नरनारीओ ईसाणे पुन्वाइसु पविसिउं ठंति ॥ २ ॥

द्वादश परिषत् नाम-

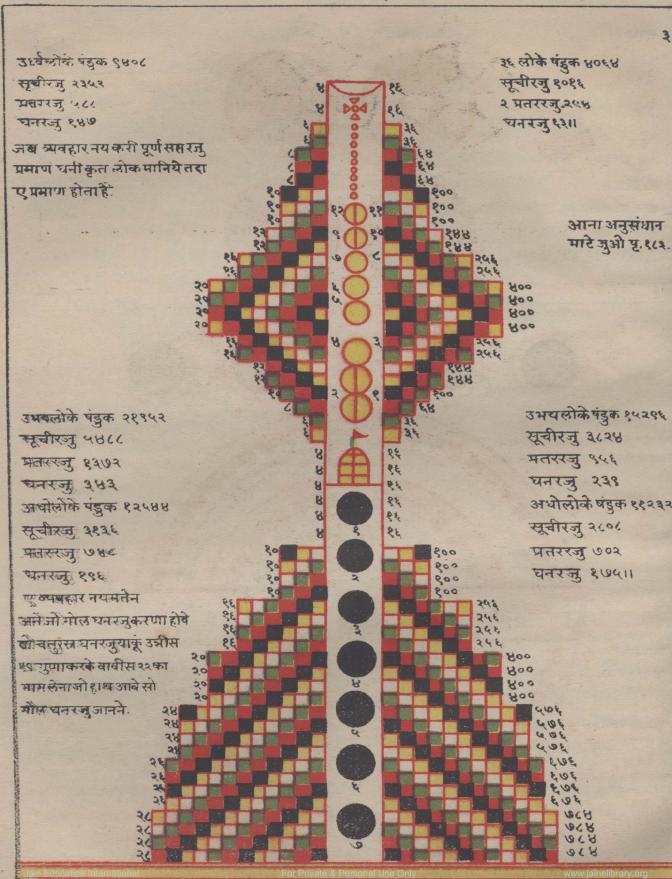
''उसमस्स तिनि गाऊ बत्तीस धनुणि बद्धमाणस्स ।
सेसजिणाण असोगो देहाउ दुवालसगुणो य ॥ १ ॥
किंकिछि कुसुमगुद्धी दिव्वजुणि चामरासणाई ।
भामंडल य छत्त भेरी जिणिंद (१ जयंति) जिणपाडिहेराई ॥ २ ॥
दप्पण भद्दासण बद्धमाण वरकलस मच्छ सिरिवच्छा ।
सत्थिय नंदावत्तो विविहा अट्ट मंगछा ॥ ३ ॥

समवसरण अढाइ कोस घरतीसे ऊंचा जानना अंबरे। मध्यमे मणीपीठको [के] उपिर आसन चार है. तीन चारो ही सिंहासनाके उपिर अशोक बक्ष छाया करता है. पूर्वके सिंहा-सन उपर तीर्थंकर त्रैलोक्यपूज्य परम देव विराजमान होय है. अने अन्य सिंहासन तीन उपिर भगवान् सरीपे(खे) तीन रूप व्यंतर देवता बनाय कर खापन करते हैं. सो भगवान्की अतिशय करी भगवान् सदश दिखलाइ देते हे. ऐसा मालूम होवे हैं जानो एह भगवान् ही

⁹ मुनयो वैमानिका देव्यः साध्व्यस्तिष्ठन्ति अग्निकोणे । ज्योतिष्कभवन( पति )व्यन्तरदेव्या भवन्ति नैऋषे ॥ भवनवनज्योतिर्देवा वायव्ये कल्पवासिनोऽमराः । नरनार्य ईशाने पूर्वादिषु प्रविद्य तिष्ठन्ति ॥ ऋषभस्य त्रीणि गव्यूतानि द्वात्रिंशद् धन्ंषि वर्धमानस्य । शेषजिनानामशोको देहाद् द्वादशगुणश्च ॥ कद्केश्लः कुसुमृष्टिर्दिव्यथ्वनिश्वामरासनानि । भामण्डलं च छत्रं भेरी जिनेन्द्र ! जिनप्रातिहार्याणे ॥ दर्पणो भद्रासनं वर्षमानं वर्कलशं मत्स्यः श्रीवत्सः । खिस्तिको नन्यावर्तो विविधानि खळु मङ्गलानि ॥



अनुसंधानमारे जुओ पृ.९३६.



उपदेश देते है. हे नाथ! मेरी एह प्रार्थना है जो सच्छच आपका समवसरण देखूं भक्ति संयुक्त पदपंकज स्पर्श्स मैसकेन. (१११) (चक्री आदि संबंधी माहिती)

. •														
चकी- नाम	पिता- नाम	माता [.] नाम	कुमा- र- काल	मंड- लिक- काल	विज- येसा	षट्र- खंड- राज्य	***	पूर्व- जन्म नाम	पूर्व जन्म नगरी	आग- ति आया	गति गया	आयु	अव- गाह	नगरी- नाम
१ भरत	ऋषभदेव	सुमं- गला	पूर्व ७७ लाख	वर्ष १०००	६० हजार वर्ष	पूर्व ६ लाख	पूर्व १ लाख	पीठ- नी	पुंड- री- किणी	सर्वा र्थ- सिद्ध	मोक्ष	पूर्व ८४ लक्ष	५०० घनु	विनी- ता
२ सगर	सुमति राजा	यश- चती	पूर्व ५०० सहस्र	वर्ष ५० हजार	३० हजार वर्ष	वर्ष ७० लाख	पूर्व १ लाख	विज- य- राजा	पृ- ध्वी- पुर	विज- य वि [.] मान	95	पूर्व ७२ लक्ष	४५० घनु	अयो ध्या
३ मध- वा	समुद्र- विजय	सुंभ- द्रा	चर्ष २२ लाख ५० हजार	हजार	हजार	वर्ष ३ लाख ९० हजार	३ लाख	ही- शिभ राट्ट	पुंड- री- किणी	ग्रैवेय- क	देव- लोक ३	वर्ष ५ लाख	४२ धनु	श्राव- स्ती
४ सन- त्- कुमार	अश्वसेन राट्	सह- देवी	वर्ष ५० हजार	"	१ हजार वर्ष		वर्ष १० हजार	ाराजा	महा- पुरी	महे- न्द्र ४	,,,	वर्ष ३ लाख	धर् धनु	हस्ति नापुर
५ शां- ति- नाथ	विश्वसेन राट्ट	अचि [.] रा	44	वर्ष २५ हजार	वर्ष ८००	वर्ष २४२ ००		मेघ- रथ राजा	री किणी	सर्वा- र्थ सिद्ध	मोक्ष	वर्ष १ लाख	४० धनु	गज- पुर
६ कुंथु- नाथ	सूरसेन राट्ट	श्री· राणी	२३७ ५० वर्ष	<b>२३७</b>	वर्ष ६००	वर्ष २३१ ५०	वर्ष २३१ ५०	हैं सिंह रथ राजा	खता	,,,	35	वर्ष ९५ सहस्र	३५ धनु	35
७ अर- नाथ	सुदर्शन	देवी राणी	वर्ष २१ हजार	वर्ष २१ हजार	वर्ष ५००	वर्ष २०६ ००	द्वसम	धन- पति राट्र	क्षेम- पुरी	अप- राजि त	"	वर्ष ८४ सहस्र	३० धनु	79
८सुभूम	कार्ति- वीर्य	तारा राणी	वर्ष ५ हजाः	वर्ष प हजार	,,	वर्ष ४९५ ००	दीक्षा नही	कैना- भ राजा	धैन- पुरी	ज्ञयंत विमा न	७ मी नरक	वर्ष ६० सहस्र	२८ धनु	9)
९ महा पद्म	पद्मोत्तर राजा	ज (ज्वा ला देवी	) वर्ष ५००	वर्ष	वर्ष	वर्ष १८७ ००	- १०	^{१९} वितह्			मोक्ष	वर्ष ३० सहस्र	२० धनु	वारा णसी

१ मस्तक वडे ।

<u>२-१२ आ तेमज बीजां पण केटलांक नामो त्रिषष्टिशालाकापुरुषचरित्रशी जुदां पडे छे ते विचारणीय छे।</u>

	-													
१० हरि- षेण	महाहरि	मोरा राणी	वर्ष ३२५	वर्ष ३२		वर्ष ३२५०	वर्ष ३५०	महे. न्द्र राट्र	विज- यपुरु	महे- न्द्र		वर्ष १० सहस्र	१५ घर	
११ जय	विजय राजा	विश्रा राणी	वर्ष ३००	वर्ष ३००		वर्ष १९००	वर्ष ३००	अभि त राट्ट	राज- पुर	ब्रह्म लोक		वर्ष ३ सहस्र	र: घर	1
१२ ब्रह्म- ्दत्त	ब्रह्मभूत राजा	चूल- णी	वर्ष २८	वर्ष ५६		वर्ष ६००	दीक्ष नही	ासंभू- तजी	काशी	महा [.] शुक	- ७ मी नरक	वर्ष ७००	৩ ঘ্	
९ वा	सुदेव	त्रिपृष्ट	r   fē	र्षृष्ठ	खयंभू	पुरु	षो-	पुरुष- सिंह	पुरुष <b>ड</b> री		दत्त	नाराय छ <b>श्</b> म		कृष्ण
धूर्व भ	व नाम	विश्व भूति		र्वेत	धनदत्त	<b>a</b> 1	रुद्र- त्त	सैवाल	मि	<b>त्र</b>	छित- मित्र	पुनर्व	ख	गंगद्त्त
पूर्व भव	आचार्य	संभूति	र ह	ुभद्र	सुद्शन	इति	तल	श्रेयांस	कुष	ग् व	गंगद्त्त	साग समि	ए- त	दुमसेन
निदान	। नगर	मथुरा		तवृङ्क (?)	श्रावस्त	पोर पु	तन- र	राजगृह	काकं	दी व	तीदाां <b>बी</b>	मिथि	छा	हस्तिना पुर
पिता	नाम	प्रजाप	ते इ	मह्मा	सौम्य	रु	द्र	शिव	महा	शेर	अग्नि- शिख	दशर	थ	वसुदेव
माता	नाम	मृगाव	ती र	उमा	पृथ्वी	सी	ता	अमृता	लक्ष	मी	होष- मति	कैकेर सुमि	री त्रा	देवकी
अवगाह	ना-धनु	८०	_	७०	६०	ų	0	<b>છ</b> ષ	20	٤,	२६	१६		१०
गति-	नरक	सातर्म	ों र	<b>छ</b> ठी	छठी	छ	ठी	पांचमी	छर	प्रि	छठी	चौध		त्रीजी
आयु	–वर्ष	८४ ल	क्ष ७२	. लक्ष	६० छ	स्र ३०	लक्ष	१० लक्ष	सह		५६ हजार	१२ सहस	, ,	९ सहरू
९ प्रतिव	<b>ासुदे</b> व	अश्व- ग्रीव		]ता- (क	मेरक	मध् स (ट	कै- व भ)	निसुंभ	बर	ਨ   3	प्रद्लाद	राव	ग	जरा: सिंध
९ ब	<b>छदेव</b>	अचल	ि	जय	भद्र	सुष्	रभ	सुदर्शन	आन	दि	नंदन	पद्म रामचं		राम बलभद्र
पूर्व भव	र नाम	विश्व नंदी	-	—— (सु)- iधु	सागर- दत्त	लि	हेत	वराह	धा	र्भ	सेन	अपर जित	<b>T-</b>	ललि- तांग

माता नाम	भद्रा	सुभद्रा	सुप्रभा	सुदर्शना	विजया	वैजयंती	जयंती	अपरा- जिता	रोहिणी
गति	मोक्ष		$\longrightarrow$	ए	व	म्		$\rightarrow$	ब्रह्मलोक
आयु	८५ लक्ष वर्ष	७५ सक् वर्ष	६५ <b>लक्ष</b> वर्ष		१७ लक्ष वर्ष	८५ हजार वर्ष	६५ हजार वर्ष	१५ हजार वर्ष	१२ सो वर्ष
तीर्थकरके वारे	श्रेयांस	वासु- पूज्य	विमल- नाथ	अनंत- नाथ	धर्मनाथ	१८।१९ के अंतरे	१८।१९ के अंतरे	२०।२१ के अंतरे	नेमि- नाथ
. वर्ण	सुवर्ण			$\longrightarrow$	O.	व	म्		$\rightarrow$

इति नवतन्वसंग्रहे पुण्यतन्वं तृतीया(यं) संपूर्णम् .



अथ 'पाप'तत्त्व लिख्यते—प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्या- ख्यान १३, पैशुन्य १४, परापवाद १५, रतिअरति १६, मायामृषा १७, मिध्यादर्शनशत्य १८ इनसे पापका बंध होइ.

८२ प्रकारे पाप भोगवे ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ९, असातावेदनीय १, मोहनीय २६, नरक-आयु १, नरक-तिर्थंच-गति २, जाति ४, संहनन ५, संस्थान ५, अशुभ वर्ण आदि ४, नरक-तिर्थंच-आनुपूर्वी २, अशुभ विहायोगति १, उपघात १, स्थावरद्शक १०, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं सर्व ८२ प्रकारे भोगवे.

इति नवतत्त्वसंग्रहे पापतत्त्वं चतुर्थं सम्पूर्णम्.

#### अथ 'आश्रव'तत्त्व लिख्यते-

२५ कियाओ—(१) काइया—कायाच्यापार करी नीपनी ते 'कायिकी'. (२) अहिगरणीया—जिस करी जीव नरक आदिकनो अधिकारी होय ते 'अधिकरण', ते भूंडा अनुष्ठान अथवा खड़ आदि तिहां उपनी ते 'अधिकारणिकी'. (३) पाउसिया—मत्सरभावे नीपनी ते 'प्रादेषिकी'. (४) परियावणिया—आपक्तं अथवा परक्तं परितापना करता 'पारि-तापनिकी. (५) पाणाइवातिया—अपणा अथवा परना प्राण हरता 'प्राणातिपात' किया. (६) आरंभिया—जीवने वा जीवना कलेवरने तथा पीठीमय जीवना आकारने अथवा वस्त्र आदिकने आरंभतां-मर्दतां 'आरंभिकी'. ७ परिग्गहिया—जीवका अने अजीवका परिग्रह

करता 'पारिब्रहिकी'. ८ मायावत्तिया-माया तेह ज प्रत्यय-कारण है कर्मवंधनो ते 'मायाप्रत्ययिकी'. ९ मिच्छादंसणवत्तिया—हीन प्रमाणसे वा अधिक माने ते 'मिध्या-दर्शनप्रत्ययिकी'. १० अपचक्खाण—जीवना अथवा अजीव मद्य आदिनो प्रत्याख्यान नहीं ते. (११) दिहिया—देखने जाना अथवा देखना तेहथी जे पाप ते 'दृष्टिजा'. (१२) पुट्टिया—पूंजने करी अथवा स्पर्शेवें करी जे कर्म ते 'स्पृष्टिजा'. (१३) पाडुचिया—बाह्य वस्तु आश्री उपजे ते 'प्रातीत्यकी'. (१४) सामंतोवणिया-समंतात्-चौ फेरे उपनिपात-लोकांका मिलना तिहां जे उपनी ते 'सामंतोपनिपातिकी'. सांढ आदि रथ आदि लोक देखीने व्रश्नंसे तिम विम धर्णी हर्षे ते धर्णीने 'सामंतोपनिपातिकी' क्रिया लागे. (१५) सहित्थया— आपणे हस्तसे उपनी ते 'खाहस्तिकी'. (१६) निस्तिधया—नाखणे से सेडलादिसे नीपनी ते 'नैसृष्टिकी'. (१७) आणवणिया—पापनो आदेश देवो ते 'आज्ञापनिकी' अथवा वस्तु मंग-वावणी. (१८) वियारणिया—जीवने वेदारतां वा दलालने जीव आदि वेचवानां अथवा पुरुषने वित्रतारता 'वैदारिणी', 'वैचारणिकी', 'वैतारणिकी' ए ३ पर्याय. (१९) अणा भो-गवत्तिया-अज्ञानना कारण थकी उपनी ते 'अनाभोगप्रत्यियकी'. (२०) अणवकंखव-ित्तया-अपणे शरीर आदिने ते निमित्त है जिसका ते 'अनवकांक्षाप्रत्यिवकी', एतावता कुकर्म करता हुया परभवसे डरे नही. (२१) पेज्जवत्तिया—रागसे उपनी माया लोभरूप ( 'प्रेमप्रत्ययिकी' ). (२२) दोसवत्तिया—द्वेपथी उपनी क्रोध, मानरूप ( 'द्वेपप्रत्ययिकी' ). (२३) पञ्जोगिकरिया—काया आदिकना व्यापारथी नीपनी ते 'प्रयोग'क्रिया. (२४) समु-द्राणिकरिया—अष्ट कर्मनो ग्रहवो ते 'सम्रदान'िक्रवा. (२५) ईरियावहिया—योग निमित्त है जेहनो ते ( 'ईर्यापथिकी' ); कायाना योग थकी बंध पड़े.

हेतु सत्तावन कैर्मग्रन्थात्—मिध्यात्व ५, अवत १२, कषाय २५, योग १५, एवं सर्व ५७ हेतु. इनका गुणस्थान उपर खरूप गुणस्थानद्वारसे जान लेना. और विशेष आश्रव विशेषों जानना.

श्रीस्थानांग (१० मे) स्थाने दस भेदे असंवर—(१) श्रोत्रेन्द्रिय-असंवर, (२) चक्षु-रिन्द्रिय-असंवर, (३) घाणेन्द्रिय-असंवर, (४) रसनेन्द्रिय-असंवर, (५) स्पर्धनेन्द्रिय-असंवर, (६) मन-असंवर, (७) वचन-असंवर, (८) काय-असंवर, (९) मंडोवगरण-असंवर, (१०) सूची क्रुसग्ग-असंवर; एवं ए दस आश्रवके भेद है. तथा आश्रवके ४२ भेद — इन्द्रिय ५, कषाय ४, अवत ५, योग ३, किया २५; एवं ४२. इति आश्रवतत्त्वं पंचमं सम्पूर्णम्.

#### अथ 'संवर' तत्त्व खरूप लिख्यते—

पांच चरित्र, पट्ट निर्प्रन्थः प्रथम पट्निर्प्रथस्वरूप—(१) पुलाकः, (२) बक्कशः, (३) प्रतिसेचना(क्कशील), (४) कपायक्कशीलः, (५) निर्प्रथ अने (६) स्नातकः पुलाकके ५ भेद्-

ज्ञानपुलाक ( अर्थात् ) ज्ञानका विराधक १, एवं दर्शनपुलाक २, एवं चारित्रपुलाक ३, विना कारण अन्य लिंग करे ते लिंगपुलाक ४, मन करी अकल्पनिक सेवे ते यथा सक्ष्मपुलाक ५. लिबपुलाकका खरूप वृत्तिसे जाननाः बक्कदाके ५ भेद—साधुकं करणे योग्य नही शरीर, उपकरणकी विभूषा ते करे जानके ते आभोगवक्कश १, अनजाने दोष अनाभोगवक्कश २, छाने दोष लगावे ते संवृतवकुश ३, प्रगट दोष लगावे ते असंवृतवकुश ४, आंख, मुख मांजे ते यथासक्ष्मवद्भारा. ५. प्रतिसेचना क्राचीलके ५ भेद—सेवना-सम्यक् आराधना, तिसका प्रतिपक्ष प्रतिसेवनाः एतावता ज्ञान आदि आराधे नही. ज्ञान नही आराधे ते ज्ञानप्रतिसेवना १; एवं दर्शन २, चारित्र ३, लिंग ४; जो तपसा करे वांछा सहित ते यथास्क्ष्मप्रतिसेवना ५. कषायकुरुतिलके ५ भेद्—जो ज्ञान, दर्शन, लिंग, कषाय क्रोध आदि करी प्रजुं(युं)जे सो ज्ञान १, दर्शन २, लिंग ३ कुशीलः कषायके परिणाम चारित्रमे प्रवर्तावे ते चारित्रकुशील ४, मन करी कोघ आदि सेवे ते यथासूक्ष्मकषायक्कशील ५. उपशांतमोह तथा क्षीणमोहके अंतर्मुहुर्त कालके प्रथम समय वर्त्तमान ते प्रथम समय निर्ग्रन्थ १, शेष समयमे अप्रथम समय निर्प्रन्थ २; एवं निर्प्रन्थ कालके चरम समयमे वर्तमान ते चरम समय निर्प्रन्थ ३, शेष समयमे अचरम समय निर्प्रन्थ ४, सामान्य प्रकारे सर्व काल यथाम्रह्मनिर्प्रन्थ ५. इति परिभाषाकी संज्ञा. स्नातकके ५ भेद-अच्छवी अत्थवी, अव्यथक इति. अन्ये आचार्या छवि-चांमडी योगनिरोधकाले नही इति अच्छविः एक आचार्य ऐसे कहै है. क्षपी सखेद व्यापार ते जिनके नहीं ते अक्षपी; एक आचार्य ऐसे कहैं है-धातिकर्म चार क्षपाय है फेर क्षपावणे नहीं इस वास्ते 'अक्षपी' कहीये १, अशवल अतिचारपंकाभावात्. शुद्ध चारित्र २, विगतघातिकर्म अक्मीश ३, शुद्धज्ञानदर्शनधर केवलधारी ४, अईन् जिन केवली ए चौथा मेदमे है. इति इत्तौ. कर्म न बांधे ते 'अपरिश्रावी' ५, योगनिरोधकाले. अथ अग्रे ३६ द्वार यंत्रसे जानने—

गाथा भगवती ( श. २५, उ. ६ )मे सर्वद्वारसंग्रह—
''पैण्णवण १ वेय २ रागे ३, कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ णाणे ७ ॥
तित्थे ८ लिंग ९ सरीरे १०, खित्त ( खेते ) ११ काल १२ गई १३ संजम १४
निकासे १५ ॥ १ ॥

जोगु १६ वओग १७ कसाए १८, लेसा १९ परिणाम २० बंध २१ वेए २२ य । कम्मोदीरण २३ उवसंप(जहण्ण) २४ सण्णा २५ य आहारे २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरिसे २८ कालंतरे २९-३० य सम्रुग्धाय ३१ खेत्त ३२ फुसणा ३३ य । भावे ३४ परिमाणे ३५ खळ (चिय) अप्पाबहुयं नियंठाणं ३६ ॥ ३ ॥"

९ अतिचाररूप कादवना अभावथी ।

२ प्रज्ञापनवेदरागाः कल्पचारित्रप्रतिषेवणाज्ञानानि । तीर्थलिङ्गशरीराणि क्षेत्रकालगतिसंयमनिकर्षाः ॥ १ ॥ योगोपयोगकृषाया लेख्यापरिणामबन्धवेदाश्च । कर्मोदीरणोपसम्पद्दानसञ्ज्ञाश्चाहारः ॥ २ ॥ भव आकर्षः कालान्तरे च समुद्धातक्षेत्रसर्थानाश्च । भावः परिणामः खलु अल्पबहुलं निर्मन्थानाम् ॥ ३ ॥

# (११२) अथ ३६ द्वार यंत्रमे वर्णन करीये है-

१ प्रज्ञापन	१ पुलाक	२ बकुश	३ प्रतिसेवना	४ कषाय- कुशील	निर्प्रन्थ	स्नातक
२ वेद	पुरुष, नपुंसक, कृत्रिम पिण जन्मनपुंसक नही इति वृत्ती	स्त्रा, पुरुष, नंपुंसक कविग	वकुशवत्	बकुरावत् अथवा क्षीणवेद उप- शांतवेदे भवेत्	उपशांतवेद, श्रीणवेद	क्षीण- वेद्
३ राग	सरागी	सरागी	सरागी	सरागी	उपशांत श्रीण	क्षीण राग
४ कल्प	स्थित, अस्थित, स्थविर	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर	बकुरावत् ४	स्थित, अस्थित, जिनकल्प, स्थविर, कल्पा तीत	अस्थित,	निर्प्रन्थ- वत्
५ चारित्र	सामायिक, छेदोपस्था- पनीय	सामायिक, छेदोपस्थाप- नीय	सामायिक, छेदोपस्थाप- नीय	आद्य चार	यथाख्यात	यथा- ख्यात
६ प्रतिसेवना	मूल गुण, उत्तर गुण	उत्तर गुण	पुलाकवत्	अप्रतिसेवि	अप्रतिसेवी	अप्रति- सेवी
७ शाम प्रवचन	२वा ३प्रवचन; ज० ८, उ० नवमे पूर्वकी ३ वस्तु	२ वा ३ प्रव- चनः ज० ८, उ० १० पूर्व	बकुशवत्	२ वा ३ वा ४ प्रवचन; ज० ८, उ० १४ पूर्व	कषायकुशील- वत्	केवल सूत्र व्यति- रिक्त
८ तीर्थ	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे	तीर्थमे अतीर्थमे वा	कपायकुरील- वत्	कषाय कुशील- वत्
९ लिंग	द्रव्ये ३ भावे खर्लिंग	$\rightarrow$	Ų	व	म्	$\rightarrow$
१० शरीर	३ थौ, तै, का	ध औ, वै, ते, का	ध औ, बै, तै, का	पांच	३ औ, तै, का.	३ औ,तै का.
११ क्षेत्र	जन्म कर्मभूमि संहरण नही	जन्म कर्म० संहरण अकर्म.	<b>→</b>	ष	व	म्

		~~~~~~~				····			Ī			• '	
१२ काल		अवसर्पिणीमे जन्म आश्री ३१४ आरे छता भाव आश्री ३१४१५ आरे. उत्स- पिणीमें जन्म आश्री २१३१४ आरे; छता भाव आश्री ३१४ आरे	पिंजी आरे ३।४ उत्स जन्म ३।४। ३।४,	अवस- ो ३।४।५ ;, छता अारे, तर्पिणी : आश्री २; छता संहरण	ৰ স্	ह्यव त्	बदु	शवत्	पुल संहर	ग आ शकव ण अ त्रवेत्र	त् श्री	निर्ग्रन्थ वत्	
१३ गति, पद्वी—इंद्र सामानिक त्रायस्त्रिशत लोकपाल, अहमिन्द्र	5 ,	जि॰ सौधर्म,उ॰ ८ मा देवलोकः पदवी ४ मेसुं एकः स्थिति ज॰ पृथक् पस्योपम, उ॰ १८ सागरोपम	१२ मे पदवी एक ज़० पल्यो	देवलोक; । ४ मेसुं ; स्थिति पृथक् ।पम, उ०	बद्	हुशवत्	उर अ पदव मेसु प पृथक् पृथक्	सौधर्म, पांच उत्तर; पांच- रक; ज॰ पच्चोपम, ३३ गरोपम	रमे एक : वि जि	श्थिति	वी ोन्द्रः ३३	मोक्ष गति	
१४ संयमस्थ अल्पबहुत्व		असंख्याते, ३ असंख्य गुणे	असं ४ अस्	ख्याते, ांख्य गुणे	असं ५ अस	ख्याते, ंख्य गुणे		ंख्याते, iख्य गुणे		एक, स्तोक		पक तुस्य	
१५ चारित्र-	g	६ स्थान	अनंत	गुण हीन	अनंत	गुण हीन	ફ	स्थान	अनंत	गुण	हीन	अनं गुण ह	
पर्यायना	ब	अनंत गुण अधिक	લ	स्थान	દ્દ	स्थान	,,		"	"	"	"	
सन्निकर्ष	प्र	अनंत गुण अधिक	- 55	"	,,	,,	,,	, 35	33	"	"))))	"
	क	६ स्थान	57	"	- "	91	"	"	99	"	11	59 95	"
	F	अनंत गुण अधिक		ति गुण धिक	अ नं अ	त गुण धिक		ति गुण धिक		तुल्य		तुल्य	य
	स्र	अनंत गुण अधिक	अने	ांत गुण रधिक	अ र् अ	त गुण धिक	अ न	ति गुण धिक		5 5		,,,	
जघन्य	<u></u>	१ स्तोक	३ ३	नंत गुण	3	तुल्य	8	तुल्य	-	•		0	
उत्कृष्ट		२ अनंत गुण		77		नंत गुण	६ अ	नंत गुण	U	अनं	त	७ तुः	स्य

·						
१६ उपयोग	मन आदि ३	→	Ų	व	म्	मन आदि ३, अयोगी वा
१७ उपयोग	साकार १, अनाकार २	\rightarrow	प	च	म्	\rightarrow
१८ कषाय	क्रोध आदि ४	४	8	કારારા	उपशांत, क्षीण	क्षीण
१९ लेश्या	३ प्रशस्त	Ę	६	Ę	१ गुरू	१, वा अलेश्यी
२० परिणाम	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, हीन, अवस्थित	वर्धमान, अवस्थित	निर्प्रन्थ- वत्
	वर्धमान ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त; हीय- मान ज० १ समय, उ० अंतर्मुहूर्त; अव- स्थित ज० १ समय, उ० ७ समय,	Ų	व	म्	वर्धमान जि॰ उ॰ अंत- मुंहूर्तः अव- स्थित जि॰ १ समय, उ॰ अंतर्मुहूर्त	वर्धमान ज॰ उ॰ अंतर्मुं- इतः, अच- स्थित ज॰ अंत- मृहूर्त, उ॰ देश ऊन पूर्व कोटि
२१ बंघ	७ आयु नही	७८	७८	८७६	१ साता	१ बंधे वा अवंधक
२२ वेद	८ कर्म	۷	૮	۷	७ मो वर्जा	ક
२३ उदीरणा	६ आयु, १ वेद- नीय वर्जी	७८६	७८६	૮૭६५	५ वा २	उदीरे २, वा अनु· दीरक
२४ उवसंपज- हण्ण	पुलाकपणा छांडी कषाय कुशील १, अ संयम २, ए २ प्रति आदरे		प्रतिसेवनाः पणा छोडी बकुरा १, कषाय- कुशील २, असंयम ३ देशविरति ४, ए ४ आदरे	कषायकुशील पणा छोडी पुलाक १, बकुरा २, प्रति- सेवना २, निर्भ्रन्थ ४, असंयम ५, देशविरति ६, ए ६ आदरे	निर्प्रन्थपणा छोडी कषाय- कुशील १, स्नातक २, असंयम ३, ए ३ पडिवजे	स्नातक- पणा छोडी सिद्ध- गति पडिचजे

२५ संज्ञा	नोसंक्षोपयु		संक्षोपयुक्त नोसंक्षोपर् २		ए वम्		ष्वम्		नोसंहोप्	युक्त	नोसंज्ञो- पयुक्त
२६ आहार	आहारव	F	आहार्र	T	आहारी		आहारी		आहार	`	आहारी अना- हारी
२७ भव	ज० १, उ० ३		ज०१, उ०८		ज० १, उ० ८		ज० १, उ	७८	ज॰ १, उ	७ ३	१ तेही ज॰
२८ आकर्ष- एक भव आर्थ	ज०१, उ	० ३	ज० १, उ० पृथक् रात		ज॰ १, पृथक्		ज ० १, पृथक् र		ज० १, उ	:०२	१
घणे भव आश्र	ो ज० २, उ	०७	জ০ ২ ড০ ৩২	-	ज॰ २, ७२०		ज० २, ७२००		ज० २, ड	ં પ	o
२९ स्थिति- एक जीव आश्री	ज० उ अंतर्मुह		ज०१ स उ०देश पूर्व को	ऊन	एवम	ζ	एवम्	ţ	ज॰ १ स उ॰ अंतर्		जि अंत- मुंहूर्त, उ० देश ऊन पूर्व कोटि
नाना जीव आश्री	ज० १ सः उ० अंतर्म		सर्वाइ	रा	सर्वाइ	रा	सर्वाइ	हा	ज०१ स उ० अंतर्		सर्वाद्धा
३० अंतर- एक जीव आश्री	ज॰ अंतर्म उ॰ वनस् काल	पति			एवम	ζ				•	नास्ति अंतरम्
घणा जीव आश्री	ज० १ स उ० संख्य वर्ष		नास्ति अन्तर		नाहि अन्तर		नाहि अन्तर		ज० १ स उ० ६ स		
३१ समुः वे द्धात	१, क २, मर ३	वे १ म ३,	१, क २, वै ४,ते ५	वे ^१ म ३,	१, क २, वै ४,ते ५	६ वे	विल नहीं		o	१	केवल
	किके असं- व्यमे भाग	•		1	एवम्				>		ख्यमे घणे, ख्य सर्व लोक
३३ स्पर्शन			3 7		>>		,,		77		>>
३४ भाव ४	खोपशम		ए		व		म्	औ वा	पशमिक क्षायिक	8	तायिक ———

• • •			*** * * * * * * * * * * * * * * * * * *	(.c		L • • • • •
३५ परि णाम	प्रतिपाद्यमान 'सिय अत्थि, 'सिय नत्थि; जैदि अत्थि ज०१,२,३; उ०पृथक् शतः पूर्वप्रतिपन्न स्याद् अस्ति स्याद् नास्ति र्याद् नास्ति र्याद् नास्ति र्याद् नास्ति र्याद् सहस्र	प्रतिपद्यमान होत्रे, नही बी	য়	प्रतिपद्यमान होवे बी, नही बी होवे; जो होवे तो ज० १, २,३;उ० पृथक् सहस्र; पूर्व- प्रतिपन्न जघन्य, उत्कृष्ट पृथक् सहस्र कोटि	१०८ क्षपक ५४	यद्यस्ति तदा ज० १, २, ३, उ० पृथक् रातं; पूर्वप्रतिपन्न ज० उ० पृथक् कोटि
३६ अल्प बहुत्व	२संख्येय गुणा	४ संख्येय गुणा	५ संख्येय गुणा	६ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्येय गुणा
	(११३) अ	थ श्रीभगवः	नी (श्र. २५	, ৱ. ৩) খী	संयत ५ यं	त्रम्
Ł	प्रज्ञापना	सामायिक १	छेदोपस्थाप- नीय २	परिहार- विशुद्धि ३	सूक्ष्म- सम्पराय ४	यथाख्यात ५
Ž.	वेद	३ वेद, अवेदी वा	सामायिकवत्	पुरुषवेद १, कृत नपुंसक वेद २	उपशांतवेद, श्लीणवेद	उपशांतवेद, श्लीणवेद
સ	राग	सरागी —	-> ⊄	व	म्	उपशांतराग, श्रीणराग
૪	कल्प	स्थितकरप १, अस्थित २, जिनकरप ३, स्थिवर ४, करपातीत ५	स्थितकरूप १, जिनकरूप २, स्थिवरकरूप ३		आस्थतकल्प	स्थितकरप १, अस्थितंकरप २, करपातीत ३
4	पुलाकादि षट्	आद्य ४	आद्य ४	कषायकुशील १	कषायकुशील १	निर्युत्थ १, स्नातक २
Ę	प्रतिसेवना	मूलगुण १, उत्तरगुण २, सेवे षं(खं)डे, अप्रतिसेवी ३	सामाथिकवत्	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी	अप्रतिसेवी

१ कथंचित् होय । २ कथंचित् न होय । ३ जो होय । ४,५,६ अनुक्रमे १,२,३ प्रमाणे ।

9	1	शशक्ष प्रवचन ज्ञ० ८ प्रवचन, उ० १४ पूर्व पढन करे	सामा यिकवत्	शशशिष्ट ज्ञान; प्रवचन, ज०९ पूर्वे, उ०१० मठेरा	२।३।४ ज्ञान; प्रवचन ज० ८, उ० १४ पूर्व	२।३।४।१ ज्ञान; प्रवचन, ज०८, उ०१४ पूर्व श्रुतातीत
٤	तीर्थ	तीर्थे अतीर्थे वा	तीर्थं	तीर्थे	तीर्थे अतीर्थे	तीर्थे अतीर्थे
९	छिंग	इव्ये ३, भावे १ खिंठग	सामायिकवत्	द्रव्ये भावे १ खर्छिग	द्रव्ये ३, भावे १ खर्लिंग	द्रव्ये ३, भावे १ स्विंहिंग
१०	शरीर	ų	4	३ औ, तै, का.	३ औ, तै, का.	३ औ, तै, का.
११	क्षेत्र	जन्म आश्री कर्मभूमि, संहरण आश्री सर्वेत्र	जन्म० कर्म०, संह० सर्वेत्र	कर्मभूमि	जन्म० कर्म०, संह्र० सर्वेत्र	जन्म० कर्म०, संह० सर्वत्र
१२	काल	बकुशवत् अव- सर्पिणी उत्स- र्पिणी भावनीय	महावितेह	, पुलाकवत्	निर्प्रन्थवत्	निर्प्रन्थवत् सर्वे जानना
१३	ग्रति	विराधक चार जातके देव तामे;आराधक ज० सौधर्म, उ० सर्वार्थ- सिद्ध		ज० सौधर्म, उ०८ मा देव लोक	ज० उ० पंच अनुत्तरेषु उत्पद्यते	अँनुत्तर- विमाने वा सिद्धगतौ
१४	खिति, पदवी पामे	स्थिति ज॰ २ पल्योपम, ड॰ ३३ सागरोपम पद्वीपांचमेस अन्यतर १	्र ।; सामायिकवर	ज० २ पत्यो पम, उ० १८ सागरोपम; पदवी ४ मे अनंतर एका	सागरोपमः पदवी एक- अहमिन्द्रकी	जिं, उठ २ सागरोपमः
१५	संयमस्थिति अल्पबहुत्व	असंख्याते ध असंख्यगुणे	ł	असंख्याते असंख्यगुण्		एक्यं १ स्तोक

१ पांच अनतरोमां उत्पन्न धाय छे । २ 'अनतर' विमानमां अथवा सिद्ध गतिमां ।

	चारित्रपर्यवना संनिकर्ष	0	सामा- यिक	छेदोपस्थाप- नीय	परिहार- विद्युद्धि	स्क्ष्मसंपराय	यथाख्यात
		सा०	દ	દ	Ę	अनंतगुणहीन	अनंतगुणहीन
		छे०	37	77	,,,	33 33 31	77 77 79
		प०	33	57	33	33 33 33	33 31 13
		स्०	अनंत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनंत गुण अधिक	अनंत गुण हीन अनंत गुण अधिक	अनंत गुण हीन
		य०	अनंत गुण अधिक	→ ए	च	म्	तुल्य
	चारित्र पर्यवनूं जघन्य उत्कृष्ट	१ः	त्तोक	१ तुल्य	२ अनंत गुण	५ अनंत गुण	o
	अल्पबहुत्व	४ अन	तं गुण	૪ ,,	₹ ,, ,,	Ę ,, ,,	७ अनंत गुण
१६	योग	मन व	मादि ३	→ प	व	म्	मन आदि ३, अयोगी वा
१७	उपयोग		हार १, कार २	\rightarrow	Œ	च	म्
१८	कषाय		शश१ वलन	एवम्	ध संज्वलन	१ लोभ संज्वलन	उपशांतश्लीण वा
१९	लेश्या	હ	द्रव्ये	६ द्रव्ये	३ प्रशस्त	१ गुक्क	१ परम शुक्क
२०	परिणाम		न, हीय- भवस्थित	वर्घ०, हीय०, अव०	वर्घ॰, हीय॰, अव॰	वर्ध०, हीय०	वर्ध०, अव०
	परिणाम स्थिति	सम् अंतर्मु य० सम अंतर्मु ज० १	ज० १ य, उ० इते; ही- ज० १ य, उ० इतं; अ० समय, ९ समय,	1	सामायिकवत्	वर्धे॰ ज॰ १ समय, उ॰ अंतर्मुहूर्तः, हीय॰ ज॰ १ समय, उ॰ अंतर्मुहूर्त	वर्ध० ज० उ० अंतर्मुहूर्तः अव० ज० १ समय, उ० देश ऊन पूर्वकोटि
२१	बंध		9,6	७,८	७,८	६ मोह, आयु नही	१ साता, अवंधक वा

२२	वेदना(नीय) कर्म	८ वेदे	$ ightarrow$ $ ag{7}$	व	म्	७ वा ४ वेदे
२३	उदीरणा	८,७,६; आयु, वेदनीय वर्जी	८,७,६	८,७,६,	६, ५; आयु, वेदनीय, मोह वर्जी	ं५ वा २, अनुदीरक वा
રક	उपसंपत्ति त्याग	स्०२, असंयम ३, संयमासं-	छेदो० छोडी सा० १, प० २ स्०३, असंयम ४, असंयमासं- यम ५ आदरे	छे० १, असंयम	स्क्ष्म० छोडी सा० १, छे० २, यथा० ३, असंयम४;ए ४ आदरे	यथा० छोडी सू० १, असं- यम २ आदरे
३५	संज्ञा	४ संक्षा, नो- संक्षोपयुक्त वा	सामायिकवत्	सामायिकवत्	नोसंज्ञोपयुक्त	नोसंज्ञोपयुक्त
२६	आहार	आहारी	→ आहारी	आहारी	आहारी	आहारी, अना- हारी वा
হঙ	भव केते करे ?	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ८	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ३
२८	आकर्ष एक भव आश्री;	ज० १, उ० पृथक् शत	ज॰ १, उ० १२०	ज० १, उ० ३	ज० १, उ० ४	ज०१, उ०२
	आकर्ष नाना भव आश्री	ज॰ २, उ॰ <i>७</i> २००	ज० २, उ० नवसेसे उप- रांत, इजारके हेठे	ज० २, उ० ७ वेळा	ज०२ उ०९,	ज० २, उ० ५
ર ૧	श्थिति एक जीव आश्री	ज० १ समय, उ० नव वर्ष ऊन पूर्व कोड	सामायिकवत्	ज॰ १ समय, उ० २९ वर्ष ऊन पूर्व कोड	जि०१ समय,	ज॰ १ समय, उ॰ देश ऊन पूर्व कोटि
	स्थिति घणा आश्री	सर्वोद्धा	ज० २५० वर्ष, उ० ५० लाख कोडि सागरोपम	ज॰ देश ऊन २०० वर्ष, उ० देश ऊन दो पूर्वकोटि		सर्वोद्धा
₹०	अंतर एक जीव आश्री	ज० अंतर्मुहूर्त उ० अनंत काल, अर्ध- पुद्गल दे	\rightarrow	Q	व	щ.

	अंतर घणा जीव भाश्री	नास्त्यन्तरम्	ज० ६३ सहस्र वर्ष, उ० १८ कोटाकोटि सागरोपम	ज॰ ८४ सहस्त्र- वर्ष, उ. १८ कोटाकोटि सागरोपम	ज॰ १ समय, उ॰ ६ मास	नास्ति अन्तरम्
38	समुद्भात	६ केवल वर्जी	Ę	धुरली ३	o	केवल १
\$8	क्षेत्र	होकने असं- स्यमे भाग	→ प	ব	म्	असंख्यमे घणे, असं० सर्व स्रोक
इइ	स्पर्शना	;; ;; ;;	ightarrow $ au$	व	म्	53 55
3 8	भाव	क्षयोपशम	→ द	घ	म्	उपराम, क्षय
34	परिमाण	प्रतिपद्यमान होवे, नही बी होवे; जे, होवे (तो) ज० ११२१, उ० पृथक् सहस्र; पूर्वप्रतिपन्न पृथक् सहस्र कोड	प्रतिपद्यमान होवे, नहीं बी होवे; जो होवे (तो) ज० १।२।३, उ० पृथक् रात; पूर्वप्रतिपन्न होवे, न बी होवे; (जो होवे तो) ज० उ० पृथक् रात- कोढि		निर्प्रन्थवत्	प्रतिपद्यमान होवे, नही बी होवे; जो होवे (तो) ज० ११२१३; उ० १६२; पूर्वप्रति- पन्न पृथक् कोटि
24	अल्पबहुत्व	५ संख्येय गुणा	४ संख्येय	२ संख्येय गुणा	१ स्तोक	३ संख्येय गुणा

(११४) भगवती (ज्ञा. ७, उ. २, सू. २७३) अल्पबहुत्व

१ यंश्व	मूल गुण पचक्खाणी	उत्तरगुण पचक्लाणी	अपचक्खाणी
जीव	१ स्तोक	२ असंख्येय	३ अनंत
तिर्यंच पंचेन्द्रिय	" "	,, ,,	३ असंख्य
मनुष्य	39 99	95 99	55 95

२ यंत्र	सर्वमूल	देशमूल	अपचक्खाणी	
जीव	१ स्तोक	२ असंख्य	३ अनंत गुण " असंख्य	
तिर्यंच पंचेन्द्रिय	0	१ स्तोक		
मनुष्य	१ स्तोक	२ संख्येय	53 55	

३ यंत्र	सर्व उत्तरगुण पद्मक्खाणी	देश उत्तरगुण पञ्चक्खाणी	अपचक्खाणी	
जीव	१ स्तोक	२ असंख्य	३ अनंत	
तिर्येच पंचेन्द्रिय	37 27	39 99	37 79	
मनुष्य	23 35	,, संख्य	,, असंख्य	

(११५) स्थानांगस्थाने दशमे दशविध यतिधर्म

	नामपाठ	अर्थ		नामपाठ	अर्थ
१	खंती	क्रोधनिग्रह	E	सचे	संखवादी
२	मुसी	निर्छोभता	ý.	संजमे	१७ संयमवान्
3	अज्ञवे	सरल सभाव	4	तवे	द्वादशमेदी तपवान्
ક	मद्देव	मार्दव, अहंकार- रहित कोमल (स्रभाव)	९	चियाप	व्रतीतकारी घरका वस्त्र पात्र अन्य आदिल्पै(से?) साधुकुं दान देवे
ध	लाघवे	द्रव्ये भावे हलका	१०	बंभचेरवासे	ब्रह्मचर्यके साथ सोवे

दश बोलमे 'वास' शब्द इस वास्ते कहा है जैसे गृहस्थ अंगनाके संग शयन करे हैं ऐसे शीलकूं संग लेके रात्री वास करे इति बची.

(११६) भगवती (इा. ८, इ. ८) परीषह २२ यंत्रकम्

	अष्ट कर्मके बंधकमे परीषह २२	षड्विध बंधकमे एक बंध छन्नस्थमे	एकविध बंधक वीतराग केवलीमे ११	कौनसे कर्मके उद्व कौनसा परीषह?
१	श्चुधा	अस्ति १	अस्ति १	वेदनीयके उदय
٤	वैद्	,, ૨	,, ર	27 27
3	হীব	,, ই	,, ३	73 39
8	उन्म	,, 8	,, ક	
ષ	र्वशमशक	,, 9	,, 4	39 99
ફ	अचेल	0	0	चारित्रमोहकै उदय

Ġ	अरति	. •	• •	" "
૮	स्त्री	. 0	•	77 77
९	चर्या	अस्ति ६	अस्ति ६	वेदनीयके ,,
१०	नैषेधिकी	0	•	चारित्रमोहके ,,
११	शय्या	अस्ति ७	अस्ति ७	वेदनीयके ,,
१२	आक्रोश	0	0	चारित्रमोहके ,,
१३	वध	अस्ति ८	अस्ति ८	वेदनीयके "
१४	याचना	0	o	चारित्रमोहके ,,
१५	अलाभ	अस्ति ९	0	अंतरायके ,,
१६	रोग	,, १०	अस्ति ९	वेदनीयके ,,
१७	तृणस्पर्श	,, ११	,, १०	" "
१८	मल	,, १२	,, ११	,, j,
१९	सत्कारपुरस्कार	o	0	चारित्रमोहके ,,
२०	प्रज्ञा	अस्ति १३	0	ज्ञानावरणके ,,
२१	अज्ञान	,, १૪	0	,, ,,
२२	दर्शन	0	O	दर्शनमोहके "

सत्ता २२		१४	११
वेदै एक साथे २०;	बावीसमे चर्था, निसिहिया एकतर; शीत, उष्ण एकतर.	शीत होय तो उष्ण नही, उष्ण होय तो शीत नही; चर्या, शय्या एकतर; एवं १९	शीत, उष्णमेसु एकः चर्या, शय्यामेसु एक- तरः एवं ९ वेदे. एवं अयोगी पिण

कोइ कहै जोकर कोइ पुरुष शीत कालमें अग्नि तापे है सो तिसके एक पासे तो उष्ण प्रीपह है अने एक पासे शीत लगे है, तो युगपद दोनो परीपह कयुं न कहै ? तिसका उत्तर—एह दोनो परीपहकी विवक्षा शीत काल अने उष्ण कालकी अपेक्षा है; कुछ अग्निकी ताप अपेक्षा नही इति इत्ती; और परीपहकी चर्चा भगवतीजीकी टीकामे (पृ. २८९) में खरूप कथन किया है सोइ तिहांसे लिख्यते—

"" जं समयं चरिया नो तं समयं निसिहिया ि" (भग ० श. ८, उ. ८ स. ३४३) इत्यादि. तिहां 'चर्या'परीषह तो प्राम आदिकमे विहार अने 'नैषेधिकी' परीषह प्राममें मासकल्प आदि रहणा अने 'शय्या' परीषह उपाश्रयमें जाकर वैसणा. इस अर्थ करकेइ इस कारण विहार अने अवस्थान अर्थात् तिष्ठने करके परस्पर विरोध है. इस वास्ते एक कालमें

नहीं संमवे हैं. अथ प्रश्न—नैषेधिकी अने शय्या एह दोनो चर्याके साथ विरोधी है तो दोनोका एककालमें संभव हुया. यदि एककालमें संभव हुया तदि एककालमें १९ परीषह वेदे इह सिद्ध हुया. अथ उत्तर-इम नहीं है. किस वास्ते ? ग्राम आदि जाने कुं प्रवृत्ते हैं तिस कालमें जाता हूया मोजनविश्रामके अर्थे औत्सुक्य परिणाम सहित थोंडे काल वास्ते शय्यामें वर्ते हैं। तिस कालमें 'शय्या' परिषहका 'चर्या' अने 'नैषेधिकी' दोनीको साथ संबंध है. इस वास्ते २० ही परिषह एककालमें वेदे है. यो ऐसे कह्या तो पड्विध बंधक आश्री कह्या है. जिस समय चर्या नहीं. इहां कैसे संभव हूया ? उत्तर—पड्विध बंधकके 'मोह' कर्म उदयमें बहुत नहीं है इस वास्ते शय्याकालमें औत्सुक्य परिणामका अभाव है इस वास्ते शय्याकालमें शय्या ही है, परंतु बादर रागके उदय औत्सुक्य करके विहारके परिणाम नहीं। इस वास्ते परस्पर विरोधी होने करके दोनो युगपत एककालमें नहीं. इति अलं चर्चेण (चर्चया).

उत्तराध्ययनके २४ मे अध्ययनात् पांच समिति, तीन गुप्ति खरूप—

प्रथम ईर्यासमिति—आलंबने १, काल २, मार्ग ३, यता ४ ए चार प्रकारे. शुद्ध ईर्या शोधे तिहां आलंबन—ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३ इन तीनोक्तं अवलंबीने ईर्या शोधे १० काल थकी दिवसमे ईर्या शोधे २० मार्ग थकी उत्पथ वर्जे ३० यत्नाके चार मेद है — द्रव्य १, क्षेत्र २, काल ३, भाव ४० द्रव्य थकी तो चक्षुसे देख कर चाले १० क्षेत्र थकी चार हाथ प्रमाण धरती देखीने चाले २० काल थकी जितना काल चलनेका तहां लग यत करी चाले २० मात्र थकी उपयोग सहित किस तरे होवे १ पांच इंद्रियकी विषयथी रहित पांच प्रकारकी वाचना आदि स्वाध्याय रहित शरीरकं ईर्यारूप करे. ईर्यामें उद्यम एह उपयोग थकी ईर्या शोधे इति ईर्यासमिति.

भाषासमिति. कोघ १, मान २, माया ३, लोम ४, हास्य ५, मय ६, मुखारि (मौखर्य) ७, विकथा ८ ए आठ स्थानक वर्जीने बोले. असावद्य मर्यादा सहित भाषा बोले. उचित काले बोले. तथा दश मेदे सत्य, बारां मेदे व्यवहार, एवं २२ मेदे भाषा बोले. ते बावीस भेद लिख्यते—

(१) जणवए सचे—'जनपद'सत्य. जीनसे देशमे जो भाषा बोले सो तिहां सत्य. जैसे 'कोकन' देशमे पाणीकं पिछ, कोइ देशमे बडे पुरुषकं बेटा कहै वा बेटेकं काका, पिताकं भाइ, साम्रकं बाइ. सो सत्यम्. (२) सम्मत(य)—'संमत'सत्य. जैसे पंकसे उपना मींडक, सेवाल अने कमल; तो हि पिण कमलने 'पंकज' कहीये पिण मींडक, सेवालने 'पंकज' शब्द नहीं. (३) ठवणा—'स्थापना'सत्य. जिसकी मूर्ति स्थापी है सो मूर्तिकं देव कहना जूठ नहीं. (४) नाम—'नाम'सत्य. 'कुलबर्धन' नाम है, चाह कुलका क्षय करे तो पिण कुलवर्धन कहना जूठ नहीं. (५) क्षे — मुणकरी अष्ट है तो पिण साधुके वेषवालेकं 'साधु' कहीये. (६) पड्ड च—'अपेक्षा'सत्य. जैसे मध्यमाकी अपेक्षा अनामिकी कनिष्ठा अंगुली है. (७) ववहार—'व्यवहार'सत्य. जैसे

पर्वत बलता है, रस्ता चलता है. (८) भाव—'भाव'सत्य. जैसे तोतेमे पांच वर्ण है तो पिण तोता हर्या है. (९) जोग—'योग'सत्य. जैसे दंडके संयोगसे दंडी कहीये; छत्रसे छत्री. (१०) उवमासचे—'उपमा'सत्य. चंद्रवत् वदन, समुद्रवत् तडाग. असत्य यंत्रम्—

कोहिनिस्सिया—कोधके उदय बोले. मानिनिस्सिया—मानके उदय बोले. मायानि-स्सिया—मायाके उदय बोले. लोहिनिस्सिया—लोभिनिश्रित बोले. पेजनिस्सिया—रागके उदय बोले. दोसिनिस्सिया—द्वेपके उदय बोले. हासिनिस्सिया—हास्यके उदय बोले. भय-निस्सिया—भयके उदय बोले. अक्खायनिस्सिया—विकथा करी. उवघायनिस्सिया— हिंसाकारी वचन. (११७)

मिश्र भाषा पा.	અર્થ	सिश्र भाषा पाः	અર્થ
१ उप्पन्नमिसि(स्सि?)या	इस गाममे दस वालक जन्मे है	६ जीवाजीवमिसिया	जीव, अजीव दोनोकी मिश्र भाषा बोले
२ विगयमिसिया	इस गाममे आज दस- जणे मरे है	७ अनंतमिसिया	मूळी आदिक कंदोमें अनंते जीव है सो 'प्रत्येक' जीव कहै.
३ उप्पन्नविगयमिसिया	इस गाममे दस जन्मे है, दस(की) मृत्यु होइ है	८ परत(रित्त)मिसिया	प्रत्येककूं अनंतकाया कहै
४ जीवमिसिया	एकचा(त्र) सर्व जीव है	९ अद्धामिसिया	ऊठ रे दिन चढ्या पहरके तडकेसे कहै
५ अजीवमिसिया	अन्नकी रास देखके कहै ए तो अजीव है.	१० अद्धद्धामिलिया	घणे कालका जूट; घडी एक रात गये (रह्ये) दिन ऊगा कहै

व्यवहार भाषाके बारां भेद

(१) आमंताणि—हे भगवन्. (२) आणवणि—इह काम कर तथा यह वस्तु लावः (३) जायणि—यह हमें देउगे. (४) पुच्छणि-ग्राम आदिनो मार्ग पूछणा. (५) पन्नवणि-धर्म ऐसे होता है. (६) पचक्खाणी—यह काम हम नहीं करेंगे. (७) इच्छाणुलोम—अहासुह देवातु- प्रिय. (८) अणिभग्गहिया—अगलेका कहा ठीकतरे समजे न. (९) अभिग्गहिया—ग्रुझे ठीक है. (१०) संसयकारण—खबर नहीं क्यों कर है. (११) वोगडा-प्रगट अर्थ कहै. (१२) अवोगडा- अप्रगट अर्थ.

१५५

इह ४२ मेद भाषाक हैं. सत्य १०, व्यवहार १२, एवं २२ मेद बोले. इति भाषासमिति संपूर्ण.

एषणासमितिका खरूप विस्तार सहित पिंडनिर्युक्ति तथा पिंडविद्युद्धिसे जाणना इति.

अथ 'आदान भंडिनक्षेप'सिमिति लिख्यते—उपि दो मेदे हैं—(१) औषिक, (२) औपग्राहिक, 'औषिक' ते साधु, साध्वी सदाइ राखे अने 'औपग्राहिक' ते जे कदाचित् कार्य उपने ग्रहे ते, प्रथम औषिक कहीये हैं—

''उंवही उवग्गहे संगहे य तह पग्गहुग्गहे चेव । भंडग उवगरणे वि य करणे वि य हुंति एगट्टा ॥ १ ॥ (औघ० ६६६) पत्तं १ पत्तावंधो २ पायद्रवणं ३ च पायकेसरिया ४। पडलाई ५ रयत्ताणं ६ (च) गुन्छओ ७ पायनिजो(जो)गो ॥ २ ॥ (ओ० ६६८) तिनेव य पच्छागा १० रयहरणं ११ चेव होइ म्रहप(पो)त्ती १२। एसो दुवालस्स(स)विहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥ ३ ॥ (ओ० ६६९) एते(ए) चेव दुवालस्स(स) मत्तग १ अइरेग चोलपट्टो य । एसो चउइसविहो उवही पुण थेरकप्पंमि ॥ ४ ॥ (ओ० ६७०) पत्तं १ पत्ताबंधो २ पायद्ववणं ३ च पायकेसरिया ४। पडलाइं ५ रयत्ताणं ६ (च) गुच्छओ ७ पायनिजो(जो)गो ॥ ५ ॥ (ओ० ६७४) तिन्नेव य पच्छागा १० रयहरणं ११ चेव होइ म्रहपत्ती १२ । र्तत्तो (य) मत्तउ खळु १३ चउदसमो कमढओ(गो) चेव १४॥६॥(ओ०६७५) उग्गहणंतग १५ पदो(हो) १६ उड्डोरू (अद्बोरुअ) १७ चलणिया १८ य बोद्धव्या । अब्भितर १९ बाहरि(हिर १) २० नियंसणी य तह कंचुए २१ चैव ॥ ७॥ (ओ० ६७६) उग(क) च्छिय २२ वेगच्छिय २३ संघाडी २४ चेव खंघकरणी २५ य । ओहोविहंमि एऐ अञ्जाणं पन्नवीसं तु ॥ ८ ॥ (ओ० ६७७) उकोसगो जिणाणं चउवि(व्विहा) मज्झिमो वि एमेव । जहनो चउविहो खळ एत्तो थेराण वच्छामि ॥ ९ ॥

⁹ उपिषरुपप्रहः सङ्क्रहश्च तथा प्रतिप्रहश्चेव । भाण्डकसुपकरणमि च करणेऽपि च भवन्ति एकार्थाः ॥ १ ॥ पात्रं पात्रबन्धः पात्रस्थापनं च पात्रकेसिरका । पटलानि रजस्नाणं (च) गुच्छकः पात्रनिर्योगः ॥ २ ॥ त्रय एव च प्रच्छादका रजोहरणं चैव भवति सुखपत्तिः(विश्वका)। एष द्वादशविध उपिधर्जिनकिल्पकानां तु ॥३॥ एते चैव द्वादश मात्रकमितिरक्तं चोलपदृश्च । एष चतुर्दशविध उपिधः पुनः स्थविरकल्पे ॥ ४ ॥

२ ततो मात्रकश्चर्त्शमः कमढगं चैव ॥ ६ ॥ अवप्रहानन्तकं पट्टोऽधीरकं चलनिका च बोद्ध्या । आभ्यन्तरा बाहिरा निवसनी च तथा कञ्चकश्चैव ॥ ७ ॥ औपकच्छिकं वैकक्षिकं सङ्घाटी चैव स्कन्धकरणी च । ओघोपघो एते आर्याणां पञ्चविश्वतिस्तु ॥ ८ ॥ उरहृष्टो जिनानां चतुर्विधो मध्यमोऽपि एवमेव । जघन्यश्चतुर्विधः खल्च इतः स्थविराणां वक्ष्ये ॥ ९ ॥

उँकोसो थेराणं चउवि(वि)हो छवि(वि)हो उ मन्झिमओ । जहन्नो चउवि(व्वि)हो खु एत्तो अञ्जाण साहेमि ॥ १० ॥ उकोसो अट्टविहो मिन्झमओ होइ तेरसविहो उ। जहन्नो चउवि(न्वि)हो खलु तेण परम्रवग्गहं जाणे(ण) ॥ ११ ॥ (ओ० ६७८) एगं पायं जिणकप्पियाण थेराण मत्तओ बीओ। एयं गणणपमाणं पमाणमाणं अओ बुच्छं ॥ १२ ॥ (ओ० ६७९) तित्रि विहत्थी चउरंगुलं च भाणस्स मन्झिमपमाणं । इत्तो हीण जहन्नं अइरेगयरं तु उक्तोसं ॥ १३ ॥ (ओ० ६८०) पत्ताबंधपमाणं भाणपमाणेण होइ नायव्वं । जह गंठिंमि कयंमि कोणा चउरंगुला हुंति ॥ १४ ॥ (ओ० ६९३) पत्तद्भवणं तह गुच्छओ य पायपिडलेहणी(णि)या य । तिण्हं पि य प्पमाणं विहृत्थि चउरंगुलं चेव ॥ १५ ॥ (औ० ६९४) जेहिं सविया न दीसइ अंतरिओ तारिसा भवे पडला । तिनि व पंच व सत्त व कदलीगब्भोवमा मसिणा ॥ १६ ॥ (ओ० ६९७) अइढाइजा हत्था दीहा छत्तीस अंगुले रुंदा। बीयं च (बितियं) पडिग्गहाओ ससरीराओ य निष्फन्नं ॥ १७॥ (ओ० ७०१) माणं तु रयत्ताणे भाणपमाणेण होइ निष्कन्नं। पायाहिणं करंतं मज्झे चउरंगुलं कमइ॥ १८॥ (ओ० ७०३) कप्पा आयपमाणा अह्वाइजा य वित्थडा हत्था। दो चेव सुत्तिया उ उन्निय तइओ सुणेयव्वो ॥ १९ ॥ (ओ० ७०५) बत्तीसंगुलदीहं चउवीसंगुलाइं दंडो से । अट्टंगुला दसाओ एगतरं हीणमहियं वा ॥ २० ॥ (ओ० ७०८)

⁹ उत्कृष्टः स्थिवराणां चतुर्विधः षिद्धेषस्त मध्यमकः । जघन्यश्चतुर्विधः खलु इत आर्योणां कथयामि (१) ॥ १० ॥ उत्कृष्टोऽष्टविधो मध्यमको भवति त्रयोदशिवधस्तु । जघन्यश्चतुर्विधः खलु तेन परमुपग्रहं जानीयात् ॥ ११ ॥ एकं पात्रं जिनकिल्पकानां स्थिवराणां मात्रकं द्वितीयम् । एतद् गणनाप्रमाणं प्रमाणमानमतो बक्ष्ये ॥ १२ ॥ त्रयो विहस्तयश्चतुरङ्कुलं च भाजनस्य मध्यमप्रमाणम् । अतो हीनं जघन्यमतिरिक्ततरं तुर्कृष्टम् ॥ १३ ॥ पात्रबन्धप्रमाणं भाजनप्रमाणेन भवति ज्ञातव्यम् । यथा प्रन्थौ कृते कोणाश्चतुरङ्कुला भवन्ति ॥ १४ ॥ पात्रस्थापनं तथा गुच्छकश्च पादप्रतिकेखिनका च । त्रयाणामि च प्रमाणं विहस्तिश्चतुरङ्कुलं चैव ॥ १५ ॥ यैः सविता न द्रयतेऽन्तरितस्तादशानि भवन्ति पटलानि । त्रीणि पद्म वा सप्त वा कदलीगभापमानि मस्णानि ॥१६॥ धर्भतृतीयहस्तदीर्घाणि षद्तिषदञ्चलानि रुन्द्राणि । द्वितीयं च पतद्प्रहात् स्वरिराच निष्पन्तम् ॥ १० ॥ मानं तु रजस्नाणे भाजनप्रमाणेन भवति निष्पनम् । प्रादक्षिण्यं कुर्वेन् मध्ये चतुरङ्कुलानि कामिति ॥ १८ ॥ कल्पा आत्मप्रमाणा अर्थतृतीयांश्च विस्तृता हस्तान् । द्वौ चैव सौत्रिकौ तु और्णिकस्तृतीयो ज्ञातव्यः ॥ १९ ॥ द्वात्रिवादमुलवीर्ये चतुर्विश्वतिरङ्कुलानि दण्डस्तस्य । अष्टाङ्कुला दशा एकतरं हीनमिधकं वा ॥ २० ॥

उँन्नियं उद्दियं वा वि कंबलं पायपुच्छणं। तिपरीयञ्जमणिस्सद्वं रयहरणं धारए इकं ॥ २१ ॥ (ओ० ७०९) चउरंगुलं विहत्थी एवं ग्रहणंतगस्स उ पमाणं। बीयं मुहप्पमाणं गणणपमाणेण इक्तिकं ॥ २२ ॥ (ओ० ७११) जो मागहओ पत्थो सविसेसयरं त मत्तगपमाणं। दोसु वि दव्वग्गहणं वासावासासु अहिगारो ॥ २३ ॥ (ओ० ७१३) स्ओदणस्स भरियं दुगाउमद्वाणमागओ साह । भ्रंजइ एगट्टाणे एयं किर मत्तयपमाणं ॥ २४ ॥ (ओ० ७१४) दुगुणो चउगुणो वा हत्थो चउरंस चोलपट्टो य । थेरजुवाणाणद्वा सण्हे थुलंमि य विभासा ॥ २५ ॥ (ओ० ७२१) संथारुत्तरपट्टो अहाइजा य आयया हत्था। दोहं पि य वित्थारो हत्थो चउरंगुरुं चेव ॥ २६ ॥ (ओ० ७२३) रयहरणपट्टमित्ता अदसागा किंचि वा समइरेगा। इक्रगुणा उ निसिजा हत्थपमाणा सपच्छागा ॥ २७ ॥ (ओ० ७२५) वासोवग्गहिओ पुण दुगुणो अवही उ वासकप्पाई। आयासंजमहेउं इक्गुणो सेसओ होइ ॥ २८ ॥ (ओ० ७२६) जं पुण सपमाणाओ ईसिं हीणाहियं व लंभिजा । उमयं पि अहाकडयं न संघणा तस्स छेओ वा ॥ २९ ॥" (ओ० ७२७)

इति औषिकोपिधः संपूर्णः। अथ औपग्राहिकं उपगरणमाह—औपग्राहिक उपिके तीन मेद—(१)जवन्य, (२) मध्यम, (३) उत्कृष्ट. तत्र प्रथमं जवन्यमाह—

ैपीठ १ निसिजा २ दंडग ३ पमजणं ४ घट्ट ५ डगल ६ पिप्पलग्ग ७ सह ८ नह-

⁹ श्रीणिंकं श्रीष्ट्रिकं वाऽपि कम्बलं पादप्रोञ्छनम् । त्रिः परिवर्तमनिस्षष्टं रजोहरणं धारयेदेकम् ॥ २१ ॥ चतुरहुलं वितिस्तिरंवं मुखानन्तकस्य तु प्रमाणम् । द्वितीयं मुखप्रमाणं गणनप्रमाणेनैकैकम् ॥ २२ ॥ यो मागधकः प्रस्थः सिवरोषतरं तु मात्रकप्रमाणम् । द्वयोरपि द्रव्यप्रहणं वर्षावर्षयोरिधकारः ॥ २३ ॥ स्पौदनैन मृतं द्विगव्यूताध्वन आगतः साधुः । भुङ्के यदेकं स्थानमेतत् किल मात्रकस्य प्रमाणम् ॥ २४ ॥ द्विगुणश्चतुर्गुणो वा हस्तश्चतुरस्रश्चोलपद्वश्च । स्थितरयूनामर्थाय श्वक्षणे स्थूले च विभाषा ॥ २५ ॥ संसारकोत्तरपद्दे अर्द्धतृतीयो च आयतौ हस्तौ । द्वयोरपि च विस्तारो हस्तश्चतुरहुलं चैव ॥ २६ ॥ रजोहरणपद्दमात्रा अदशाका किश्चित् समितरेका वा । एकगुणा तु निषद्या हस्तप्रमाणा सपाश्चास्या ॥ २० ॥ वर्षोपप्रहिकः पुनर्द्विगुणोऽविधिस्तु वर्षोकस्पादिः । आत्मसंयमहेतुरेकगुणः शेषको भवति ॥ २८ ॥ यत् पुनः स्वप्रमाणावीषदीनमिषकं वा लभ्येत । उभयमिष यथाकृतं न सन्धना तस्य छेदो वा ॥ २९ ॥ १ पीठकं निषदा इण्डकः प्रमार्जनी घटको सगलं पिप्यलकः सूची नखहरणी दन्तकणेशोधनक्यौ ।

रणी ९ दंत १० कन्न ११ सोधणी इति जघन्यम् ॥ "वासता(त्त)णाइ उ मिन्झमगो वासता(त्त)ण पंच इमे । वाले १ मुत्ते २ मुई ३ कुडसीसग ४ छत्त ए ५ चेव ॥ २ (१) ॥ तहियं दन्निय ओहो वहं(हिं)मि वाले य सुत्तिए चैव । सेस तिय वासताणायणंगं तह चिलमिलीण इमं ॥ ३ ॥ वालमई सुत्तमई वागमई तह य दंडकडगमई। संथार दुगमप्सु सिरिपियदंडगपो(प्प?)णगं ॥ ४ ॥ दंड विदंड लड़ी विलड़ी तह नालिया य पंच। अवलेहणिमत्तियां पासवण्रचारखेले य ॥ ५ ॥ चिचिणया बर पेपी उरतिलगा अहवा विचंमतिविहिमिमं। कत्ती तलिगा वह झाझाध पट्टदुगं चेव होइ मिमं ॥ ६ ॥ संथारुपट्टो अहवा सन्नाहपट्ट पह्नत्थी। मज्झो अञ्जाणं पुण अइरित्तो वारगो होइ॥ ७॥ लैट्टी आयपमाणा विलिद्ध चउरंगुलेण परिहीणा। दंडो बाहुपमाणो विदंडओ कक्खमित्तो य ॥ ८ ॥ (ओ० ७३०) सिरसोवरिं चउरंगुलं दीहा उ नालिया होई। अवलेहणि वटोंबुर तस्स अला[व]भंमि चिंचिणिया ॥ ९ ॥"

इति मज्झिम । उत्कृष्टमाह—

''अक्ला संथारो वा दुविहो एकंगिओ तदियरो वा। बीय पयपुत्थपणगं फलगं तह होई उक्कोसा॥ १०॥''

		9 3	ग्र र	गाथाओ	अखंत	अगुद	छे. वळी	तेनुं मूळ	स्थळ	पण जाणव	ामां नथी.	एवी परिस्थि	तेमां ए	नी छाया	आपवी
ते	एक	प्रका	रउं	साहस	गणाय	एउडे ए	दिशामां	प्रयास व	हरातो	नथी. तेने	माटे जग्या	कोरी रखाय	छे.		
			•••	•	•••	•••	• •	••	•••	•••	***	• • •	***		

२ यष्टिरात्मप्रमाणा वियष्टिश्चतुरङ्गुलेन परिहीना । दण्डो बाहुप्रमाणो विदण्डकः कक्षामात्रश्च ॥ ८ ॥ श्रीषीपरि चलारि अङ्गुलानि दीर्घा तु नालिका भवति । ***** तस्य ****** ॥ ९ ॥

३ अक्षाः संस्तारको वा द्विविध एकान्तरस्तदितरो वा । द्वितीयं पुस्तकपञ्चकं फलकं तथा भवत्युत्कृष्टा ॥ १०॥

तथा—"दं डैए लड्डिया चैव चम्मए चम्मकोसए।
चम्मच्छेयणए पट्टो चिलिमिली घारए गुरु ॥ १॥ (ओ० ७२८)
जं चन्न एवमाई तवसंजमसाहगं जइजणस्स ।
ओहाइरेगगिहयं उवगिहयं तं वियाणाहि ॥ २॥ (ओ० ७२९)
जं जस्स उ उवयारो उवगरणं (जुजइ उवगरणे) तंसि होई उवगरणं।
अहरेगं अहिगरणं अजतो अजयं परिहरंतो ॥ ३॥ (ओ० ७४१)
न केवलमहरित्तं अहिगरणं पट्टिमयं पि जो अजओ।
परिजुंजइ उवगरणं अहिगरणं तस्स वि होई ॥ ४॥"

इति. अथ उपगरणधारणकारणानि—

''छैंकायरक्खणहा पायग्गहणं जिणेहिं पन्नतं। जे य गुणा संभोए हवंति ते पायगहणे ति(वि)॥१॥(ओ० ६९१) अतरंतवालयुह्वासेहाएसा गुरु असहुवग्गे। साहारणुग्गहालदिकारणा पायगहणं तु॥२॥(ओ० ६९२) रयमाइरक्खणहा पत्तगठवणं वि उ उवइस्संति। होइ पमञ्जणहेउं गुच्छओ भाणवत्थाणं॥३॥(ओ० ६९५) पायपमञ्जणहेउं केसरिया पाएँ पाएँ इकिका। गुच्छग पत्तहवणं इकिकं गणणमाणेणं॥४॥(ओ० ६९६) पुष्फफलोदयरयरेणुसउणपरिहारपायरक्खहा। लिंगस्स य संवरणे वेओदयरक्खणे पडला॥५॥(ओ० ७०२) मूसगरयउकेरे वासे(सा) सिन्हा रए य रक्खहा। हुंति गुणा रयताणे पाए पाए य इकेकं॥६॥(ओ० ७०४) तणगहणानलसेवानिवारणा धम्मसुकझाणहा। दिद्वं कप्पगहणं गिलाणमरणह्या चेव॥७॥(ओ० ७०६)

१ दण्डको यष्टिका चैव चर्मकथर्मकोशकः । चर्मच्छेदनकः पृष्टः चिलिसिली (प्रविनका) धारपेद् गुरः ॥ १ ॥ यचुपयुज्यते उपकरणे तदेव भवति उपकरणम् । अतिरेकमधिकरणं अयतोऽयतं परिहरन् ॥ ३ ॥ व केवलमतिरिक्तमधिकरणं परिसितमपि योऽयतः । परियुनिकत उपकरणं अधिकरणं तस्यापि भवति ॥ ४ ॥ व स्वलमतिरिक्तमधिकरणं जिनैः प्रज्ञप्तम् । ये च गुणाः सम्भोगे भवन्ति ते पात्रप्रहणे इति ॥ १ ॥ अतो ग्लानबालवृद्धिक्षकादेशा गुरः असिहण्यवप्रहः । साधारणावप्रहात् अलिधकरणं त्रप्राप्त पात्रप्रहणं तु ॥ २ ॥ एजआदिरक्षणार्थं पात्रकस्थापनमपि तूपिक्शित्वत्वप्रहः । साधारणावप्रहात् अलिधकारणात् पात्रप्रहणं तु ॥ २ ॥ पात्रप्रमार्जनहेतुः केसिरका पात्रे पात्रे एकैका । गुच्छकः पात्रस्थापनं एकैकं गणनाप्रमाणेन ॥ ४ ॥ पात्रप्रमार्जनहेतुः केसिरका पात्रे पात्रे पर्वेका । गुच्छकः पात्रस्थापनं एकैकं गणनाप्रमाणेन ॥ ४ ॥ पुष्पफलोदकरजोरेणुशकुनपरिहारपातरक्षणार्थम् । लिङ्गस्य च संवरणे वेदोदयरक्षणे पटलानि ॥ ५ ॥ मृषकरज्ञदकरे वर्षावस्थायरजोरक्षणार्थं च । भवन्ति गुणा रजस्वाणे पात्रे पात्रे चैकैकम् ॥ ६ ॥ तृणप्रहृणानलसेवानिवारणार्थं धर्मगुक्लध्यानार्थम् । दष्टं कल्पप्रहणं ग्लानमरणार्थं चैव ॥ ७ ॥

आयाणे निक्खेवे ठाण निसीयण तुत्रह संकोए । पुन्वं पमञ्जणहा लिंगहा चेव रयहरणं ॥ ८॥ (ओ० ७१०) संपाइमरयरेण्यमज्जणहा वयंति ग्रहपति । नासं ग्रुहं च बंधइ तीए वसहिं पमज्जंतो ॥ ९ ॥ (ओ० ७१२) संपाइमतसपाणा भृलिसरिक्खे अ परिगलंतीम । पुढविदगअगणिमारुयउद्धंसणखिंसणाडहरे ॥ १० ॥ (ओ० ७१५) आयरिए य गिलाणे पाहुणए दुछहे सहसदाणे। संसत्तए भत्तपाणे मत्तगपरिभोगणुत्राउ ॥ ११ ॥ (ओ० ७१६) संसत्तभत्तपाणेसु वा वि देसेसु मत्तए गहणं। पुन्वं तु भत्तपाणं सोहेउ छुहंति इयरेसु ॥ १२ ॥ (ओ० ७२०) वेउच्ववाउडे वाइए हीय खद्धपजणणे चेव । तेसि अणुगाहद्वा लिंगुदयद्वा य पद्दो उ ॥ १३ ॥ (ओ० ७२२) पाणाईरेणुसंरक्खणहुया हुंति पहुगा चउरो । छप्पइयरनखण्डा तत्थुवरि खोमियं कुजा ॥ १४ ॥ (ओ० ७२४) दुट्टपसुसाणसावयविज्ज(चिक्ख)लविसमेसु उदगमञ्ज्ञेसु । लद्दी सरीररक्खा तवसंजमसाहणी भणिया ॥ १५ ॥ (ओ० ७३९) मुखट्टा नाणाई तण्र तयद्वा तयद्विया लट्टी। दिहो जहोवयारो कारणंमि कारणेस जहा (कारणतकारणेरस तहा ?) ॥ १६ ॥" (ओ० ७४०)

इति कारणम् इनक् जतनासे लेवे, जतनासे मेले ए चौथी समिति. अथ पांचमी समिति अचित्त खंडले दस दीष ते रहितमे मल आदि व्युत्सर्जन करे. मन, वचन, काया पापसे गोपे ते 'गुप्त'.

⁹ आदाने निक्षेपे स्थाने निषद्ने लग्नर्तने सङ्कोचने । पूर्व प्रमार्जनार्थ लिङ्गार्थ चैव रजोहरणम् ॥ ८ ॥ सम्पातिमरजोरेणुप्रमार्जनार्थ वदन्ति मुखविश्वकाम् । नासिकां मुखं च बन्नाति तथा वसित प्रमार्जयन् ॥ ९ ॥ सम्पातिमत्रसप्राणा धूलिसरजस्के च परिगलमाने । पृथिन्युदकानिमारतोद्धसणपरिभवडहरे ॥ १० ॥ आचार्ये ग्लाने प्राघूणिके दुर्लमे सहसादाने । संसक्तके भक्तपाने मात्रकपरिभोगमनुज्ञातः ॥ ११ ॥ संसक्तमक्तपानेषु वाऽपि देशेषु मात्रकप्रहणम् । पूर्व तु भक्तपानं शोधियला प्रक्षिपन्ति इतरेषु ॥ १२ ॥ वैकियोऽप्रावृतो वातिको द्वीको बृहत्प्रजननश्चेव । तेषामनुप्रहार्थं लिङ्गोदयार्थं च पष्टस्तु ॥ १३ ॥ प्राण्यादिरेणुसंरक्षणार्थं च भवन्ति पष्टकाश्वलारः । षद्पदिकारक्षणार्थं तत्रोपरि क्षोमिकं कुर्यात् ॥ १४ ॥ दुष्टपशुश्वश्वापदिकक्ललविषमेषूदकमध्येषु । यष्टिः शरीररक्षार्थं तपःसंयमसाधिनी भणिता ॥ १५ ॥ मोक्षार्थं ज्ञानादीनि तत्तुः तदर्थं तदर्थिका सष्टिः । दृष्टो यथोपकारः कारणतत्कारणेषु तथा ॥ १६ ॥

अथ द्वाद्राभावनास्तरूप. दोहरा-

पावन भावन मन वसी, सब दुव मेटनहारः श्रवण सुनत सुव होत है, भवजलतारनहार १ अथ 'अनित्य' भावनाः सवईया इकतीसा-संध्या रंग छिन भंग सजन सनेही संग उडत पतंग रंग चंद रवि संगमे तन कन धन जन अवधि तरंग मन सुपनेकी संपतमे रांक रमे रंगमे देवते ही तोरे भोरे रंक कोरे तोरे मये राजन भिषारी भये हीन दीन नंगम बादरकी छाया माया देवते विनस जात भोरे चिदानंद भूलो काहेकी तरंगमे ? १ इंद चंद सुरगिंद आनन आनंद चंद नरनको इंद सोहे नीके नीके वेसमे उत्तम उत्तंग सोध जंगमे अभंग जोध घुमत मतंग रंग राजत हमेसमे रंभा तरुषंभा जैसी माननी अनृष ऐसी रसक दसक दिन माने सुष ए समे परले पवन तृण उडत गगन जेसे पवर न काहु वाहु गये काहु देसमे २ अथ 'असरण' भावना(ख)रूप-मात तात दारा आत सजन सनेही जात कोउ नही त्रात आत नीके देव जीयके तन धन जोवन अनंग रंग संग रसे करम भरम बीज गये मूढ वोयके। नाम न निशान थान रान पानलेपि यत दरव गरव भरे जरे नंगे होयके त्राता नहीं कोउ ऐसे बलवंत जंत संत अंतकाल हाथ मल गये सब रोयके १ साजन सुहाये लाप प्रेमके सदन बीच हसे मोह फसे कसे नीके रंग लसे है माननीके प्रेम लसे फसे धसे कीच वीच मीचके हिंढोले हीच मूढ रंग रसे हैं

माननाक प्रम लस फस घस काच वाच माचक हिटाल हाच मूट रंग रस ह चपलासी झमक अनित बाजी जगतकी रुंपनमे वास रात पंषी चह चसे हैं मोहकी मरोर भोर ठानत अधिक ओर छोर सब जोर सिर काल वली हसे हैं २ इति अध 'संसार' भावना—

राजा रंक सुर कंक सुंदर सरूप भंक रित पित रूप भूप कुष्ठ सरवंग हैं
अरी मरी मीत धरी तात मात नारी करी रामा मात परी करी घूयावरी रंग हैं
उलट पलट नट वट केसो पेल रच्यो मच्यो जगजालमें विहाल वहु रंग है
एते माहे तेरो जोरो कोउ नाही नम्र फेरो गेरो चिदानंद मेरो तूही सरवंग है १
रंग चंग सुप मंग राग लाग मोहे सोहे छिनकमें दोहे जोहे मौत ही मरदके
नीके वाजे गाजे साजे राजे दरबार ही में छिनकमें क्कह्क सुनीय दरदके
जगमें विहाल लाल फिरत अनादि काल सारमेय थाल जैसे चाटत छरदके
मद भरे मरे परे जंगरमें परे जरे देप तन जरे धरे छरे हैं गरदके २
अथ 'एकक्ष' भावना—

एक टेक पकर फकर मत मान मन जगत खरूप सब मिथ्या अंधकूप है चारों गत भटक पटक सब रूप रंग यति मति सति रति छति एकरूप है करमको घरे गेरे नाना कछ नहीं तेरो मात तात श्रात तेरो नाही कर चूप है चिदानंद सुपकंद राकाके पूरन चंद आत्मसरूप मेरे तूही निज भूप है ? आथ साथ नाही चरे काहेक गेरत गरे संगी रंगी साथी तेरे जाथी दुख लहिये एक रोच केरो तेरो संगी साथी नहीं नेरो मेरो मेरो करत अनंत दुप सहिये ऊपरमें मेह तैसो सजन सनेह जेह पेहके बनाये गेह नेह काहा चिहये जान सब ज्ञान कर वासन विषम हर इहां नहीं तेरो घर जाते तो सो कहिये २ इति अथ 'अन्य' भावना—

तेल तिल संग जैसे अगिन वसत संग रंग है पतंग अंग एक नाही किन्न है करमके संग एक रंग ढंग तंग हूया डोल तस छंद मंद गंद भरे दिन्न है दिघ नेह अभ्र मेह फूलमे सुगंध जेह देह गेह चित एह एक नही भिन्न है आतमसरूप धाया पुग्गलकी छोर माया आपने सदन आया पाया सब धिन्न है १ काया माया वाप ताया सुत सुता मीत भाया सजन सनेही गेही एही तासो अन्न है ताज वाज राज साज मान गान थान लाज चीत प्रीत रीत चीत काहुका ए धन्न है। चेतन चंगेरो मेरो सबसे एकेरो होरे डेरो हुं बसेरो तेरो फेरे नेरो मन्न है आपने सरूप लग माया काया जान ठग उमग उमग पग मोषमे लगन्न है २ अथ 'अशुच(चि)' भावना—

षट चार द्वार षुले गंदगीके संग झुले हिले मिले पिले चित कीट जुं पुरीसके हाड चाम खेल घाम काम आम आठो जाम लपट दपट पट कोथरी भरी सके गंदगीमें जंदगी है बंदगी करत नत तत्त वात आत जात रात दिन जीसके मेली थेली मेली वेली वैलीवद फैली जैली अंतकाल मूढ तेऊ मूए दांत पीसके १ जननीके खेत सुग रेतको करत हार उर घर चरन करी घरी देह दीन रे सातो घात पिंड घरी चमक दमक घरी मद भरी मरी परी करी वाजी छीन रे प्रिये मीत जार कर छर न मे राख कर आन वेठे निज घर साथ दीया कीन रे छरद करत फिर चाटत रसक अत आतम अनूप तोहे उपजेना घीन रे २ अथ 'आश्रव' मावना—

हिंसा झूठ चोरी गोरी कोरी केरे रंग रखो कोध मान माया लोभ षोभ घेरो देतु है राग द्रेष ठग भेस नारी राज भत्त देस कथन करन कर्म अमका सहेतु है चंचल तरंग अंग भामनिके रंग चंग उद्गत विहंग मन अति गर भेतु है मोहमे मगन जग आतम धरम ठग चले जग मग जिय ऐसें दुष लेतु है १ नाक कान रान काट वाटमें उचाट ताट सहे गहे बंदी रहे दुख भय मानने जोग रोग सोग भोग वेदना अनेक थोग परे विल लाये दख लीये पीये जानने

आपने कमाये पाप भोगनमे आपे आप अंग जरे क्रष्ट भरे इंदुवत आनने आपने करम करी दुष रोग पीर परी मिध्यामित कहे ए तो कीये भगवानने २ अथ 'संवर' भावना—

हिरदेमे ज्ञान घर पापपंथ परहर निहचे सरूप कर डर जर करसे
आवत महान अघ रोध कर हो अनघ आपने विकार तज मज कर मरसे
करम पटल ढग तिन माही देह अगिन कसत गुन दग आप परटरसे
करम भरम जावे मोद मन बोध पावे ऐसा रसरसीया ते आ रसकूं परसे १
सत मत नव तत मेदामेदिवत हित मीत जीत तीन नित तीन तेरे बोधके
तीन चीन मीन लीन उदक प्रवीन पीन खीन दीन हीन तज रजक छं सोधके
सत्ताको सरूप जान परणत अम मान निज गुन तान जेही महानंद सोधके
अमजाल परहरे काहुकी न भीत करे संजमके बारे मारे कर्म सारे रोधके २
अथ 'निर्जरा' भावना—

जैसे न्यारी सुध रीत छानत कनक पीत डारत असुध लीत मोद मन कर्यो है तैसी ही सुधार यार करम पकार डार मार मार चार यार लार तेरे पर्यो है जोलों चित रीत नाही तोलों मिटे भीत नाही कुगुर डगर वीच लूटवेको प(१प)यों है आतम सियाने वीर करमकी मिते पीर परम अजीत जीत सिवगढ चर्यो है १ सत जत सील तप करम भरम कप वासना सनेह गेह चितमे न धरीये नरक निगोद रोग भोगत अनंत काल माया भ्रम जाल लाल भवद्यि तरिये संकटमे पर्यो दुष भर्यो मर्यो वसुधामे चर्यो जगलोर भोर अब मन डिस्ये चारत कंकन घर दोस दृष्ट दूर कर अरहत ध्यान कर मोष(क्ष)वधू वरिये २ अथ 'लोकस्वरूप' भावना—

जामाधार नराकार भामरी करत यार लोकाकार रूप धार कहा। करतार रे राज दस चार जान ऊंचताको परिमान अधो विसतार राज सात है पतारने घटत घटत मृत मंडलमे एक राज पंचम सुरग मध्य पांच राज धारने आदि अंत नहीं संत स्वयं सिद्धरूप ए तो षट द्रव्य वास एही आपत उचारने १ नरक भवन पिति तनुवात घन मिति वसत पतार वार करमके दोषमे पिति आप तेज वात वन रन त्रस घन विगल तिगल पसु पंषी अहि रोषमे नर नारी मेस धारी घरम विहारी सारी वीतराग ब्रह्मचारी नारी धन तोषमे सुरगन सुषमन नाटक करत घन धन पन प्रश्न सिद्ध पूरे सुष मोषमे २ अथ 'धर्म' भावना—

षिमा थर तोष कर कपट लपट हर मान अरि मार कर भार सब छोरके सत परिमान कर पाप सब छार कर करम इंथन जर तप धूनी जोरके तपोधन दान कर सील भीत चीत घर निज गुण वास कर दस धम्म दोरके आतम सियाने माने एह धर्मक्रप जाने पाने जाने दोरे भोरे कल मल तोरके १ असी चार लाप जोन पाली तिहां रही कोन वार ही अनंत जंत जिहा नही जाया है नवे नवे भेस धार रांक ढांक नर नार दृष भूष मूक घूक ऊंच नीच पाया है राजा राना दाना माना सरवीर धीर छाना अंतकाल रोया सब काल बाज पाया है तो है समजाया अब ओसर पुनीत पाया निज गुन धाया सोइ वीर प्रभु गाया है २ अथ 'बोध(ध) दुर्लभ' भावना —

सुंदर रसीली नार नाककी वसनहार आप अवतार मार सुंदर दिदार रे इंद चंद धरणिंद माधव निरंद चंद वसन भूषन पंद पाये बहु वार रे जगतके ष्याल रंगवद रंग लाल माल सुगता उजाल डाल रे(ह)दे बीच हार रे ए तो सब पाये मन माये काम जगतके एक नही पाये विश्व वीर वच तार रे १ सुंदर सिंगार करे बार बार मोती भरे पित बिन फीकी नीकी निंदा करे लोक रे वदन रदन सित हग विन फीके नित पगिर तेरि तिकत भूषनके थोक रे जीव विन काया माया दान विन सम गाया सील विन वायां खाया तोष विन लोक रे तप जप ज्ञान ध्यान मान सनमान सब सम कद रस विन जाने सब फोक रे

इति द्वादशभावनाविचारः

अथं प्रत्याख्यानस्वरूप ठाणांग, आवश्यक, आवश्यकभाष्यात्

(१) भावि—आचार्य आदिकनी वैयावृत्त्य निमित्ते जो तप आगे करणा था पयुर्णण आदिमे अष्टम आदि सो पहिला करे ते 'भावि—अनागत तप.' (२) अईयं—आचार्य आदिकनी वैयावृत्त्य निमित्ते पर्युषण आदिमे अष्टम आदि तप न करे, पर्युषण आदिकके पीछे करे ते 'अतीत तप' किहये. (३) को डिसहियं—प्रारंभता अने मूकतां छोडतां चतुर्थ आदिक सरीपो तप ते वेहु छेहडा मेन्या हुइ ते 'को टिसहितम्.' (४) सागार—अणत्थणा भोग सहसागार इन दोना विना अपर महत्तरागार आदि आगार राषे ते 'सागारतप.' (५) अणागार—अणत्थणाभोगेण सहसागारेण ए दो विना होर (और) कोइ आगार न राषे ते 'अणागार तप'. (६) परिमाण—एक दाता आदि १ कवल २ घर ३ द्रव्य संख्या करे ते 'प्रमाणकृत.' (७) निरिचिसेसे—सर्व अग्रन आदि वोसरावे ते 'निर्विशेष.' (८) नियंहि—अमुको तप अमुक दिने निश्चे करूंगा 'नियंत्रित तपः' ए जिनकल्पी विषे प्रथम संघयण होता है; सो वर्तमानमे व्यवच्छेद (च्छिक) है. (९) संकेय—अंगुहि १ मुद्दि २ गंद्दी ३ घर ४ से ५ ऊसास ६ थिवुग ७ जोइरके ८; ए आठ 'संकेत'के भेद जानने. (१०) अद्धा—नमुकारसिहयं १ पोरसि २ साढपोरसि ३ पुरिम ४ अपार्द्ध ५ विगय ६ निवीता ७ आचाम्ल ८ एकासणा ९ वे-आसणा १० एकलठाणा ११ पाण १२ दिस १३ अभत्तद्द १४ चरम १५ अभिग्रह १६.

(११८) १५ भेद पाण विना द्वार दूजा आगार संख्या

	नमो [.] कार सहि- यं १	पोर- सी २	साढ पोर- सी ३	पुरम ४	अपा- ई ५	विग- य ६	निवी ता ७	आ- चा- म्ल ८	एका [,] सणा ९	बेआ- सणा १०	एक- लठा ⁻ णा ११	अभ• त्तह १२	दिव- स १३ चरम १४	अ भि ग्र ह १५
अणत्थणाभोगे	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ
सहसागारेणं	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
पच्छन्नकालेणं	0	प	प	प	q	o	0	0	0	0	0	0	0	0
दिसामोहेणं	0	दि	दि	दि	दि	o	0	0	0	0	0	o	0	0
साहुवयणेणं	0	सा	सा	सा	सा	0	0	0	0	0	0	0	0	0
अकुंचनपसा०	0	0	0	0	0	0	0	0	अ	अ	0	o	0	0
गुरुअब्भुट्टा	0	0	0	0	. 0	0	0	0	गु	गु	गु	0	0	0
—————— सागारियागा०	0	0	0	0	0	0	0	0	सा	सा	सा	0	0	0
पारिद्वावणिया	0	0	0	0	0	पा	पा	पा	पा	पा	पा	पा	0	0
लेवालेवेणं	0	0	0	0	0	ले	ले	ले	0	0	0	0	0	0
- उक्खितविवेगे	0	0	0	0	0	उ	उ	उ	0	0	0	0	0	0
गिहत्थसंसट्टे	0	0	0	0	0	गि	गि	गि	0	0	0	0	. 0	0
पडुचमिक्खये	0	0	0	0	0	प	प	0	0	0	0	0	0	0
महत्तरागारे	0	0	0	म	H	म	म	म	म	म	म	म	म	म
सव्वसमाहिव०	0	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
आगारसंख्या	२	Ę	६	9	७	९	९	6	4	6	0	4	४	8

अथ आगार-अर्थ लिख्यते अणत्थ० अत्यंत भूल गया, पचक्खाण करके भोजन मुखमे दीया पीछे पचक्खाण संभायों तदा तत्काल थूक देवे तो भंग नही १. सहसा० गाय आदि दोहना मुखमें छींट पड़े, बलात्कारे मुखमें पड़े पूर्ववत् थूके २. पच्छन्नकाल० सूर्य वादलसे ढक्यो पूरी पोरसीकी बुद्धिसे पारे पीछे सूर्य देख्या तो पोरसी नही हुइ तदा मुखके कवलकं रापमे यतसे थूके; पूरी हुइ पोरसी तदा फर जीमे तो भंग नही इम सर्व जमे जानना. ३. दिसामो० पूर्व दिस(श) पश्चिम जाणे तदा पारे पीछे खबर पड़े पूर्वोक्तवत् थूके ४. सा० साधुके वचनथी पोरसी जाणी जीमे पीछे जाण्या पोरसी नही आइ पूर्वोक्त० ५. महत्तरा० अति मोटा काम संघ गुरुकी आज्ञासे जीमें तो भंग नहीं; ग्लान आदिकनी वैयावृत्त्य करणी ते विना खाया होइ नही, इस वाले भोजन करे तो भंग नहीं ६. सव्वसमाहि० प्रत्याख्यान कर्या है अने तीव शूल आदि उपना अथवा सर्प आदि इस्थो तदा आर्त्तभ्याने मरे तो अच्छा नहीं

इस वास्ते औषधी करे भंग नही ७. सागारी० जिसकी नजर लगे दोष हूइ तो अघ जीमे उठके ओर जगे जायके जीमे पिण तिसकी दृष्टि आगे न जीमे अथवा साधुकूं भोजन करतां गृहस्थ देखता होइ तो तिहाथी अन्यत्र जाइ जीमे तो भंग नहीं होइ ८. आउटण०—हाथ, पग आदि संकोचे पसारे तो भंग नहीं, वात आदि कारणात् ९. गुरुअभु०—गुरुकूं आवता देखके जो खडा होवे तो भंग नहीं १०. पारिटा०—विधिसे लीया विधिसे जीम्या इम करतां जे विगय प्रमुख आहार ऊगर्या ते परिठावणिया गुरुनी आज्ञाये लेवे तो भंग नहीं ११. लेवालेवे०—जे विगय त्याग्या है तिणे करी कडली आदिक खरडी हूइ तिण कडली करी आहर आदिक दीइ ते लेता वर्त भंग नहीं होइ १२. गिहत्थसं०—गृहस्थे आपणे काजे उ(ओ)दन दृष्टे(धसे) अथवा दही करी उल्या हूइ तिहा जे धान्य उपरि चार आंगुल चिंउ दृष्ट दही हूइ ते निवीये कल्पे, जो पांच अंगुल तो विग(य) ही जाननी. ए आचाम्ल ताइ कल्पे १३. ए आगार साधुने. उत्वित्तवि०—गाढी विगय गुड पकवान आदिक पोली ऊपरि मूकी हुइ ते उपाडी दूर करी ते पोली आचाम्ल ताइ कल्पे १४. ए आगार साधुने. पडुचमिन्ख०— सर्वथा रूषा मंडक आदिकने राख दूर करनेक हाथ फरे मंडा फेरे १५.

पचक्खाण तिविहार करे तदा पाणीके छ आगार—पाणस्स लेवेण वा अले-वेण वा अच्छेण वा वहलेण वा सित्थेण वा असित्थेण वा वोसरामि. अस अर्थ—पाण० जिस करी भाजन आदि खरडाइ ते खर्जुर आदिकनउ पाणी लेपकृत १. अलेवे० अलेप पाणी कांजिका प्रमुख २. अच्छेण० अच्छा निर्मल तत्ता पाणी २. वहलेण० वहल डोहलउ तंदल घोवल प्रमुख ४. सित्थे० सीथ सिहत उसामण आदि ५. असित्थे० सीथ रिहत पाणी ६; ए ६ पाणी लेवे तो मंग नही. पचक्खाण करणेवाला वोसरामि कहै; गुरु करावणेवाला वोसरह कहै. श्रावककं आचाम्ल नीवीमे पाणी भोजन अचित्त करे, सिचत्त न करे, अने श्रावकने आचाम्ल नीवीमे तीन आहारका त्याग जानना. नमोकारसीमे अने रात्रिमोजनमे साधुके च्यार ही आहारका त्याग निश्चे करी होय है, शेष पचक्खाण तिविहार चौविहार होय है. रात्रिभोजन १ पोरसि २ दोपहीरी ३ एकासणेमे श्रावकने दो आहार, तीन आहार, चार आहारका त्याग होवे है. ए सर्व पचक्खाणका भेद जानना.

अथ च्यार आहारका खरूप लिख्यते—प्रथम अञ्चानके भेद—शालि, ज्वारि, वरठी प्रमुख सर्व ओदन १, मूंग आदि सर्व दाल २, सत्तू आदि सर्व आटा ३, पेठ आदि सर्व तीमण ४, मोदक आदि सर्व पकवान ५, म्राण आदि सर्व कंद ६, मंडक आदि सर्व तली वस्तु ७, वेसण ८, विराहली ९, आमला १०, सैंघव ११, कउठपत्र १२, लींबुपत्र १३, लूण १४, हींग १५; ए सर्व अञ्चनका भेद जानना १.

पाण० पाणी कांजिक १, जब २, कयर ३, ककोडा आदिकनो घोवण ४, अवर सर्व शास्त्रोक्त घोवण ५, ए सर्व पाणी; साकरपाणी १ आंविलपाणी इक्षु रसप्रमुख सर्व सरस पाणी. ए पाणीमे गिण्या पिण व्यवहारे अञ्चन ही है. २. खाइम० संखडी पतासा आदि १, सेक्या धान्य २, खोपरा ३, द्राख ४, वा(ब)दाम ५, अक्षोट ६, खर्जूर ७, प्रमुख सर्व मेवा काकडी, आम्र, फणस आदि सर्व फल.

साइम॰ संठ १, हरडे २, पीपल ३, मिरी ४, अजमो ५, जाइफल ६, कसेलउ ७, काथो ८, खयरडी ९, जेठी मधु १०, तज ११, तमालपत्र १२, एलची १३, लवंग १४, विडंग १५, काठा १६, विडलवण, १७, आजउ १८, अजमोद १९, कुलिंजण २०, पीपलामूल २१, चीणीकवाव २२, कचूरउ २३, मोथ २४, कंटासेल्ड २५, कपूर २६, संचल २७, छोटी हरडे २८, बहेडा २९, कुंभडउ ३०, पोनपूग ३१, हिंगुलाष्टक ३२, हींगु त्रेवीस ३३, पुष्करमूल ३४, जवासामूल ३५, वावची ३६, वउलछाल ३७, धवछालि ३८, खयरछाली ३९, खेजडेकी छाल ४०; ए सर्व 'खादिम' किहिये. गुड 'खादिम' कहीए पिण व्यवहारे 'अञ्चन' ही ज है. फोकोक्यो(?) नीर साकर वासिउ १, पाडल वासिउ २, संठनउ पाणी ३, हरडइनउ पाणी, ए जो नितारीने छाण्या होइ तो 'खादिम' नही; तिविहारमे लेणा कल्पे. जीरा प्रवचनसारोद्धारमे 'खादिम' कह्या अने श्रीकल्पवृत्तिमे 'खादिम' कह्या है. ए चार आहारनो विचार संपूर्णम्.

नीव छाल १, मूल पनडा शिली २, गोमूत्र ३, गिलो ३ (१) कडु ४, चिरायता ५, अति-विस ६, चीडी ७, स्कड ८, राख ९, हलइ १०, रोहिणी ११, उपलोठ १२, वेजत्रिफला १३, पांच क्लि भूनिव १४, धमासउ १५, नाहि १६, असंधिरोगणी १७, पॡउ १८, गुगल १९, हरडा दालि २०, वउणिमूल २१, वोरमूल २२, कंवेरीमूल २३, कयरनो मूल २४, प्राड २५, आछी २६, मंजीठ २७, वालवीउ २८, कुयारी २९, वोडाथरी ३०, इत्यादि जे अनिष्टपणे इच्छा विना लीजे ते चारो आहारमे नहीं, 'अनाहार' ही ज जाणना, इति अनाहारः

अथ विगय स्वरूप—द्ध १, घृत २, दही २, तेल ४, गुड ५, पक्तवान ६, ए छ 'मक्ष्य विगय' है. अथ द्ध-विगयके भेद ५—गायका १, महिसका २, ऊंटणीका ३, बकरीका ४, भेडका ५; और द्ध-विगय नही १. घृत अने दही ४ भेदे—ऊंटणी विना. अथ तेल-विगय ४ भेदे—तिल १, सरसव २, अलसि २, करड ४. अथ गुड २ मेदे—ढीलालाला १, काठा २. पक्तवान-विगय जे घृत तेलथी तली.

अथ महाविगय ४ अभक्ष्य—कुत्तिना १, मर्खिना २, भमरिना ३, ए मधु सहित. काष्ट्रका १ पीठीका २ मद्य २ मेदे. थलचर १, जलचर २, खेचर ३ का मांस तीन भेदे. माखण चार मेदे घृतवत् जानना. ए ४ अभक्ष्य जाननी.

अथ विगयके अंतर्गत तीस भेद. तीस भेद. प्रथम द्धनी पांच द्राक्ष सहित रांधिउ द्ध ते 'पय' १, घणे चावल थोडा द्ध ते 'खीर' २, अल्प चावल घणा द्ध ते 'पेया' २, तंदुलना चूर्ण सहित द्ध रांध्या ते 'अवलेहि' कहीये ४, आछण सहित वितरेडिउ ते द्ध 'दुग्धाटी' ५; ए पांच द्धना विगयगत भेद जाननाः

अथ घृतना ५—पकवान जिसमे तस्या ते 'दंग्धंघृतनिभंजन' कहीये १, दहीने तारी घी काढे ते वीस्पंदन २, औषधी पकाके काढ्या घी २, घृत नीतार्या पीछे छाछ रही ते ४, औषधी करी रांध्या पचिउ घृत ५. ए पांच घृतना विगयगत भेद.

अथ दहीनी ५—करवो १, शिषरणी मीठा घाली दही मसल्या २, रूण सहित दही मध्यो ३, कपडसे छाणी दही घोल ४, घोलवडा उकालिउ दही जे माहे वडा घोल्या ते ५. ए ५ दहीना विगयगत मेद जानना.

अथ तेलना ५—जिसमे पकवान तिलया ते 'तेलदग्धनिमंजन' १, तिलक्कृद्दि माहे जों गुड आदि घणा घाल्या होइ ते वासी राख्या पीछे विगयगत २, लाक्षा आदि द्रव्ये करी पच्यो तेल ३, औषध पची नितार्या तेल ४, तेलना मल ५; ए ५ तेलनी.

अथ गुडनी ५—साकरना गुलवाणी १, उकालिउ २, गुडनी पात ३, खांडकी राव ४, अधकटिउ इक्षुरसः ए पांच गुडनी.

अथ पकवाननी ५—तवी भरी घीकी पूडे करी सगली भरी तिहां जे पाछे पूडा तले ते १, नवा घी अणघाले तवीमें जे तीन पूर उत्तर्या पाछे जे पकवान उतरे ते २, गुडधाणी ३, पिंडला कढाइहीमें सोहाली करी पाछे तिणे घी खरडी कडाहीमें जे लापसी आदिक करे ते ४, खरडी तवी में जे पूडा कर्या ५. ए पांच पक्षानना विगयगत भेद. एवं ३०. ए नीवीमें लेणे नहीं कल्पते, गाढा कारण हुइ तो वात न्यारी.

अथ २२ अभक्ष्य लिख्यन्ते-गाथा-

"'पंचुबर(रि) ५ चउ विगई ९ हिम १० विस ११ करने य १२ सन्वमट्टी १३ य । रयणीमोयण १४ वयंगण १५ बहुबीय १६ मणंत १७ संघाणा(णं) १८ ॥ १ ॥ विदलामगोरसाइं १९ अग्रुणियनामाइं पुष्फफलयाइं २० । तुच्छफलं २१ चलियरसं २२ वज्जह वज्जाणि बावीसं ॥ २॥"

इति गाथाद्वयं अनयोरर्थः — बडवंटा १, पीपलवंटा २, गूलिर ३, पीलुखण ४, कठुंवर ५; ए ५ 'उंवर' कहीए. इन पांचो माहै मसाने आकारे घणा त्रस जीव भर्या होइ हे तिस वास्ते अभस्य ५; मधु १, माखण २, मध ३, मांस ४ ए माहे तद्वर्णे निरंतर संमूच्छिम पंचेंद्री उपजे इस वास्ते अभस्य; माखण इहां छाछेथी अलग हुया जानना ९; हेमनि केवल असंख्य अपकाय भणी अभस्य १०; विसउदर माहिला गंडोला आदि सर्व जीवने मारे अने मरण समय असावधानपणाना कारण ११, करहा गडाओले असंख्याता अपकाय भणी अभस्य १२; खडीमरुहंड प्रमुख सर्व जातिनी मट्टी, मींडक आदिक पंचेंद्री जीवनी उत्पत्ति भणी अने आम वात आदि रोग उपजे तिस वास्ते अभस्य १२; रात्रिभोजन एह लोक परलोक विरुद्ध १४; बहु बीजा पंपोट, रींगणा आदि फल जेह माहे जितने बीज ते माहे तीतने जीव १५;

१ पश्चोदुम्बरी चतस्रो विकृतयो हिमं विषं करकं च सर्वमृत्तिका च। रजनीभोजनं वृन्ताकं बहुवीजमनन्त(कायिकं) सन्धानम्।
 द्विदलामगोरसे अज्ञाननामानि पुष्पफलानि । तुच्छफलं चलितरसं वर्जत वर्ज्यानि द्वाविश्विम् ॥

घोलवडा जे काचा गोरस माहें घाल्या वडा हुइ ते अभक्ष्य, तत्काल जीवनी उत्पत्ति होइ है, एवं सर्व मूंग आदि दो दल जानना. जेहनी दो दाल होइ अने घाणी पीड्या तेल न निकले ते काचा गोरसमे मिल्या अभक्ष्य ए विदल आमगोरसका अर्थ १६; अनंतकाय ३२ अभक्ष्य ते बत्तीस आगे कहेंगे १७; संघाण कहींये अथाणा अर्थात् आचार विछ, अंब, पाडल, नींबू आदि ते जीवनी उत्पत्ति रस चलतके कारण अभक्ष्य १८; वइंगण काम दीपावे अने नींद घनी आवे अने आकार बुरा १९; अजाण फल फल आदि कदे (१) विषफल होइ २०; तुच्छ फल जिसके घणे खाणेसे तृपित न होइ २१; चिलत रस जे कुहिया अन आदिक उदन पहर उपरांत दही, १६ पहर, छाछ १२ पहर, करंबा ८ पहर, जाडी रावडी १२ पहर, पतली रावडी ८ पहर, छापसी ४ पहर, पूडा ४ पहर, रोटी ४ पहर, कांजीके चडे ४ पहर, कोरे चडे ४ पहर, खीचडी ४ पहर, पीछे ए सर्व रस चिलत होइ है जोकर तम आदि कारणे जलदी रस चले तो विवेकीये पहिला ही वरजणा, ए व्यवहारकी अपेक्षा है. एवं २२ वर्जनीयं.

अथ बत्तीस अनंतकाया—सर्व कंद जाति स्राणकंद १, वच्चकंद २, आली हलद २, आदउ ४, आला कथ्र ५, सताविर ६, विराली ७, कुमारि ८, थोहर ९, गिलो १०, लहसण ११, वांसना करल १२, गाजर १३, लाणा जिसक्तं वाली साजी करे १४, लोटो पोयणनउ कंद १५, गिरिकणिंका वेलि १६, नवा ऊगता किसलय पत्र १७, खेरिं सुया १८, थेगकंद १९, आला मोथ २०, लवण वृक्षकी छाल २१, खेलूडा २२, अमृतवेलि २३, मूली २४, भूमिफोडा जे वर्षाकाले छत्रडा उपजे २५, विल्हा जे कठुल धान्य अंक्र्रिया हुइ २६, जे छेद्या पीछे ऊगे २७, स्यरवाल जे मोटउ होइ २८, कोमल आंवली जेह माहे चीचकउ संचरिउ नही २९, पलंक ३०, आलू ३१, पिंडालू ३२, ए अनंतकाय प्रसिद्ध है और अनंतकायके लक्षण श्रीपन्नवणाजीके (प्रथम) पद (स. २५) थी जानना "चक्कगं भज्ञ" इत्यादिः

अथ मंग १४७ श्रावकके श्रीभगवतीजीसे जानने करण कारवण आदि. गुरुमुखे पचक्लाण करे; इहां गुरु अने श्रावक आश्री च्यार भांगा है. ते किम १ गुरु पचक्लाणनउ जाण अने श्रावक पचक्लाणनउ जाण, ए भांगा शुद्ध १, अने गुरु जाणकार पिण श्रावक अजाण तउ तेहने पचक्लाण संखेपथी सुणा कर भेद करावे ए भांगा शुद्ध २, तथा गुरु अजाण पिण श्रावक जाणकार ए भांगामां भरुउ ३, तथा श्रावक अजाण अने गुरु अजाण, ए भांगा सर्वथा अशुद्ध ४. एवं च्यार भांगा जानना.

अथ पचक्लाणकी ६ शुद्धि—(१) फासिय-विशुद्धिसे यथावत् उचित काल प्राप्त, (२) पालिय-वार वार सरण करणा, (३) सोहिय-गुरुदत्त शेष भोजन करणा, (४) तीरिय-आपणे काल तक पूरी करे, (५) किह्यि-भोजनके अवसर फेर सरण करे, (६) आराहिय-उपिले बोल पूरे करे ते आराध्या. अथवा छ शुद्धि प्रकारांतरे—सद्दृष्णा शुद्ध १, जानना शुद्ध २, विनयशुद्ध ३, अनुभासणशुद्ध ४, अनुपालनशुद्ध ५, भावशुद्ध ६, इस विध पच-वर्षाण पालीने अनंत जीव तरे, आगे तरसे इति समत्तं,

अध आगे आवकके बारह व्रतांके सर्व भंगका खरूप लिख्यते—

<u>मुक्त है है है है है है है है है है है है है </u>	अ १	मा	Ę	एक संयोग १	६	AT
११	8	प्रा	Ę	ए. सं. २	१२	
3 8	2 2 2 2 2 2 2 2	मृ	38	द्धि. " १	१ २ ३६	200
1 8	8	प्रा	ફ	ए. ,, ३	82	
2	8	मृ	રૂદ	द्धि. ,, ३	१०८	AL XX
रे ३	2	अ	६ ३६ २१६	हि. ,, दे त्रि. ,, १	१८ १०८ २१६	1
२		प्रा	Ę	य. ,, ४	રુષ્ઠ	1
२	3	मृ	3	द्धि. ,, ६	રશ્દ	12
२	1	अ	२१६	त्रि. " ४	૮६૪	4800
१३		अ	१२९६	चा. ,, १	२१६ ८६४ १२९६	
2	2	त्रा	६		30	1
3		मृ	३ ६	२ ,, १०	३६०	1
3 3	<u> </u>	स्ट अ मै	રફ ૨ १૬ ૧૨ ૬	र ;; ६० इर ;; ६० इर ;; ६० ध ;; ६	२१६०	14605
१३	<u> </u>	मै	१२९६	ઝ ,, ષ	६४८०	A
3 3	- 8	प	इंश्वर	٧ ,, و	રેફેં ૨૧૬૦ ૬ ૪૮૦ ૭૭ ૭ ૬	
। ३	8	मा	६	8 ,, & u 8 ,, & u 9 ,, & u 9 ,, & 9 ,, &	36	
, ३	3	मृ	३६	ર ,, १५	५४०	
ક	8	अ मै	૨ ૧૬ ૧ ૨૨૬	३ ,, २०	४३२०	12
१ ४	1	में	१२२६	ક <u>,,</u> રેલ	१९४४०	11,0690
ध	8	प	७७७६	۶ ,, ق	४६६५६	6
3 8	3 8	दि	४६६५ ६	£ ,, ?	44 430 8370 89880 85545 85545	
, V	1 8	प्रा	۶ - ۶	٤ ,, ७	કર	
६ ४	2	मृ	३६ २१६	२ ,, २१	७५६	
١	. 8	अ मै	२१६	१ ,, ७ २ ,, २१ इ ,, २५ ४ ,, ३५	७५६० ४५३६०	15
2 4	9	म	१ २९६ ७ ७७६	ક ,, રૂપ	४५३६०	644794
-		प	७७७६ भटना	५ ,, २१	१६३२९६	9
1		दि भो	धहदपदे २७९९३६	٤ ,, ७	३२६५९२	ı,
3 4	2	भो	404786	७ ,, १	१६३२९६ ३२६५९२ २७९९३६	
प प	2 2	प्रा मृ	Ę	۶ ,, ۷	8८	_ -
0 -	-	मृ	३६		१००८	Ì
१ ह	2	अ	२१६	३ ,, ५६	१२०९६	دا
<u>र</u> ह	१	मै	१२९६	8 ,, 90	९०७२०	6
श्री से से से से से	६ १	प	<i>३७७७</i>	५ ,, ५६	४३५४५ ६	4069600
ક્ષ ક		दि	४६६५ ६	६ २८	१३०६३६८	18
4 8	६ १	भो	२७९९३६	9 ,, 0	રેરે રે લેઇટેટ	
S S	३	अ	१६७९६१६	۷ ,, ۶	१६७९६१६	

प्रा	Ę	٤ ,,	٩	48	
편	३६	ર "	३६	१२९६	
अ	વરેદે	3 ,,	૮૪	१८१४४	œ
मै	१२९६	us ''	१२६	१६३२९६	३०३५३६०६
प	३०७६	1	૧ ૨૬	९ ७ ९ ७ ७ ६	3.
4	४६६५६	- ' - ' - ' - ' - ' - ' - ' - ' - ' - '	૮૪	३९१९१०४	200
दि भो	२७९ ९३ ६		३६	१००७७६९६	200
		· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	Š	रेपररहप्रध	
अ	<i>१६७९६१६</i>	6 "	રે	१००७७६९६	
सा	१००७७६ ९६			10000474	
प्रा	६	₹ "	१०	६०	
मृ	38	٦ ,,	છ ષ	१६२०	
अ	વશેરે	\$ ",	१२०	२५९२०	
मै	૧ ૨ ૧	· ·	२१०	१७२१६०	Ň
प	७८७६		२५२	१९५९५५२	3
6	४६६५६	<u> </u>	२१०	९७९७७६०	३८३४७५३४८
दि भो	२ ७९९३ ६		१२०	३३५९२३२०	ã
अ	१६७९६१६	9 "	84	७५५८२७२०	~
सा	१००७७६९६	۷ ,, ۹ ,,	१०	१००७७६९६०	
दे	६०४६६१७६	₹0 ,,	Ŗ	६०४६६१७६	
प्रा	Ę	₹ ,,	११	ĘĘ	
편	३६	3 "	५ ५	१९८०	
अ	વરેલે	3 "	१६५	३५६४०	
मै	१२०६	र ,, इ ,,	३३०	४२७६८०	100
	<u> </u>	6 55	કે દેર	३५९२५१२	6
हि	४६६५६	eq ,,	ક દ્દેર	२१५५५०७२	8
प दि भो	२७९ ९३ ६	1 10	330	९२३७८८८०	W.
अ	१ ६७९६१६		१६५	२७७१३६६४०	१९७७३२६७४२
सा	१००७७६९ <i>६</i>		५५	५५४२७३२८०	N
21	६०४६६१७६	90	રેરે	६६५१२७९३६	
दे पौ	३६२७९७० ५ ६	9.9	રે	३६२७९७०५६	
				444070014	-
प्रा	&	१ "	१२	७२	
मृ	३६	ે ર "	६६	२३७६	
अ	२१६	3 ,,	२२०	ध७५२०	Ì.
मै	१२९६	ક "	४९५	६४१५२०	100
प	इथथ्य	٠,,	७९२	६१५८५९२	N
दि	४६६५६	ξ,,	९२४	४३११०१ ४४	×0
भो	२७९९३६	9 ,,	७९२	२२१७०९३१२	7
अ	१६७९६१६	٤ ,,	४९५	८३१४०९९२०	१३८४१२८७२००
सा	१००७७६९६	۹ ,,	२२०	२२१७०९३१२०	00
a	६०४६६१७६	₹0 ,,	६६	३९९०७६७६१६	
हे. पी	३ ६२७९७०५६	११ ,,	१२	४३५३५६ ४ ६७२	
पा अ	२१७६७८२३३६	१२ "	Q	२१७६७८२३३६	

प्रथमवर्ते षद् भंगा त एव सप्तगणाः; कथं? षट्गुणने ३६ द्वितीयव्रतस ६ पद प्रथम-व्रतस्य प्रक्षेप्यन्ते यथा ४८: एवं सर्वत्र ७ गुणाः षदप्रक्षेपः

वतस्य प्रक्षप्यन्तं यथा ४८; एव सर्वत्र ७ गुगाः षद्प्रक्षपः		1.0
प्रा प्रा १,२,३,४,५,६ भंगा एकसंयोगे १. स्र	१,२,३,४,५,६, ३६ ६६,६,६,६,६ संयोग २	
प्रा १११११ प्रा २२२२२ मृ १२३४५६ मृ १२३४५६ अ ६६६६६ अ ६६६६६ त्रिकसंयोग ३	प्रा ३३३३३३ सृ १२३४५६ अ ६६६६६६	
प्रा ४४४४४४ वि प्रा ५५५५५ वि ६६६६६	एवं ३६, षट्र षट्त्रिंशद्भि २१६, एवं अग्रेऽपि भावना	ः भंग कार्या
प्रा १११११ प्रा ४४४४४४ मु १२३४५६ मु १२३४५६	प्रा ९ १ ९	9
प्रा २ २ २ २ २ प्रा ५ ५ ५ ५ ५ एवं ३६, प्रथम जतस्य पट्र, मृ १ २ ३ ४ ५ ६ मृ १ २ ३ ४ ५ ६ द्वितीयज्ञतस्य पट्र, एवं १२,	प्रा ९ २ १८ मृ ८१ १ ८१	९९
प्रा ३ ३ ३ ३ ३ ३ प्रा ६ ६ ६ ६ ६ ६ मु १ २ ३ ४ ५ ६ मु १ २ ३ ४ ५ ६	प्रा ९ ३ २७ मृ ८१ ३ २४३ अ ७२९ १ ७२९	

एवं अग्रेतन अष्ट यंत्र ज्ञेयं १२ मे

३३३	222	१११	क का
२३१	३२१	३२१	अ नु
१३३	३९९	३९९	लब्ध

नव भंग्युक्त २ भेद ४९ भंगयंत्र. म १ व २ का ३ मावा ४ माका ५ वाका ६ मावाका ७ कर १ करा २ कराकरा ३ सप्त त्रि २१; एह एकवीस भंगाका खरूपम्

नव भङ्ग्या तु प्रथमवर्ते भङ्गा नव ९, ततो द्विकादि वर्ते संयोगे दशगुणित नवकप्रक्षेप-क्रमेण तावद् गन्तच्यं यावदेकादशवेलायां द्वादशवतसंयोगभङ्गसङ्ख्या ९९९९९९९ ९९९; ए सर्व नवभंगीनां भांगा

२ २ ३ २ १ ३	१ ३२१ किका	षट्रमंग्यु	त्तरमेद २१ भंगयंत्रम्
प्रा मृ	९ ८१	१ २	१०८
अ भै	७२९	६६ २२०	१६०३८०
म प ८	६५६१	४९५	३२४७६९५
	५९०४९	७९२	४६८६६८०८
दि	५३१४४१	९२४	४९१०५१४८४ .
भो	४७८२९६९	७९२	३७८८१११४४८ .
अ	४३०४६७२१	धर्	२१३०८१२६८९५
सा	३८७४२०४८९	१२०	८५२३२५०७५८०
दे	३४८६७८४४०१	ફે ફે	२३०१२७७७४६६
पौ	३१३८१०५९६०९	ફે સ	३१९६७१०३०१८३०८
पा अ	ર્ટ્ડરેકેરેલ્પર્ક્કેટર	ર્	२८२४२९५३६४८१

	lere l		1.		1	<u> </u>
	प्रा	२१	1	१२	२५२	
E	मृ	કક ર		६६	२९१०६	١.
भंग न्यायेन	अ	९२६१	12	२०	२०३७४२०	
R	मै	१ ९ ੪ ੪૮ १	ક	९५	९६२६८०९५	
크.	प	४०८४१० १	৩	९२	३२३४६०७९९२	
	दि	૮५ <u>७६६१</u> २१	९	રઇ	७९२४७८९५८०४	
de la	भो	१८०१०८८५४१	ঙ	९२	१ध२६ध६२१२धध७२	
एकविंशति	अ	३७८२ २८५९३६१	ક	९५	१८७२२३१५३८३६९६	ľ
6	सा	७९४२८००४६५८१	२	२०	१७४७४१६१०२४७८२०	١
	दि	१६६७९८८०९७८२०१		देह	११००८१२१४४५६१२६६	١.
5	10	३५०२७७५००५४२२२१		१२	४२०३३३०००६५०६६४२	
	पौ अ	७३५५८२७५११३८६६४१		१	७३५५८२७५११३८६६४१	
9	प्रा	86		१२	466	
काका अनु मवंति	मृ	૨૪૦૧		६६	१ ५८४६६	
न क	अ	११७६ँ४९		१२०	२५८८२७८०	l
काका मवंति	मै	<i>બહે</i> ફેંકેટે૦૧		९५	२८५३५७६४९५	
. 10° 7+	प	૨૮ ૨૪૭५૨४९	- 1	९२	२२३७२०३९७२०८	l
मंत्र	दि	१३८४१२८७२०१	- 1	રક	१२७९९३४९३७३७२४	١
में ख़ इ	भो	६७८२३३०७२८४९		९२	५३७१५२६७३६९६४०८	l
- 0	अ	३३२३२९३०५६९६०१		९५	१६४५०३००६३१९५२४९५	
, कार गुणा ४	स	१६२८४१३५९७९१०४४९		२०	३५८२५०९९१५४०२९८७८०	١.
र कार गुणा ४	2	७९७९२२६६२९७६१२००१		६६	५२६६२८९५७५६४२३९२०६६	١
अतु सप्त	दे पौ	३९०९८२१०४८५८२९८८०४९	- 1	१२	४६९१७८५२५८२९९५८५६५८८	
करा सप्त स	पा अ	१९१५८१२३१३८०५६६४१४४०१	,	१	१९१५८१२३१३८०५६६४१४४०१	
प्रा म् अ मै प दि		१४७	१२	१७६१	ક	
मृ		૨ ૧૬૦૧	६६		६१९४	1
अ		ર ૧ હેલ્પેર ર			८३५०६०	l
मै					३३९६९६०९५	١
प		६८६४१४८५५०७				1
दि		१००९०२९८३६९५२९	65%	635	38346 <3888 9 < 6	
2		१४८३२७३८६०३२०७६३		88199	કે ં ઉપે ર ેડ્ડ હેર્કે ૭૪૦૪૪૨ ૬	ļ
मो		२१८०४१२५७४६७१५२१ ६ १			९३०४२२४६२४०३१९६९५	
अ		३२०५२०६४८४७६७१३६७६६७	220		१४५४२६६४८७७००८८६७४०	
सा	Ði	<i>३२०५२०६</i> ८८८७५५ <i>५५७५५</i> ७ ११६५३५३२६०७६९१०४७०४९	६६		२६९१३३१५२१०७६० ९१० ५२३४	
भो अ सा दे पौ अ		५१,२५२,५२५२०७ <i>५</i> ८,०७७७८ ६१३९६९२९३३३०५८३९१६२०३	१ २	7325	१३५६८३१५१९९६७००६९९४४३६	
पौ 🥠			8	333	रे१५४०६४८६११९५९३८३५६८१८४१	
31 33	3034	<i></i> ४०६४८६१६९५९३८३५६८१८४१	~	2226	of loadocall stated that and	

एकविंशतिभङ्गाः—प्रथमत्रते एकविंशतिभङ्गास्ततो द्विकादित्रतसंयोगे द्वाविंशतिगुणितं एकविंशतिपक्षिपक्रमेण तावद् गन्तव्यं यावदेकादशवेलायां द्वादशत्रतसंयोगे भङ्गसङ्ख्या । एकोनपञ्चाशद् भङ्गाः—प्रथमत्रते एकोनपञ्चाशद् भङ्गास्ततो द्विकादित्रतसंयोगे पञ्चा- शद्गुणितं एकोनपञ्चाशत्पक्षेपक्रमेण तावद्०।

सप्तचत्वारिंशत्शतमङ्गाः---प्रथमत्रते सप्तचत्वारिंशत्शतं मङ्गाः द्विकादिसंयोगे अष्टचत्वारिंशत्शतगुणितं सप्तचद्वारिंशत्शत-

अतिथि० १२	1	इंस्ट्रेड्डिड्डिड्डिड्ड	283835520	१०८८३९११६८	१४५११८८२२४	१८१३६८५२८०	१२ सं०	र१७६७८२३३६
पौषध ११		30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 30 3	१२०९३२३५२	१८१३९८५२८	त्रक्ष क्षेत्र हे त्र स्व	३०२३३०८८०	११ सं०	इ०८६६१७६ इहर७९७०५६
दिशा० १०	\uparrow	ঽ৽ঽঀঀ৽৽৽	देश्वर्धा	३०२३३०८८	८०३१०८ ४	त०३८८८०५	१० सं०	
सामा० ९		उर्देष्ट्रका	टेहर दे प्रहे हे इंटर दे प्रहे हे हैं	78772604 707887	8382393 8893333	6366860 6386060	० सं०	उ७६९ ३६ १६७९६१६ १००७७६९६
अन० ८		र७६९३६	287846	79860	220,099	१३९९६८	८सं०	१६७९ <i>६</i> १ <i>६</i>
भोगो० ७	भ	w w 2	के हर हर े	१३९९६८	823376	रवस्थ	७ सं०	२७६५३६
दिस १	তা	3999	2229	रहहर	त्र०११६	3<<<<	ह सं०	35258
मिर् ५	P.	w or or	३५६ ३	3666	8284	028	द संव	3000
मध्य	1	85°	30 m² 30	30	20 W V	gco goco	क्र	२१६ १२९६
अं० स		ur.	rs	20%	% % %	٥ ٧	अस.	w.
म् ० २ अ० ३		w	8	22	30	w o	अस.	w
४ ०।४	मने करी करूं नही	मने करी कराबुं नही १	बचने करी कर्क नही २	वचने करी कराबूं नही ३	काया करी ककं नही ४	काया करी करावें नही ९	१ संयोगी २ सं०३ सं०४ सं०	as

इति सर्वेत्रतानां मङ्गोत्पत्तिकारिका मंतव्या इति श्रावकत्रतानां मङ्गाः समर्थिताः । इति आत्मारामसङ्गलितायां संवरतत्त्वं संपूर्णम् ।

अथ 'निर्जरा' तत्त्व लिख्यते—अथ 'निर्जरा' द्राब्दार्थ — 'निर्' अतिशय करके 'वृ' कहतां हानि करे कर्मपुद्रलनी ते 'निर्जरा' कहीये. अथ निर्जराके वारा भेद लिख्यते — अन्तर्गत १, ऊनोदरी २, भिक्षाचरी ३, रसपरित्याग ४, कायक्रेश ५, प्रतिसंलीनता ६; प्राथित १, विनय २, वैयावृत्त्य ३, खाध्याय ४, ध्यान ५, व्युत्सर्ग ६; एवं १२, पहेले ६ भेद बाह्य निर्जराके जानने; आगले ६ भेद अभ्यंतर निर्जराके जानने, तपवत्, इस तरे निर्जराके भेदोंका विस्तार उववाइ शास्त्रसे जानने, इहां तो किंचित् मात्र ध्यान च्यारका स्तरूप लिख्यते श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणविरचित ध्यानदातकथी।

अथ ध्यानखरूप दोहरा-

शुक्त ध्यान पावक करी, करमेंधन दीये जार; वीर धीर प्रणष्ठ सदा, भवजल तारनहार १ अथ आर्त्ताध्यानके चार भेद कथन. सर्वर्धया इकतीसा-द्वेषहीके बस पर अमनोग विसे घर तिनका विजोग चिंते फेर मत मिलीयो गूल कुण्ठ तप रोग चाहे इनका विजोग आगेक्सं न होय मन औषधिमें भिलियो राग बस इष्ट विसे साता सुष माहि लिये नारी आदि इष्टके संजोग भोग किलियो इंद चंद धरनिंद नरनको इंद थऊं इत्यादि निदान कर आरतमे झिलियो १ अथ खामी अने लेइया कथन. सर्वर्ड्या ३१ सा— राग द्वेष मोह भयों आरतमे जीव पर्यो बीज भयो जगतरु मन भयो आंध रे किसन कपोत नील लेसा भइ मध मही उतकृष्ट जगनमे एकही न सांध रे आरतके वस पर्यो नर जन्म हार कर्यो चलत दिषाइ हाथ चढ चहूं कांध रे आतम सयाना तोकूं एही दुषदाना जाना दाना मरदाना है तो अब पाल बांघ रे २ अथ आर्तके लिंग-रोद करे सोग करे गाढ खर नाद करे हिरदेक्नं क्रुट मरे इष्टके विजोग ते चित्त मांजि पेद करे हाय हाय साद करे वदन ते लाल गिरे कप्टके संजोग ते निंदे कृत आप पर रिद्धि देव चित ताप चाहे राग फाहे मेरे ऐसा क्यु न जोग ते विसेका पिया सामन आसा पासा भासा वन आलसी विसेमे गृद्ध मृढ मित जोग ते ३ इति आर्तध्यान संपूर्णम् अथ रौद्र ध्यानके चार भेद— निर्घूण चित्त करी जीव वध नीत धरी वेध बंध दाह अंक मारण प्रणाम रे माया झूठ पिशुनता कठन वचन भने एक च (ब्र)क्ष जग मने नाना नहीं काम रे पंचभूतरूप काया देवकूं कुदेव गाया आतम सरूप भूप नही इन ठाम रे छाना पाप करे लरे दुष्ट परिणाम धरे ठगवासी रीत करे दूजा भेद आम रे प्र

पर धन हरे कोध लोभ चित धरे दूर दिल दया करें जीव वध करी राजी है पापसे न डरे कष्ट नरकके गरे परे तिनकी न भीत करें कहें हम हाजी है मांस मद पान करें भामनि लगावे गरें रात दिन काम जरें मन हूथे राजी है नरककी आग जरें जमनकी मार परें रोय रोय मरे जिहां अला है न काजी है ५ अथ चौथा भेद—

साद आद साधनके धनकूं समार रपे कारण विसेके सब मेलत महान है वीणा आद साद पूर पूतरी गंध कपूर मोदक अनेक क्रर ललना सुहान है अमनोगसे उदास दुष्ट मनन विसास पर घात मन धरे मलिन अग्यान है आतमसह्य कोरे तप जप दान चोरे ग्यानह्य मारे कोरे टरे रुद्र ध्यान है ६ अथ स्वामी—

राग द्वेस मोह भरे चार गित लाभ करे नरकमे परे जरे दुखकी अगनसे किसन कपोत नील संकलेस लेस तीन उतिकरू(कृ)ष्ट रूप भइ गइ है जगनसे मोहकी मरोर पगे कामनीके काम लगे निज गुन छोर भगे होरकी लगनसे एही रीत जिन टारी भय है घरम धारी मात तात सुत नारी जाने है ठगनसे ७ अथ लिंग ४ कथन—

दिव माहे बहु वार जीव वध आदि चार चिंतन कर करत लिंग प्रथम कहातु है बहु दोस एक दोन तीन चार चिंते सोय मोहमे मगन होय मूढ ललचातु है नाना दोस अमुककूं अमुक प्रकार करी मार गारु पार डारु रिदेमे ठरातु है आमरण दोस फाही अंतकाल छोडे नाही जगमे रुलाइ भव अमण करातु है ८ अथ कृत(कर्त)व्य—

रुद्रध्यान पर्यो जीव पर दुष देष कर मनमे आनंद माने ठाने न दया लगी पाप करी पछाताप मनसे न करे आप अपर करीने पाप चिते मेरिं झालगी किसकी न सार करे निरद्यी नाम परे करथी न दान करे जरे कामदा लगी कही समझाया फिर जात उर झाया समझे न समझाया मेरे कहे की कहा लगी ९

इति रौद्र ध्यान संपूर्णम् ॥ २ ॥ अथ धर्मध्यानका स्वरूप लिख्यते—द्वार १२— भावना १, देश २, काल ३, आसन ४, आलंबन ५, क्रम ६, ध्यातव्य ७, ध्याता ८, अनुप्रेक्षा ९, लेश्या १०, लिंग ११, फल १२. तत्र प्रथम भावना ४—ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३ वैराग्य ४. अथ प्रथम 'ज्ञान'—भावना, सवईया इकतीसा—

यथावत् जोग बही गुरुगम्य ग्यान लही आठ ही आचार ही ग्यान सुद्ध धर्यो है ग्यानके अभ्यास करी चंचलता दूर दरी आसवास दूर परी ग्यानघट भर्यो है

प्रकट तुरंग रंग क़दित विहंग खंग मन थिर भयो छं निवात दीप जयों है ज्यान सार मन धार विमल मति उजार आतम संभार थिर ध्यान जोग कर्यों है १ इति 'ग्यान' भावना. अथ 'दर्शन'—भावना—

संखा कंखा दूर करी मूढता सकल हरी सम थिर गुन भरी टरी सब मोहनी मिथ्या रंग भयो भंग कुगुर कुसंग फंग सतगुर संग चंग तत्त वात टोहनी निर्वेद सम मान दयाने संवेग ठान आसित करत जान राग द्वेस दोहनी ध्यान केरी तान धरे आतमसरूप भरे भावना समक करे मित सोहनी १ इति. अथ 'चारित्र'—भावना—

उपादान नृतन करम कोन करे जीव पुन्व भव संचित दगध करे छारसी सुभका गहन करे ध्यान तो धरम धरे विना ही जतन जैसे चाकर जुहारसी चारतको रूप धार करम पषार डार मार धार मार बूंद गिरे जैसे ठारसी करम कलंक नासे आतमसरूप पासे सत्ताको सरूप मासे जैसे देपे आरसी १ इति. अथ 'वैराग'—भावना—

चक्रपति विभो अति हलधर गदाधर मंडलीक रान जाने फूले अतिमानमे रतिपति विभो मति सुखनक मान अति जगमे सहाये जैसे वादर विहानमे रंभा अनुहार नार तनमे करे सिंगार धिनक तमासा जैसे वीज आसमानमे पवन झकोर दीप बुझत छिनकमा जिएसे बुझ गये फिर आये न जिहानमे १ खासा खाना खाते मनमाना सुख चाते ताते जानते न जात दिन रात तान मानमे संदर सरूप वने भूपनमे वने वने पोर समेसने अने वच मद मानमे गेह नेह देह संग आस लोभ नार रंग छोरके विहंग जैसे जात असमानमे पवन झकोर दीप बुझत छिनकमां जिऐसे बुझ गये फिर आये न जिहानमे २ रोयां रीकी घरे परी रापत न एक घरी प्रिया मन सोग करी परीकूने जाइ रे माता हुं विहाल कहें लाल मेरो गयो छोर आसमान माही मेरी पूरी हुं न काह **रे** मिल कर चार नर अरथीमें घर कर जगमे दिखाइ कर कूटे सिर माइ रे पीछे ही तमासा तेरो देवेगा जगत सब आपना तमासा आप क्यूं न देवे भाइ रे ? ३ हाथी आथी छोर करी धाम वाम परहरी ना तातां तोर करी घरी न ठराइ रे षान पीन हार यार कोउ नहीं चले नार आपने कमाये पाप आप साथ जाइ रे सुंदरसी वर् जरी छारनमे छार परी आतम ठगोरी भोरी मरी घोषो षाइ रे पीछेहि तमासा तेरो देवेगा जगत सब आपना तमासा आप क्यूं न देवे भाइ रे ? ४ इति 'मावना' द्वार संपूर्णम्. अथ 'देचा' द्वारमाह-कुशीलसंगवर्जन सवईया इकतीसा-भामनि पसु ने षंड रहित स्थान चंग विजन क्रसील जनसंगत रहत है धूतकार १ हस्तिपार २ सवतिकार ३ नार ४ छातर पवनहार ५ कुट्टिनी सहतु है

नट विट भांड रांड पर घर नित हांड एही सब दूर छांडक 'सील' कहतु है ध्यान दृढ मुनि मन सुन्य गृह ग्राम बन तथा जना कीरण विसेस न लहत है १ मन वच काये साधि होत है जहां समाधि तेही देस थानक धियानजोग कहे है पृथी (थ्वी) आप तेज वन वीज फूल जीव घन कीट ने पतंग भृंग जीव वधन हे है ऐसा ही सथान ध्यान करनेके जोग जान संग एकलो विसेस नही लहे है एही देस द्वार मान ध्यान केरा वान तान भिष्ट कर अरि थान सदा जीत रहे है २ इति 'देश' द्वार २. अथ 'काल' द्वारमाह-दोहरा-जोग समाधिमे वसे, ध्यान काल है सोय; दिवस धरीके कालको, ताते नियम न कोय १ इति 'काल' द्वार ३. अथ 'आसन' द्वार-दोहरा-सोवत बैठे तिष्ठते, ध्यान सवी विध होयः तीन जोग थिरता करो, आसन नियम कोय १ इति 'आसन' द्वार ४, अथ 'आलंबन' द्वार, सर्वईया इकतीसा— वाचन पूछन कित बार बार फेरे नित अनुपेहा सुद्ध मेहा धरम सहतु है समक श्रुत समाय देस सब वृत्ति थाय चारो ही समाय धाय लाभ लहतु है विषम प्रसाद पर चरवेको मन कर रजुकूं पकर नर सुपसे चरतु है ऐसो 'धर्म' ध्यान सौध चरवेको भयो बौध वाचनादि 'आलंबन' नामजुं कहतु है १ इति 'आलंबन' द्वार ५. अथ 'क्रम' द्वार-योगनिरोधविधि, दोहरा-

प्रथम निरोधे मन सुद्धी, वच तन पीछे जान; तन वचन मन रोधे तथा, वचन तन मन इक ठान १ इति 'क्रम' द्वार ६. अथ 'ध्यातार' द्वार, सबैधा ३१ सा— धरमका ध्याता ग्याता ग्रुनिजन जग त्राता जगतक्तं देत साता गाता निज गुणने छोरे सब परमाद जारे सब मोह माद ग्यान ध्यान निराबाद वीर धीर थुणने खीण उपसंत मोह मान माया लोभ कोह चारों गेरे खोह जोह अरि निज ग्रुणने आलम उजारी टारी करम कलंक भारी महावीर वैन ऐननीकी मांत सुणने १ इति 'ध्यातार' द्वार ७. अथ 'ध्यातव्य' द्वार. प्रथम आज्ञाविज(च)य— नियुन अनादि हित मोल तोलके न कित कथन निगोद मित महत प्रभावना भासन सरूप धरे पापको न लेस करे जगत प्रदीप जिनकथन सुहावना जड मित बुझे नहि नय भंग छुझे नहि गमक परिमान गेय गहन भुलावना आरज आचारजके जोग विना मित तुच्छ संका सब छोर वाद वारके कहावना १

अथ अपायविज(च)य—

क्कडुंबके काज लाज छोरके निलज्ज भयो ठान तअका जतन सीत घाम सहे है चिंता करी चकचूर दुपनमें भरपूर उड गयो तननूर मेरो मेरो कहे है पाप केरी पोटरी उठाय कर एक रोतूं रींक झींक सोग भरे साथी इहां रहे है नरक निगोद फिरे पापनको हार गरे रोय रोय मरे फेर ऊन सुख चहे हैं २

अथ विपाकविंज(च)य—

करम सभाविषत रस परदेस मित मन वच काये थित सुभासुभ कर्यो है मूल आठ मेद छेद एकसो अठावना है निज गुन सब दवे प्राणी भूल पर्यो है राजन ते रंक होत ऊंच थकी नीच गोत कीट ने पतंग भूंग नाना रूप धर्यो है छेदे जिन कर्म भ्रम ध्यानकी अगन गर्म मानत अनंग सर्म धर्मधारी ठर्यो है ३

अथ संठाणविज(च)य—

आदि अंत बेहूं नही वीतराग देव कही आसित दरव पंचमय खयं सिद्ध है नाम आदि भेद अहुपुव्व धार कहे बहु अधो आदि तीन भेद लोक केरे किद्ध है पिति वले दीप वार नरक विमानाकार भवन आकार चार कलस महिद्ध है आतम अपंड भूप ग्यान मान तेरो रूप निज हग पोल लाल तोपे सब रिद्ध है थ इस सबईयेका भावार्थ आगे यंत्रोमे लिखेंगे तहांसे जानना इति संस्थानविज(च)य इति 'ध्यातव्य' द्वार ८.

अथ 'अनुभेक्षा' द्वार-ध्यान कर्या पीछे चितना ते 'अनुप्रेक्षा.' सबईया ३१ सा, समुद्रचितन—
आपने अग्यान करी जम्म जरा मीच नीर कवाय कलस नीर उमगे उतावरो
रोग ने विजोग सोग खापद अनेक थोग धन धान रामा मान मृढ मित वावरो
मनकी घमर तोह मोहकी भमर जोह वातही अग्यान जिन तान वीचि धावरो
संका ही लघु तरंग करम कठन द्रंग पार नही तर अब कहूं तो है नावरो १
अथ पोतवरनन—

संत जन विणग विरतमय महापीत पत्तन अन्य तिहा मीषरूप जानीये
अविच तारणहार समक वंधन डार ग्यान है करणधार छिदर मिटानीये
तप वात वेग कर चलन विराग पंथ संकाकी तरंग न तें पोम नही मानीये
सील अंग रतन जतन करी सौदा भरी अवाबाध लाभ धरी मोष सौध ठानीये २
इति अनुप्रेक्षा द्वार ९. अथ अनुप्रेक्षा चार कथन, सवैया ३१ सा—
जगमे न तेरो कोउ संपत विपत दोउ ए करो अनादिसिद्ध भरम भ्रलानो है
जासो तंतो माने मेरो तामे कोन प्यारो तेरो जग अंध क्रूप झेरो परे दुख मानो है
मात तात सुत श्रात भारजा बहिन आत कोइ नही त्रात थात भूल श्रम ठानो है
थिर नही रहे जग जग छोर धम्म लग आतम आनंद चंद मोष तेरो थानो है ३
इति अनुप्रेक्षा द्वार ९. अथ 'लेइया' द्वारकथन, दोहरा—
पीत पउम ने सुक है, लेस्या तीन प्रधान; सुद्ध सुद्धतर सुद्ध है, उत्कट मंद कहान १
इति लेक्याद्वार १०. अथ 'लिंग' द्वार, सवैया इकतीसा—
धमा धम्म आदि गेय ग्यान केरे जे प्रमेय सत सरद्वान करे संका सब छारी है
आगम पठन करी गुरवैन रिदे धरी वीतराग आन करी स्वयंवोध भारी है

चार ही प्रकार करी मिथ्या अम जार जरी सतका सरूप घरी भय ब्रह्मचारी है आतम आराम ठाम सुमतिको करी वाम भयो मन सिद्ध काम फूलनकी वारी है १ इति 'लिंग'द्वारम् अथ 'फल'द्वार— कीरति प्रशंसा दान विने श्रुत सील मान घरम रतन जिन तिनही को दीयो है सुरगमे इंद भूप थान ही विमानरूप अमर समरसुप रंभा चंभा कीयो है नर केरी जो न पाय सुप सह मिले घाय अंत ही विहाय सब तोषरस पीयो है आतम अनंत बल अघ अरि तोर दल मोषमे अचल फल सदा काल जीयो है १ इति फलम्. इति धर्मध्यानं संपूर्णम् ३.

अथ शुक्क ध्यान लिख्यते-अथ 'आलंबन' कथन, दोहरा—
खंति आजव मार्दन, मुक्ति आलंबन मानः सुकल सौधके चरनको, एही भये सोपान १
इति आलंबन. अथ ध्यानक्रमस्बरूप, सबैया ३१ सा—
त्रिभुवन फस्यो मन क्रम सो परमानु विषे रोक करी धर्यो मन भये पीछे केवली
जैसे गारुडिक तन विसक्तं एकत्र करे डंक मुप आन धरे फेर भूम ठेवली
ध्यानस्प वल भरी आगम मंतर करी जिन वैद अनु थकी फारी मनने वली
ऐसे मन रोधनकी रीत वीतराग देव करे धरे आतम अनंत भूप जे वली १
जैसे आगई धनके घट ते घटत जात स्तोक एध दूर कीये छार होय परी है
जैसे घरी कुंड जर घर नार छेर कर सने सने छीज तज्ञं मन दोर हरी है
जैसे तत्तत्वे धर्यो उदग जर तपस्यो तैसे विभ्र केवलीकी मनगति जरी है
ऐसे वच तन दोय रोधके अजोगी भये नाम है 'सेलेस' तब ए जनही करी है २

अथ शुक्क ध्यानके च्यार भेद कथन, सवैया—
एक हि दरव परमानु आदि चित धरी उतपात व्यय ध्रविश्वित भंग करे है
पुन्व ग्यान अनुसार पर जाय नानाकार नय विसतार सात सात सात सत धरे है
अरथ विजन जोग सविचार राग विन मंगके तरंग सब मन वीज भरे है
प्रथम सुकल नाम रमत आतमराम पृथग वितर्क आम सविचार परे है १ इति प्रथम,
एक हि दरवमांजि उतपात व्यय ध्रुव मंग नय परि जाय एकथिर भयो है
निरवात दीप जैसे जरत अकंप होत ऐसे चित धोत जोत एकरूप ठयो है
अरथ विजन जोग अविचार तत जोग नाना रूप गेय छोर एकरूप छयो है
'एकतवितर्क' नाम अविचार सुप धाम करम थिरत आग पाय जैसे तयो है २ इति द्जा,
विमल विग्यान कर मिध्या तम दूर कर केवल सरूप धर जग ईस मयो है
मोपके गमनकाल तोर सब अधजाल ईपत निरोध काम जोग वस ठयो है
चन्न काय किया रहे तीजा भेद वीर कहे करम भरम सब छोरवेको थयो है
सपम तो होत किया 'अनिवृत्त' नाम लीया तीजा भेद सुकर सुकर दरसयो है ३ इति तीजा,

ईस सब कर्म पीस मेर नगरा जईस ऐसे भयो थिर धीस फेर नहीं कंपना कदे हीन परे ऐसो परम सुकल मेद छेद सब किया ऐही नाम याको जंपना प्रथम सुकल एक योग तथा तीनहीं में एक जोग माहे द्जा मेद लेइ ठंपना काय जोग तीजो मेद चौथ भयो जोग छेद आतम उमेद मोष महिल धरंपना ४ जैसे छदमस्य केरो मनोयोग ध्यान कह्यो तैसे विश्व केवलीके काय छोरे ध्यान ठेरे हैं विना मन ध्यान कह्यो पूरव प्रयोग करी जैसे छंभकारचाक एक वेरे हैं वीतराग वैन ऐसे मन करे थाप मन रुक गयो तो ही ध्यानस्वप लेरे हैं वीतराग वैन ऐन मिध्या नहीं कहें जैन ऐसे विश्व केवलिने कर्म दूर गेरे हैं ५ इति चौथा. अथ अनुप्रेक्षाकथन, सवैया ३१ सा— पापके अपथ केरी नरकमे दुप परे सोगकी अगन जरे नाना कष्ट पायो हैं गर्भके वास वसे मृत ने पुरीष रसे जम्म पाय फेर हसे जरा काल खायो हैं फेर ही निगोद वसे अंत विन काल फसे जगमें अभव्य लसे अंत नहीं आयो हैं राजन ते रंक होत सुष मान देप रोत आतम अपंड जोत धोत चित ठायो हैं १

अथ लेइयाकथन, दोहरा-

प्रथम भेद दो सुकलमें, तीजा परम वखानः लेक्यातीत चतुर्थ है, ए ही जिनमतवान १ अथ लिंगकथन, सर्वर्धया एकतीसा—

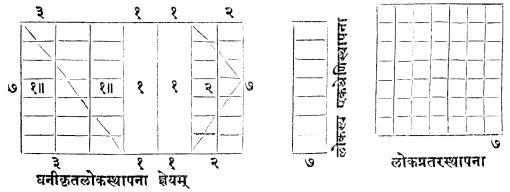
परीसहा आन परे ध्यान थकी नाही चरे गज मुनि जैसे परे ममताक्तं छोरके देवमाया गीत नृत मृढता न होत चित स्रपम प्रमान ग्यान धारे भ्रम तोरके दीपे जो ही नेत्रको ही सब ही विनास होही निज गुन टोही तोही कहूं कर जोरके घर नर नार धार धन धान धाम वार आतमसे न्यार धार डार पार दोरके १ इति लिंग. अथ फल-

देव इंद चंद पंद दोनोचर नारविंद पूजन आनंद छंद मंगल पठतु है नाकनाथ रंभापित नाटक विबुध रित भयो हे विमानपित सुप न घटतु है हलधर चक्रधर दाम धाम वाम घर रात दिन सुपभर कालयूं कटतु है जोग धार तप ठये अघ तोर मोष गये सिद्ध विस्त तेरी जयनाम यूं रटतु है १ इति फल. दोनो सुभध्यान धरे पापको न लेस करे ताते दोनो नहीं भये कारण संसार के संवर निजर दोय भाव तप दोनो पोय तप सब अघ खोय धोय सब छार के याते दोनो तप भरे जीव निज चित धरे करम अंधारे टारे ग्यानदीप जार के

करम कहर भूर आतमसे कीये दूर ध्यान केरे छरने तो मारे है पछार के १ अथ आतम कर्म ध्यान इष्टांतकथन—

वस्त्र लोह मही वंक मलिन कलंक पंक जलानल छर नूर सोधन करत है अंबर ने लोह मही आतमसरूप कही करत कलंक पंक मलिन कहत है

जलानल धर ध्यान आतम अधिष्टथान जलानल ग्यान भान मानके रहत है वसनकी मैल झरे लोह केरी कीटी जरे मही केरो पंक हरे उपमा लहत है १ जैसे ध्यान धर करी मन वच काय लरी ताप सोस भेद परी ऐसे कर्म कहे हैं जैसे वैद लंघन विरेचन उपध कर ऐसे जिनवैद विश्वरीत परठहे हैं तप ताप तप सोस तप ही उपध जोस ध्यान भयो तपको स रोग दूर थहे हैं ए ही उपमान ग्यान तपह्रप भयो ध्यान मार किर पान भान केवलको लहे हैं १ जैसे चिर संचि एध अगन मसम करे तैसे ध्यान छारहरूप करत कर्मको जैसे वात आमदृंद छिनमे उडाय डारे तैसे ध्यान टाह डारे कर्महरूप हर्मको जब मन ध्यान करे मानसीन पीर करे तनको न दुव धरे घरे निज सर्मको मनमे जो मोप वसी जग केरी तो (१) रसी आतमसहूप लसी धार ध्यान मर्मको १ अथ पिछले सवैह्रयेका भावार्थमे लोकसहूप आदि विवरण लिख्यते—



अथ घनीकृत लोकस्वरूप लिख्यते—अथ पुनः किस प्रकार करके लोक संवर्ल समचतुरस्र करीये तिसका स्वरूप कहीये हैं. स्वरूप थकी इह लोक चौदां रज्जु ऊंचा है, अने नीचे देश ऊन सात रज्जु चौडा है, तिर्यग्लोकने मध्य मागे एक रज्जु चौडा है, ब्रह्मदेव-लोकने मध्य पांच रज्जु विस्तीर्ण है, ऊपर लोकांते एक रज्जु चौडा है, शेष स्थानकमे अनि-यत विस्तार है. रज्जुका प्रमाण—'स्वयंभूरमण' समुद्रकी पूर्वकी वेदिकासे पश्चिमकी वेदिका लगे; अथवा दक्षिणनी वेदिकाथी उत्तरकी वेदिका पर्यत एक रज्जु जान लेना. ऐसे रह्मा इह लोकना बुद्धि करी कल्पना करके संवर्ल्य घन करीये है. तथाहि—एक रज्जु विस्तीर्ण त्रसनाडीके दक्षिण दिशावतीं अधोलोकको खंड नीचे देश ऊन रज्जु तीन विस्तीर्ण अनुक्रमे हाय मान विस्तारथी उपर एक रज्जुका संख्यातमे भाग चौडा अने सात रज्जु झहेरा ऊंचा एहवा पूर्वोक्त खंड लहने त्रसनाडीके उत्तर पासे विपरीतपणे स्थापीये, नीचला भाग उपर अने उपरला माग नीचे करी जोडना इत्यर्थः. ऐसे कर्या अधोवित्तं लोकका अर्ध देश ऊन चार रज्जु विस्तीर्ण विस्तीर्ण झहेरा सात रज्जु ऊंचा अने चौडा नीचे तो किहा एक देश ऊन सात रज्जु मान अने अन्यत्र तो अनियत प्रमाणे जाडा अर्थात् बाह(हु)स्यपणे है. अब उपरला लोकार्थ संवत्ती-

(की)ये है तिहां पिण रज्ज प्रमाण त्रसनाडीके दक्षिण दिशे रह्या ब्रह्मलोकके मध्य भाग थकी नीचला अने उपरना दो दो खंड, ब्रह्मलोकके मध्यमे प्रत्येक प्रत्येक दो दो रज्जु विस्तीर्ण उपर लोकने समीपे अने नीचा रत्नप्रभाने क्षुद्धक प्रतर समीपे अंगुल सहस्र भाग विस्तारे देश ऊन साढे तीन रज्ज प्रमाण दोनो खंडांने बुद्धि कर करे गृहीने तेहने उत्तरने पासे पूर्वोक्त रीत करके स्थापीये. ऐसा कर्या हुंतें उपरहे होकांनी अर्ध अंगुहना दो सहस्र भाग अधिक तीन रज्जु विस्तीर्ण हुइ. इहां चारो ही पंडांने छेहडे चार अंगुलना सहस्र भाग हुइ केवल एक दिशने विषे दोनो ही भागे करी एक ज अंगुल सहस्र भाग होइ एक दिग्वर्तीपणा थकी; इम अनेराइ जे दो भाग तिने करी एक सहस्र भाग हुइ; इस वास्ते दो भाग अधिकपणे कह्यो. देश ऊन सात रन्जु ऊंचा बाहल्य थकी ब्रह्मलोकने मध्ये पांच रन्जु बाहल्य अने अन्यत्र ओर जमें अनियत विस्तार. ऐसा ऊर्ध्व लोक गृहीने हेठला संवर्तिक लोकना अर्द्धने उत्तरने पासे जोडीये तिवारे अघोलोकना पंड थकी जे प्रतर अधिक हुइ ते खंडने ऊपरिला जोड्या खंडना बाहल्यने विषे उद्घीयत जोडीये. इम कर्या पांच रज्जु झझेरा किंहाएक बाहल्यपणे हुइ तथा हेठिले खंडने हेठे यथासंभव देश ऊन सात रज्जु बाहल्य पूर्वे कह्या है. ऊपरिला खंडना देश ऊन रज्जुद्दय बाहल्य थकी जे अधिक हुइ ते खंडीने ऊपरिला खंडना बाहल्यने विषे जोडीये. इम कर्या हुंते बाहल्य थकी सर्व ए चउरंस कृत आकाशनो खंड कितनेक प्रदे-शांने विषे रज्जना असंख्यातमो भाग अधिक छ रज्ज होइ ते व्यवहार थकी ए सर्व सात रज्जु वाहरुय बोलाये: जे भणी व्यवहार नय ते कछक ऊणा सात हस्तप्रमाण पट आदि वस्तने परिपूर्ण सात हस्त प्रमाण माने; एतले देश ऊन वस्तुने व्यवहार नय परिपूर्ण कहै. इस वास्ते एहने मते इहा सात रज्ज बाहल्यपणे सर्वत्र जानना अने आयाम विष्कंभपणे प्रत्येक प्रत्येक देश ऊन सात रज्जु प्रमाण हुया है ते पिण 'व्यवहार' नयमते सात सात रज्जु पूरा गिण्या. एवं 'व्यवहार' नयमते सब जगे सात रज्जु प्रमाण घन होइ तथा श्रीसिद्धांतमे जहां कही श्रेणीनाम न ग्राह्यो है तिहां सब जगे घनीकृत लोकनी सात रज्ज्ञप्रमाण लंबी श्रेणी जाननीः एवं प्रतर पिण एह घनीकृत लोकनो खरूप अनुयोगद्वारनी वृत्तिथी लिख्या है.

2 2 2 2	8888	<u>२ २ २</u>	पंडुक
प्रत र ार र प्रतररज्जुस्थापना	<u>। ४।४।४।४।</u> धनरज्जुस्थापना	र कि	

६४ पंडकका एक 'घन-रज्जु' होता है. १६ पंडकका एक 'प्रतर-रज्जु' होता है. ४ पंडकका एक 'स्विन-रज्जु' होता है. निश्चे लोकखरूप तो अनियत प्रमाण है. सो सर्वज्ञ गम्य है, परंतु स्थूल दृष्टिके वास्ते सर्व प्रदेशांकी घाटवाध एकठी करके एह खरूप लोकका जानना लोकनालिकावत्तीसीसे.

(१२०) अथ अर्घालोकमे नाम आदि नरकका खरूप चिंतवे तेहना यंत्रम्

नाम नरकका	नरक ७	घमा १	वंशा २	शैला ३	अंजना ४	अरिष्टा ५	मघा ६	माघ- वती ७
गोत्र सार्थक	" "	रत्नप्रभा	रार्कराप्रभा	वालुका- प्रभा	पंकप्रभा	धूमप्रभा	तमप्रभा	तमत- मप्रभा
पृथ्वीपिंड	000	१,८०,०००	१,३२,०००	१,२८,०००	१,२०,०००	१,१८, ०००	१,१६, ०००	१,०८, ०००
घनोद्धि	000	२०,०००		\longrightarrow	ए	व	म्	\rightarrow
घनचात	000	असंख्य योजन		\longrightarrow	ष्	व	म्	\rightarrow
तजुवात	000	"		\longrightarrow	प	च	म्	\rightarrow
आकारा	000	"			प्	घ	म्	\rightarrow
वलय	000	१२ योजन	१ २	१३	१४ योजन	१४	१ ५ व <u>ु</u>	१६ योजन
घनोद्धि- यलय	000	ξ,,	€ c. [us	(CV 12)34	· ,,	3	9 n/m	८ योजन
घनवात- बलय	000	શા ,,	८॥ योजन	५ यो०	५। ,,	५॥ यो०	५॥ यो०	ξ "
तनुवात- वलय	000	શા "	१ ७ १२	१ ४२	શાા ,,	कु ० इ	र व व व व त	٦ ,,
आकाश- वलय	000	अलोक		>	ष्	व	म्	\rightarrow
प्रतर	४२	१३	१२	९	9	५	3	8
शून्य पृथ्वी	.000	१००० योजन		>	ए	घ	म्	\rightarrow
प्रतर अंतर	000	११५८३ ^{हु} भा गा	९,७००	१२,३७५	१६,१६६ ³	२५,२५०	५२,५००	000
थावलि	000	۷	۷	۷	٤	٤	6	8
नरकावास	८४,००,०००	३०० लाख	२५ लाख	१५ लाख	१० लाख	३ लाख	२०,९९५	4
दिशा विदिग्	0 0	છ ્ ઇડ	इह इप	२५ २४	१ <i>६</i> १५	९ ८	ઝ	१
प्रमाण	000	असंख्य संख्य		\Longrightarrow	Ų Ų	व · व	म् म्	\rightarrow
उत्सेध	000	३,००० योजन	·		Q	व	म्	\rightarrow

अथ (१२१) दशभवनपतियंत्रम्

भुवन- गतिनाम	असुर-	नाग	सुवर्ण	विद्युत्	अग्नि	द्वीप	उद्धि	दिक्	पवन	स्तनित
		४४ लाख	३८ लाख		४० लाख					80
										लाख
	३० ,,	80 "	३४ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	३६ ,,	४६ ,,	३६ ,,
विमान- ारिमाण जघन्य	जम्बू- द्वीप			\rightarrow	Ų	व	स्			\rightarrow
मध्यम	संख्य योजन			\rightarrow	Ţ	व	म्			\rightarrow
	असंख्य ''			\rightarrow	ए	व	म्			\rightarrow
चिह	चूडा- मणि	फण	गरुड	वज्र	कलश	सिंह	अश्व	गज	मगर	वर्ध- मान
वर्ण	काला	पंडुर	कनक	अरुण	अरुण	अरुण	पंडुर	कनक	प्रियंगु	कनक
चस्त्र	राता	नीला	धवला	नीला	नीला	नीछा	नीला	धवला	संध्या- वर्ण	धवल
इन्द्र	चमर	धरण	वेणुदेव	हरिकंत	अग्नि- सिंह	पूरण	जलकांत	अमित- गति	वेलंब	घोष
a-24	वल	भूतानंद	वेनुदालि	हरिसिह	अग्नि- मानव	विशिष्ट	जलप्रभ	अमित- वाहन	प्रभंजन	महा- घोष
सामा- निक	६४,०००	६,०००			\rightarrow	ए	व	म्		\rightarrow
	६०,०००	६,०००			\rightarrow	ए	व	म्		\rightarrow
आत्म- रक्षक	२५६०००	२४,०००			\rightarrow	प	व	म्		\rightarrow
	280000	28,000				ए	व	म्		\rightarrow
त्राय- स्त्रिश	३३			\rightarrow	ए	व	म्			\rightarrow
अणिका	v			\rightarrow	ए	व	म्			\rightarrow
लोक- पाल	૪				Ų	व	म्			\rightarrow
अग्र-	4	६			\rightarrow	ए	च	म्		
महिषी	ų	ફ			1	Q Q	व	म्		
परिषद्	3			\rightarrow		- व	म्			\Rightarrow

Jain Education International

अथ (१२२) व्यंतर २८ का यंत्र तिर्यग् लोके चिंतवे

व्यंतरनाम	पिशाच	भूत	यक्ष	राक्षस	किन्नर	किंपुर- (रुष)	महोरग	गान्धवे
नगरसंख्या	असंख्य	·	\longrightarrow	ए	व	म्		\rightarrow
नगरपरि- माण	जंबूद्वीप	12.7		ų	व	म्		\rightarrow
मध्यम	विदेह		\longrightarrow	ए	व	म्		\rightarrow
जघन्य	भरतक्षेत्र		\longrightarrow	ए	व	स्		\rightarrow
चिह्न	कलंब	सुलस	वड वृक्ष	षडग	अशोक	चंपग	नाग	तुंबक
वर्ण	इयाम	इयाम	इयाम	धवल	नील	धवल	इयाम	इयाम
ba	काल	सरूप	पूर्णभद्र	भीम	किन्नर	सत्पुरुष	अति- काय	गीतरति
न्द्र	महाकाल	प्रतिरूप	मणिभद्र	महाभीम	किंपुरुष	महापुर- (रुप)	महा- काय	गीतयश
सामानिक	8000		\rightarrow	ए	व	स्		→
आत्मरक्षक	१६,०००		\longrightarrow	ए	च	म्		\rightarrow
अनीक	૭		\longrightarrow	g	च	म्		\longrightarrow
अग्रमहिषी	૪		>	Q	व	म्		<u>→</u>
परिषद्	જ્ઞ			ए	व	म्		\longrightarrow
व्यंतर लघु	अणपन्नी	पणपन्नी	इसिवाइ	भूयवाइ	कंदिय	महा- कंदिय	कुहुंड	पयगदेव
TS.	संनिहिय १	धाइ ३	इसि ५	ईसरप ७	सुवत्स ९	हास्य ११	श्वेत १३	पयंग १५
न्द्र	समाणि २	विधाइ ध	इ सिपाल ६	महेष ८	सुविशाल १०	हास्य- रति १२	महा- श्वेत १४	पयगे १६

(१२३) ज्योतिषचऋखरूप चिंतवे यंत्रम्

जंबूद्वीपे चन्द्रसूर्यसङ्ख्या	ર	२
मंडलांत र	चंद्र ३५ योजन, ३० भा., चूर्णि ४ भाग	सूर्यके २ योजन
पंकि	ર	ર
मंड लसंख्या	१५	१८४
मंडलक्षेत्र	५१० योजन ५६।६१ भा.	५१० योजन ४८ भा. ६१
लवणप्रवेश	३३० योजन ५६।६१ भाग	३३० योजन ४८ मा. ६१
जंबूद्वीपप्रवेश	१८० योजन	१८० योजन
अवधा मेरु पर्वत थकी	चंद्र चंद्रके ४४८२० योजन	सूर्य सूर्यके ४४८२० योजन
ज्योतिषचक्र आवाधा	मेरुथी ११२१ योजन	अलोकथी ११११ योजन

(१२४)

ज्योतिषी	ज्योतिषचक्र	चंद्र	सूर्य	ग्रह	नक्षत्र	तारक
समभूतलथी	७९० योजन	८८० योजन	८०० योजन	८८८ योजन	८८४ योजन	७९० योजन
विष्कंभ	१ रज्जु	५६।६१	४८ ।६१	श्व	१।४	१।८
उच्चत्व	११०	२८।६१	२४।६१	शिष्ठ	शेट	१।१६
અં∙	जघन्य	९९६४०	९९६४०	ñ	2	२६६ यो. ५०० घ.
त- र	उत्कृष्ट	१००६६०	१००६६०	57	77	१२२४२ यो ४०० घ.
गति	0 0	१ मंद	२ शीघ्र	३ शीव्र	४ शीव्र	५ शीघ्र
ऋद्धि	0 0	५ महा	४ महा	३ महा	२ महा	१ अल्प
विमानवाहक	0 0	१६,०००	१६,०००	८,०००	8,000	२,०००
अल्पबहुत्व	0 0	१ स्तोक	१ स्तोक	३ संख्येय	२ संख्येय	४ संख्येय

(१२५)

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीष
अंदरले मांडलेकी परिधि	3,84,069	२,७६८	ઝ ુલા	0	0	o
अंदरले मांडलेकी चक्षुस्पर्श	४७,२६३	३,२१५	२६	0	४	0
अभ्यंतरलेकी चाल	५,२५१	३,९१२	७७	ઇ	४	0
चक्षुस्पर्शका घटावना वधावना	८३	3,६०७	४१	હ	२	१
मुहूर्तकी चाल घटावना वधावना	o	२,३५०	१०	ર	૭	રા⊪

	योजन	धनुष	अंगुल	यव	जूका	लीप
परिधिका घटावना वधावना	१७	५,००६	४६	0	जूका 0 0 ॥ 3	0
बाहिरले मांडलेकी परिधि	३,१८,३१४	६,९५४	१५॥	0	0	0
बाहिरले मांडलेकी चाल मुहूर्तमे	५,३०५	१,९८२	५४	५	n	0
बाहिरले मांडलेकी चक्षुस्पर्श	३१,८३१	३,८९५	३९	દ્	3	0

(१२६)

संख्या	जंबृद्वीप	लवण	धातकी	कालोद्धि	पुष्कर	द्वीपो- द्धि	श्रेणयः	चंद्र सूर्य
चंद्र, सूर्य	२	ક	१२	ધ ર	७२	जंबू	१	२
नक्षत्राणि	५६	११२	३३६	१,१७६	२,०१६	लवण	२	४
त्रहा	१७६	३५२	१,०५५	३,६९६	६,३३६	धातकी	Ę	१२
तारका	१,३३,९५०	२,६७,९००	८,०३,७००	२,८२,९५०	४८,२२,२७०	कालो- दधि	२१	४२
,	कोडाकोडि र	पंज्ञा(ख्या) र	ो	पुष्कर	३६	७२		

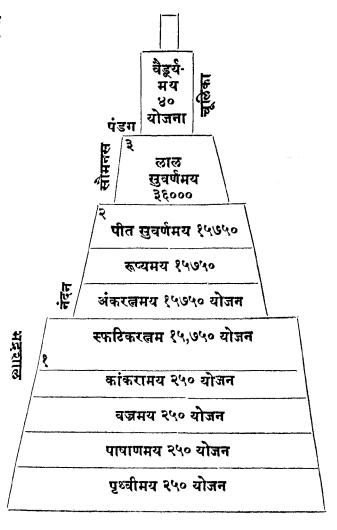
कर्कसंक्रान्ति ने प्रथम दिन सर्वे अभ्यंतर मंडल सूर्यना तापक्षेत्र स्थापना सर्वत्र यंत्र. ते दिन मान १८ महर्त, रात्रिमान १२ महर्त, मेरु थकी ४५,००० योजन जगती हे अने लवण समुद्र माहि २२,२२२ योजन अने एक योजनका तीजा भाग अधिक एतले बेहु मिलीने ७८,३३३ योजन एक योजनका तीजा भाग अधिक इतना तापक्षेत्र है लांबा अने अंधकार-क्षेत्रनी अभ्यंतरकी बाह मेरु पास ६३,२४५ योजन, एक योजनका दसीया पड भाग ६ जानने. बाहिरली बाह ६३,२४५ योजन, एक योजनना दसीया ६ भागः तापक्षेत्रनी अंतर बाह ९४८६ योजन, एक ्योजनना दसीया ९ भागः बाहिरली बाह ९४,०६८ योजन, एक योजनका दसीया ९ भाग है; इम अभ्यंतरले मांडले थकी बाहिर जाता हूया ताप क्षेत्र घटे, अंधकार वधे. शनि ९००, मंगल ८९७, बृहस्पति ८९४, शुक्र ८९१, बुघ ८८८-ग्रह उचल.

(१२७)

0	महाकलश	लघुकलश	0
संख्या	४	७,८८४	कलश
वलयसंख्या	एक वलय	९ वलय	वलय
विष्कंभ	१०,०००	१००	मुख
75	१ लाख योजन	१,०००	मध्य
93	१०,०००	१००	तले
ठीकरी	१,०००	१०	जाडी
त्रिभाग	जल	जल	उपरि
33	जल १, वायु २	जल १, वायु २	मध्य
59	वायु	वायु	तले

१ आ यंत्रतुं स्थान १२८ मा यंत्रनी बराबर उपर छे; परंतु १८९ मा पृष्ठ गत चित्रने आहीं स्थलसंकोचने लीधे स्थान नहि आपी शकावाथी आनो अहीं निर्देश करायो छे. Jain Education International

भूतले मेरपरिधि २१,६२३, भूतले मेरुविष्कंभ १०,०००, मेरु उपरि विष्कंभ १०००, मेरु उपरि परिधि ३१६२, मेरु मूलविष्कंभ १००९०३६, मेरु मूलपरिधि ३१९१० 🔐 . एक सहस्र योजनप्रमाण मेरका प्रथमकांड जानना, ६३ सहस्र योजनका द्वितीय कांड, ३६ सहस्र योजनप्रमाण तीजा कांड. भद्रशालथी ५०० योजन उंचा नंदन वन है. नन्दन-वनस्य परिधि ३१, ४७९, नन्दनवन-मध्ये परिधि (?), नन्दनवनस्य विष्कंभ ९९५४ ईन, नन्दनवनमध्ये ८९५४<u> इ</u>. सौमनसवनस्य १३५११ 🔩 सौमनसवनमध्ये परिधि १०३४९ 🚉 सोमनसवनस्य ४२७२६६, सौमनसवनमध्ये विष्कंभ ३२७२६६, चूलकके मूलशी योजन वलयाकारे विष्कंभ पंडग वन-(का) है. जिनप्रसाद अर्घ कोश पृथुत्व, कोश लांबा, १४४० धनुष उच्चत्व. पंडग वनमे चार शिला ५०० योजनकी लांबी, २०० योजन पिहुली ४ योजनकी उंची है. अर्धचन्द्राकारे श्वेत सुवर्ण-मयी शिलाना मानथी आठ सहस्रमे भागे सिंहासनका प्रमाण जानना. पूर्व पश्चिमकी शिला उपरि दो दो सिंहा-सन है अने दक्षिण, उत्तरकी शिला उपरि एकेक सिंहासन है. इन शिलां उपरि भगवानका जन्ममहोत्सव इन्द्र करते है.



(१२८) हैमवंत १ शिखरीकी दाढा चार, चार, तिस उपरि सात सात अंतरद्वीप.

0	१	२	ર	४	4	Ę	9
जगती परस्पर अंतर	₹ 00	800	५००	६ 00	900	600	९००
विष्कंभ	33	75	77	97	79	,,	95
परिधि	९४९ यो०	१२५८ यो०	१५८१ यो०	१८९७ यो०	२२१३ यो०	२५२९ यो०	२८४५ यो०
	સા	રાા	3	8	ų	ષ્	६ अभ्यं-
जल उपरि	ચ ૧	९० ९५	६ ५ ९ ५	४० ९५	१५ ९५	८५	६० तर
योजन २	२ योजन		<u> </u>	- i	म	९५	९५ > बाह्य

(१२९)

o	वेलंधर	अनुवेलंघर	0
संख्या	ध	8	0
दिग्	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		0
समुद्रमे जाय	४२,०००	82,000	O
विष्कंभ	धरध	४२४	शिखर
0	१,०२२	१,०२२	o
o	१,७२१	१,७२१	o
दिसें	९६,९४,०९५	९६,९४,०९५	ज॰ दिसा
	९६,९७,७९५	९६ ९७,७,९५	35 55

नन्दीश्वरद्वीपे यतः अञ्जनिगिरवृत्तस्यामः (?) वापीमध्ये द्धिग्रुखाः वृत्ताः श्वेताः, वाप्यन्तरे द्वौ द्वौ रितकरौ अस्त्रो (स्तः ?) एवं अष्टौ रितकराः, चत्वारो द्धिग्रुखाः, एकोऽञ्जनिगिरः, एवं एकाभ्यां(कस्यां?) दिशि त्रयोदश पर्वताः स्युः, चतुर्द्दिश्चौ(क्षु) च द्विपश्चाशदिति विदिक्षु च इन्द्राणीनां राजधानी (?) सन्ति नन्दीश्वरे. अग्रे सर्वाणां स्थाना(नि) चित्रात् क्षेयं (क्षेयानि).

(१३०) नन्दीश्वरद्वीपयंत्रम् स्थानांगचतुर्थस्थानात्

१	नामानि	आयाम	विष्कंभ	परिधि	उंचा	अधः	संस्थान
ર	अंजनगिरि	0	१०,००० मू १०,००० उपर	यथायोग्य	८४ सहस्र योजन	१००० यो.	गोपुच्छ
3	वापी	पक लाख योजन	५०,००० योजन	0	o	33 33	आयाम
૪	द्धिमुख	o	१०,००० ,,	यथायोग्य	६४ सहस्र योजन		पल्लक
ष	रतिकर	o	97 71	59	१००० योजन	२५० योजन	
દ્	राजधानी	0	जंबूद्वीप	जंबूद्वीप	o	0	चंद्र

(१३१) अथ अर्ध्वलोके खरूपचिंतनयंत्र. प्रथम बारदेवलोके देवता

देवलोक- नामानि	सौधर्म १	ईशान २	सनत्कु- मार ३	माहेन्द्र ४	ब्रह्म ५	छान्तिक ६	ग्रुऋ ७	सहस्रार ८	आनत ९ प्राणत १०	आरण ११ अच्युत १२
संस्थान	अर्घ चंद्र	अर्घ चंद्र	अर्घ चंद्र	अर्घ चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	अर्घ चंद्र	अर्घ चंद्र
आधार	घनोद्धि	घनोद्धि	घनवात	घनवात	घनवात	२	२	ર	आकाश	आका- श

									1.5	
विमान- सङ्ख्या	३२ लाख	२८ लाख	१२ लाख	८ लाख	४ लाख	५० सहस्र	४० सहस्र	६ सहस्र	800	३००
पृथ्वी- पिंड	2000	२७००	२६००	२६००	२५००	२५००	२४००	२४००	२३००	२३००
विमान- उच्चत्व	५०० यो.	५०० यो.	६०० यो.	६०० यो.	७०० यो.	७०० यो.	८०० यो.	८०० यो.	९०० यो.	९०० यो.
विष्कंभ	संख्येय			\rightarrow	प्	व	म्			\rightarrow
विमान	असंख्य			\rightarrow	ए	व	म्			\rightarrow
विमान- वर्ण	પ	4	ક	४	ą	જ	ર	ર	१	१
प्रतर ६२	१	₹	१	२	Ę	· cq	४	४	४	४
आविल	ક	8	ध	४	४	ક	४	४	४	8
चिह्न	मृग	महिष	वराह	सिंह	व्याघ्र	शाॡर	हय	गज	भुजंग राशी	वृषभ विडाल
शरीर- वर्ण	कनक	कनक	पद्म	पद्म	पद्म	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत
यान विमान	पालक	पुष्कर								
इन्द्र	सुधर्म	ईशान	सनत्कु- मार	माहेन्द्र	व्रह्म	गुक	ळान्तिक	सहस्रार	प्राणत	अच्युत
सामा- निक	८४,०००	८०,०००	७२,०००	90,000	६0,000	40,000	80,000	३०,०००	२०,०००	₹0,
आत्म- रक्षक	४ गुणा			\rightarrow	ए	व	म्			\rightarrow
त्राय- स्त्रिश	33			\rightarrow	प्	च	म्			\rightarrow
लोक- पाल	ક			\rightarrow	Q	व	म्			
अनीक	७			\rightarrow	Ų	व	म्			\rightarrow
देवी अग्र- महिषी	۷	۷	0	0	0	0	0	•	0	0
परिषद्	3			\rightarrow	ए	व	म्			\rightarrow
					-		-	-		-
कंदर्प किल्बि- षिक	32	ર	२	ર	ર	2	ş	ę	8	१
आभि- योगिक										

सौधर्म देवलोक अपरिगृहीत देवीना विमान ६ लाख, ते किणि किणि देव-

सनत्कुमार	पल्योपम १०	स्पर्शभोगी
ब्रह्म	,, २o	रूप देखी भोगवे
महाशुक	,, ३०	शब्द सांभळी भोगवे
आनत	,, 80	मन करी विकार करी
आरण	,, 40	मनई चिंतवी

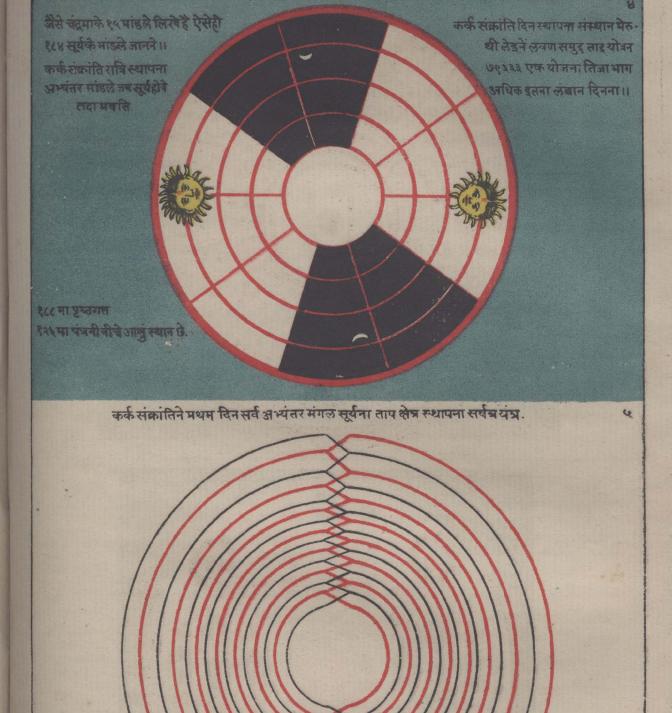
(१३३) ईशान देवलोके अपरिगृहीत देवीना विमान ४, ते किस किसके ?

माहेन्द्र	पल्योपम १५	स्पर्शभोगी
लान्तक	,, २५	रूप देखी
सहस्रार	,, ३५	शब्दभोगी
प्राणत	,, કપ	मनि विकार करी
अच्युत	,, ५५	मन चिंतवी भोगवे

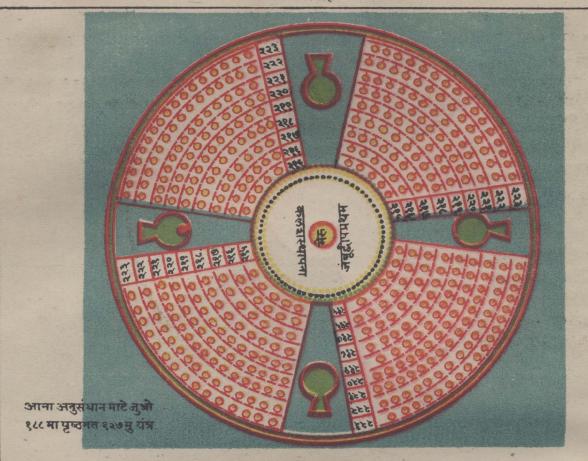
(१३४) अथ ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमानयंत्रम्

	हेठत्रिक	मध्यत्रिक	उपरित्रक	४ अनुत्तर	सर्वार्थसिद्ध
संस्थान	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	पूर्ण चंद्र	अंस	वृत्त
विमान-संख्या	१११	१०७	१००	8	१
पृथ्वीपिंड	२,२००	२,२००	२,२००	2,800	२,१००
विमान-उच्चत्व	१,०००	१,०००	१,०००	१,१००	१,१००
विष्कंभ	संख्य असंख्य	संख्य असंख्य	संख्य असंख्य	असंख्य	संख्य
प्रतर	3	३	₹	१	. 0
पद्वी	अहमिन्द्र	अहसिन्द्र	अहमिन्द्र	अहमिन्द्र	अहमिन्द्र

(१) उड प्रतर, (२) चंद्र प्र०, (३) रजत प्र०, (४) वाल् प्र०, (५) वीर्ष प्र०, (६) वाल्ण प्र०, (७) आनंद प्र०, (८) ब्रह्म प्र०, (९) कांचन प्र०, (१०) रुचिर प्र०, (११) चंद्र प्र०, (१२) अरुण प्र०, (१३) दिशि प्र०, (१४) वेड्र्य प्र०, (१५) रुचक प्र०, (१६) रुचक (१) प्र०, (१७) अंक प्र०, (१८) मेघ प्र०, (१९) स्फटिक प्र०, (२०) तपनीय प्र०, (२१) अर्घ प्र०, (२२) हिरे प्र०, (२३) निलन प्र०, (२४) सोहिता प्र०, (२५) वज्र प्र०, (२६) अंजन प्र०, (२७) (१), (२८) ब्रह्माच्य प्र०, (२९) हव प्र०, (३०) सौम्य प्र०, (३१) लांगल प्र०, (२०) (३२) वलभद्र प्र०, (३३) वक्र प्र०, (३५) ग्रह्म प्र०, (३५) ब्रह्मित प्र०, (३५) व्रह्मित प्र०, (३५)



अनुसंधान माटे जुओ १८८ मा ष्टच्ठगत १२७ मा यंत्रनी उपरती भाग





अनुसंधान माटे जुओ

प्र०, (४२) ब्रह्म प्र०, (४३) ब्रह्मोत्तर प्र०, (४४) लांतक प्र०, (४५) महाग्रुक्त प्र०, (४६) सहस्नार प्र०, (४७) आनत प्र०, (४८) प्राणत प्र०, (४९) पुष्प प्र०, (५०) अलका प्र०, (५१) आरण प्र०, (५२) अरुण प्र०, (५३) सुदर्शन प्र०, (५४) सुप्रबद्ध प्र०, (५५) मनोहर प्र०, (५६) सर्वतो प्र०, (५७) विशाल प्र०, (५८) सुमनस प्र०, (५९) सौमनस प्र०, (६०) प्रीतिकर प्र०, (६१) आदित्य प्र०, (६२) सर्वतोभद्र प्र० इति ६२ प्रतरनामानि.

अथ ध्यानसामाप्ती (१) सवैइया ३१ सा—

पूज जो खमाश्रमण जिनभद्र गणि विश्व दूषण अंधारे वीच दीप जो कहायो है सत सात अधिक जो गाथाबद्धरूप करी ध्यानको सरूप भरी सतक सुहायो है टीका नीका सुवजीका मेदने प्रमेद धीका तुच्छ मित भये नीका पठन करायो है लेसरूप भाव धरी छंद वंध रूप करी आतम आनंद भरी वा लप्या लगायो है ॥ १॥ इति श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितध्यानदातकात.

(१३५) असज्झाइ स्थानांग, निसी[ह]थ, प्रवचनसारोद्धार (द्वा. २६८) थकी

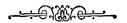
•	a contract c	_		,	
१	उल्कापात तारा ड्रूटे उजाला हुइ रेषा पढे आकाशमे	क्षेत्र	जिस	मंडळमे	निवर्स्या पीछे १ प्रहर सूत्र न पढ़े
ર	कणगते कहीये जिहां रेपा हुइ उजाला नही	,,,	17	,,,	35 33 35 37 33 33
Ŋ	दिग्दाह दसो दिसा अग्नियत् राती होइ	73	,,,	"	77 27 27 27 27 27 27
8	आकाशे गंधवेनगर देवताना कीधा दीसे	7,	,,	55	,, 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12
4	आकाराथी सूक्ष्म रज पडे	"	"	7.9	जा लग पडे ता लगे
६	मांसरुधिरवृष्टि	"	55	"	१ अहोरात्र निवर्त्या पीछे
9	केस १ पाषाणवृष्टि	"	"	"	निवर्त्या पछे सूझे
	अकाल गर्जे	"	,,	,,,	२ पहर
<u>८</u>	,, वीजळी	55	33	"	₹ ",
१०	भागो महिए जा हो गहरशी लेकर		सब	जगे	११ दिन असज्झाइ
११	2 0 0		5)	19	२, २॥ दिन
१ः			"	,,	२,२॥ दिन असज्झाइ
१ ३	2 _ 2 2 _ 2		77	55	?? 33 33
११	~ 		जिस	मंड ले	निवर्त्या पछ स्झे
20			5,5	55	33 35 15

१६	उपाश्रय दूकडा स्त्री पुरुष झूझे महायुद्धे	उपाश्रय दूकडा	निवर्स्या पछे सुझे
१७	होली पर्वे रज उडे	जिस जगे	17 17 37
१८	निर्घात वादले अथवा अणवादले शब्द कडकड होवे	" मंडले	१ प्रहर
१९	जूव० शुक्र पक्षनी पडिवासे ३ दिन	सब जगे	१ प्रहर रात्रि
२०	जक्खालिए आकोशे अग्नियक्षप्रभावे	जिस मंडले	१ प्रहर
२१	कावी धौली धूयर गर्भमासे	,, जने	जा लग पडे तां लग सर्व क्रिया न करे
२२	पंचेन्द्रिय तिर्यंचना हाड, मांस, लोही, चाम	६० हाथ दूर नही	३ प्रहर
२३	मांजारी मुसा आदि मारे उपाश्रये तथा ले जावे		१ अहोरात्रि
રક	मनुष्याना हाड, मांस, लोही, चाम	१०० हाथ उरे	79 97
२५	स्त्रीधर्मनी	उपाश्रयमे	३ दिन
२६	स्त्रीजन्मनी		۷ ,,
२७	पुरुषजन्मनी		<u>ن</u> ,,
२८	हाड पुरुषथी अलग कीया	१००० हाथ माहे	१२ वर्ष लगे
२९	मलमूत्र	जा लग दीषे गंध आवे	तब छगे
३०	मसाणना समीपे	१००० हाथ चौफेरे	सदा
३१	राजाके पडणे	जहां ताइ आज्ञा	नवा राजा न बैठे
32	गाममे असमंजस प्रवर्ते न भांजे तो	जिस मंडले	८ प्रहर
३३	सात घरमे कोइ प्रसिद्ध पुरुष मरे	,, गामे	१ अहोरात्रि
38	तथा सामान्य पुरुष सात घरांतरे मरे	,, ,,	कलेवर काढ्या पीछे सुझे
३५	इंडा पू(फू)टे गाय वियाइ जर पडे	,, जगे	१ प्रहर
३६	भूमी कंपे	17 77	۷ ,,
30	बुदबुदा रहित तथा सहित वर्षे	", "	अहोरात्रि उपरांत असज्झाइ
३ ८	नान्ही फ़ुंवारे निरंतर वर्षे	,, मंडले	७ दिन ,, ,,
39	पक्षीनी रात्रि	सब जगे	४ प्रहर असज्झाइ
३८ ३९ ४०	रात्रि ४	. "" "	२ घटी
ક્ષ	आसो १ कार्तिक २, चैत्र ३, आषाढ ४ पूर्णमासी	77 55	१ अहोरात्रि

४२	कार्तिक १ मागसर २ वैशाख ३, श्रावण ४ वदी पडिवा	33	33	८ प्रहर
४३	चंद्रग्रहणे	"	3 5	?" " ?? ",
នន	सूर्यग्रहणे	"	"	રફ ,, રૂર ,, ૪ ,,

चंद्रग्रहणे ऊगती ग्रस्थो ज आप्रम्यो तदा ४ प्र हर दिन रात्री १ अहोरात्र आगे, एवं १२; रात्रिने छेहडे ग्रस्था तदा ८ पहर आगले, एवं ८ वीचमे मध्यमः तथा स्रयो ऊगता ग्रस्थो प्रस्थो ज आथम्यो तो ४ प्रहर दिनना, ४ रात्रिरा अने एक अहोरात्रि आगे, एवं १६; आथमतो प्रहे १२ प्रहर, दिने ग्रह्यो दिने छूटा तो रात्रिना ४ प्रहर, एवं ४.

इति 'निर्जरा' तत्त्वसंपूर्णम् ॥



अथ अग्रे 'बन्ध' तत्त्व लिख्यते. प्रथम सर्वबंध देशबंधनो खरूप लिखीये हे ते यंत्रात् झेयम्. (१३६) औदारिक शारीरना सर्वबंध, देशबंधनी स्थिति

१	सर्वबन्ध- स्थिति	देशबन्धस्थिति
समुचय औदारिक शरीरना प्रयोगवंघनी स्थिति	१ समय	जघन्य १ समय, उत्कृष्ट एक समय ऊणा तीन पल्योपम
एकेन्द्रिय औदारिक	,, ,,	ज॰ १ समय, उ॰ एक समय ऊणा २२, ००० वर्ष
पूर्थ्वीना ,,	59 39	ज॰ ३ समय ऊणा श्रुह्धक भव, उ॰ १ समय ऊणा २२,००० वर्ष.
अपू, तेजस्काय, वनस्पति, वेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री औदारिक	77 77	ज॰ ३ समय ऊणा क्षुल्लक भव, उ॰ जिसकी जितनी स्थिति है उत्कृष्टी सो १ समय ऊणी कहणी.
वायु औदारिक दारीर प्रयोग बंध	55. 35	ज० १ समय, उ० १ समय ऊणा ३,००० वर्ष क्षेयम्
तिर्यंच पंचेंद्री मनुष्य औदारिक दारीर	77 73	ज॰ १ समय, उ॰ ३ समय ऊणे ३ पल्योपम

(१३७) औदारिक शारीरके सर्वबंध, देशबंधका अंतरा

२	सर्वेबंधका अंतरा	देशबंधका अंतरा
समुचय औदारिक	ज॰ ३ समय ऊणा श्चुल्लक भव १, उ॰ ३३ सागर पूर्व कोड १समय अधिक	ज० १ समय, उ० ३ समय अधिक ३३ सागर
समुच्चय एकेन्द्रिय औदारिक	ज० ३ समय ऊणा श्रुह्नक भव १, उ० १ समय अधिक २२, ००० वर्ष	ज०१ समय, उ० अंतर्मुहूर्त १

पृथ्वीके औदारिकका	ज॰ ३ समय ऊणा श्रुह्नक भव १, उ० १ समय अधिक २२, ००० वर्ष	ज॰ १ समय, उ॰ ३ समय
अप्, तेउ, वणस्तइ, बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री	ज॰ ३ समय ऊणा श्रुह्णक भव १, उ॰ १ समय अधिक जिसकी जितनी स्थिति	ज० १ समय, उ० ३ समय
वायु औदारिक	ज॰ २ समय ऊणा श्रुल्लक मव, उ॰समय अधिक ३,००० वर्ष	ज॰ १ समय, उ॰ अंतर्भुहूर्त
पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज॰ ३ समय ऊणा श्रुह्यक भव,उ० पूर्व कोड १ समय अधिक	ज॰ १ समय, उ॰ १ अंतर्मुहूर्त

जीव एकेन्द्रियपणा छोडी नोएकेन्द्रिय हुया फेर एकेन्द्रिय होय तो सर्ववंध, देशबंधना कितना अंतर ए (१३८) यंत्रम्

ર	सर्वेबन्धान्तरम्	देशबन्धान्तरम्
एकेन्द्रिय नोएकेन्द्रिय फेर एकेन्द्रिय हुया	जि॰ ३ समय ऊणा २ श्रुह्नक भव, उ॰ २,००० सागर संख्याते वर्ष अधिक	ज० १ समय अधिक १ श्रुह्नक भव, उ० २,००० सागर संख्याते वर्ष अधिक
पृथ्वी, अप्, तेउ, वाउ, बेइंद्री, तेइंद्री, चौरिंद्री, तिर्येच पंचेंद्री, मनुष्य	ज॰ ३ समय ऊणा २ क्षु- छक भव, उ॰ वनस्पति- काळ असंख्य पुद्रळपरावर्त	ज॰ १ समय अधिक १ श्चिलक भव, उ० वनस्पतिकाल असंख्य पुद्रलपरावर्त
वनस्पति	ज॰ ३ समय ऊणा २ श्रुह्णक भव, उ० असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी	ज० १ समय अधिक १ क्षुल्लक भव १, उ० असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

(१३९) औदारिक दारीरके सर्वबंध, देशबंध, अबंधककी अल्पबहुत्व

देशवंध	सर्ववंध	अबंधक
असंख्य गुणा ३	सर्वसे स्तोक १	विशेषाधिक २

ए औदारिकका यंत्र चौथा इति औदारिक.

(१४०) वैक्रिय शरीरके सर्वबंध, देशबंधनी स्थिति

((50))418	वि शरारक सवबव, दशब	વના ભ્યાત
\$	सर्ववंधनी स्थिति	देशवंधनी स्थिति
समुचय वैक्रिय	ज॰ १ समय, उ॰ २ समय	ज॰ १ समय, उ॰ १ समय ऊणा ३३ सागर
वायु वैक्रिय	ज॰ १ समय	ज०१ समय, उ०१ अंतर्मुहूर्त
रत्नप्रभा वैक्रिय)) 1)))	ज॰ ३ समय ऊणा १०,००० वर्ष, उ॰ १ समय ऊणा १ सागर
शेष ६ नरक, भवनपति १०, व्यंतर, जोतिषी, वैमानिक	9) 19 13	ज॰ ३ समय ऊणी जेहनी जितनी जघन्य स्थिति कहनी, उ॰ उत्कृष्टी स्थितिमे १ समय ऊणी कहनी
तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य	99 99 19	ज॰ समय, उ० १ अंतर्मुहर्त
(१४)	१) वैक्रियदारीरप्रयोगबन्ध	ा न्तरम्
२	सर्वबन्धान्तरम्	देशबन्धान्तरम्
ओघवैकिय	ज० १ समय, उ० वनस्पतिकाल	ज०१ समय, उ० वनस्पतिकाल
वायु वैक्रिय	ज॰ अंतर्मुहूर्त, उ॰ पल्योपमनो असंख्यातमो भाग	ज० अंतर्भुहूर्त, उ० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग
पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज० अंतर्मुहूर्त, उ०पृथक् पूचे कोड	ज० अंतर्मुहूर्त, उ०पृथक् पूर्व कोड
(१४२) जीव हे भगव(न्) वा	युकाय हुइने नोवायुकाय हुया	फेर वायुकाय हुइ तो अंतरयत्रम
3	सर्वबन्धान्तर	देशबन्धान्तर
वायु, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य	ज्ञ० अंतर्मुहूर्त, उ० चनस्पतिकाल	ज० अंतर्भुहूर्त, उ० वनस्पति- काल
वायु, मनुष्य, तिर्यंच प	चिन्द्रिय वैक्रिययत्रम् (१४३)	
रत्नप्रभा पुनरपि रत्नप्रभा	ज० अंतर्मुहूर्त अधिक १०,००० वर्ष, उ० वनस्पतिकाल	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल
द्रोष ६ नरक, भवनपति आदि यावत् सहस्रार	ज॰ अंतर्मुहूर्त अधिक जिसकी जितनी जघन्य स्थिति, उ॰ वनस्पतिकाल	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० वनस्पतिकाल
आनतसे ग्रैवेयक पर्यंत	ज० पृथक् वर्ष अधिक जेहनी जितनी जघन्य स्थिति, उ० वनस्पतिकाळ	ज० पृथक् वर्ष, उ० वनस्पतिकाल
४ अनुत्तर वैमानिक	ज० पृथक् वर्ष अधिक ३१ सागर, उ० संख्याते सागर	ज० पृथक् वर्ष अधिक, उ० संख्याते सागर

(१४४) वैक्रियना सर्वबंधादि संबंधी अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व	देशबंध	सर्वबंध	अवंधक
0	असंख्यगुणा २	१ स्तोक	अनंतगुणा ३

इति वैक्रिययत्रचतुष्टयम्. (१४५) आहारक रारीरना प्रयोगबंधनी स्थिति

8	सर्वेबन्धस्थिति	देशवन्धस्थिति
आहारक मनुष्य	ज०१ समय	ज० अंतर्भुहूर्त, उ० अंतर्भुहूर्त
	(१४६) अंतर	
ર	सर्ववन्धान्तर	देशबन्धान्तर
आहारक अंतर	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन अर्थ पुद्रलपरावर्त	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० देश ऊन अर्ध पुद्गलपरावर्त

(१४७) अल्पबहुत्व सर्व० देश० अबन्ध

आहारककी अल्पबहुत्व	देशबन्ध	सर्वेबन्ध	अवन्धक
	संख्यात गुणे २	सर्व स्तोक १	अनंत गुणे ३

इति आहारकयंत्र तीन. (१४८) (तैजस दारीर)

१	देशवन्धस्थिति	
तैजस शरीर	अनादि अपर्यवसित, अनादिसपर्यवसित	
२	देशवन्धान्तर	
तैजस	दोनाका अंतर नही	
3	देशबन्ध अवन्धक	
तैजस शरीर	अनंत गुणा २	सर्व स्तोक
अस्पबहुत्व	0	

(१४९) (कार्मण दारीर)

१	देशवन्धस्थिति		
कार्मणशरीरिश्यति	अनादि अपर्यवसित, अनादि सपर्यवसित		
ર	देशवॅन्धान्तर		
कार्भण	दोनाका अंतर नही		
3	देशवन्ध अवन्धक		
कर्म ७ अल्पबहुत्व	अनंत गुणा २	सर्व स्तोक १	
आयु अल्पबहुत्व	१ स्तोक	संख्यात गुणा	

(१५०) आपसमे नियम भंजनेका यत्र

8	औदारिका २	वैक्रिय २	आहारक २	तैजस १	कार्मण १
औदारिक सर्घ देश ३	o	नथी	नथी	भजना	भजना
वैक्रिय सर्व १, देश २	नधी	0	***	"	13
आहारक सर्व १, देश २	,,	नथी	o	95	,,
तैजस देशबन्ध १	नियमा	नियमा	नियमा	o	17
कार्मण देशबन्ध १	33	***	99	नियमा	0

(१५१) अल्पबहुत्वयन्त्रम्

	देशवन्ध	सर्ववन्ध	अब#धक
— औदारिक	असंख्य ८	अनंत ६	विशे० ७
वैक्रिय	,, ક	असंख्य ३	,, १०
आहारक	संख्यात २	स्तोक १	,, ११
तैजस	विशे० ९	0	अनंत ५
कार्मण	तुस्य ,,	o	तुष्य ,,

तेरह बोलकी अल्पबहुत्व संपूर्ण (१५२) आपआपनी अल्पबहुत्व

औदारिक	१ स्तोक	३ असंख्य	२ विशे०
वैक्रिय	55 55	₹ "	३ अनंत
आहारक	99 35	२ संख्येय	,, असंख्य
तैजस	0	,, अनंत	१ स्तोक
कार्मण	0	>> >>	>> >>
आयुकर्म	•	१ स्तोक	२ संख्येय

इति श्रीभगवत्यां सर्ववन्ध देशवन्ध अधिकार शते ८, उ० ९ और विशेष खरूप टीकासे जानना. किस वास्ते १ थोडे घणे है टीकामे खरूप कथन कीया है.

"जीवा १ य लेस्स २ पक्खी ३ दिही ४ अन्नाण ५ नाण ६ सन्नाओ ७ । वेद ८ कसाय ९ उवओग १० जोग ११ एगारस जीवहाणा ॥ १॥" गाथा है भगवती २० २६ (उ० १).

१ छाया--जीवाश्च लेइयाः पक्षी दृष्टिरज्ञानज्ञानसञ्ज्ञाः । वेदः कषाय उपयोगो योग एकादश जीवस्थानानि ॥

बंधी बंधइ बंधिस्सइ १, बंधी बंधइ न बंधिस्सइ २, बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ३, बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ४, ए च्यार भांगा जान लेना.

(१५३) (पापकर्मादि आश्री भंग)

जीव मनुष्य १,२,३,४	पापकर्म १ ज्ञानावरणी २ दर्शनावरणी ३ मोहनीय ४ नाम ५ गोत्र ६ अंतराय आश्री
१ ३ २ ४ भंग	सलेसी १, ग्रुक्कलेशी २, ग्रुक्कपक्षी ३, सम्यग्दृष्टि ४, सज्ञान आदि जाव मनःपर्यव- ज्ञानी ९, नोसंज्ञोपयुक्त १०, अवेदी ११, सजोगी १२, मन १३, वाक् १४, काया १५ योगी, साकारोपयुक्त १६, अनाकारोपयुक्त १७
१२	कृष्णा आदि लेक्या ५, कृष्णपक्षी ६, मिथ्यादृष्टि ७, मिश्रदृष्टि ८, चार संज्ञा १२, अज्ञान ४।१६, सर्वेद आदि ४।२०, कोघ २१, मान २२, माया २३
४	अलेशी १, केवली २, अयोगी ३
३	अक्षपायी १, एवं ४६ (१) बोल

(१५४) (वेदनीय आश्री भंग)

जीव मनुष्य	वेदनीय कर्म आश्री बंधमंग १२४					
શ સ સ	सलेशी १, शुक्कलेशी २, शुक्कपक्षी ३, सम्यग्दिष्ट ४, नाणी ५, केवलनाणी ६, नोसंज्ञोपयुक्त ७, अवेदी ८, अकषायी ९, साकारोपयुक्त १०, अनाकारोपयुक्त ११					
8	अलेशी १, अयोगी २,					
१	कृष्ण आदि लेश्या ५, कृष्णपक्षी ६, मिथ्यादृष्टि ७, मिश्रदृष्टि ८, अज्ञान आदि ४।१२, संज्ञा ४।१६, ग्यान ४।२०, सवेद आदि ४।२४, सकषाय आदि ५।२९ सयोग आदि					
२	धा ३३ एवं बोल ४६					

(१५५) (आयु आश्री मंग)

जीव मनुष	अायुकर्म आश्री वंधमंग १, २, ३, ४
१	सलेशी आदि ७, शुक्रपक्षी ८, मिथ्यादृष्टि ९, अज्ञान आदि धा१२, संज्ञा धा१७, सवेद
३ २	आदि ४।२१, सकवाय आदि ५।२६, सयोग आदि ४।३०, साकारोपयुक्त ३१,
ક	अनाकारोपयुक्त ३२.
१, २, ३	मनःपर्यव १, नोसंज्ञोपयुक्त २
४	अलेशी १, केवली २, अमोगी ३
१, ३	ग्रुष्णपक्षी
ર, ૪	सिश्रदृष्टि १, अवेदी २, अकषायी ३; एवं ४६ (१) बोल

परंपरोववन्नगा १, परं० गाढा २, परंपरो आहारगा ३, परं० पज्जत्तगा ४, चरम ए पांच उद्देशा जीव मनुष्यना प्रथम उद्देशावत् द्वेयं नवरं इतना विशेष चरम मनुष्यने आयुना बंध आश्री एक चौथा भंग संभवे, और भंग नहीं एह अर्थ श्रीमद्भयदेवस्रिये भगवती-जीकी टीकामे लिख्या है जो कर चौथा भंग आदि सर्व भंग पावे तो चरमपण कैसे होय १ इस वास्ते चौथा भंग संभवता है.

(१५६) पापकर्म १ मोह २ ज्ञाना० ३ दर्जाना० ४ वेदनीय ५ नाम ६ गोत्र ७ अंतराय ८ आश्री

३४	३६	२६	२५	३०	३९	३६	33	३५
नरक	भवनपति	पृथ्वी १, अपू २ वन- स्पति ३	तेज १, वायु २	विगलेंद्री	तिर्येच	व्यंतर	जो- ति- षी	वैमा- निक
१।२	श२	श२	श२	शश	१।२	श्र	शुर	श्व

(१५७) आयु आश्री यंत्र

कृष्णलेशी	१।३ भंग	0	तेजो- लेश्यामे तीजा भंग ३, शेष २५	समदिद्वी	४ज्ञानीमे ३ भंग	सम० १ ज्ञानीमे ४ १।३।४	o	o	0
कृष्णपक्षी	१।३	१।३	१।३	१।३	१।३	११३	१।३	१।३	१।३
मिश्रदृष्टि	३।४	રાષ્ટ	o	0	o	રાષ્ટ	રાષ્ટ	રાષ્ટ	રાષ્ટ
शेष बोल	શરારાય	शशाइाध	शशाशक	शरा३ाध	१।३	શરારાય	शशाश	शशाशि	શરારાય

मनुष्य अनंतरो० मे नही	अलेशी २, के संज्ञोपट् ५, अ अयोगी	वल ३ रुक्त ४, कषार	, नो- , अवेदी ग्री ६,	मिश्रदृष्टि नर्ह	मन १, वचन २, योग नही	विभंग नही	अवधि है
नरक, देव	उपरले	सात नही	मूलसे	o	o	B	है
तिरिय	95	"	33	o	0	0	
विगलेंद्री	99	55	99	मूले नही	वचन नही	मूले नही	मूले नही

नारक आदि २४ दंडकमे आयु वर्जी शेष ज्ञानावरण १ पापकर्म आदि ८ बोल आश्री जिसमे जितने बोल है लेश्या आदि सर्व बोलमे १।२ भंग जानना, आयु आश्री २३ दंडकमे एक त्रीजा ३ भंग, मनुष्यमे आयु आश्री ३।४ भंग अनंतरोवन्नगा १, अनंतरोगाढा २, अनं- तरआहारगा ३, अनं ०पञ्जत्तगा ४; ए चार उद्देशे एक सरीषे है. एवं सर्व उद्देशो १० हूथे.

अथ अचरमना ११ मा उद्देशा लिख्यते-मनुष्य वर्जी २३ दंडके आयु वर्जी पापकर्म आदि ८ आश्री सर्व बोला मे १।२ भांगा, आयु आश्री नरक १, तिर्यंच २, देव ३ मे मिश्र-दृष्टिमे मंग ३ तीजा. पृथ्वी १, अप २, वनस्पति ३, तेजोलेक्यीमे ३ तीजा मंग, विगलेंद्रीमे सम्यक्तव १, ज्ञान आदि ३ ए ४ मे ३ तीजा भंग, मनुष्य अचरममे अलेक्यी १, अकेवली २, अयोगी २; ए २ नहीं, शेष बोल ४२ में जहां चौथा भंग है सो नहीं कहना और सर्व प्रथम उद्देशवत् इति बंध अलम्.

(१५८) (अतीतादि आश्री भंग) 📗 (१५९) (भव आश्री भंग)

भंग	अतीत	वर्तमान	अनागत
१	बं	ā	वं
ર	"	"	न
ર	>,	न	बं
8	55	7,7	न
ų	न	वं	बं
દ્	"	75	न
v	,,	न	बं
۷	,,,	,,	न

(2/1// 44	
घणे भव अपेक्षा	एक भव अपेक्षा
श्रेणिथी गिर फेर ११ मे	कति समये उपराांत
पूर्व भवे ११ में, वर्त- माने श्लीणमोह	सयोगीने छेहले समये
पूर्व भवे ११ मा, वर्त- मान नही, आगे होगा ११	११ में से गिर फिर श्रेणि पावे नही
सिद्ध	१४ मे गुणस्थाने
उपशांत पहिले ही	उपशांत मोहके
पाया है	प्रथम समये
क्षपकश्रेणि चढ्या, उपराम कदे नही	शून्य
भव्य मोक्षाई	१० मे गुणस्थानवाळा भव्य
अभव्य	मिथ्यादृष्टि वा अभव्य

(१६०) संपरायके बंधके भंग

2 2 2	अभव्य वा भव्यक
2 2 1	भव्य

212	उपशांतमोह गुणस्थान
2112	क्षीणमोह आदिक

एह दोनो यंत्र भगवतीजीके.

(१६१) कर्म समुचय जीव मनुष्य आश्री

कर्म	वांधे। वांधे १	बांधे। वेदे २	वेदे। बांधे ३	वेदे । वेदे ४
१	८ ।ডা६	٥	टाजाइ	८।७
२	ટા	>>	८ ।ডা६	८।७
3	८।७।६।१	ડાહાઇ	टा७।६।१	८।७।६
૪	১ ।৩	۷	ো ডা ६	4
ų	۷	,,	टाडाइ।१	থেগ্য
દ્	८।७ ।६	71	टाणइ।१	८।७।६
9	८।७१६	33	टाजाहार	ટાહાર
6	८।७।६	,,	टाजाहार	८।७

(१६२) शेष २३ दंडक आश्री ४ मंग

8	८।७	۷	८।ও	(
ર	८।७	***	८।७	77
3	८।७	75	১ ।৩	***
ક	ડાં૭	33	১ ।ও	7,7
^C 4	4	75	ال	11
६	टा७	75	८।७	***
७	ા ૭	"	८ ।७	,,
2	८।७	33	219	

श्रीपन्नवणापद. (१६३) अथ आयुयन्त्रम्

द्वार	देव नरक युगल	नो(निरु?)पक्रमी	सोपक्रमी	संख्या
अवन्ध काल	६ मास ऊणा खख भवस्थिति	दोतिहाइ (क्वे) आपआपणे आयुकी	ज० दो तिहाइ, उ० अंतर्भुहूर्त ऊणा भव	१
वन्ध काल	अंतर्मुहूर्त	अंतर्मुहूर्त	अंतर्भुहूर्त	२
आवाधा	६ मासा	एक तिहाइ आपआपणे आयुकी	ज० अंतर्मुहूर्त, उ० पूर्व कोडकी तीहाइ	3

उ(सो)पक्रम आयु चूटवाना कारण ७—(१) अध्यवसाय-भय आदिक, सोमल ब्राह्मणवत्, (२) निमित्त-शस्त्र आदिकसे मरण पामे, (३) आहार-अजीर्ण आदिसे मरण, (४) वेदना-श्रूल आदिक, (५) पराघात आदि-ठोकर खाइने पडना, (६) स्पर्श-सर्प आदि ढंकणा, (७) आनप्राण-श्वासोच्छ्वासना रोकणा. एह सात प्रकारे सोपक्रमीना आयु त्रुटे पिण नोपक्रमीनो नही. एह यंत्र श्रीस्थानांग. भगवतीथी जानना इति.

(१६४) भगवती बंधी ५० बोलकी अष्ट कर्म आश्री

		ज्ञाना०, दर्शना०, अंतराय	वेदनीय	मोहनीय	आयु	नाम,गोत्र
१-३	स्त्री, पुरुष, नपुंसक- वेद	नियमा	नियमा	नियमा	भजना	नियमा
ક	अवेदी संयत	भ.	भ.	भ.	0	स.
प	संयती	"	,,	53	भ.	"
દ્	असंयती	नि.	निः	नि	57	नि.
७	श्रावक संयतासंयत	7,7	77	33	"	,,,
۷	नोसंयत, नोअसंयत, नोसंयतासंयत		o	o	o	o
९	सम्यग्दष्टि	भ.	ਮ .	ਮ.	भ.	ਮ .
१०	मिथ्याद्दष्टि	नि.	नि.	नि.	73	नि.
११	मिश्रदृष्टि	,,	**	"	0	,,
१२	संज्ञी	स.	नि.	ਮ.	भ.	भ.
१३	असंज्ञी	नि.	33	नि	,,	नि.
१४	न संज्ञी न असंज्ञी	0	0	o	o	o
१५	भव्य	भ.	મ.	મ.	भ.	भ.
१६	अभव्य	नि.	नि.	नि.	7,7	नि.
१७	न भव्य न अभव्य	0	o	o		0
१८-२०	चक्षु आदि ३ दर्शन	भ.	नि.	ਮ.	भ.	भ.
२१	केवलदर्शन	o	ਮ.	•	0	o
२२	पर्याप्ता	भ.	77	भ.	भ.	भ.
२३	अपर्याप्ता	नि.	नि.	नि.	55	नि.
ર૪	न पर्याप्त न अपर्याप्त	0	0	o	0	0
२५	भावक	भ.	नि.	ਮ.	भ.	भ.
२६	अभाषक	***	भ.	95	,,	,,,
२७	परत संसारी	,,,	"	55	77	- 35
२८	अपरत संसारी	नि.	नि.	नि.	9,9	नि.
२९	न परत न अपरत	o	0	o	o	0
३०-३३	मति आदि ४ ज्ञान	भ.	नि .	भ.	भ.	भ.
38	केवलज्ञान	0	भ.	o	0	o

३५–३७	मति आदि ३ अज्ञान	नि.	नि.	नि.	भ.	नि.
३८-४०	मन, वचन, काया योग	भ.	,,,	ਮ .	,,,	भ.
કર	अयोगी	0	•	0	0	o
४२- ४३	साकार अना- कार उपयोग	भ.	भ.	भ.	भ.	भ.
કક	आहारक	भ.	नि.	"	55	57
४५	अणाहारी	,,	भ.	5,5	0	**
४६	स्कृ	नि.	नि.	नि.	भ.	7,7
ઇહ	बादर	भ.	भ.	भ.	77	"
४८	न सूक्ष्म न बाद्र	0	o	0	o	o
४९-५०	चरम, अचरम	भ.	भ.	भ.	भ.	भ.

अथ द्वार गाथा (१)---

वैय संजय दिद्वी सन्नी भविए दंसण पज्जत्त भासय परित्त नाण जोगी इ उवओग आहारग सहम्म चरम बद्धे य अप्पाबहु १

अल्पबहुत्व सुगम.

अथ मार्गणा उपिर बंधद्वार. अथ वर्मा आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४; बंध-प्रकृति १०१ अस्ति. एकेन्द्रिय १, स्थानर १, आतप १, स्कृम १, अपर्याप्ति(प्त) १, साधारण १, विकलत्रय ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २; एवं १९ नास्ति.

१	मि	१००	तीर्थंकर उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, एवं ४ विच्छित्ति
ર	सा	९६	अनंतानुवंधी आदि २५ विच्छित्ति वैगौरा सास्यादनवत्
3	मि	७०	मनुष्यायु उतारी १
ક	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १; एवं २ मिल्रे

अथ अंजना आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४; बंधप्रकृति १०० अस्ति. १९ पूर्वोक्त अने तीर्थंकर १; एवं २० नास्ति.

१	मि	१००	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेबट्ठा १; एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९,६	अनंतानुवंधी आदि २५ विच्छित्ति साखादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु उतारी १
ક	अ	७२	मनुष्यायु १ मिले

⁹ छाया—वेदः संयमो दृष्टिः सञ्ज्ञी भविको दर्शनं पर्याप्तो भाषकः परीतो ज्ञानं योगश्रोपयोग आहारकः सूक्ष्मश्र-रमबद्धे चाल्पबहुत्वम् ॥ २ विवरण ।

अथ माघवी नरक रचना गुणस्थान ४; बंधप्रकृति ९९. पूर्वोक्त २०, मनुष्यायु १; एवं २१ नास्ति.

१	मि	९६	मनुष्यद्विक २, उंच गोत्र १; एवं ३ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंडक १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, तिर्यंचायु १; एवं ५ विच्छित्ति
२	सा	९१	अनंतानुवंधी आदि २४ विच्छित्ति व्यौरा साखादनवत्
3	मि	७०	मनुष्यद्विक २, उंच गोत्र १ सिल्ठे.
४	अ	190	0 0 0

अथ तिर्थम् गति रचना गुणस्थान ५ आदिके बंधप्रकृति ११७ अस्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक नास्ति.

१	मि	११७	मिथ्यात्व १, इुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, स्क्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३, एवं १६ विच्छित्ति.
२	सा	१०१	अनंतानुवंधी आदि २५ तो सास्त्रादन गुणस्थानवत् अने वज्रऋपभ१, औदारिक- द्विक २, मनुष्यत्रिक ३; एवं ३१ विच्छित्ति.
3	मि	६९	देवायु १ उतारे.
૪	अ	७०	देवायु १ मिल्ले. अप्रत्याख्यान ४ विच्छित्ति.
4	दे	६६	0 0 0

अथ तिर्यंच अपर्याप्ति रचना गुणस्थान तीन-१।२।४; बंधप्रकृति १११ अस्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आग्रु ४, नरकद्विक २; एवं ९ नास्ति.

Ş	मि	१०७	देवद्विक २, वैकियद्विक २ उतारे. मिथ्यात्व १, ढुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्ति १, साधारण १, विकलत्रय ३; एवं १३ विच्छित्तिः
२	सा	ર ક	अनंतानुवंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःखर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यंचद्विक २, उद् द्योत १, वज्रऋष म १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, एवं २९ विच्छित्ति.
ន	अ	६९	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २; एवं ४ मिले

अथ तिर्यंच अलिंधपर्याप्त रचना गुणस्थान १-प्रथम; वंधप्रकृति १०९ अस्ति. तीर्थं-कर १, आहारकद्विक २, देवत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, नरकद्विक ३; एवं ११ नास्ति. उपरला यंत्र करण अपर्याप्तिका जान लेनाः

	_ 1	1	
१ ह	मे ।	२०९	0 0 0
		· '	

अथ मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४; बंधप्रकृति १२० सर्वे अस्ति. आदिके च्यार गुण-स्थान यंत्र अन्य ५ मेसे लेकर सर्व गुणस्थान समुचयवत्.

. 8	मि	११७	आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे. सिथ्यात्व आदि १६ प्रकृतिकी विच्छित्ति व्यौरा सिथ्यात्व गुणस्थान रचनाथी क्षेयम्.
२	सा	१०१	अनंतानुवंधी आदि २५ सास्त्रादन गुणस्थान रचनावाली अने वज्रऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यत्रिक ३, एवं ३१ विच्छित्ति.
३	मि	६९	देवायु १ उतारी
ક	अ	७१	देवायु १, तीर्थंकर १ मिल्रे

अथ मनुष्य अलब्धिपर्याप्ति रचना गुणस्थान १—मिध्यात्वः बंधप्रकृति १०९. तीर्थंकर १, आहारक २, देवित्रक ३, नरकित्रक ३, वैक्रियद्विक २; एवं ११ नास्तिः भवनपति, व्यंतर, जोतिपी तत्देवी ३ तथा वैमानिकदेवी रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०३ है. सक्ष्मित्रक ३, विक-लित्रक ३, नरकित्रक ३, देवित्रक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकिद्विक २, तीर्थंकर १; एवं १७ नहीं।

१	मि	१०३	मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १;एवं ७ वि०
२	सा	९६	अनंतानुवंधी आदि २५ सास्वादन गुणस्थानवाली विच्छित्ति
3	मि	90	मनुष्यायु १ उतारे
૪	अ	७५	मनुष्यायु १ मिल्रे

तत् अपर्याप्ति रचनामें गुणस्थान यथा संभवे तिनमे मनुष्यायु १, तिर्थंचायु १; एवं २ नास्ति. अथ सौधर्म, ईशान रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०४ है. सक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्तियद्विक २, आहारकद्विक २; एवं १६ नही. बंध भवनपतिवत् जहां संभवे तिहां. तीर्थंकर अधिक चौथेमे.

तत् अपर्याप्तमे गुणस्थान तीन-१।२।४; बंध १०२ का. १६ पूर्वोक्त अने मनुष्यायु १, तिर्येचायु १, एवं १८ नहीं. पहिले १०१, द्त्रे ९४, चौथे ७१ उपरवत्

अथ सनत्कुमार आदि ६ कल्परचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०१ है. पूर्वोक्त (१६) सौधर्म, ईशानवाली अने एकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १; एवं १९ नहीं

्र	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १; एवं ४ विच्छित्ति.
२	सा	९६	अनंतानुवंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्तादन गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
8	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १ मिल्रे.

तत् अपर्याप्ति रचना गुणस्थान ३-१।२।४; बंधप्रकृति ९ है. पूर्वोक्त तिर्यचायु अने मजुष्यायुः एवं २ नास्ति. पहिले, दूजे, चौथे पर्याप्तवत्.

१	मि	९८	तीर्थंकर उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठ १; एवं ४ विच्छित्ति.
ર	सा	९૪	अनंतानुवंधी आदि २४ विच्छित्ति व्यौरा माधवीके सास्वादनवत्
૪	अ	७१	तीर्थंकर १ मिल्रे

अथ आनत आदि प्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके वंधप्रकृति ९७ अस्ति. पूर्वोक्त १९ सनत्कुमार आदिवाली अने तिर्यचित्रक ३, उद्द्योत १; एवं २३ नहीं, तीसरे गुण-स्थानकी रचना बहुश्रुतसे समज लेनी.

१	मि	९६	तीर्थंकर उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १; एवं ४ विच्छित्ति
3	सा	९२	अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःखर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १; सर्व २१ विच्छित्ति
રૂ	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
8	अ	७२	मनुष्यायु १, तीर्थंकर १; एवं २ मिले

तत् अपर्याप्ति रचना गुणस्थान ३-१।२।४; बंधप्रकृति ९६ है. पूर्वोक्त २३ अने मनु-ब्यायु १; एवं २४ नास्ति. मनुष्यायु घटा देना. पहिले ९५, दूजे ९१, चौथे ७१ है.

अथ पांच अनुत्तर रचना गुणस्थान १—चौथा; बंधप्रकृति ७२, प्त्रोंक्त २३ तो आनत आदि रचनावाली अने मिध्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेबद्वा १, अनंतानुबंधी ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुभेग १, दुःस्वर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त
गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १; एवं ४८ नही.

तत् अपर्याप्तरचना मनुष्यायु १ नही. और सर्व पूर्वोक्तवत्.

अथ एकेन्द्रिय १, विकलत्रय २, अपर्याप्ति रचना गुणस्थान २ आदिके बंधप्रकृति १०७ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवित्रक २, नरकित्रक २, वैक्रियद्विक २, मनुष्यायु १, तिर्यचायु १, एवं २३ नास्ति. करण-अपर्याप्त.

१	मि	१०७	मिथ सुक्ष्म १	यात्व , अप	१, हुंड पीप्त १,	१, सा	नपुंसक धारण	१, १, f	छेवट्टा वेकलत्र	१, य ३	एकेन्डि ; एवं	द्रय १३	१, वि	थावर च्छित्ति	₹,	आतप १,
२	सा	९४						0	0		·					

अथ एकेन्द्रिय १, विकलत्रय ३ पर्याप्त रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्व १; बंधप्रकृति १०९ है. पूर्वोक्त १०७; मनुष्यायु १, तिर्यचायु १, ए दोइ अधिक वधी.

अथ एकेन्द्रिय, विकलत्रय अलब्धिपयीप्त रचना गुणस्थान १-मि०; बंध १०९ पूर्वीक्त.

अथ पंचेन्द्रियरचनागुणस्थानवत्. अथ पृथ्वीकाय, अप्, वनस्पति अप्याप्तरचना, एकेनिद्रयविकलत्रयपर्याप्तवत्. अथ तेजवायुरचनागुणस्थान १—मिध्यात्व १; वंधप्रकृति १०५ है.
आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवित्रक ३, नरकित्रक ३, मनुष्यित्रक ३, वेक्रियद्विक २, उंच
गोत्र १; एवं १५ नास्ति. अथ त्रसकायरचना गुणस्थानवत्. अथ मनोयोग ४, वचनयोग ४,
रचनागुणस्थान १३ वत्. अथ औदारिकयोग २ना गुणस्थान सर्वे १४; बंधप्रकृति १२०
सर्वे सन्ति, मनुष्यरचनागुणस्थानवत् सर्व. अथ औदारिकमिश्रयोगरचनागुणस्थान ४-पहिला,
द्जा, चौथा, तेरमा; वंधप्रकृति ११४ है. देवायु १, नरकित्रक ३, आहारकद्विक २; एवं ६
नही. इहां कार्मणसे मिल्या मिश्र ग्राह्म.

१	मि	१०९	वैक्रियद्विक २, देवद्विक २, तीर्थकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, पकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, मनुष्यायु १, तिर्यवायु १, एवं १५ विच्छित्ति.
ર	सा	९४	अनंतानुबंधी आदि २९ विच्छित्ति. व्यौरा तिर्यंच अपर्याप्त रचना साखादन- गुणस्थानवत्
૪	अ	७०	वैकियद्विक २, देवद्विक २, तीर्थंकर १ मिल्रे. अप्रत्याख्यान ४, प्रत्याख्यान ४, पष्ठ गुणस्थानकी ६, अष्टम गुणस्थानकी ३४, आहारकद्विक २ विना नवमे गुणस्थानकी ५, दशम गुणस्थानकी १६; एवं ६९ विच्छित्ति.
१३	स	१	0 0 0 0

अथ देवगति वैकियक मिश्रयोग रचना गुणस्थान ३-१।२।४; वंधप्रकृति १०२ है. सक्ष्मित्रिक ३, विकलित्रिक ३, नरकित्रिक ३, देविद्विक ३, वैक्रियकद्विक २, आहारकद्विक २, तिर्यचायु १, मनुष्यायु १; एवं १८ नही.

१	मि	१०१	तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, एकेन्द्रिय १, स्थावर १, आतप १, एवं ७ विच्छित्ति.
२	सा		अनंतानुवंधी आदि उद्द्योत पर्यंत २४ की विच्छित्ति. सौधर्म, ईशान अपर्याप्ति- रचना सास्ताद्नगुणस्थानवत् माघवीवाली
8	१	७१	तीर्थंकर १ मिले.

अथ देवगति वैक्रियक रचना गुणस्थान ४ आदिके बंधप्रकृति १०४ है. पूर्वोक्त स्रक्ष्म आदि आहारकद्विक पर्यंत १६ नास्ति.

१	मि	१०३	तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठा १, पकेन्द्रिय १, थावर १, आतप १; एवं ७ व्यवच्छेद
হ	1	९६	अनंतानुवंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वाद्न गुणस्थानवत्
३	मि	७०	मनुष्यायु १ उतारे
ક	अ	७२	मनुष्याय १, तीर्थंकर १ मिले.

अथ नरकगति वैक्रियमिश्र रचना गुणस्थान २—पहिला, चौथा; बन्धप्रकृति ९९ है. एकेंद्री १, थावर १, आतप १, सक्ष्मित्रक ३, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३, देवित्रक ३, वैक्रियद्विक २, आहारकिद्वक २, मनुष्य-आयु १, तिर्थच-आयु १; एवं २१ नास्ति.

१	मि	९८	तीर्थकर१उतारे.मिथ्यात्व १, इंडक १, नपुंसक १, छेवट्ट १, अनंतानुवंधी आदि ४, एवं २८ व्यवच्छेद
४	अ	७१	तीर्थंकर १ मिले

अथ नरकगति वैक्रिय रचना गुणस्थान ४ आदिके बन्धप्रकृति १०१. पूर्वोक्त एकेंद्री आदि आहारकद्विक पर्यंत १९ नहीं, समुचयनरकवत्.

१	मि	१००	तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्ठ १, एवं ४ विच्छित्ति
२	सा	९६	अनंतानुवंधी आदि २५ विच्छित्ति सास्वादन गुणस्थानवत्
3	मि	90	मनुष्य-आयु १ उतारे
४	अ	७२	मनुष्य-आयु १, तीर्थंकर १ मिले

अथ आहारक काय योग तथा आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १-प्रमत्तः, बन्धप्रकृति ६३ है. मिध्यात्व १, हुंड १, नपुंसक १, छेवट्टा १, एकेंद्री १, थावर १, आतप १, स्क्षम- त्रिक ३, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३, अनंतानुवंधि ४, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, दुर्भग १, दुःखर १, अनादेय १, संस्थान ४ मध्यके, संहनन ४ मध्यके, अप्रशस्त गति १, स्त्रीवेद १, नीच गोत्र १, तिर्यचिद्रक २, उद्योत १, तिर्यच-आयु १, अप्रत्याख्यान ४, वज्रऋषभ १, औदारिकद्रिक २, मनुष्यद्रिक २, मनुष्य-आयु १, प्रत्याख्यान ४, आहारकद्रिक २; एवं ५७ नही.

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४-१।२।४।१३ मा वन्धप्रकृति ११२ है. देव-आयु १, नरक-आयु १, नरकद्विक २, आहारकद्विक २, मनुष्य-आयु १, तिर्थच-आयु १; एवं ८ नहीं.

१	मि	१०७	देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थकर १; एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व आदि विकल त्रय पर्यंत १३ विच्छित्ति
२	सा	९४	अनंतानुवंधी आदि उद्द्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
8	अ	હલ	देवद्विक २, वैकियद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ मिले. अप्रत्याख्यान ४, वज्र- ऋषभ १, औदारिकद्विक २, मनुष्यद्विक २, प्रत्याख्यान ४, षष्ठ गुणस्थानकी ६, आहारकद्विक विना अष्टम गुणस्थानकी ३४, नवम गुणस्थानकी ५, दशम गुण- स्थानकी १६; एवं ७४ व्यवच्छेद. एक सातावेदनीय रही तेरमे
१३	स	१	0 0 0 0

अथ वेदरचना गुणस्थानकरचनावत् नवमे गुणस्थान पर्यतः अथ अनंतानुवंधिचतुष्क-रचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ है. आहारकद्विक २, तीर्थकर १; एवं ३ नास्ति।

१	मि	११७	मिथ्यात्व आदि नरक आयु पर्यंत १६ विच्छि त ि	-
ર	सा	१०१	• • •	_

अत्रत्याख्यान ४ का बंध आदिके चार गुणस्थानवत्। त्रत्याख्यान आदिके पांच गुण-स्थानवत्, संज्वलन क्रोध १, मान २, माया १ नवमे लग पूर्ववत् अने संज्वलन लोभ आदिके दश गुणस्थानवत्।

अथ अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके बन्धप्रकृति ११७ पहिले, दूजे १०१ पूर्ववत्. अथ मति, श्रुत, अवधिज्ञान रचना चौथेसे लेकर बारमे ताइ सम्रचयगुणस्थानवत्. अथ मनःपर्यवज्ञान छह्नेसे लेकर बारमे पर्यंत रचना सम्रचयवत्. केवलज्ञान १३ मे १४ मे वत्.

अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय छहे, सातमे, आठमे, नवमे गुणस्थानवत्. अथ परि-हारविशुद्धि ६।७ मे वत्, स्रक्ष्मसंपराय दशमेवत्. यथारूपात ११।१२।१३।१४ वत्, देश संयम पांचमेवत्, असंयती आदिके चार गुणस्थानवत्.

अथ चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत् रचना १२ मे पर्यत गुणस्थानवत्, केवलदर्शन केवलज्ञानवत्.

अथ कृष्ण १, नील २, कापोत ३ लेक्या रचना बन्धप्रकृति ११८ है. आहारकद्विक नही. गुणस्थानक ४ आदिके तीर्थंकर रहित पहिले ११७ आगले तीन गुणस्थान समुचय-गुणस्थानवत्. अथ तेजोलेक्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १११ है. सूक्ष्मनिक ३, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३; एवं ९ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए तीन विना पहिले १०८ आगे ६ गुणस्थानोमे समुचयगुणठाणावत्. पद्मलेक्या रचना गुणस्थान ७ आदिके बन्धप्रकृति १०८ है. एकेंद्रि १, थावर १, आतप १, सूक्ष्मित्रक ३, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३; एवं १२ नास्ति. तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, ए त्रण विना पहिले १०५ आगे गुणस्थानवत्. अथ शुक्रलेक्या रचना गुणस्थान १३ आदिके बन्धप्रकृति १०४ है. पूर्वोक्त एकेंद्रिय आदि १२ अने तिर्थंचित्रक ३, उद्द्योत् १; एवं १६ नास्ति. तीर्थंकर १, आहार-दिक २ विना पहिले १०१ आगे सर्वगुणस्थानवत्.

अथ भव्यरचना १४ गुणस्थानवत्; अभव्य प्रथम गुणस्थानवत् जाननाः

अथ क्षायिक सम्यक्त रचना गुणस्थान ११-अविरित सम्यग्दृष्टि आदि; बन्धप्रकृति ७९ है. मिध्यात्व आदि १६, अनंतानुवंधि आदि २५; एवं ४१ नहीं. आहारकद्विक विना चौथे ७७ आगे समुचयगुणस्थानद्वारवत्. अथ क्ष्योपश्चम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४-अवि-रितसम्यग्दृष्टि आदि; बन्ध पूर्वोक्त ७९ क्षायिकवत्, चारो गुणस्थान परि जान लेना. अथ उपश्चम सम्यवत्व रचना गुणस्थान ८-अविरित सम्यग्दृष्टि आदि; बन्धप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ४१ तो क्षायिकवाळी अने मनुष्य-आयु १, देव-आयु १, एवं ४३ नास्ति, क्षायिकवत

बन्ध परंतु आयु दोनो सातमे ताइ घटावनी साखादन साखादन गुणस्थानवत्, मिश्र मिश्र गुणस्थानवत्

अथ संज्ञी रचना गुणस्थानरचनावत् अथ असंज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके बन्ध पहिले, दृजे पूर्ववत् ११७।१०१.

अथ आहारक रचना गुणस्थान १३ पर्यंत. अथ अनाहारक रचना गुणस्थान ४-१, २, ४ अने १३; बन्धप्रकृति ११२ अस्ति. आग्रु ४, आहारकद्विक २, एवं नरक-द्विक २; एवं ८ नास्ति.

१	मि	१०७	वेदद्विक २, वैक्रियद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व आदि विकल- त्रिक ३ पर्यंत १३ की विच्छित्ति
ર	सा	९४	अनंतानुवंधि आदि उद्द्योत पर्यंत २४ विच्छित्ति
ઝ	अ	ওৎ	देवद्विक २, वैकियकद्विक २, तीर्थकर १, एवं ५ मिल्ले. अप्रत्याख्यान आदि ९, प्रत्याख्यान ४, अथिर आदि ६, आहारकद्विक २ विना ३४ अपूर्वकरणकी, अनि॰ चुत्तिकरणकी ५, स्क्ष्मसंपरायकी १६, एवं ७४ की विच्छित्ति
१३	स	१	एक सातावेदनीय रही.

इति श्रीबन्धाधिकार संपूर्ण.

अथ उदयाधिकारः लिख्यते गुणस्थानेषु—

अथ नरकगित रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति. स्त्यानगृद्धित्रिक ३, पुरुषवेद १, स्त्रीवेद १, आयु ३ नरक विना, उंच गोत्र १, गित ३ नरक विना, जाति ४ पंचेंद्री विना, औदारिकद्रिक २, आहारकद्रिक २, संहनन ६, संस्थान ५ हुंडक विना, प्रशस्त गित १, नरक विना आनुपूर्वी ३, थावर १, स्रक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, सुमग १, सुस्तर १, आदेय १, यश १, आतप १, उद्योत १, तीर्थिकर १; एवं ४६ नास्ति.

१	मि	હર	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे. मिथ्यात्व (१) विच्छित्त
ર	सा	७२	नरकगति आनुपूर्वी १ उतारी. अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	६९	मिश्रमोहनीय १ मिल्रे. मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
૪	अ	90	सम्यक्त्वमोहनीय १, नरकगति-आनुपूर्वी १ मिले.

अथ सामान्य तिर्थेच रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति १०७. आयु ३ तिर्थेच विना, मनुष्यद्विक २, उंच गोत्र १, आहारकद्विक २, वैक्रियन्ठक ६, तीर्थेकर १; एवं १५ नास्ति.

१	मि	१०५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, एवं ५ विच्छित्ति
२	सा	१००	अनंतानुबंधि ४, एकेन्द्रिय १, थावर १, विकलत्रय ३, एवं ९ विच्छित्त
3	मि	९१	तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारे. मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति
8	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, तिर्यंचातुपूर्वी १ मिले. अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचातुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति
Ŀ	दे	८४	0 0 0

अथ पंचेंद्री रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति ९९ हैं। आयु ३ तिर्थेच विना, मनुष्यद्विक २, आहारकद्विक २, उंच गोत्र १, वैक्तियपद ६, तीर्थंकर १, एकेंद्री १, थावर १, स्हम १, साधारण १, आतप १, विकलत्रय ३; एवं २३ नास्तिः

१	मि	९७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति							
२	सा	९५	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति							
3	मि	९१	तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारे. मिश्रमोह० १ मिल्ले. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति							
४	अ	९२	सम्यक्त्वमोह० १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले. अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति							
4	दे	28	0 0 0							

अथ पर्याप्त तिर्यंचने रचना गुणस्थान ५ आदिके उदयप्रकृति ९७ अस्ति. पूर्वोक्त २३, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १; एवं २५ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति							
ર	सा	९४	अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति							
3	मि	९०	सिश्रमोहनीय १ मिले. तिर्यंचानुपूर्वी १ उतारी. सिश्रमोह १ विचिछत्ति							
ន	अ	९१	सम्यक्त्वमोहनीय १, तिर्यंचानुपूर्वी १ मिले. अप्रत्याख्यान ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयदा १, एवं ८ विच्छित्ति							
4	दे	८३	0 0 0							

अथ अलिब्धिपर्याप्त तिर्येच रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्व; उदयप्रकृति ७१ अस्ति. आयु ३ तिर्येच विना, उंच गोत्र १, मनुष्यद्विक २, आहारकद्विक २, वैक्तियपद ६, तीर्थंकर १, थावर १, सक्ष्म १, साधारण १, आतप १, एकेंद्री १, वेंद्री १, तेंद्री १, चौरिंद्री १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्योत १, प्रशस्त गित १, अप्रशस्त गित १, यश १, आदेय १, सुभग १, संस्थान ५ हुंडक विना, संहनन ५ छेवट्ट विना, स्त्रीवेद १, प्रक्षवेद १, स्त्यान-

गृद्धित्रिक २, पर्याप्त १, सुखर १, दुःखर १, मिश्रमोहनीय १, सम्यक्तमोहनीय १; एवं ५१ नास्ति. एह संमूर्विछम अपेक्षा जानना, पहिले ७१ है.

अथ सामान्य मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे; उदयप्रकृति १०२ है. थावर १, स्ट्रिम १, तिर्येचित्रिक ३, नरकित्रक ३, देवित्रक ३, आतप १, उद्घीत १, एकेंद्री १, विकलत्रय ३, साधारण १, वैक्रियद्विक २; एवं २० नास्ति.

१	मि	9,19	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति				
२	सा	९५	अनंतानुवंधी ४ व्यवच्छेद				
3	मि	९१	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारे. मिश्रमोह० १ मिल्रे. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति				
8	अ	९२	सम्यक्त्वमोहनीय १, म(आ १) तुपूर्वी १ मिले. अप्रत्याख्यान ४, मतुष्यातुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं ८ विच्छित्ति				
५	दे	८४	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १, एवं ५ विच्छित्ति				
६	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले				

सातमेसे लेकर आगे सर्व समुचयगुणस्थानवत् जान लेना.

अथ पर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान सर्वे १४; उदयप्रकृति १०० है. पूर्वोक्त २०, स्त्रीवेद १, अपर्याप्त १; एवं २२ नास्ति.

१	मि	९५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १, एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति						
-	सा	९४	अनंतानुवंधी ४ विच्छित्त						
3	मि	९०	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी. मिश्रमोद्द० १ मिल्ले. मिश्रमोद्द० १ विच्छित्ति						
૪	अ	९१	सम्यक्त्वमोह० १, मनुष्यानुपूर्वी १ मिले. अप्रत्याख्यान ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ८ विच्छित्ति						
4	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १; एवं ५ विच्छित्ति						
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले. आहारकद्विक २, स्त्यानगृद्धित्रिक ३; एवं ५ विच्छित्ति						
9	अ	७५	सम्यक्त्वमोह० १, संहनन ३ अंतके; एवं ४ विच्छित्ति						
6	अ	७१	हास्य आदि पट् ६ विच्छित्ति						
९	अ	६५	नपुंसक १, पुरुषवेद १, संज्वलन कोध १, मान १, माया १ विच्छित्ति						

शेष गुणस्थानमे समुचयवत्

अथ अलब्धिपर्याप्त मनुष्य रचना गुणस्थान १-मिध्याल, उदयप्रकृति ७१ है. ज्ञाना-

वरण ५, दर्शनावरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मिध्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसकवेद १, मनुष्यत्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिकद्विक २, वेदनीय २, हुंडक १, छेवद्वा १, पंचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अग्रुम १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, त्रस १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, श्रुम १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, अंतराय ५; एवं ७१ है.

अथ सामान्य देव रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७७. ज्ञानावरण ५, दर्शना-वरण ४, निद्रा १, प्रचला १, मोहनीय २७, नपुंसक विना वेद २, देव-आयु १, देव-द्विक २, वैक्रियकद्विक २, पंचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, प्रशस्त गति १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अशुभ १, त्रसदशक १०, उंच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ७७ अस्ति, शेष ४५ नास्ति.

१	मि	७५	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्त
ર	सा	ષ્ટ	अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	७०	देवानुपूर्वी १ उतारी. मिश्रमोहनीय १ मिल्रे. मिश्रमोहनीय १ विच्छित्त
ક	अ	७१	आनुपूर्वी देवस्य १, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले.

अथ सौधर्म आदि नव प्रैवेयक पर्यंत रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ७६ अस्ति, स्रीवेद विना पूर्वोक्तः एवं भवनपति आदि ३.

१	मि	હ્ય	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति			
2	सा	७३	अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति			
३	मि	६९	देवानुपूर्वी १ उतारी, मिश्रमोहनीय १ मिली, मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति			
8	अ	90	देवानुपूर्वी १, सम्यक्त्वमोहनीय १; एवं २ मिले			

्र अंतुत्तर ५ रचना गुणस्थान १-चौथा; उदयप्रकृति ७० है. पूर्वोक्त सामान्य देव रचना-वाली ७७, तिण मध्ये मिथ्यात्व १, मिश्रमोहनीय १, अनंतातुवंधी ४, स्त्रीवेद १; एवं ७ नास्ति.

8	अ ७	0		0	0	0	0		. (
-											

अथ एकेंद्री रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ८०. ज्ञाना० ५, दर्शना० ४, वेदनीय २, मोहनीय २४, मिश्रमोह० १, सम्यक्लमोह० १, पुंम (१) १ स्त्रीवेद विना, तिर्यच-आयु १, तिर्यचिद्रक २, औदारिक शरीर १, हुंड १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचित्रक ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अश्चम १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, श्चम १, अगुरुलघु १, उपघात १, निर्माण १, थावर १, एकेंद्री १, परा-

घात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, पर्याप्त १, साधारण १, सक्ष्म १, यश १, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ८०(१) है, शेष ४२ नही.

१	मि	८०	मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, स्त्यानगृद्धि ३, पराघात १, उच्छ्वास १ [,] उद् चोत १ , एवं ११ विच्छित्ति
२	सा	हर	0 0 0

अथ विकलत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्र० ८१. ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, वेदनीय २, मिध्यात्व १, कपाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसकवेद १, तिर्यच-आयु १, तिर्यच- क्रिक २, औदारिकद्विक २, हुंडक १, छेवह १, विकलेंद्री स्वकीय १, तैजस १, कार्मण १, वर्ण(चतुष्क) ४, अपर्याप्त १, अथिर ६, त्रस ६, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, निर्माण १, उच्छ्वास १, उद्योत १, यश १, अप्रशस्त गति १, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ८१ है.

१	मि	૮१	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, स्त्यानगृद्धित्रिक ३, पराघात १, उच्छवास १, उद्द्योत १, दुःस्वर १, अप्रशस्त गति १; एवं १० विच्छित्ति
२	सा	७१	0 0 0

अथ पंचेंद्री रचना गुणस्थान १४ सर्वेः उदयप्रकृति ११४ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सहम १, साधारण १, विकलत्रय ३, आतप १, एवं ८ नास्ति.

१	मि	१०९	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १; एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति					
२	सा	१०६	नरकानुपूर्वी १ उतारी, अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति					
3	मि	१००	शेष आनुपूर्वी ३ उतारी. मिश्रमोहनीय १ मिली. मिश्रमोहनीय १ विच्छित्ति					
૪	अ		आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोहनीय १; एवं ५ मिले					

पांचमेसे लेकर सर्व गुणस्थानमे समुचयवत्.

अथ पृथ्वीकाय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ७९. ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, वेदनीय २, मिथ्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसक १, तिर्यच-आयु १, तिर्यच-दिक २, औदारिक १, हुंडक १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अग्रुम १, दुर्भग १, अनादेय १, अय्या १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, ग्रुम १, अगुरुलपु १, उपघात १, पराघात १, निर्माण १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, पर्याप्त १, एकेंद्री १, यश्च १, थावर १, सक्ष्म १, नीच गोत्र १, अंतराय ५; एवं ७९ है. ४३ नही.

१	मि	હર	मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, आतप उच्छ्वास १, उद् योत १ , एवं १० विचि	१, व्छ	सुक्ष्म त्त	₹,	थीणत्रिक	₹,	पराघात	₹,
२	सा	६९	•)	0)			

अथ अप्कायरचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ७८ है. पूर्वोक्त ७९, आतप १ विना.

१	मि	૭૮	ि मिथ्यात्व १, अपर्याह द्योत १ विच्छित्तिः	१, सूक्ष्म	१,	थीणत्रिक	३, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्-
२	सा	६९		o		o	0

अथ तेजोवायुकाय रचना गुणस्थान १-मिथ्यात्वः उदयप्रकृति ७७ है. पूर्वोक्त ७९ आतप १, उद्योत १ विनाः

अथ वनस्पतिकाय रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति (७९). ज्ञाना० ५, दर्शना० ९, अंतराय ५, मिध्यात्व १, कषाय १६, हास्य आदि ६, नपुंसक १, तिर्यचित्रिक ३, नीच गोत्र १, औदारिक १, हुंडक १, तैजस १, कार्मण १, वर्णचतुष्क ४, अपर्याप्त १, अथिर १, अग्रुभ १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, बादर १, प्रत्येक १, थिर १, श्रुभ १, अग्रुक्त छु १, उपघात १, निर्माण १, पराघात १, उच्छ्वास १, उद्घोत १, पर्याप्त १, साधारण १, एकेंद्री १, यश १, थावर १, सहम १, वेदनी २; सर्वे अस्ति ७९, शेष ४३ नास्ति.

१	मि	હર	सिथ्यात्व १, विच्छित्तिः	स्क्ष्मित्रक	१, श्रीण	त्रेक ३,	पराघात	१, उच्छ	ास १,	उद्घोत १
२	सा	६९		- ,	0	0	0			

अथ त्रसकाय रचना गुणस्थान १४ सर्वे; उदयप्रकृति ११७ अस्ति. थावर १, ग्रह्म १, साधारण १, एकेंद्री १, आतप १; एवं ५ नास्ति.

ঽ	मि	११२	मिश्रमोहनीय १, सम्यक्त्वमोहनीय १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १, एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, एवं २ विच्छित्ति.
ર	सा	१०९	नरकानुपूर्वी १ उतारी. अनंतानुबंधि ४, विकलत्रय ३ विच्छित्ति.
ગ્ર	मि	१००	शेष आनुपूर्वी ३ उतारी. सिश्रमोह० १ सिल्ले. सिश्रमोह० १ विच्छित्त
૪	अ	१०४	आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोहनीय १ मिले.

पांचमेसे लेकर चौदमे ताई सम्रचयवत् जाननाः

अथ मनचतुष्क आदि वचनत्रिक, एवं ७ योगरचना गुणस्थान १२ आदिके उदय-प्रकृति १०९ अस्ति, एकेंद्री १, थावर १, सक्ष्मित्रिक ३, आतप १, विकलत्रय ३, आनुपूर्वी ४; एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०४	मिश्रमोह०१,सम्यक्त्वमोह०१,आहारकद्विक२,तीर्थकर१उतारे.मिथ्यात्व१वि०
ર	सा	१०३	अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति.
ર	मि	१००	सिश्रमोह० १ मिल्री. सिश्रमोह० १ विच्छित्ति.
૪	अ	१००	सम्यक्त्वमोह० १ मिल्रे. अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, नरक- गति १, देव-आयु १, नरक-आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति.
4	दे	८७	0 0 0

आगले गुणस्थानीमें समुचयवत् जानना.

अथ व्यवहार वचन योग रचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति ११२ है. एकेंद्री १, थावर १, सक्ष्मित्रक ३, आतप १, आनुपूर्वी ४; एवं १० नास्ति.

१	मि	१०७	मिश्रमोह० १,सम्यक्त्वमोह० १,आहारकद्विक २,तीर्थंकर १ उतारे.मिथ्यात्व १ वि०
3	सा	१०६	अनंतानुबंधि ४, विकलत्रय ३; एवं ७ विच्छित्ति.
3	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति.
ક	अ	१००	सम्यक्त्वमोह० १ मिली. अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, देव-आयु १, नरकगति १, नरक-आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयदा १ विच्छित्ति.
ष	दे	८७	0 0 0

आगले गुणस्थानोमे समुचयवत् जानना.

अथ औदारिक काय योगरचना गुणस्थान १३ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. आहारकद्विक २, वैकियकद्विक २, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देव-आयु १, नरकगति १, नरक-आयु १, अपर्याप्त १; एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०६	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, आतप १, सुक्ष्म १, साधारण १; एवं ४ विच्छित्ति.
२	सा	१०२	अनंतानुवंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एवं ९ विच्छित्तिः
३	मि	९४	मिश्रमोह० १ मिल्रे. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
8	अ	"	सम्यक्त्व १ मिले. अप्रत्याख्यान ४, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति.
4	दे	८७	प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच गति १, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्द्योत १; एवं ८वि०
६	प्र	७२	0 0 0

आगले गुणस्थानोमे समुचयवत्.

अथ औदारिकिमिश्र योग रचना गुणस्थान ४-पिहलो, द्जौ, चौथौ, तेरमौ; उदयप्रकृति ९८ है. आहारकिद्रिक २, वैकियद्रिक २, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देव-आयु १, नरकगति १, नरक-आयु १, मिश्रमोह० १, थीणत्रिक ३, दुःस्वर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १; एवं २४ (१) नही.

१	मि	९६	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, सूक्ष्मत्रिक ३ विच्छित्ति
ર	सा	९२	अनंतानु० ४, एकेंद्रिय १, थावर १, विकलत्रय २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, नपुंसकवेद १, स्त्री १, एवं १४ व्यवच्छेद.
૪	अ	હલ	सम्यक्त्वमोह० १ मिले. अप्रत्या० ४, प्रत्या० ४, तिर्यंच गति १, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, सम्यक्त्वमोह० १, अंतके संहनन ३, हास्य आदि ६, पुंवेद १, संज्व- लनके ४, ऋषभनाराच १, नाराच १, निद्रा १, प्रचला १, आवरण ९, अंतराय ५; एवं ४४ प्रकृतिकी विच्छित्ति हुइ.
१३	स	३६	तीर्थंकर १ मिल्ले

अथ वैक्रिय योग रचना गुणस्थान ४ आदिके उदयप्रकृति ८६ है. ज्ञानावरण ५, दर्शना० ६ थीणत्रिक विना, वेदनीय २, मोहनीय २८, अंतराय ५, गोत्र २, देवगित १, देव-आयु १, वैक्रियद्विक २, पंचेंद्री १, तैजस १, कार्मण १, समचतुरस्र १, हुंडक १, प्रशस्त गित १, अप्रशस्त गित १, वर्णचतुष्क ४, अगुरुलघु १, उपघात १, उच्छ्वास १, निर्माण १, अथिर १, अग्रुम १, त्रसद्शक १०, दुःस्वर १, अनादेय १, अयश १, नरक-गित १, नरक-आयु १, दुर्भग १; एवं ८६ (१) अस्ति, शेष ३६ नास्ति.

8	मि	ধ্যে	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
ર	सा	८३	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	८०	सिश्रमोह० १ मिल्रे. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
ક	अ	८०	सम्यक्त्वमोह० मिले

अथ वैक्रियमिश्र योग रचना गुणस्थान २-प्रथम, द्वितीय, चतुर्थः, उदयप्रकृति ७९ अस्ति. पूर्वोक्त ८६ तिण मध्ये मिश्रमोह० १, पराघात १, उच्छ्यास १, सुखर १, दुःखर १, प्रशस्त गति १, अप्रशस्त गति १; एवं ७ नास्ति.

१	मि	૭૮	सम्यक्त्वमोह० १ उतारी. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
ર	सा	६९	नरकगति १, नरक-आयु १, नीच गोत्र १, हुंडक १, नपुंसक १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ८ उतारे अनंता० ४, स्त्रीवेद १, एवं ५ विच्छित्ति.
8	अ	७३	सम्यक्त्वमोह० १, नरकगति १, नरक आयु १, नीच गोत्र १, हुंडक १, नपुंसक- वेद १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं ९ मिले

अथ आहारक योग रचना गुणस्थान १-प्रमत्तः उदयप्रकृति ६१ अस्ति. मिथ्यात्व १, मिश्रमोह० १, आतप १, स्रक्ष्मित्रक ३, अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, अप्रत्या० ४, वैक्रियकद्विक २, देवगति १, देव-आयु १, नरक-गति १, नरक-आयु १, आतु-पूर्वी ४, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, प्रत्या० ४, तिर्यच-आयु १, नीच गोत्र १, तिर्यच गति १, उद्योत १, तीर्थकर १; एवं ४१ नास्ति, शेष ६१ पष्ठ गुणस्थान अस्ति. तिण मध्ये थीणत्रिक ३, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, अप्रशस्त गति १, दुःस्वर १, संहनन ६, औदारिक-दिक २, संस्थान ५ समचतुरस्र विनाः; एवं २० नास्ति, शेष ६१ अस्ति.

अथ आहारकमिश्र योग रचना गुणस्थान १-प्रमत्तः उदयप्रकृति ५७ अस्ति. पूर्वोक्त ६१ तिण मध्ये सुस्वर १, पराघात १, उच्छ्वास १, प्रशस्त गति १; एवं ४ नही.

अथ कार्मण योग रचना गुणस्थान ४-पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; उदयप्रकृति ८९ अस्ति. सुस्तर १, प्रश्नस्त गित १, अप्रशस्त गित १, प्रत्येक १, साधारण १, आहारकद्विक २, औदारिकद्विक २, मिश्रमोह० १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २, थीणत्रिक ३, संस्थान ६, संहनन ६; एवं ३३ (१) नास्ति.

१	मि	৫৩	सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, सूक्ष्म १, अपर्याप्त १ विच्छित्त
२	सा	८१	नरकत्रिक उतारे. अनंता० ४, एकेंद्रि १, थावर १, विकलत्रय ३, स्त्रीवेद १; एवं १० विच्छित्ति
ઝ	अ	હલ્	सम्यक्त्वमोह० १, नरकत्रिक ३ मिले. अप्रत्या० ४, देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, तिर्यंचित्रिक ३, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, प्रत्या० ४, नीच गोत्र १, सम्यक्त्वमोह० १, नपुंसकवेद १, पुरुषवेद १, हास्य आदि ६, संज्वलन ४, निद्रा १, प्रचला १, आवरण ९, अंतराय ५, एवं ५१ विच्लित्त
१३	स	२५	तीर्थंकर १ मिले

अथ पुरुषवेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०७ है. थावर १, सक्ष्मित्रिक ३, नरकित्रक ३, विकलित्रक ३, एकेंद्री १, स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, आतप १, तीर्थंकर १; एवं १० (१) नास्ति.

१	मि	१०३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्त
२	सा	१०२	अनंतानुबंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९६	आनुपूर्वी ३ नरक विना उतारी. मिश्रमोह० १ मिल्रे. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
8	अ	९९	सम्यक्त्वमोह०१, आनुपूर्वी ३ नरक विनाः एवं ४ मिले. अप्रत्या० ४, वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं १४ विच्छित्ति
4	दे	८५	प्रत्या० ४, तिर्येच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्चोत १, तिर्येच गति १ विच्छित्ति
६	স	७९	आहारकद्विक २ मिले. थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
७	अ	ષ્ઠ	सम्यक्त्वमोह० १, अंतके संहनन ३; एवं ४ विच्छित्ति
۷	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	દ્દષ્ઠ	0 0 0

अथ स्त्रीवेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०५ अस्ति. पूर्वोक्त १०७, स्त्रीवेद १; एवं १०८, तिण मध्ये आहारकद्विक २, पुरुषवेद १; एवं ३ नही.

१	मि	१०३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०२	अनंता० ४, आनुपूर्वी ३ नरक विना; एवं ७ विच्छित्ति
3	मि	९६	मिश्रमोह० १ मिल्री. मिश्रमोह० १ विच्छित्त
ន	अ	"	सम्यक्त्वमोह० १ मिल्रे. अप्रत्या० ४, देवगति १, देव आयु १, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयदा १; एवं ११ विच्छित्ति
उ	दे	८५	प्रत्या॰ ४, तिर्यंच-आयु १, उद्घोत १, नीच गोत्र १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति

Ę	স	७७	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
હ	अ	હક	सम्यक्त्वमोह० १, अंतके संहनन ३; एवं ४ विच्छित्ति
4	अ	90	ह्यास्य आदि ६ विच्छित्ति
९	अ	६४	0 0 0

अथ नपुंसक वेद रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति ११४ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, देवत्रिक ३, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १; एवं ८ नही.

१	मि		मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३ वि०
२	सा	१०६	नरकातुपूर्वी १ उतारी. अनंता० ४, पकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मनुष्यानु- पूर्वी १, तिर्यचापूर्वी १; एवं ११ विच्छित्ति
3	मि	९६	मिश्रमोह० १ मिल्री. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
૪	अ	९७	सम्यक्त्वमोह० १, नरकानुपूर्वी १ मिल्ले. अप्रत्या० ४, नरकत्रिक ३, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं १२ विच्छित्ति
eg	दे	८५	प्रत्या० १, तिर्यंच-आयु १, उद्घोत १, नीच गोत्र १, तिर्यंच गति १ विच्छित्त
६	प्र	७७	थीणित्रक ३ विच्छित्ति
હ	अ	હક	सम्यक्त्वमोह० १, अंतके संहनन ३; एवं ४ विच्छित्ति
6	अ	७०	हास्य आदि ६ विच्छित्त
९	अ	६४	0 0 0

अथ क्रोधचतुष्क रचना गुणस्थान ९ आदिके उदयप्रकृति १०९ अस्ति. तीर्थेकर १, मान ४, माया ४, लोभ ४; एवं १३ नास्ति.

१	मि	१०५	सिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २ उतारे. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, एवं ५ विच्छित्ति
ર	सा	९९	१, सूक्ष्मित्रिक ३; एवं ५ विच्छित्ति नरकानुपूर्वी १ उतारी. अनंता० क्रोध १, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३; एवं ६ विच्छित्ति
३	मि	९१	आनुपूर्वी ३ नरक विना उतारी. मिश्रमोह० १ मिल्रे. मिश्रमोह० १ विच्छित्त
૪	अ	९५	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ४ मिले. अप्रत्या० क्रोध १, वैक्रियक-अष्टक ८, मनु- ष्यानुपूर्वी १, तिर्यचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयदा १, एवं १४ विच्छित्ति
4	दे	८१	प्रत्या० क्रोध १, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्द्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
દ્	স	७८	आहारकद्विक २ मिल्ले. श्रीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
v	अ	७३	सम्यक्त्वमोह० १, अंतके संहनन ३, एवं ४ विच्छित्ति
4	अ	६९	हास्य आदि ६ विच्छित्ति
9	37	83	0 0 0

एवं मानचतुष्कः; एवं माया ४, एवं लोभ ४. इतना विशेष-आपणे अपणे चतुष्क करी जानना, लोभ दशमे ताइं है सोइ नवमे गुणस्थानकी ६३ माहिथी वेद तीनकी विच्छित्ति कर्यो ६० रही. अपणी बुद्धिसें विचार लेना.

अथ मति-अज्ञान, श्रुत-अज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ११७ पहिले, १११ द्जे, समुचयवतः

अथ विभंगज्ञान रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति १०६ अस्ति, एकेंद्री १, आतप १, विकलत्रय ३, थावरचतुष्क ४, आतुपूर्वी मनुष्यकी १, तिर्यचकी १, मिश्रमोह० १, सम्यक्तमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं १६ नास्ति.

१	मि	१०६	मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १ विच्छित्ति
२		१०४	0 0

अथ ज्ञानत्रय रचना गुणस्थान ९ अविरितसम्यग्दृष्टि आदिः उद्यप्रकृति १०६ है. मिथ्याज्ञ १, आतप १, सङ्मित्रक ३, अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्र-मोह० १, तीर्थकर १; एवं १६ नास्ति.

ខ	अ	१०४	आहारकद्विक २ उतारे. अप्रत्या० ४, वैकिय-अष्टक ८, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्येचा- नुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १ विच्छित्ति
4	दे	८७	0 0 0

आगे सर्वत्र समुचयगुणस्थानवत् मनःपर्याय छद्देसे लेकर पूर्वोक्तवत् केवलज्ञान १२।१४ मे वत् सामायिक, छेदोपस्थापनीय छद्देसे नवमे लग समुचयवत्

अथ परिहारविशुद्धि रचना गुणस्थान २-प्रमत्त, अप्रमत्तः उदयप्रकृति ७८ है. पूर्वोक्त छड्डेकी ८१ः तिण मध्ये स्त्रीवेद १, आहारकद्विक २ः एवं २ नहीं. सातमे थीणित्रिक नहीं ७५. सक्ष्मसंपराय दशमे वत्. यथाख्यातमे ११।१२।१३।१४ में गुणस्थानवत् जान लेनी. देशविरते ८७. अथ असंयम प्रथम चार गुणस्थानवत्.

अथ चक्षुर्दर्शन रचना गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १०९ है. तीर्थंकर १, साधा-रण १, आतप १, एकेंद्री १, थावर १, सूक्ष्म १, वेंद्री १, तेंद्री १ आनुपूर्वी ४, अपर्याप्त १; एवं १३ नही.

१	मि	१०५	मिश्रमोह०१, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २; एवं ४ उतारे.मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
२	सा	१०४	अनंतानुबंधि ४, चौरिंद्री १, एवं ५ विच्छित्ति
રૂ	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिली. मिश्रमोह० १ विच्छित्त
ક	अ	59	सम्यक्त्वमोद्द० १ मिली

आगे समुचयगुणस्थानवत्.

अचक्षुर्दर्शनमें गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति १२१. तीर्थंकर १ नास्ति. गुणस्थानोमें सम्बयवत् पहिले ११७, द्जे १११ इत्यादिः अवधिदर्शन अवधिज्ञानवत्. केवलदर्शन केवलज्ञानवत्.

अथ कृष्ण, नील, कापोत लेक्या रचना गुणस्थान ४ आदिके उद्यप्रकृति ११९ है. आहारकद्विक २, तीर्थंकर १; एवं ३ नास्ति.

१	मि	११७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १ उतारे. मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, नरकानुपूर्वी १, पर्व ६ विच्छित्ति
२	सा	१११	अनंता० ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, देवानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, एवं ११ विच्छित्ति
3	मि	१००	मनुष्यानुपूर्वी १ उतारी. मिश्रमोह० १ मिल्री. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
૪	अ	१०४	आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्वमोह० १; एवं ५ मिली

अथ तेजोलेक्या रचना गुणस्थान ७ आदिके उदयप्रकृति १०१ है। आतप १, विकल-त्रय २, सक्ष्मत्रिक २, नरकत्रिक २, तीर्थकर १; एवं ११ नास्ति

१	मि	१०७	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २; एवं ४ उतारे. मिथ्यात्व १ वि०
२	सा	१०६	अनंतानुवंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, एवं ६ विच्छित्ति
३	मि	९८	आनुपूर्वी ३ उतारेः सिश्रमोह० १ मिल्रेः सिश्रमोह० १ विच्छित्ति
૪	अ	१०१	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३, एवं ४ मिले. वैक्रियद्विक २, अप्रत्या० ४, देवित्रक- ३, आनुपूर्वी ३, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं १४ (१) विच्छित्ति
ų	दे	८७	प्रत्या० ४, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
દ્	प्र	८१	आहारकद्विक २ मिले. थीणत्रिक ३, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
છ	अ	७६	0 0 0

अथ पद्मलेक्या रचना गुणस्थान ७ आदिके उद्यप्रकृति १०९ है. आतप १, एकेंद्री १, थावरचतुष्क ४, विकलित्रक ३, नरकित्रक ३, तीथकर १; एवं १३ नास्ति. १०५।१०४। ९८, चौथे १०१।८७।८१।७६.

अथ शुक्कलेक्या रचना गुणस्थान १२ आदिके उदयप्रकृति ११० अस्ति. आतप १, एकेंद्री १, विकलत्रय २, थावरचतुष्क ४, नरकत्रिक २; एवं १२ नास्ति.

१	मि	१०५	मिश्रमोह०१, सम्यक्त्वमोह०१, आहारकद्विक २, तीर्थकर १, एवं ५ उतारे. मिथ्यात्व १ विच्छित्ति
ર	सा	१०४	अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	९८	आनुपूर्वी ३ उतारी. मिश्रमोह० १ मिली. मिश्रमोह० १ विच्छित्ति
ક	अ	१०१	सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ मिले

आगे गुणस्थान समुचयवत् अथ भन्यरचना गुणस्थानवत् १४ सर्वे. अथ अभन्य प्रथम गुणस्थानवत्.

अथ उपश्चम रचना गुणस्थान ८ चौथा आदि उदयप्रकृति १०० है. मिथ्यात्व १, आतप १, सक्ष्मत्रिक ३, अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आनुपूर्वी ३ देव विना, आहारकद्विक २, तीर्थकर १; एवं २२ नास्ति.

૪	अ	१००	अप्रत्याख्यान ४, वैक्रियद्विक २, देवत्रिक ३, नरकगति १, नरक-आयु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, एवं १४ व्यवच्छेद
५	दे	८६	प्रत्याख्यान ४, तिर्यंच-आयु १, नीच गोत्र १, उद्द्योत १, तिर्यंच गति १ विच्छित्ति
લ	স	७८	थीणत्रिक ३ विच्छित्ति
७	अ	७५	•

आगले च्यार गुणस्थानोमे सम्रचय गुणस्थानवत्.

अथ क्षयोपश्चम सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४-४।५।६।७ सम्बयगुणस्थानवत्.

अथ क्षायिक सम्यक्त्व रचना गुणस्थान ११—चौथा आदि; उदयप्रकृति १०६ है. मिथ्यात्व १, आतप १, स्रक्ष्मत्रिक ३, अनंतानुवंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एवं १६ नास्ति.

૪	अ	१०३	आहारकद्विक २, तीर्थंकर १ उतारे. अप्रत्या० ४, वैक्रिय-अप्टक ८, मनुष्य- आनुपूर्वी १, तिर्यंच-आनुपूर्वी १, तिर्यंच-आयु १, उद्योत १, तिर्यंच गति १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १; एवं २० विच्छित्ति
५	दे	८३	प्रत्याख्यान ४, नीच गोत्र १ विच्छित्ति
६	प्र	८०	आहारकद्विक २ मिले. थीणत्रिक २, आहारकद्विक २ विच्छित्ति
O	अ	७५	0

आगे समुचयवत् अथ मिश्र १, साखादनसम्यक्त्व १, मिथ्यात्व १, आपणे आपणे गुणस्थानवत्.

अथ संज्ञी रचना गुणस्थान १२ आदि के उदयप्रकृति ११३ अस्ति. एकेंद्री १, थावर १, सक्ष्म १, साधारण १, आतप १, विकलत्रय ३, तीर्थंकर १; एवं ९ नास्ति.

१	मि	१०९	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, एवं ४ उतारे. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति
२	सा	१०६	नरक−आनुपूर्वी १ उतारी. अनंतानुवंधि ४ विच्छित्ति
३	मि	१००	आनुपूर्वी ३, नरक विना उतारी. मिश्रमोह० १ मिली

आगे समुचयवत्.

अथ असंज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके उदयप्रकृति ९४ अस्ति. उंच गोत्र १, वैक्रिय-छक ६, संहनन ५ छेवह विना, संस्थान ५ हुंडक विना, प्रशस्त गति १, सुभगत्रिक ३, आयु २ देव, नरककी, आहारकद्विक २, तीर्थंकर १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एवं २८ नही.

१	मि	९४	मिथ्यात्व १, आतप १, सूक्ष्मत्रिक ३, थीणत्रिक ३, पराघात १, मनुष्यत्रिक ३, उच्छुवास १, उद्द्योत १, दुःस्वर १, अप्रशस्त गति १; एवं १६ विच्छित्ति.
2	स	७८	o

अथ आहारक रचना गुणस्थान १३ है; आदिके उदय प्रकृति ११८; आनुपूर्वी ४ नही.

१	मि	११३	मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, आहारकद्विक २, तीर्थकर १; एवं ५ उतारे. प्रिथ्यात्व १, आतप १, स्क्ष्मित्रक ३; एवं ५ विच्छित्ति.
- २	सा	१०८	अनंतानुवंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकलत्रय ३, एवं ९ विच्छित्ति
য	मि	१००	मिश्रमोह० १ मिल्रे. मिश्रमोह० १ विच्छित्त
8	अ	77	सम्यक्त्वमोह० १ मिली

आगे सर्व समुचयवत्.

अथ अनाहारक रचना गुणस्थान ४-पिहलो, द्जो, चौथो, तेरमो; उदयप्रकृति ८९ अस्ति. दुःखर १, मुखर १, प्रशस्त गित १, अप्रशस्त गित १, प्रत्येक १, साधारण १, आहा- स्कद्विक २, औदारिकद्विक २, मिश्रमोह० १, उपधात १, पराधात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्द्योत १, वैक्रियद्विक २, थीणित्रक ३, संहनन ६, संस्थान ६; एवं ३३ नास्ति.

्र	मि	८७	सम्यक्त्वमोह०१, तीर्थंकर १ उतारे. मिथ्यात्व १, स्क्ष्म १, अपर्याप्त १ विच्छित्ति.
२	सा	८१	नरकत्रिक उतारे. अनंतानुबंधि ४, एकेंद्री १, थावर १, विकल्लत्रय ३, स्त्रीवेद १; एवं १० विच्छित्ति.
8	अ	હહ	सम्यक्त्वमोह० १, नरकत्रिक ३ मिल्रे. अप्रत्याख्यान आदि अंतराय पर्यंत ५१ विच्छित्ति व्यौरा कार्मणरचनावत्
१३	स	२५	तीर्थंकर १ मिल्ले

इति उदयाधिकार समाप्त.

अथ सत्ताधिकार कथ्यते. अथ घर्मा आदि नरकत्रय रचना गुणस्थान ४ आदिः सत्ता-प्रकृति १४७. देव-आयु नही.

8	मि	१४७	o
ર	सा	१४६	तीर्थंकर १उतारे
3	मि	57	0
४	अ	१४७	तीर्थंकर १ मि ले

१	मि	१४६	0	अंजना आदि त्रयमे देव-आयु
२	सा	55	"	तीर्थकर १; एवं २ नास्ति. सातमी तीर्थकर १, देव आयु १, मनुष्
રૂ	मि	***	"	तायकर र, दव आधु र, मनुष्य आयु १; एवं ३ नही. १४५ मि. १४५
ક	अ	"	"	सा. १४५ मि. १४५ अ.

अथ सामान्य तिर्यंच रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४७; तीर्थंकर १ नही. पहिले १४७, दुजे १४७, तीजे १४७, चौथे १४७; मनुष्य रचना गुणस्थान १४ वत्.

अथ सौधर्म आदि सहस्रार पर्यंत देवलोक रचना गुणस्थान ४; सत्ताप्रकृति १४७; नरक-आयु नास्ति. अथ आनत आदि नव ग्रैवेयक पर्यंत सत्ता० १४६; नरक १, तिर्यंच-आयु नही.

ę	मि	१४६	तीर्थंकर १	उतारे
ર	सा	17	o	·
३	मि	"	o	
8	अ	१४७	तीर्थकर १	मिले

१	मि	१४५	तीर्थंकर १ उतारे	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
२	सा	35	o	गुणस्थान १—चौथाः
3	मि	73	o	सत्ता०१४६; नरक-आयु १, तिर्येच−आयु १;
४	अ	१४६	तीर्थंकर १ मिले	

अथ भवनपति, व्यंतर १, जोतिषि १, सर्व देवी १, रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ता-प्रकृति १४६ अस्ति. तीर्थंकर १, नरक-आयु १; एवं २ नास्ति.

१	मि	१४६		अथ एकेंद्री विकलत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ताप्रकृति १४५
२	सा	"	0	अस्ति. तीर्थंकर १, नरक-आयु १, देव आयु १ नही. अथ पंचेद्री रचना गणस्थानवत
३	मि	35	0	१ मि १४५
8	अ	"	o	२ सा "

अथ पृथ्वीकाय १, अप्काय १, वनस्पतिकाय रचना एकेंद्री विकलत्रय रचनावत्. अथ तेजोवातकाय रचना गुणस्थान १—मिध्यात्व १; सत्ताप्रकृति १४४ है. तीर्थंकर १, देव-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरक-आयु १; एवं ४ नास्ति. अथ त्रसकाय रचना गुणस्थानवत्. अथ मनोयोगचतुष्क ४, वचनयोगचतुष्क ४, औदारिककाययोग १; एवं योग ९ गुणस्थान रचनावत्. अथ वैक्रियकाययोग रचना गुणस्थान ४ आदिके सत्ताप्रकृति १४८; पहिले १४८, दुने १४७, तीने १४७, चौथे १४८.

अथ आहारक आहारक मिश्र रचना गुणस्थान १-प्रमत्तः सत्ताप्रकृति १४८ सर्वे.

अथ औदारिकमिश्रयोग रचना गुणस्थान ४-पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; सत्ता० १४६ अस्ति. देव-आयु १, नरक-आयु १ नही.

१	मि	१४५	तीर्थंकर १ उतारे
२	सा	,,	•
૪	अ	१४६	तीर्थंकर १ मिले. सातमे गुणस्थानकी, नवमे गुण०की, दशमे गुण०की, बारमे गुण०की; एवं ६१ की विच्छित्ति. शेष ८५ रही तेरमे गुणस्थानमे.
१३	स	८५	0

अथ नरकगति मिश्रवैक्रियका गुणस्थान २-पिहला, चौथा; सत्ता० १४५. मनुष्य-आयु १, तिर्येच-आयु १, देव-आयु १; एवं ३ नहीं. पिहले १४५, चौथे १४५ है.

अथ देवगति संबंधि वैक्रियकमिश्रयोग रचना गुणस्थान ३-पहिला, दूजा, चौथा; सत्ता० १४५. मनुष्य-आयु १, तिर्यंच-आयु १, नरक-आयु १; एवं ३ नही.

अथ कार्मणरचना गुणस्थान ४-पहिला, दूजा, चौथा, तेरमा; सत्ता० १४८ सर्वे सन्ति.

१	मि	१४४	तीर्थकर १ उतारे
२	सा	,,	o
ક	अ	१४५	तीर्थंकर १ मिले
0	o	0	0

8	मि	१४८	o
२	सा	१४६	तीर्थंकर १, नरक आयु १ उतारे
४	अ	१४८	तीर्थंकर १, नरक-आयु १ मिले
१३	स	24	रही ८५का व्यौरा गुणस्थानवत्

अथ वेद तीनो नव गुणस्थान लग समुचयगुणस्थानवत् जानना. अथ अनंतानुवंधिचतुष्क रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० पहिले १४८, दूजे १४७. अथ अप्रत्याख्यान ४ रचना गुण-स्थान ४ आदि सत्ता० समुचयगुणस्थानवत्. अथ प्रत्याख्यानमे गुणस्थान ५ आदिके रचना समुचयगुणस्थानवत्. अथ संड्वलन क्रोध १, मान १, माया १ नवमे ताइ लोभ द्शमे ताइ समुचयवत् अथ अज्ञानत्रय रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० समुचयवत् जाननाः अथ ज्ञान-त्रय रचना गुणस्थान ९ चौथा आदि बारमे लग सत्ता० १४८ समुचवत्. अथ मनःपर्यायज्ञानरचना गुणस्थान ७-प्रमत्त आदि; सत्ता० १४८ सर्वे, समुचयवत्. केवलज्ञानमे सत्ता०८५ की; गुणस्थान १२।१४ मा सम्बयनत्. अथ सामायिक, छेदोपस्थापनीय रचना गुणस्थान ४-प्रमत्त आदिः सत्ता० १४८ समुचयवत्. अथ परिहारविशुद्धि रचना गुणस्थान २-प्रमत्त, अप्रमत्तः सत्ताप्रकृति १४८ सम्रचयवत् सक्ष्मसंपराय चारित्र दशमेवत् अथ यथाख्यात रचना ११।१२।१३।१४ मे वत्. अथ देशविरति पंचमे वत्. अथ असंयम रचना आदिके ४ गुणस्थानो वत्. अथ अचक्षु, चक्षुदर्शन रचना गुणस्थानरचनावत् गुणस्थान १२ पर्यत. अथ अवधिदर्शन रचना अवधि-ज्ञानवत्, अथ केवलदर्शन केवलज्ञानवत्, अथ कृष्ण, नील लेक्या, कापोत लेक्या रचना गुणस्थान ४ प्रथमवत्. अथ तेजो पद्मलेक्या रचना गुणस्थान ७ आदिके समुचयवत्. अथ शुक्र लेक्या रचना गुणस्थान १३ आदिके रचना १४८ सत्ता० सम्रचयवत्. अथ भव्य रचना गुणस्थानवत्. अथ अभव्य रचना गुणस्थान १-मिध्यात्वः सत्ताप्रकृति १४१. मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १, तीर्थंकर १, आहारकद्विक २, आहारकवंधन १, आहारकसंघातन १; एवं ७ नही. अथ उपश्चमसम्यक्त्वरचना गुणस्थान ८-अविरतिसम्यग्दृष्टि आदिः सत्ता० सर्वे गुण-स्थानोकी १४८ जाननी. अथ क्षयोपश्चमसम्यक्त्व रचना गुणस्थान ४-अविरतिसम्यग्दृष्टि आदिः सत्ता० १४८ सम्रचयगुणस्थानवत्. अथ क्षायिक सम्यक्त्वरचना गुणस्थान ११-अविरित-सम्यग्दृष्टि आदि, सत्ताप्रकृति १४१ अस्ति. अनंतानुबंधि ४, मिथ्यात्व १, मिश्रमोह० १, सम्यक्त्वमोह० १; एवं ७ नास्ति. यंत्र नाम मात्र लिख्या. विस्तार सम्रचयसत्ताथी जानना.

8	अ	१४१	
ધ	दे	59	
દ	प्र	73	
છ	अ	99	आयु ३ की विच्छित्ति
6	अ	१३८	0
९	अ	55	भाग ९करी ३६की विच्छित्त व्यौरा गुणस्थानरचनावत्
१०	सू	१०२	संज्वलन लोभ विच्छित्ति
११	उ	१०१	o
११ १२	क्षी	53	निद्रा १, प्रचला १, ज्ञानावरण ५, द्र्शना० १, वर्ण ४, अंतराय ५ विच्छित्ति
१३	स	24	o
१४	अ	,,,	० ८५ व्यवच्छेदे मुक्ती

मिध्यात्व मिध्यात्ववत् सास्तादन सास्तादनवत् , मिश्र मिश्रगुणस्थानवत् अय संज्ञी रचना गुणस्थानरचनावत् गुणस्थान १२ पर्यंतः अथ असंज्ञी रचना गुणस्थान २ आदिके सत्ता० १४७ अस्तिः तीर्थंकर १ नही. पहिले १४७, दूजे १४७. अथ आहारक रचना गुणस्थान-रचनावत् १३ लगे. अथ अनाहारक रचना कार्मणयोगरचनावत् इति सत्ताधिकार संपूर्णः

(१६५) उत्कृष्ट प्रकृतिवन्धयन्नम् शतकात्

(१६६) जघन्यप्रकृतिबन्धस्वामियन्नम्

प्रकृति	स्वामि
तीर्थंकर १	४ गुणस्थान
आहारकद्विक २, देव-आयु १	७ अप्रमत्त
विकलित्रक ३, स्हम ३,नरक, तिर्थम, मनुष्य-आयु ३, सुर- द्विक २, वैक्रियद्विक २, नरक- द्विक २; सर्व १५	तिर्येच, मनुष्य मिथ्यात्वी
ए केंद्री १, थावर १, आतप १	मिथ्यात्वी ईशानांत
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, उद्घोत १, छेवट्टा १	देवता, नारकी मिथ्यात्वी
शेष ९२ श्रकृति	चारो गतिका मिथ्यात्वी

प्रकृति	बन्ध-खामि
आहारक २, तीर्थंकर १	८ गुणस्थान
संज्वलन ४, पुरुषवेद १	नवमा गुणस्थाने
साता १, यश १, उच्चगोत्र १, ज्ञानावरणीय ५, दर्श- नावरण ४, अंतराय ५; एवं सर्व १७,	· ·
नरकद्विक २, वैक्रियद्विक २, देवद्विक २	असंज्ञी तिर्येच पर्याप्त
आयु ४	संज्ञी असंज्ञी
शेष प्रकृति ८५ रही	बाद्र एकेंद्री पर्योप्त

(१६७) अथ स्थितिबंध अल्पबहुत्व संख्या

यति	सूक्ष्म सं	पराय	जघन्य	स्तो १
बादर	एकेंद्री	पर्याह	τ "	असं २
सुक्ष्म	55	35	55	वि ३
बाद्र	,, ;	अपर्याः	₹ ,,	,, ક
सुक्ष्म	"	"	,,	,, eq
- 35	. ,,	52	उत्कृष्ट	,, ફ
बादर	,,,	"	"	,, ه
सूक्ष्म	55	पर्याध	Ŧ ,,	,, <
बाद्र	,,	,,,	**	,, ۹
बेइंद्री	पर्याः	प्त	जघन्य	सं १०
,,,	अपर्य	ाप्त	"	वि ११
**	75	•	उत्कृष्ट	,, १२
59	पय	ा प्त	,,	,, १३
तेइंद्री	"	,	जघन्य	,, १४
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	अपर	र्याप्त	**	,, १५
37	31)	उत्कृष्ट	,, १६
77	पर्या	प्त	,,	,, १७
चडरिंद्री	पर्य	प्त	जघन्य	,, १८

	·		
चर्डारद्वी	अपर्याप्त	जघन्य	वि १९
77	17	उत्कृष्ट	,, २०
75	पर्याप्त	57	,, २१
असंज्ञी पं	चेंद्री पर्या	प्त जघन्य	सं २२
59	" अपर्य	प्ति "	वि २३
"	77 11	उत्कृष्ट	,, રષ્ઠ
"	" पर्याप्त	77	,, २५
यतिना	उत्कृष्ट	स्थितिबंध	सं २६
देशविरति	जघन्य	स्थिति	,, २७
,,	उत्कृष्ट	17	,, २८
अविरतिस	म्यग्दृष्टि प	र्याप्त जघन्य	" २९
,,	अपय	ਸਿ ,,	,, રૂ૦
,,,	>5	उत्कृष्ट	,, ३१
"	पर्याप्त	"	,, ३२
संशी	73	जघन्य	,, ३३
55	अपर्याप्त	7.9	" ইণ্ড
***	95	उत्कृष्ट	,, ३५
,,	पर्याप्त	,,,	,, ३६

(१६८) अथ ४१ प्रकृतिका अवंध कालयंत्र

प्रकृति	अवंधकाल				
नरकत्रिक ३, तिर्यचित्रिक ३, उद्घोत १; एवं सर्व ७	१६३ सागरोपम, ४ पल्योपम मनुष्य-भव अधिक जुगलियाने				
थावरचतुष्क ४, पकेंद्री १, विकलत्रिक ३, आतप १	१८५ सागरोपम, ४ पल्योपम मनुष्यमव अधिक नारकने				
प्रथम संहनन वर्जी ५ संहनन, प्रथम संस्थान वर्जी ५ संस्थान, अग्रुभ गति १, अनंतानुवंधि ४, सिथ्यात्व १, दुर्भग १, दुःखर १, अनादेय १, श्रीणत्रिक ३, नीच गोत्र १, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १	१३२ सागरोपम मनुष्य-भवे अधिक यति भव आदि देइ पंचेंद्रीने अवंधस्थिति				

अथ १६३।१८५ कहा ते पूरवाना ठाम लिख्यते. विजय आदिकने विषय दो २ वार तीन वार अच्युतने विषय १३२ एक ग्रैवेयकने विषे १६३, इम तमाने विषे १८५. (१६९) अथ ७३ अधुवबंधनो उत्कृष्ट जघन्य निरंतर बन्धयन्त्र

रस्र १, पराघात १, त्रसदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उद्यगोत्र १; एवं सर्व ३२	(1/1) 31, 37, 38, 1, 1, 1, 1	Vigio and a collect to a con-
तिर्थंच गित १, तिर्थंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १ शायु ४ शोदारिक शरीर १ सातावेदनीय १ पराधात १, उच्छ्वास १, पंचेंद्री १, असचनुष्क ४ श्वा योत्र १, समचनुरम्भ संह्यान १, अशुम विहायगति १, जाति ४, अशुम संह्यान १, अशुम संह्यान १, अशुम संह्यान १, आहारकद्विक २, नरकगित १, नरकानुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, थिर १, शुम र १, यरा १, श्यावरदशक १०, नपुंसकवेद १, अतिव १, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, असातावेदनीय १ मनुष्यद्विक २, जिननाम १, चज्रक्रपभनाराच १, औदारिक अंगोपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्धस्वामियन्नं शातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि पर्केद्री १, थावर १, आतप १ विकलित ३, स्क्ष्मित्रक ३, तिर्यंच-आयु १, मनुष्य-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकित ३, तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेबद्व १, विक्रियद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, द्वानि १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, शुभ विहायोगति १, गुभ वर्ण-चनुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुक्लु १, नर्मण १, जननाम १, सातावेदनीय १, समचनु-रम्न १, पराधात १, असदशक १०, पंचेद्री १, उच्छ्यात १, अनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, व्ह्योत मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, व्ह्योत १, सम्यग्दिष्ट देवता सन्वष्याति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक सम्यग्दिष्ट देवता देशस्य प्रमान्त	प्रकृतिनामानि	निरंतर बन्ध
तिर्थंच गित १, तिर्थंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १ शायु ४ शोदारिक शरीर १ सातावेदनीय १ पराधात १, उच्छ्वास १, पंचेंद्री १, असचनुष्क ४ श्वा योत्र १, समचनुरम्भ संह्यान १, अशुम विहायगति १, जाति ४, अशुम संह्यान १, अशुम संह्यान १, अशुम संह्यान १, आहारकद्विक २, नरकगित १, नरकानुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, थिर १, शुम र १, यरा १, श्यावरदशक १०, नपुंसकवेद १, अतिव १, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, असातावेदनीय १ मनुष्यद्विक २, जिननाम १, चज्रक्रपभनाराच १, औदारिक अंगोपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्धस्वामियन्नं शातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि पर्केद्री १, थावर १, आतप १ विकलित ३, स्क्ष्मित्रक ३, तिर्यंच-आयु १, मनुष्य-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकित ३, तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेबद्व १, विक्रियद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, द्वानि १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, शुभ विहायोगति १, गुभ वर्ण-चनुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुक्लु १, नर्मण १, जननाम १, सातावेदनीय १, समचनु-रम्न १, पराधात १, असदशक १०, पंचेद्री १, उच्छ्यात १, अनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, व्ह्योत मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, व्ह्योत १, सम्यग्दिष्ट देवता सन्वष्याति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक सम्यग्दिष्ट देवता देशस्य प्रमान्त	सुरद्विक २, वैकियद्विक २	तीन पल्योपम
श्रीदारिक शरीर १ श्रीदारिक शरीर १ सातावेदनीय १ पराघात १, उच्छ्वास १, पंचेंद्री १, ज्ञस्चजुष्क ४ श्रुम विद्यायाति १, पुरुषवेद १, सुमगिकिक ३, उंच गोत १, आदारकद्विक २, नरकगित १, नरकानुपूर्वी १, अर्था १, श्रीदारिक १, गर्या १, श्रीदारिक १, जोता १, श्रीदारिक श्रीपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्धसामियस्रं शातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि पर्केद्री १, श्रीदारिक श्रीपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्धसामियस्रं शातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि पर्केद्री १, श्रीदारिक श्रीपांग १ विकलित्रक २, स्थानिक ३, तिर्थेच-आगु १, मुस्पत्रक ३, तिर्थेच-आगु १, नरकिक ३, तिर्थेच-आगु १, मुस्पत्रक ३, तिर्थेच-आगु १, मुस्पत्रक ३, तिर्थेच-आगु १, स्वात्वि तिर्थेच, मनुष्य विद्वायोगिति १, श्रीव वर्णचतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अग्रुक्लपुर्वी १, अग्रुक्लपुर्वा १, पर्वा सर्व २२ उद्योत १, मनुष्यानुपूर्वी १, श्रीदारिकद्विक २, व्याने २२ उद्योत १, मनुष्यानुपूर्वी १, श्रीदारिकद्विक २, व्याने १२ स्व सर्व २२ उद्योत मनुष्यानुपूर्वी १, श्रीदारिकद्विक २, व्याने ११ स्व सर्व २२ उद्योत मनुष्यानुपूर्वी १, श्रीदारिकद्विक २, व्याने १२ स्व सर्व २२ उद्योत १ श्रीदारिकद्विक १, मनुष्यानुपूर्वी १, श्रीदारिकद्विक २, व्याने १२ स्व सर्व १२ अप्रमत्त १ श्रीदारिकद्विक २, व्याने १२ सर्व सर्व १२ अप्रमत्त १ श्रीदारिकद्विक २, व्याने १२ सर्व सर्व १२ अप्रमत्त १ श्रीदारिकद्विक २, व्याने १० सर्व सर्व १० स्व सर्व १० सर्व सर्व १ सर्व सर्व १ अप्रमत्त १ अप्रमत्		समयश्री लइ असंख्य काल
श्रीदारिक शरीर १ सातावेदनीय १ पराघात १, उच्छ्वास १, पंचेंद्री १, त्रसचतुष्क ४ श्रुम विह्वायगति १, पुरुषवेद १, सुमगित्रक ३, उंच गोत्र १, समचतुरस्न संस्थान १, अश्रुम संस्थान ५, आहारकद्विक २, नरकगति १, नरकानुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, श्रिर १, श्रुम १, यश १, स्थावरद्शक १०, नपुंसकवेद १, क्षीवेद १, हास्य १, रति १, अरति १, श्रोक १, आवातावेदनीय १ मनुष्यद्विक २, जिननाम १, वज्रक्रषमनाराच १, श्रोद्वारिक अंगोपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्यस्वामियन्त्रं श्रातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि प्रकेंद्री १, थावर १, आतप १ विकलत्रिक ३, स्कृमित्रक ३, तिर्यच-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकिव ३, तिर्यच गित १, तिर्यचानुपूर्वी १, छेवद्व १, विक्रयद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, सम्बनु-रस्न १, पराघात १, त्रसवंद्वित १०, सम्बनु-रस्न १, पराघात १, त्रसवंद्वित १, सनुस्थानुपूर्वी १, अग्रुस्ल्यु १, नरकका १, कार्मण १, अग्रुस्ल्यु १, नरका १, कार्मण १, अग्रुस्ल्यु १, नरका १, कार्मण १, अग्रुस्ल्यु १, नरका १, कार्मण १, अग्रुस्ल्यु १, सम्बन्ध-रस्न १, पराघात १, त्रसवंद्व १, सम्बन्ध-रस्व १, पराघात १, त्रसवंद्व १, अौदारिकद्विक २, व्यानेत्र १, मनुस्थानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रक्रप्रसहन १ ५, अग्रुसल्य १ ५, अग्रुसल्य १, पर्यच्विक १, मनुस्थानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रक्रप्रसहन १ ५ अग्रमक्त		
सातावेदनीय १ पराघात १, उच्छ्वास १, पंचेंद्री १, त्रसचतुष्क ४ ग्रुम विहायगति १, पुरुषवेद १, सुमानिक ३, उंच गोत्र १, समचतुरस्न संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम संस्थान १, अग्रुम १, यावर १, अताप १, विहे स्वाप १, ति १, अरति १, शोक १, अग्रुमिक ३, तिनाम १, वज्रक्रप्रमाराच १, ओदारिक अंगोपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसबन्धस्वामियन्त्रं द्वातककर्मग्रन्थात् प्रस्ति १, थावर १, आतप १ विकलित ३, स्क्ष्मित ३, तिर्यच-आगु १, मजुष्य-आगु १, मजुष्य-आगु १, नरकिक ३, तिर्यच गति १, तिर्यचानुपूर्वी १, छेवट्ठ १, वैक्षयद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, अग्रुकलुष्ठ १, तैज्ञस १, कार्मण १, अग्रुकलुष्ठ १, निर्माण १, जसदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, उच्चगेत १, पर्व सर्व ३२ उच्चोत मनुष्यात् १, मनुष्यानुपूर्वी १, औवारिकद्विक २, वज्रक्षमसंहनन १ सम्यन्दिष्ट देवता देवायु १ प्रसम्यन्दिष्ट देवता अग्रमत्त		
पराघात १, उच्ह्वास १, पंचेंद्री १, त्रसचतुष्क ४ ग्रुम विहायगति १, पुरुपवेद १, सुभगिक ३, उंच गोत्र १, समचतुरस्न संस्थान १, अग्रुम संहतन ५, अग्रुम संस्थान ५, आहारकद्विक २, नरकगति १, नरकातुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, थिर १, ग्रुम १, यद्रा १, श्रावरदशक १०, नपुंसकदेद १, कीवेद १, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, असातवेदनीय १ मनुष्पद्विक २, जिननाम १, वज्रक्रवभनाराच १, श्रोद्वारिक अंगोपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्धसामियन्नं शतककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि एकेंद्री १, थावर १, आतप १ विकलिक ३, स्वस्मिक ३, तिर्यंच-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकिक ३, तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेवह १, वैक्षिपद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, ग्रुम विहायगेति १, ग्रुम वर्णच्वाक्त ४, तैजस १, कार्मण १, अग्रुम ग्रुम वर्णच्वाक्त ४, तैजस १, कार्मण १, ग्रुम वर्णच्वाक्त ४, तेजस १, सातावेदनीय १, समचनुरस्न १, पराघात १, त्रसदशक १०, पंचेंद्री १, उच्चात १, उच्चगेत १, पद्मच १, पद्मचित १, पद्मच १,	सातावेदनीय १	
ग्रुम विहायगति १, पुरुपवेद १, सुमगिवक ३, उंच गोत्र १, समचतुरस्न संस्थान १, अग्रुम संहान ५, अग्रुम संस्थान ५, आहारकद्विक २, नरकगति १, नरकातुपूर्वी १, उद्घोत १, आतप १, थिर १, ग्रुम १, यद्या १, स्थायरदाक १०, नपुंसकवेद १, स्थायरदाक १०, नपुंसकवेद १, स्थायत्विद १, हास्य १, रित १, अरित १, शोक १, असातावेदनीय १ मगुष्पद्विक २, जिननाम १, वज्रक्रप्र समचन्ध्रसामियन्त्रं द्वातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि एकेंद्री १, थावर १, आतप १ विकलिवक ३, स्वस्मित्रक ३, तिर्यंच-आयु १, मगुष्प-आयु १, नरकिवक ३, तिर्यंच-आयु १, नरकिवक ३, तिर्यंच-आयु १, नरकिवक ३, तिर्यंच-आयु १, नरकिवक ३, तिर्यंचातुपूर्वी १, छेवट्ट १, वैक्रियद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, ग्रुम विहायगिति १, अगुरुलपुर्वी १, आवार १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समजनुरस्न १, पराघात १, जसददक १०, पंचेद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगेत्र १, पद्मचेद १ पराचात १, जसददक १०, पंचेद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगेत्र १, पद्मचेद १ सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख सम्यन्ति १, मनुष्पानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रक्रप्रभसंहनन १ देवायु १ अग्रमक्त	पराघात १, उच्छ्वास १, पंचेंद्री १, त्रसचतुष्क ४	
श्रीदारिक अंगोपांग १ (१७०) अथ उत्कृष्ट रसवन्धस्वामियन्नं द्यातककर्मग्रन्थात् प्रकृतिनामानि एकेंद्री १, थावर १, आतप १ विकलितिक ३, स्कृमितिक ३, तिर्यंच-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकितिक ३, तिर्यंच गित १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेबट्ट १, वैक्षियद्विक २, द्वगिति १, द्वानुपूर्वी १, आहारकिद्वक २, ग्रुभ विद्वायोगिति १, ग्रुभ वर्ण-चनुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, आगुरुलघु १, निर्मण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचनु रस्न १, पराघात १, असदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उचगोत्र १; एवं सर्व ३२ पत्र १, पराघात १, असदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उचगोत्र १; एवं सर्व ३२ पत्र भनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ ७ अप्रमन्त	उंच गोत्र १, समचतुरस्र संश्यान १, अशुभ विद्यागित १, जाति ४, अशुभ संहनन ५, अशुभ संस्थान ५, अशुभ संस्थान ५, आहारकद्विक २, नरकगित १, नरकातुपूर्वी १, उद्योत १, आतप १, थिर १, शुभ १, यश १, श्यावरदशक १०, नपुंसकवेद १, स्रोवेद १, हास्य १, रित १, अरित १, शोक १, असातावेदनीय १	जघन्य उत्कृष्ट समयथी लेइ अंतर्मुहर्त
प्रकृतिनामानि एकेंद्री १, थावर १, आतप १ विकलित्रक ३, स्ट्रमित्रक ३, तिर्यंच-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकित्रक ३, तिर्यंच गित १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेवट्ठ १, वैकियद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकिद्विक २, ग्रुभ विहायोगित १, ग्रुभ वर्ण-चनुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचनुरुक्त १, पराघात १, त्रसद्शक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उद्योत मनुष्यगित १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ एअप्रमत्त	औदारिक अंगोपांग १	रर सागर, जयन्य अत्युद्धत
पकेंद्री १, थावर १, आतप १ विकलित्रक ३, स्क्ष्मित्रक ३, तिर्यच-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकित्रक ३, तिर्यंच गित १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेवट्ठ १, वैकियद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकित्रक २, ग्रुभ विहायोगित १, ग्रुभ वर्णचुक्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचनु रस्न १, पराघात १, त्रसदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उद्योत सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ अथ्यात्वी हिर्गानांत देवता बांधे मध्यात्वी तिर्यंच, मनुष्य देवता, नारकी सेवता, नारकी अपूर्वेकरण गुणस्थानमे क्षपकश्रेणिमे बंध क		ाखामियन्त्रं दातककमेग्रन्थात्
विकलित्रिक ३, स्वक्ष्मित्रिक ३, तिर्यच-आयु १, मनुष्य-आयु १, नरकित्रक ३, तिर्यच गित १, तिर्यचानुपूर्वी १, छेवट्ट १, वैक्षियद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकित २, ग्रुभ विहायोगित १, ग्रुभ वर्ण-चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचतु-स्म १, पराघात १, त्रसद्शक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत्र १; एवं सर्व ३२ उद्योत मनुष्यगित १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ अथप्रमत्त प्रिथ्यात्वी तिर्यंच, मनुष्य देवता, नारकी अपूर्वेकरण गुणस्थानमे क्षपकश्रेणिमे बंध क सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्षिक्षिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्षिक्ष सम्यक्ष्मिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्षिक्ष		रसवन्धस्वामि
मनुष्य-आयु १, नरकत्रिक ३, तिर्यंच गित १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेबट्ट १, वैक्रियद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकिद्विक २, ग्रुभ विहायोगित १, ग्रुभ वर्ण-चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचनु-रस्न १, पराघात १, त्रसद्शक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्योत्र १, पवं सर्व ३२ उद्योत मनुष्यगित १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ अथ्रप्रस्त	पकेंद्री १, थावर १, आतप १	मिथ्यात्वी ईशानांत देवता बांधे
वैक्तियद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, ग्रुभ विहायोगति १, ग्रुभ वर्ण- चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचतु- रस्न १, पराघात १, त्रसद्शक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत्र १, पर्व सर्व ३२ ज्य्योत सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख सम्यग्दि १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ ७ अप्रमत्त	मनुष्य-आयु १, नरकत्रिक ३,	मिथ्यात्वी तिर्येच, मनुष्य
वैक्तियद्विक २, देवगति १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, ग्रुभ विहायोगति १, ग्रुभ वर्ण- चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचतु- रस्न १, पराघात १, त्रसद्शक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत्र १, पर्व सर्व ३२ ज्य्योत सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख सम्यग्दि १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ ७ अप्रमत्त	तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, छेवट्ट १,	देवता, नारकी
मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ ७अप्रमत्त	वैकियद्विक २, देवगित १, देवानुपूर्वी १, आहारकद्विक २, ग्रुभ विहायोगित १, ग्रुभ वर्ण- चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचतु- रस्न १, पराघात १, त्रसदशक १०, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, उच्चगोत्र १; एवं सर्व ३२	अपूर्वकरण गुणस्थानमे क्षपकश्रेणिमे बंध करे
मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक २, वज्रऋषभसंहनन १ देवायु १ ७अप्रमत्त	उद्घोत	सातमी नरकका नारकी सम्यक्त्वके सन्मुख
	मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, औदारिकद्विक	_
शेष प्रकृति ४ गतिना मिथ्यात्वी	देवायु १	७ अप्रमत्त
	शेष प्रकृति	ध गतिना सिथ्यात्वी

(१७१) अथ जघन्यरसंबन्धयम्त्रम्

	· · · ·
प्रकृति	बन्धसाप्ति
स्त्यानर्द्धि १, प्रचला १, निद्रानिद्रा १, अनंतानु- वंधि ४, सिथ्यात्व १	संयम सन्मुख मिथ्यात्वी
अप्रत्याख्यान ४	अविरतिसम्यग्दृष्टि संयम सन्मुख
प्रस्याख्यान ४	देशविरति
अरति १, शोक १	प्रमत्त यति
आहारकद्विक २	अप्रमत्त "
निद्रा १, प्रचला १, शुभ वर्णचतुष्क ४, हास्य १, रति १, कुत्सा (१) १, भय १, उपघात १	अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती
पुरुषवेद १, संज्वलनचतुष्क ४	नवमे गुणस्थानवाला
अंतराय ५, ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४	१० मे गुणस्थाने क्षपक
स्क्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, आयु ४, वैक्रियकषट् ६	मनुष्य, तिर्यंच
उद्द्योत १, आतप १, औदारिकद्विक २	देवता, नारकी
तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी १, नीच गोत्र १	सातमी नरके उपशमसम्यक्त्वके सन्मुख
जिननाम १	अविरतिसम्यग्दृष्टि
पकेंद्री १, थावर १	नरक विना तीन गतिना
आतप १	सौधर्म छगे देवता
साता १, असाता १, स्थिर १, अस्थिर १, ग्रुम १, अग्रुम १, यश १, अयश १	समदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि परावर्त्तमान मध्यम परिणाम
त्रस १, वादर १, पर्याप्त १, प्रत्येक १, अशुभ वर्ण आदि चतुष्क ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरु- लघु १, निर्माण १, मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी १, शुभ विद्यायगति १, अशुभविद्यायगति १, पंचेंद्री १, उच्छ्वास १, पराघात १, उच्चगोत्र १, संद्वनन ६, संस्थान ६, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, सुभग १, सुस्वर १, आदेय १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १	चार गतिका मिथ्यात्वी बांधे

इति रसवन्ध समाप्त.

(१७२) अथ प्रदेशवन्धयस्त्रम्, मूल प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेशवन्धलामि शतकात्

मोहनीय	शिक्षापादा७ गुणस्थानवर्ती
आयु, मोहनीय वर्जी ६ कर्म	१० गुणस्थानवर्ती

रहर			श्राव	वजयान	ब्रह्मारक्ट	त		[८ बन्ध
(\$9\$)	अथ उत्तर	प्रकृति	तेना	उत्कृ	ष्ट प्रदेश	शर्बंध	प <u>ं</u> त्र शतक	कर्मग्रन्था	त्
् ज्ञानावरणीय अंतराय ५	५, दर्शना० १	३, सात	ग० १,	यश १	१, उच्च ग	गेत्र १,	१०	गुणस्थानवत	ff
	अप्रत	पाख्यान	8.				ક	गुणस्थाने	
	प्रत्याख्यान ४					दे	शविरति		
•	पुरुषवेद	१, संज	वलन ४				९ मे गुणस्थाने		
ग्रुभ विद्वायग देवानुपूर्वी १, स् चतुरस्र १, अस		१ , आ	दिय १,	वैकि	यद्विक २		सम्यग्ह	ष्टी, मिथ्याद	ष्टि
निद्रा १,	प्रचला १, ह	स्य आ	दि षट्	६, ती	र्थकर १		अविर	तिसम्यग्दि	<u> </u>
	आहा	रकद्विव	Б २				अप्रमर	त ७ मे वाल	τ .
	शेष	६६ प्रकृ	ति				वि	मेथ्या त्वी	
S	(१७	४) अ	थ जघ	न्य प्र	देशव	-धस्वा	मियन्त्रम्		
अ	ाहारकद्विक २						अप्रमत्त यति		
नरकत्रि	क ३, देव-अ	ायु १		असंज्ञी पर्याप्त जघन्य योगी					
देवद्विक २, वै	क्रियद्विक २,	जिनना	म १		f	मेथ्यात्व	ाने सन्मुख स	म्यग्दृष्टि	
द्या	। १०९ प्रकृति	7			पणे भव योगी	के प्रथा	न समय सूक्ष	म निगोद	अपर्याप्त
(१७५) ঞ	थ सात बे अल्पबहुत्व	ोलकी		((१७६)) जीव	बंधवर्गणा कर्मपणे व		का
योगश	यान	- (ोक १			ব	र्भ	वांर	51
प्रकृति	भेद	अस्	असंख्य २			आयु		स्तोक	
स्थिति	भेद		,, 3	1		न	ाम	वि	२
स्थिति वंधा	1.1	ı		,	,	गोत्र		तुल्य	: २
ાસ્થાત વધા	व्यवसाय		,,	3		अंत	ाराय	वि	3
अनुभागस	थानक		,, 4	1	হ্বা		दर्शना० १,	,,,	8
कर्मप्रव	रेश	अ	नंत ध	È			नीय	"	4
रसच्हे	रसच्छेद ,, ५			9			नीय	91	દ
				(१७	(0)			<u> </u>	
बंधमेद ४	प्रकृतिबं	घ	F	श्यिति		अ	तुभागबंध	प्रदेश	 बंध
अर्थ	स्वभाव	[काल			रस	दल व	
दृष्टां त	वात आदि	शमन	मास ३	र्थ मा	स आदि	षंड,	शर्करा आदि	तोला, दो	
कारण	योग		कषाय			कषाय	योग		
भेदसंख्या	असंख्य	<u> </u>		असंख	य		अनंत	अनं	त
	1707		- 0						

(208)

संख्या	वंधप्रकृति ८	मूल प्रकृति ८	ज्ञाना ० १	दर्शना०२	वेदनीय ३	मोह० ४	आयु ५	नाम ६	गोत्र ७	अंतराय ८
१	वंधस्थान	ટા ળદાર	હ્યુ	० ६ ४	१	२२।२१। १७।१३। ९।५।४।१	१	२३।२५। २६।२८। २९।३०। ३१	१	وم
ेश	भुयस्कार	દાહાટ	o	લ્	o	राइाधापा ९।१३। १७।२१। २२	0	æ	0	0
. ą	अल्पतर	७।६।१	o	६	•	રળારફા લાલાઇાફા સાર	0	૭	0	o
૪	अवस्थित	এভা ই। ই	१	ર ક	१	१०	१	۷.	१	१
५	अवक्तव्य	•	१	४	0	१ १७	१	3	१	१

अधिक बंध करे ते 'अयस्कार' कहीये. अल्प अल्प बंध करे तेहने 'अल्पतर बंधक' कहीये. जितने हे तितने ही बंध करे ते 'अवस्थित बंध' कहीये. अबंधक होय कर फेर बांधे ते 'अवक्तव्य' कहीये. अंग्रे खिध्या विचारणीया. अथ अग्रे बन्धकारणं लिख्यते कर्मग्रन्थात्—

शानावर-	मति आदि ५ ज्ञान, ज्ञानी-साधु प्रमुख, ज्ञानसाधक(न)-पुस्तक आदि तेहना बुरा
णाय कम	चिंतणा १, निह्नवणा गुरुछोपणा २, सर्वथा विणास करणा ३, अंतरंग अप्रीत ४, अंतराय- भक्त, पान, वस्त्र आदिना विघ्न करणा ५, अति आशातना जाति प्रमुख करी हीछणा ६,
-	ज्ञान-अवर्णवाद ७, आचार्य, उपाध्यायनी अविनय ८, अकाले खाध्याय करणी ९, पट्-
	कायकी हिंसा १०
दुर्शनाचर-	दर्शन-चक्षु आदि ४, दर्शनी-साधु आदि, दर्शनसाधन-श्रोत्र, नयन आदि अथवा
णीय	संमति, अनेकान्तज्ञयपताका आदि प्रमाणशास्त्रनां पुस्तक आदिकने प्रत्यनीक
	आदिः पूर्वोक्त ज्ञानावरणीयवत् दश बोल जानने.
सातावेद-	गुरु जे माता, पिता, धर्माचार्य तेहनी भक्ति १, क्षमाचान् २, द्यावान् ३, ५ महावत-
नीय	वान् ४, दशविधसामाचारीवान् ५,वाल,वृद्ध,ग्लान आदिकना वैयावृत्त्यनो करणहार ६,
નાવ	भगवान्की पूजाभे तत्पर ७, सरागसंयम ८, देशसंयम ९, अकामनिर्जरा १०, बालतप ११
अ	गुरुनी अवज्ञानो करणहार १, रीखालु २, दया रहित ३, उत्कट कषाय ४, क्रपण ५,
सा	प्रमादी ६, हाथी, घोडा, बळदने निर्दयपणे दमन, वाहन, लांछन आदिकनो करवो ७,
না	आप परने दुःख, शोक, यंध, ताप, क्रंदकारक ८
	उन्मार्गना उपदेशक १, सन्मार्गना नाशक २, देवद्रव्यनो हरणहार ३, वीतराग, श्रुत,
दर्शनमोह-	संघ, धर्म, देवताना अवर्णवाद बोले ४, जगमे सर्वज्ञ है नही इस कहे ५, धर्ममें दूपण
नीय	काढे ६, गुरु आदिकनो अपमानकारी ७

१ आगळ पोतानी बुद्धि प्रमाणे विचारी लेवुं.

कषाय	कषाये करी परवश चित्त थकउ सोला कषाय बांधे
हास्य	उत्प्रासन १. कंदर्प २, प्रहास ३, उपहास ४, शी(अश्ठी १)ल घणा वोले ५, दीन वचन बोले ६
रति	देश आदि देखनेमे औत्सुक्य १, चित्राम, रमण, खेळन २, परचित्तावर्जन ३
अरति	पापशील १, परकीर्तिनाशन २, खोटी वस्तुमे उत्साह ३
शोक	परशोकप्रगटकरण १, आपको शोच उपजावनी २, रोणा ३
भय	आप भय करणा १, परकूं भय करणा २, त्रास देणी ३, निर्दय ४
जुगुप्सा	चतुर्विध संघनी जुगुष्सा करे १, सदाचारजुगुष्सा २, समुचयजुगुष्सा ३
स्त्रीवेद	ईर्ष्या १, विषाद २, गृद्धिपणा ३, मृषावाद ४, वक्रता ५, परस्त्रीगमनरक्त ६
पुरुषवेद	स्वदारसन्तोष १, अनीर्ष्या २, मंद कषाय ३, अवक्रचारी ४
नपुंसकवेद	अनंगसेवी १, तीव कषाय २, तीव काम ३, पाषंडी ४, स्त्रीका वत पंडे ५
	महारंभ १, महापरिग्रह २, पंचेन्द्रियवध ३, मांसाहार ४, रौद्र ध्यान ५, मिथ्यात्व ६, अनंतानुर्वधि कषाय ७, कृष्ण, नील, कापोत लेक्या ८, अनृत भाषण ९, परद्रव्या- पहरण १०, वार वार मैथुनसेवन ११, इन्द्रियवशवर्ती १२, अनुग्रह रहित १३, स्थिर घणा काल लग रोस राखणहार १४
	गृ्ढ हृद्य १, राठ बोले मधुर, अंद्र दारुण २, राल्य सहित ३, उन्मार्गदेराक ४, सत् मार्गनाराक ५, आर्त्त ध्यानी ६, माया ७, आरं भ ८, लोभी ९, शीलवतमें अतिचार १०, अप्रत्याख्यान कषाय ११, तीन अधम लेरया १२
मनुष्य∙आयु	मध्यम गुण १, अल्प परित्रह २, अल्प परित्रह (१) ३, मार्दव ४, आर्जव खभाव ५, घर्म ध्याननो रागी ६, प्रत्याख्यान कषाय ७, संविभागनो करणहार ८, देव, गुरुना पूजक ९, प्रिय बोले १० सुंखे (१) प्रज्ञापनीया ११, लोकत्यवहारमें मध्यम परिणाम खभावे पतली कषाय १२, क्षमावान् १३
देव आयु	अविरतिसम्यग्दिष्टि १, देशविरति २, सरागसंयम ३, बालतपस्वी ४, अकामनिर्जरा ५, भले साथ प्रीति ६, धर्मश्रवणशीलता ७, पात्रमें दान देणा ८, अवक्तव्य सामायिक अजाण पणे सामायिक करे ९
ग्रुभ नाम	माया रहित १, गारव तीनसे रहित २, संसारभी ६३, क्षमा, मार्दव, आर्जव आदि गुणे सहित ४
अशुभ नाम	मायावी १, गौरववान् २, उत्कट कोध आदि परिणाम ३, परक्तुं विप्रतारण ४, मिथ्यात्व ५, पैशुन्य ६, चल चित्त ७, सुवर्ण आदिकमें षोट मिलावे ८, कूडी साख ९, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श अन्यथाकरण १०, अंगोपांगनउ छेदन करणा ११, यंत्र पंजर वणावे १२, कूडा तोला, कूडा मापा १३, आपणी प्रशंसा १४, पांच आश्रवना सेवनहार १५, महारंभ परिग्रह १६, कठोर भाषी १७ जूठ वोले १८, मुखरी १९ आक्रोश करे २०, आगलेके सुभागका नाश करणा २१, कार्मण करे २२, कुत्रहली २३, चैत्याश्रयविका नाश करणहार २४, चैत्येषु अंगराग २५, परकी हांसी २६, परकूं विडंबना करणी २७, वेश्या आदिकूं अलंकार देणा २८, वनमे आग लगावे २९, देवताना मिस करी गंध आदि चोरे ३०, तीव कषाय ३१

शुभ नाम	संसारभीरु १, अप्रमादी २, सूधा खभाव ३, क्षमावान् ४, सधर्मीना खागतकारक ५, परोपकारी ६, सारका ग्रहणहार ७
उच्च गोत्र	गुण बोले यथावत् १, दूषणमे उदासीन २, अष्ट मद रहित ३, आप ज्ञान पठन करे ४, अवराकूं पढावे ५, बुद्धि थोडी होवे तो पढणेवालोकी बहुमानसे अनुमोदन करे ६, जिन, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, चैत्य, साधु, गुणगरिष्ठ तेहने विषे भक्ति, बहुमान- कारक ७
	परिनन्दा १, अपहास २, सत्गुणलोपन ३, असत्दोषकथन ४, आपणी कीर्ति वांछे ५, आपणा दोष छिपावे ६, अष्ट मदका कारक ७
अंतराय कर्म	तीर्थंकरकी पूजाका विम्न करे १, हिंसा आदि ५ आश्रव सेवे २, रात्रिभोजन आदिक करे ३, ज्ञान, दर्शन, चारित्रको विम्न करे ४, साधु प्रत्ये देता भात, पाणी, उपाश्रय, उपगरण, भेषज आदि निवारे ५, अन्य प्राणीने दान, लाभ, भोग, परिभोगना विम्न करे ६, मंत्र आदिक करी अनेराना वीर्य हरे ७, वध, बंधन करे ८, छेदन, भेदन करे जीवाने ९, इन्द्रिय हणे १०

इति अष्ट कर्मना बंधकारण संपूर्ण. अथ पंचसंग्रह थकी युगपत् बंधहेतु लिख्यते— पृथक् पृथक् गुणस्थानोपरि पांच प्रकारे मिथ्यात्व, एकैक मिथ्यात्वमे छ छ काया, एवं ३० हुइ. एकैक इन्द्रिय व्यापार पूर्वोक्त ३० मे, एवं १५० हुइ. ऐसे ही एकैक युग्म साथ दोढसे दोढसे, एवं ३०० होइ. एवं एकैक वेदसे तीन सो तीन सो, एवं ९०० हुए. एवं एकैक क्रोध आदि च्यारि कषायसे नव(से) नवसे, एवं ३६०० हुइ. एवं दश्च योगसे ३६०० क् गुण्या ३६००० होइ. ५×६×५×२×३×४००.

मिध्यात्व १, काय १, इन्द्रिय १, एक युगल २, तीनो वेदमेस एक वेद १, अप्रत्या-रूयान, प्रत्यारूयान, संज्वलनका क्रोध आदि त्रिक कोइ एक, एवं ९, दश योगमेसं एक व्यापार योगका, एवं दश बंधहेतुसे ३६००० भंग हुइ.

दस तो पूर्वोक्त अने भय युक्त कीये ११ हुइ. तिसकी विभाषा पूर्ववत् करणेसे ३६००० हुइ. एवं जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ३६०००. अथवा अनंतानुबंधी प्रक्षेपणे ते ११ हुइ अने योग १३ जानने तिहां भंग ४६८००. अथवा कायद्वयवधसंयोग क्षेपणे ते ग्यारे संयोग वियोग ते पूर्ववत् लब्ध भंगा ९००००. एवं सर्व २०८८००, दो लाख अठ्यासी सै. एकादश समुदाय करी इतने भंग हुइ.

दस तो पूर्वोक्त संयोग अने भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ संयोग हुइ, तिसके भंग ३६०००. अथवा भय अनंतानुवंधी युक्त करे योग तिहां १३ जानने तदा भंग ४६८००, जुगुप्सा, अनंतानुवंधी प्रक्षेपे पिण भंग ४६८००, अथवा त्रिकायवध प्रक्षेपणे ते १२ होय है ते पिण वीस होय है तदा पूर्ववत् लब्ध भंगा १२००००, भय दिकायवध क्षेपते लब्ध मंग पूर्ववत् ९००००, एवं जुगुप्सा दिकायवध क्षेपे पिण भंगा ९००००, अनंतानुवंधी दिकायवध क्षेपे पूर्ववत लब्ध भंगा ११७०००, एवं सर्व बारे समुदायके हेतु ५४६६०० हुइ.

दस तो तेही ज पूर्वोक्त भय, जुगुप्सा, अनंतानुवंधी युक्त १३ हुइ, इहां १३ संयोगना मंगा ४६८००. चार कायना वध प्रक्षेपणे ते १३ होय है तिहां १५ संयोगना मंगा पूर्ववत् लब्ध मंगा ९००००, त्रिकायवध भय क्षेपे १२०००० मंगा, एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण लब्ध मंगा १२००००, त्रिकायवध अनंतानुवंधी प्रक्षेपे १५६०००, द्विकायवध, भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३; तिहां पिण ९०००० मंगा, द्विकायवध भय अनंतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००, एवं दिकायवध अनंतानुवंधी जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ११७०००, एवं तेरा सम्रदायना सर्व हेतुना मंगा ८५६८००.

दस तो तेही ज प्वींक अने पांच काय वध संयुक्त १४ होते हैं; तिहां पट् पांचना संयोग प्वींवत् ३६००० भंगा, चार काय वध भय प्रक्षेपे १४; तिहां पिण ९०००० भंगा, एवं चार काय वध जगुप्सा प्रक्षेपे पिण ९०००० भंगा, चार काय वध अनंतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००, त्रिकायवध भय जगुप्सा प्रक्षेपे १२००००, त्रिकायवध भय अनंतानुवंधी प्रक्षेपे १५६०००, एवं त्रिकायवध जगुप्सा अनंतानुवंधी पे(प्रक्षे)पे पिणि १५६०००, द्विकाय वध भय जगुप्सा अनंतानुवंधी प्रक्षेपे १४७०००, सर्व भंग १४ सम्रदायके ८८२०००,

दस तो तेही पूर्वोक्त अने छकाय वध युक्त १५ होते हैं. तिहां पट्टकाययोग १; तिहां ६००० पूर्ववत्. पांच काय वध भय प्रक्षेपणे ते १५; तिहां ३६००० भंगा. एवं पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६००० भंगा. पांच काय वध अनंतानुवंधी प्रक्षेपे ४६८००. चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ९००००. चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ९१७०००. एवं चार काय वध जुगुप्सा अनंतानुवंधी प्रक्षेपे ११७०००. त्रिकायवध भय जुगुप्सा अनंतानुवंधी १५६०००. १५ समुद्दायना सर्व भग ६०४८००.

दस पूर्वोक्त षद् काय वध भय युक्त १६ होते हैं; तिहां ६००० मंगा. षद्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण ६०००. षद्कायवध अनंतानु धी प्रक्षेपे ७८००. पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ३६०००. पांच काय वध भय अनंतानु धी प्रक्षेपे ४६८००. एवं पांच काय वध जुगुप्सा अनंतानु धी प्रक्षेपे ११७०००. ए सर्व सोला समुदायके मंगा २६६४००.

दस पूर्वोक्त पर्कायनध भय जुगुप्सा युक्त १७ होते हैं; तिहां भंगा ६०००, पर्काय-चघ भय अनंतानुवंधा प्रक्षेपे ७८००, एवं पर्कायनध जुगुप्सा अनंतानुवंधी प्रक्षेपे ७८०० पांच काय वध भय जुगुप्सा अनंतानुवंधी प्रक्षेपे ४६८००, एवं सर्व १७ ना मंगा ६८४००,

दस पूर्वोक्त पर्कायवध भय जुगुप्ता अनंतानुबंधी युक्त १८ होते है; तिहां ७८०० भंगा.

एवं मिथ्यादृष्टिके सर्व भंगा पूर्वोक्त मेलनसे ३४,७७,६००. मिथ्यादृष्टिना हेतु समाप्त. १

अनंतानुबंधी रहित योगका कारण कहीय है—अनंतानुबंधीके उदय १३ योग होते है, परंतु दस नहीं होते तिसका कारण कहीय है. उद्रेलना करता हूया अनंतानुबंधीकी सम्यग्रहिष्ट प्राप्त मिथ्यात्व उदयके नहीं संक्रामआविलका जां लगे अनंतानुबंधीका उदय तिसके उदय अभाव ते मरणका पिण अभाव है. भवां(त १)रके अभाव ते वैकियमिश्र १, औदारिकिमिश्र १, कार्मण १ इन तीनोका अभाव है; इस वास्ते अनंतानुबंधी भय जुगुप्साके विकल्पोदयमें तथा उत्तर पदांमें हेतुयाका अभाव सचन कर्या.

अथ सास्वादनका विशेष कहीये हैं—सास्वादनमें मिथ्यात्वके अभाव ते प्रथम पद गया शेष पूर्वोक्त नव अनंतानुबंधीके विकल्प अभाव ते दसः ६।५।२।३।४।१३. इस चक्र विषे प्रथम वेदां ३ करके योगानूं गुणाकार करके एक रूप ऊछा करणा यथा एकैक वेदमें तेरा योग है. एवं ३९ हूये. नपुंसक वेदे वैक्तियमिश्र नहीं। एवं एक काट्या ३८ रहे. इन ३८ करी एकैक काय वधसं गुण्या २२८ होय है. इन २२८ कं एकेक इन्द्रियन्यापारसं गुण्या ११४० हुइ. इन ११४० कं एकेक युग्मसं गुण्या २२८० हुइ. २२८० कं एकैक कषाय चारसं गुण्या ९१२०. इतने हेतुसमुदाय हुये. एवं शेष विषे भावना करवी.

दस पूर्वोक्त अने द्विकायवध युक्त ग्यारे हूथे; तिहां पूर्ववत् २२८०० भंगा. भय प्रक्षेपणे ते ११ हूथे; तिहां ९१२० भंगा. एवं जुगुष्सा प्रक्षेप ९१२०. सर्व ग्यारे समुदायना भंगा ४१०४०.

पूर्वोक्त दस त्रिकायवध प्रक्षेपे बारा होते हैं; तिहां पिण पूर्ववत् २०४००. अथवा दिकायवध भय प्रक्षेपे पिण बारा होते हैं; तिहां पिण २२८००. एवं दिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २२८००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२; तिहां पिण ९१२०. एवं सर्व बारा सम्रदायके ८५१२० भंगा.

दस पूर्वोक्त चार काय वध युक्त तेरा होते हैं, पूर्ववत् तिहां २२८००, अथवा भय त्रिकायवध प्रक्षेपे तेराः तिहां २०४०० मंगाः एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २०४००, अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ः तिहां भागा २२८००, एवं सर्व तेराके मंग संख्या १०६४००.

दस पूर्वोक्त पंचकायवध प्रक्षेपे चौदां हुइ; तिहां मंगा ९१२०. अथवा चार काय वध प्रक्षेपे चौदां; तिहां २२८०० मंगा. एवं चतुःकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २२८००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४; तिहां २०४००. सर्व एकत्र मेले ८५१२०.

पूर्वोक्त दस पदकायवध युक्त पंदरा हुइः तिहां १५२० मंगाः पंचकायवध प्रक्षेपे १५ः तिहां ९१२० एवं पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ९१२० अथवा चार काय वध मय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५ः तिहां २२८०० मंगाः सर्व एकत्र करे ४२५६०.

दस पूर्वीक्त पर्कायवध भय युक्त १६ होते हैं; तिहां भागा १५२०. पर्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १५२०. अथवा पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १६; तिहां ९१२० भंगा. सर्व एकत्र करे १२१६०. दस पूर्वोक्त पदकायवध भय जुगुप्ता प्रक्षेपे १७ होते है; तिहां भंगा १५२०.

एवं पूर्वोक्त साखादनके बंधहेतु सर्व एकत्र करे ३८३०४०. इति साखादनके बंधहेतु समाप्त २.

मिश्रदृष्टिके तेही दसमेसं अनंतानुबंधी वर्जित नव होय है. एकैक काया वधे पांच इन्द्रिय व्यापारा, एवं २० भांगे एकैक युगले त्रिंशत्; एवं ६०. एकैक वेदे साठ साठ; एवं १८०. एकैक कपाये ७२०. एवं दश जोगसे गुण्या ७२००. ६×५×२×३×४×१०.

ए नव हेतु नव पूर्वोक्त द्विकायवध युक्त १० होइ पूर्ववत् १८०००. अथवा भय प्रक्षेपे १०; तिहां ७२०० भंगा. एवं जुगुप्सा प्रक्षेपे ७२००. एवं एकत्र दस समुदायना सर्व ३२४०० भंगा.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त ११ होते हैं; तिहां २४००० भंगा. तथा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहां १८०००, एवं द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १८०००, अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां भंगा ७२००, एवं सर्व ६७२००,

नव पूर्वोक्त चार काय वध युक्त बारा हुइ; तिहां १८०००. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२; तिहां २४००० भंगा. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २४०००. अथवा द्विकाय-वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२; इहां पिण १८०००. एवं सर्व मिले ८४०००.

नव पूर्वोक्त पांच काय वध युक्त १३ हुइः तिहां भांगा ७२००. अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १३ः तिहां १८००० भंगा. एवं चार काय वध जुगुप्ता प्रक्षेपे १८०००. अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्ता प्रक्षेपे १३ः तिहां भांगा २४०००. सर्व एकत्र ६७२००.

नव पूर्वोक्त षद्कायवध युक्त १४ होते है; इहां भांगा १२००. अथवा पांच काय वध मय प्रक्षेपे १४; तिहां भांगा ७२००. एवं पांच काय वध जुगुप्ता प्रक्षेपे ७२००. अथवा चार काय वध भय जुगुप्ता प्रक्षेपे १४; तिहां १८००० भांगा. सर्व एकत्र करे ३२६००. इति १४ समुदाय.

नव पूर्वोक्त षद्कायवध भय प्रक्षेपे १५ होते हैं; तिहां पूर्ववत् भांगा १२००. एवं षद्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १२००. अथवा पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५; तिहां भांगा पूर्ववत् ७२००. ए सर्व ९६००. ए १५ समुदाय.

नव पूर्वोक्त षदकायवध मय जुगुप्सा युक्त सोला होते है; इहां भांगा १२००. सर्व मिश्रदृष्टिके भंगा मिलाय करे २०२४०००. इति मिश्रदृष्टिहेतवः समाप्ताः. ३

एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युग्म १, एक वेद १, तीन कषाय ३, एक योग १, एह नव हेतु होते है जघन्य, अथ चक्ररचना ६।५।२।३।४।३, इहां प्रथम योगा करी वेदांकू

गुणना तिवारे पीछे पूर्वोक्त भांगे च्यार काढे शेष ३५ रहे. वली शेष अंक करी गुण्या हुइ ८४००. ए नवकी समुदायके भावना पीछे कही ही है.

ते नव पूर्वोक्त द्विकायवध प्रक्षेपे १० हुइ; इहां भांगा २१०००. अथवा भय प्रक्षेपे १० हुइ; तिहां भांगा ८४००; एवं जुगुप्साप्रक्षेपात् ८४००. सर्व एकत्र ३७८००. ए दस सम्रदायके.

नव पूर्वोक्त त्रिकायवध प्रक्षेपे ११ हुइः तिहां २८००० भांगा. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइः तिहां २१००० भंगा. एवं द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २१०००. अथवा भय जुगुप्सा प्रक्षेपे ११ हुइः इहां ८४०० भांगा. सर्व एकत्र ७८४००. ए एकादश सम्रदाय.

ते नव पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे १२ होते हैं; तिहां पूर्ववत् २१००० भांगा. अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां भांगे २८०००. एवं त्रिकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे २८०००. अथवा द्विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां २१००० भांगा. सर्व एकत्र करे ९८०००. ए बारा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पांच काय वध युक्त १३ हुइ; तिहां भांगा ८४००० अथवा चार काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां भांगा २१००० एवं चार काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण २१००० अथवा त्रिकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां पिण २८००० भांगा. सर्व एकत्र करे ७८४००. ए तेरा समुदाय.

नव पूर्वोक्त पद्कायवध प्रक्षेपे १४ होते हैं; तिहां भांगा १४०० अथवा पांच काय वध भय प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहां भांगा ८४०० एवं पांच काय वध जुगुप्सा प्रक्षेपे ८४०० अथवा चार काय वध मय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहां भांगा २१००० सर्व एकत्र करे थके ३९२०० ए चौदा समुदाय

नव पूर्वोक्त पद्कायवध भय प्रक्षेपे १५ हुइ; तिहां १४०० भांगा. एवं पद्कायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे १४०० भांगा. अथवा पांच काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १५ हुइ; तिहां भंगा ८४००. सर्व एकत्र मेले ११२००. ए पांच समुदाय.

नव पूर्वोक्त पद्कायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे सोला होते हैं; तिहां भांगा १४००. एवं सर्व एकत्र करे ३५२८००. ए अविरतिके बंधहेतु समाप्त. ४

देशविरतिके त्रस कायकी विरति है; इस कारण ते पांच काय, तिसके द्विक, त्रिक, चार, पांच संयोग विचारने तिसके आठ हेतु—एक काय १, एक इन्द्रिय १, एक युग्म १, एक वेद १, दो २ कषाय, एक योग १, ए आठ. चक्ररचना—५×५×२×३×४४११ एक काये पांच पांच इन्द्रिया; एवं २५. ते युग्म भेदते ५०. ते पिण तीन वेदसं १५०. ते पिण चार कषायसे ६००. ते पिण ११ योगसे गुण्या ६६००. ए आठ हेतुसम्रदाय.

आठ पूर्वोक्त अने द्विकायवध् प्रक्षेपे नव हुइः तिहां १३२०० भांगा. अथवा भय प्रक्षेपे ९ हुइः तिहां ६६०० भांगा. अथवा जुगुष्ता प्रक्षेपे ९ः तिहां ६६०० भांगा है. सर्व एकत्र करे २६४००. ए नव हेतु समुदाय.

आठ पूर्वोक्त त्रिकायवध युक्त करे दस हुइ. तीन संयोग इहां दस होयः तिस कारण ते भांगा १३२००. अथवा द्विकायवध भय प्रक्षेपे १० हुइः इहां दस द्विकसंयोग है. भांगा १३२००. द्विकायवध जुगुप्सा प्रक्षेपे पिण १३२००. अथवा भय, जुगुप्सा प्रक्षेपे १० हुइः तिहां ६६०० भंगा. सर्व एकत्र ४६२००. ए दस समुदाय.

आठ पूर्वोक्त चार काय वध प्रक्षेपे ११ हुइ, तिहां ६६०० भांगा। अथवा त्रिकायवध भय प्रक्षेपे ११ हुइ; तिहां १३२००। एवं त्रिकायवध जुगुष्सा प्रक्षेपे १३२००। अथवा द्विकायवध भय जुगुष्सा घाले ११ हुइ; तिहां भंग १३२००। सर्व एकत्र ४६२००। ए ग्यारे समुदायना।

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां मंग १३२०. अथवा चार काय वध मय प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां ६६०० मंग. एवं चार काय वध जुगुप्सा घाले ६६००. अथवा विकायवध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १२ हुइ; तिहां १३२०० भांगा. सर्व एकत्र करे २७७२०. भंग. ए बारा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध भय प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां १३२० भंग. एवं पांच काय वध जुगुप्सा घाले १३२०. अथवा चार काय वध भय जुगुप्सा प्रक्षेपे १३ हुइ; तिहां भंगा ६६००. सर्व एकत्र करे ९२४० भंग. ए तेरा समुदाय.

आठ पूर्वोक्त पांच काय वध मय जुगुप्सा प्रक्षेपे १४ हुइ; तिहां १३२० भांगा. ए चौदा हेतु समुदाय.

सर्व एकत्र मेले १६३६८०. ए देशविरतिना भांगा. ५

अथ प्रमत्त अप्रमत्त विचार प्रमत्तमे स्त्रीवेदमे आहारक १, आहारकिमिश्र नहीं, अप्रमत्तमे आहारकिद्विक ही नहीं है. प्रमत्त यंत्रक २।१।१।१;२।३।४।१३. प्रमत्त आदिकोंके पांच हेतु है युग्म २, वेद ३, कषाय ४, योग. १३ योगा करी तीन वेद गुण्या ३९ हुइ. दो काढे ३७ रहे. युग्म भेदते द्विगुणा ७४. कषाय भेदते च्यार गुणा २९६. ए पांच हेतुसमुद्दाय. पांच तो तेही ज अने भय प्रक्षेपे ते तेही ज भांगा २९६. एवं जुगुप्सा घाले २९६. एवं भय, जुगुप्सा घाले ७ हेतु हुइ; भांगे तेही ज २९६. सर्व एकत्र करे ११८४. ए प्रमत्त भांगा. ६

अप्रमत्त यंत्रक—२।१।१।१;२।३।४।११. वेदांसे योग गुण्या ३३. एक रूप काढे ३२ रहे. युग्म भेदते दुगुणे ६४. कषाय भेदते च्यार गुणा २५६. ए पांच हेतुसमुदाय. एवं भय साथ पद २५६. एवं जुगुप्सा साथ भांगा २५६. सर्व मेले १०२४. ए अप्रमत्तना भांगा. ७

अपूर्वकरण यंत्र—२।१।१।१;२।३।४।९, युग्मसे वेद गुण्या ६. ते पिण कषाय भेदते २४. ए पिण चउवीस नव योगसे गुण्या २१६ (२×३×४×९). ए पांच हेतुसमुदाय, भय

प्रक्षेपे ६; भांगा २१६. जुगुप्सा प्रक्षेपे पट्. भांगा २१६. जभय प्रक्षेपे सात हुइ मंग २१६. सर्व एकत्र करे ८६४. ए अपूर्वकरणना हेतु. ८

बादरका यंत्रक—१।१; ४।९. कषाय ४, योग ९. द्विकसंयोगे ३६. ए द्विकसम्रदायः बादर पांच बंधकके वेदका पिण उदय है; इस कारण ते वेद प्रक्षेपे. तीन हेतु भांगे त्रिगुणे करे १०८. ए तीन हेतुसम्रदाय. सर्व एकत्र करे १४४ भंग. ए बादर कषायना हेतु.

स्थाने एक कषाय एकैक योगसे नव योग साथ ९ द्विकयोग. उपशांतके नव हेतु. एवं श्लीणके नव हेतु. सयोगीके सात हेतु.

सर्व गुणस्थानना विशेषबंधहेतुसंख्या ४६८२७७०. इति गुणस्थानकमे बंध हेतु समाप्त. इति श्रीआत्मारामसंकलता(ना)यां बन्धतत्त्वमष्टमं सम्पूर्णम्.

अथ अग्रे 'मोक्ष' तत्त्व लिख्यते. प्रथम तीन श्रेणी रचना. (१७९) अथ गुणश्रेणि-रचनायच्यं ज्ञातकात—

	सम्यक्त्वप्राप्ति आदि लेइ	निर्ज	रा	काल बहु		(200) 0 1/0
8	सम्यक्तवप्राप्ति	स्तोव	त् १	असंख	य ११	आवश्यव
ર	देशविरति	असंख्य	य गुणा	11	१०	संज्वल अप्रसाख्यान लोभ
3	सर्वेविरति	55	"	55	९	संज्वल अत्रत्याख्यान माया
४	अनंतानुबंधिविसंयोजन	,,,	,,	,,,	4	संज्वल
4	दर्शनमोहनीयक्षय	,,	55	"	9	अप्रत्याख्यान मान
દ	उप(शम)श्रेणि चढता	,,	"	,,	દ્	अप्रलाख्यान क्रोध
9	उपशांतमोह १२ मे	,,,	59	"	4	पुरु
2	क्षपकश्रेणि चढता	,,	"	99	ક	हास्य रति शोक
2	क्षीणमोह	,,	,,	57	3	
80	सयोगी केवली	,,	77	37	2	/ नः मिथ्यालमोह / मिश्र
११	अयोगी केवली	,,,	,,	स्तो	क १	अनंतानुबंधि अनंता॰ कोध मान

(१८०) उप(ज्ञम)श्रेणियस्त्रम् आवइयकनिर्युक्तेः

संज्वलन लोम
अप्रत्याख्यान लोभ प्रत्याख्यान लोभ
संज्वलन माया
अत्रलाख्यान माया त्रलाख्यान माया
संज्वलन मान
अत्रत्याख्यान मान प्रत्याख्यान मान
संज्वलन क्रोध
अप्रलाख्यान क्रोध प्रलाख्यान क्रोध
पुरुषवेद
हास्य रति शोक अरति भय जुगुप्सा
∕स्त्री ∖
निपुंसक
मिथ्यालमोह / मिश्रमोह \ सम्यक्लमोह
अनंतानुबंधि /अनंता० अनंता० \ अनंतानुबंधि
कोध / मान माया े लोभ

क्ष्मपकश्रेणिस्वरूपयन्त्र आवद्यकिनर्युक्ति थकी लिखतोऽस्ति (लिखितमस्ति), चरम समये पांच ज्ञानावरणीय ५, च्यार दर्शनावरणीय ४, पांच अंतराय ५; एवं सर्व १४ षेपे. बार गुणस्थानके जद दो २ समये बाकी रहे तदा पिहले समय निद्रा १, प्रचला १, देवगित १, देवानु-पूर्वी १, वैकिय शरीर १, वैकिय अंगोपांग १, प्रथम संहनन वर्जी ५ संहनन, एक संस्थान वर्जी पांच संस्थान ५, तीर्थ(कर)नाम १, आहारकद्विक २; एवं सर्व १९ प्रकृति पहिले समय पेपवे. जो तीर्थिकर होय तो १९ प्रकृति न होय तो तीर्थिकर(नामकर्म) टाली १८ प्रकृति पेपइ ए प्रथम,

(\$28) संज्वलन लोभ माया मान क्रोध पुरुषवेद षेपे रति | शोक | अरति | भय जुगुप्सा स्त्रीवेद षपावे नपुंसकवेद अप्र॰ माया | अप्र॰ लोम | प्र॰ लोम | प्र॰ मान | प्र॰ माया | प्र॰ लोम | अप्र॰ कोघ अप्र॰ मान सम्यक्लमोहनीय मिश्रमोहनीय मिथ्यालमोहनीय अनंता॰ क्रोध | अनंता॰ मान | अनंता॰ माया | अनंता॰ लोभ

आठ कषाय श्वपाया पीछे कुछक शेष रहे आठ कषाय षेपता बीचमे १७ प्रकृति षेपे तेहनां नाम—नरकगति १, नरकानुपूर्वी १, तिर्यच गति १, तिर्यचानुपूर्वी १, एकेन्द्रिय आदि जाति ४, आतप १, उद्द्योत १, थावर १, स्रहम, साधारण १, अपर्याप्त १, निद्रानिद्रा १, प्रचला १, थीणिद्धि १. ए सत्तरे प्रकृति आठ कषाय श्वेपता बीचमे श्वपावे. तदनंतर अवशेष आठ कषाय षेपे; पीछे नपुंसकवेद, स्त्रीवेद.

(१८२) अथ सीझणद्वार लिख्यते श्रीपूज्यमलयगिरिकृत नंदीजीकी इत्तिथी

	बोल संख्यानामानि	द्रव्य- परिमाण	निरंतर सीझे
१	ऊर्ध्वलोके उत्कृष्ट	૪	२
ર	समुद्रे उत्कृष्ट सर्वत्र	२	"
જ્	सामान्य जले	૪	"
૪	तिर्यग्लोके	१०८	2
4	अधोलोके	२० पृथक्	४
६	नंदनवने	४	२
७	पंडगवने	99	"
4	एकैक विजयमे	वीस वीस	8
९	३० सर्वे अकर्मभूमौ	द्स दस	37
१०	१५ कर्मभूसिमे	१०८	6
११	कालद्वारे सुपमसुपम	१०	४

१२	कालद्वारे सुषम	१०	ક
१३	,, सुषमदुःषम	१०८	۷
१४	,, दुःषमसुषम	,,	"
१५	,, दुःषम	२०	૪
१६	,, दुःषमदुःषम	१०	55
१७	गतिद्वारे देवगति आया	१०८	۷
१८	,, शेष ३ गतिका ,,	दस दस	ક
१९	" रत्नप्रभाना "	१०	"
२०	,, शर्कराष्ट्रभाना ,,	***	"
२१	" वालुकाप्रभाना "	"	"
२२	" पंकप्रभाना "	૪	ર

	- N						
२३	गति० पृथ्वी, अप्कायना आया	ଞାନ	રાર	ઇ૭	छिंगद्वारे खिंगी	१०८	۷
६४	,, वनस्पतिकायना ,,	દ	२	४८	चारित्रद्वारे सा, सू, य	,,	,,
२५	" तिर्येच पंचेन्द्रिय, पुरुषना "	१०	૪	४९	,, सा, छे, स्, य	"	"
२६	,, तिर्येच स्त्रीना ,,			40	सा, प, सू, य	१०	
74				५१	,, सा, छे, प, सू, य	77	**
२७	,, सामान्ये मनुष्य- गतिना ,,	२०	"	५२	बुद्धारे प्रत्येकबुद्ध	,,	,,
२८	,, मनुष्यपुरुषना ,,	१०	7,7	५३	,, बुद्धबोधित पुरुष	१०८	۷
२९	,, मनुष्यस्त्रीना ,,	२०	"	५४	" " स्त्री	૨૦	8
३०	,, भवनपतिना ,,	१०	55	५५	" " नपुंसक	१०	37
38	,, भवनपतिनीना ,,	4	<u>२</u>	५६	" बुद्धिबोधित स्त्री	२०	,,
३ २	" व्यंतरना "	१०	૪	५७	,, ,, पुरुष- सामान्ये	२० पृथक्	"
३३	,, व्यंतरीना "	બ	२	५८	ज्ञानद्वारे, मति, श्रुत	8	ર
३४	,, जोतिषीना ,,	१०	૪	1	,, मति, श्रुत, मनः		
इप	,, जोतिषीनी देवीना ,,	२०	79	५९	पर्याय	१०	ક
38	,, वैमानिक देवना ,,	१०८	۷	६०	,, मति, श्रुत, अवधि	१०८	4
३७	,, वैमानिक देवीना ,,	२०	ક	६१	" मति, श्रुत्,	,,	"
३८	पुरुष मरी पुरुष	१०८	& .		अवधि, मनःपर्याय		
३९	शेष भांगे ८	दस दस	૪	६२	अवगाद्दनाद्वारे जघन्य	8	२
४०	तीर्थद्वारे तीर्थकर	ય	२	६३	,, मध्यम	१०८	ረ
४१	,, खयंबुद्ध	"	57	६४		ર	ર
ध २	" बुद्धबोधित	१०८	۷	६५	उत्क्रष्टद्वारे अच्युत सम्यक्तवथी	ય	55
४३	"स्री	२०	૪		संख्या, असंख्यकाल		
88	,, तीर्थंकरी	२	२	६६	च्युत	१०।१०	કાક
	छिंगद्वारे गृहस्थर्लिंगी	8	99	६७	,, अनंत काळका	१०८	6
४६	,, अन्यर्लिगी	१०	૪	40	" पतित	100	•

अथ सांतरद्वारे एक सो तीन १०३ से लेकर एक सो आठ ताइ सीझे तो एक समय पीछे अवश्य अंतर पडे; ९७ से लेकर १०२ पर्यंत दो समय निरंतर सीझे; ८५ से लेकर ९६ लगे तीन समय निरंतर सीझे; ७३ से लेकर ८४ लगे चार समय निरंतर सीझे; ६१ से लेकर ७२ लगे ५ समय०; ४९ से लेकर ६० ताइ ६ समय०; ३३ से लेकर ४८ लगे ७ समय०; एक से लेकर ३२ लगे ८ समय०.

गणनद्वार पूर्ववत् जधन्य १।२ यावत् ३२. एवं सर्व जगे जान लेना. (१८३) क्षेत्रद्वार, अंतरद्वार लिख्यते. सांतर

8	जंबूद्वीप धातकी षंडे	पृथक् वर्ष		
२	जंबूद्वीपके तथा धातकी षंड विदेहे	5; 3;		
३	पुष्करद्वीपे १ तथा तिसके विदेहे	१ वर्ष झझेरा		
8	कालद्वारे भरत, ऐरावतमे जन्म आश्री	युगलकाल १८ सा नून (१)		
4	साहारण आश्री भरत, ऐरावते	संख्याते हजार वर्ष		
, દ્દ	नरकगतिना आया उपदेशथी सीझे तिसका	१००० वर्ष		
v	" " हेतुये सीझे	संख्येय सहस्र वर्ष		
4	तिर्थंच गतिना आया उपदेशे	पृथक् १०० वर्ष		
९	अनंतरोक्त तिर्येचना द्देतुये सीझे तिसका	संख्येय सहस्र वर्ष		
१०	तिर्थेच स्त्रीना १, मनुष्यना २, मनुष्यस्त्रीना ३, सैं।धर्म, ईशान वर्जके सर्वे देवता देवीना आया उपदेशे	१ वर्ष झझेरा		
११	अनंतरोक्त बोल हेतुये	संख्येय सहस्र वर्ष		
१२	पृथ्वी १, अप् २, वनस्पति, गर्भज, पहिली, दूजी नरक, सीधम, इंशान दवका आया हेतुये सीझे			
१३	वेदद्वारे पुरुषवेदे	१ वर्ष झझेरा		
१४	स्त्री, नपुंसक वेदे	संख्येय सहस्र वर्ष		
१५	पुरुष मरी पुरुष हुइ	१ वर्ष झझेरा		
१६	शेष ८ भांगे	संख्येय सहस्र वर्ष		
१७	तीर्थद्वारे तीर्थकर	पृथक् ",		
१८	तीर्थंकरी	अनंत काल		
१८ १९	अतीर्धकर	१ वर्ष झझेरा		
२०	नोतीर्थसिद्धाका प्रत्येकबुद्धी	संख्येय सहस्र वर्ष		
२१	छिंगद्वारे अन्यिंहेंगे गृहिंहेंगे	yy yy 19		
२२	स्रार्हिगे	१ वर्ष झझेरा		

२३	चारित्रद्वारे सामायिक १, सूक्ष्मसंपराय २, यथा- ख्यात ३	१ वर्ष झझेरा		
રક	सामायिक १, छेदोपस्थापनीय २, सुक्ष्मसंपराय ३, यथाख्यात ४	१८ कोडाकोडी सागर किंचित् ऊणा		
રષ	सा० १, परिहारविद्युद्धि २, स्क्ष्म० ३, यथा० ४	37 37 37 39		
२६	सा० १, छेदो० २, परिहार० ३, सुक्ष्म० ४, यथा० ५	>5 17 29 27		
२७	बुद्धहारे बुद्धवोधित	१ वर्ष झझेरा		
ર૮	बुद्धबोधित स्त्रियाका १, प्रत्येक बुद्धियांका २	संख्येयसहस्र वर्ष		
ર૧	स्वयंबुद्ध	पृथक् ,, ,,		
३०	ज्ञानद्वारे मति १, श्रुत २	पल्यका असंख्य भाग		
३१	,, मित १, श्रुत २, अवधि ३	१ वर्ष झझेरा		
३२	" " मनःपर्याय ३	संख्येय सहस्र वर्ष		
३३	" " अवधि ३, मनःपर्याय ४	37 37 3 7		
१४	अवगाहनाद्वारे जघन्य १, उत्कृष्ट २, यवमध्यम ३	श्रेणिके असंख्य भाग		
३५	अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना	१ वर्ष झझेरा		
३६	उत्क्रष्टद्वारे अप्रतिपतित सम्यक्त्व	१ सागरके असंख्य भाग		
३७	संख्य, असंख्य कालका पतित	संख्येय सहस्र वर्ष		
१८	अनंत कालका पतित	१ वर्ष झझेरा		
રૂર	निरंतरद्वारे			
30	सांतरद्वारे	संख्येय सहस्र वर्ष		

अल्पबहुत्वद्वारे च्यार च्यार सिद्धा अने दस दस सिद्धा परस्पर सर्व तुल्य, तिण थकी वीस सिद्धा अने पृथक् वीस सिद्धा थोडा, तिण थकी एक सो आठ सिद्धा संख्येय गुणा. इति अनंतरसिद्धा प्ररूपणा समाप्ता.

अथ परम्परासिद्धस्तरूपं लिख्यते — द्रव्यपरिमाणमे सर्व जगे अढाइ द्वीपमे अनंते अनंते कहणे अंतर नहना (?), अंतरका असंभव हे इस वास्ते.

(१८४)

	नामानि	अल्पबहुत्व		नामानि	अल्पब हु त्व
१	समुद्रसिद्धा	१ स्तोक	१	ऊर्ध्वलोकसिद्धा	१ स्तोक
2	द्वीपसिद्धा	२ संख्येय	२	अघोलोकसिद्धा	२ संख्येय
3	जलसिद्धा	१ स्तोक	3	तिर्थग्छोकसिद्धा	ર "
ષ્ટ	स्थलसिद्धा	२ संख्येय			

(१८५)

e*	लवणसमुद्रे सिद्धा	१	स्तोक	
	कालोदघि ,,	२	सं.	_
	जंबृद्वीप ,,	३	सं.	_

धातकीषंड सिद्धा	ક	सं.	
पुष्करार्धद्वीप "	५	सं.	
1			

(१८६) अथ तीनो द्वीपकी मिलायके अल्पबहुत्वयंत्रम्, ए तीनो यंत्र परंपरासिद्ध.

द्वीपनाम	भरत पेरा- वत	हैमवंत शिखरी	हैमवंत ऐरण्यवत	महाहेमवंत रूपी	हरिवास रम्यक	निषघ नीछवंत	देवकुरु उत्तरकुरु	महा∙ विदेह
जंबू	७सं.	१ स्तो.	२ सं.	३ सं.	५सं.	६ सं.	४ सं.	८ सं.
धातकी	55 53	33 33	ध वि.	٦ ,,	६ वि.	₹ ,,	۷,,	. ,, ,,
पुष्करार्ध	77 77	" "	,, सं	17 77	" "	17 15	77 77	"

(205)

द्वीपनाम	भरत पेरा- वत		1	महाहेमवंत रूपी		1	देवकुरु उत्तरकुरु	
जंबू	१९सं.	१ स्तो.	२ सं.	३ सं.	५ सं.	६सं.	४ सं.	२२ संख्येय
धातकी	₹0 ,,	७ वि.	१२ ,,	८ वि.	१५ ,,	₹०,,	ર ક	२३ "
पुष्करार्ध	२१ ,,	९ सं.	१६ ,,	११ सं.	१८ ,,	१३ ,,	१७ ,,	રક્ષ ,,

(१८८) अथ आगे कालद्वारे परंपरासिद्धांकी अल्पबहुत्व लिख्यते—

आरे ६	सुषमसुषम	सुषम	सुषमदुःषम	दुःषमसुषम	दुःषम	दुःषमदुःषम
अवसर्पिणी	५ वि	४ वि	३ असंख्येय	६ संख्येय	२संख्येय	१ स्तोक
उत्सर्पिणी	37 13	99 99	95 55	13 35	11 11	59 55

(१८९) अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी दोनाकी एकठी अल्पबहुत्वयस्रम्

आरे ६	सुषमसुषम	सुषम	सुषमदुःषम	दुःषमसुषम	दुःषम	दुःषमदुःषम	,
अवसर्पिणी	५ वि	४ वि	४ असंख्येय	६ संख्येय	३ संख्येय	१ स्तोक	अवसर्पिणी ७ संख्येय
उत्सर्पिणी	ષ્ઠ ,,	33 77	" "	"	٦ ,,	" "	उत्सर्पिणी ८ वि

(१९०) गतिद्वारे

गतिका आया अनंतर	नरक	तिर्येच	तिर्यचिणी	मनुष्य	मनुष्यणी	देव	देवी
ं अल्पबहुत्व	३ सं.	५ सं.	४ सं.	२ सं.	१ स्तोक	७ सं.	८ सं.

(१९१)

एकेन्द्रियना आया अनंतर	१ स्तो.
पंचेन्द्रियना ,, ,, सर्व जगे	२ सं.
वनस्पतिना " अनंतर	₹ ,,
पृथ्वीना ,, ,,	¥ ,,
त्रसकायना ,, ,,	٠, وو
चौथी नरकना "	१ स्तो.
तीजी ,, ,, ,,	२ सं.
द्वितीय " " "	₹ ,,
बादर वनस्पति पर्याप्तना आया	૪ ,,
,, पृथ्वी ,, ,,	٧,,,
,, अप्काय ,, ,,	ξ,,
भवनपति देवीना आया अनंतर	৩ ,,
,, देवताना ,, ,,	۷ ,,
व्यंतरीना ,, ,,	९ ,,
व्यंतर देवताना	ξο "
जोतिषीनी देवीना ", "	११ ,,
जोतिषी देवताना	१२ ,,
मनुष्य स्त्रीना " "	१३ ,,
मनुष्यना """	१४ सं.
प्रथम नरकना ,, ,,	१५ ,,
तिर्येच स्त्रीना "	१६ ,,
तिर्येचना ,, ,,	१७ ,,
अनुत्तर विमानना ,, ,,	१८ ,,
ग्रैवेयकना ,, ,,	१९ ,,
अच्युतना ,, ,,	₹0 ,,
आरणना ,, ,,	२१ ,,
एवं अधोमुख सनत्कुमार लगे	२८ ,,
ईशान देवीना आया	स्९ ,,
सौधर्म " "	₹0 ,,
ईशान देवताना "	३१ ,,
सौधर्म देवताना "	३२ ,,

वेदद्वारे	अल्पबहुत्व
नपुंसकसिद्धा	१ स्तोः
स्त्रीसिद्धा	२ सं.
पुरुषसिद्धा	₹ "
तीर्थद्वारे	अल्पबहुत्व
तीर्थकरी	१ स्तो.
तीर्थंकरीतीर्थं प्रत्येकबुद्धी	२ सं.
,, अतीर्थकरी	₹ ,,
,, अतीर्थंकर	૪ ,,
तीर्थंकरसिद्धा	۷ ,,
तीर्थकरतीर्थं प्रत्येकबुद्धा	ξ,, _
,, साध्वी	৩ "
,, अतीर्थंकर	۷ ,,
िं रगद्वारे	अल्पबहुत्व
,, गृहिंखगी	१ स्तो.
,, अन्यहिंगी	२ असं.
,, खिंहगी	₹ ,,
चारित्रद्वारे	अल्पबहुत्व
छेद०, परि०, सू०, यथा०	१ स्तो.
सामा०, छेद०,परि०, स्०, यथा०	२ असं.
छेद०, स्स्म०, यथा०	₹ ,,
सामा॰, छेद॰, सू॰, यथा॰	४ सं.
सामा०, सूक्ष्म०, यथा०	५ सं.
बुद्धहारे	अल्पबहुत्व
स्वयंबुद्धा	१ स्तो.
प्रत्येकबुद्धा	२ सं.
बुद्धिबोधितसिद्धा	₹ ,,
बुद्धवोधितसिद्धा	8 ,,
ज्ञानद्वारे	अरुपबहुत्व
मति, श्रुत, मनःपर्याय	१ स्तो.
मति, श्रुत	२ सं.

मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय	३ सं.
मति, श्रुत, अवधि	8 ,,
अवगाहनाद्वारे	अल्पबहुत्व
द्विहस्त अवगाहना	१ स्तो.
पृथक् धनुष अधिक ५०० धनुषवाला	२ असं.
मध्यम अवगाहना	₹ ,,
अवगाहनाविशेष	अल्पबहुत्व
७ हस्त अवगाहना	१ स्तो.
५०० धनुष ,,	२ सं.
"सें ऊणी ऊणी	₹ ,,

झझेरी ७ हस्त	४ वि.
उत्क्रष्टद्वारे	अल्पबहुत्व
अप्रतिपतितसिद्धा	१ स्तोः
संख्येयकालपतित	२ असं.
असंख्येयकालपतित	३ सं.
अनंतकालपतित	४ असं.
अंतरद्वारे	अल्पबहुत्व
६ मास अंतरे सिद्धा	१ स्तो.
द्वि समय " "	२ सं.
त्रि ,, ,, ,,	₹ ,,

एवं तां लगे कहना जां लगे मध्य तिवारे पीछे संख्येय गुण हीना कहना. जां लगे १ समय हीन ६ मास सिद्धा संख्येय गुण हीना.

(१९२)

अनुसमयद्वारे	अल्पबहुत्व				
१०८ सिद्धा	१ स्तो.				
१०७ ,,	२ सं.				
१०६ ,,	३ सं.				
पवं समय समय हानि द्वि समय सिद्धा संख्येय	तां लगइ कहनी जांलगे गुणा				
गणनद्वारे	अल्पबहुत्व				
१०८ सिद्धा	१ स्तो.				
१०७ ,,	२ अनंत				
१०६ ,,	₹ ,,				
१०५ सीझे	8 ,,				
एवं एकैक हानि तां लवे गुणा ५	एवं एकैंक हानि तां लगे जां लग ५० सिद्धा अनंत				
४९ सिद्धा	६ असं.				
८८ ,,	७ असं.				
एवं २'५ लग कहेना					
२४ सीझे	८ सं.				
२३ ,,	९ सं.				
	,				

विशेष सिद्धप्राभृतटीका	तः छिख्य
अधोमुख सिद्धा	१ स्तो.
प्रध्वेमुख सिद्धा कायोत्सर्गे	२ सं,
ऊकडू आसन सिद्धा	₹ ,,
वीरासन	૪ ,,
न्युजासन "	٧,,
पासेस्थित "	ξ,,
उत्तानि्थत "	৩ ,,
संनिकर्षद्वारे	अल्पबहुत्व
सर्वसे बहोत एकैक सिद्धा	१
ो दो सिद्धा संख्येय गुण हीन	ર
एवं तां छगे कहना जां छगे बंख्येय गुण हीना ३	१५ सिड

एवं एकैक वृद्धि असंख्येय गुण हीन तां लगे कहना जां लगे ५० सिद्धा. पंचास पंचास सिद्धाथी ५१ सिद्धा अनंत गुण हीन, बावन बावन सिद्धा अनंत गुण हीन, एवं एकैक हानि तां लगे कहनी जां लगे १०८ आठ आठ सिद्धा अनंत गुण हीना.

तथा जिहां जिहां वीस वीस सिद्धा तिहां एकैक सिद्ध सर्वसे घणे १, द्वौ द्वौ सिद्धा संख्येय गुण हीन २; एवं तां लगे कहना जां लगे पांच पांच सिद्धा.

अथ छ छ सिद्धा असंख्येय गुग हीना. एवं दश लगे कहना. ग्यारेसे लइ अग्ने अनंत गुण हीना.

तथा अघोलोक आदिमे पृथक्त वीत सिद्धा. तिहां पहिले चौथे भागमे संख्येय गुग हीना, द्रे चौथे भागमे असंख्येय गुग हीना, तीजे चौथे भागमें लेकर आगे सर्वत्र अनंत गुण हीना. तथा जिहां हरिवर्ष आदिमे दश दश सिद्धा तिहां तीन लगे तो संख्येय गुण हीन, चौथे पांचमे असंख्येय गुण हीन, ६ से लेकर सर्वत्र अनंत गुण हीना.

जिहां पुनः अवगाहना यवमध्य ते अनुत्कृष्टी आठ तिहां चार लगे संख्येय गुण हानि तिस ते परे अनंत गुण हानि.

जिहां वली ऊर्ध्वलोक आदिमे चार सीझे एँकैक सिद्धा सबसे बहुत, दो दो सिद्धा असं-रूपेय गुण हीना, तीन तीन सिद्धा अनंत गुण हीना, चार चार सिद्धा अनंत गुण हीना.

जिहां लगण आदिकमें दो दो सिद्धा तिहां एकैक सिद्धा बहुत, दो दो सिद्धा अनंत गुण हीना. इति सिन्नकर्ष द्वार संपूर्ण. शेष द्वार सिद्धप्राश्वत टीकासे जानने. श्री ६ परमपूज्य महाराज आचार्य श्रीमलयगिरिकृत श्रीनंदीजीकी वृत्तिथी ए खरूप लिख्या.

इति नवतत्त्रसंकलनायां मोक्षतत्त्वं नवमं सम्पूर्णम्.

अथ ग्रंथसमाप्ति सवईया इकतीसा-

आदि अरिहंत वीर पंचम गणेस धीर भद्रवाहु गुर फी(फि) सुद्ध ग्यान दायके जिनभद्र हरिभद्र हेमचंद देव इंद अभय आनंद चंद चंदरिसी गायके मलयिगरि श्रीसाम विमल विग्यान धाम ओर ही अनेक साम रिदे वीच धायके जीवन आनंद करो सुष(ख)के भंडार भरो आतम आनंद लिखी चित्त हुलसायके १ वीर विश्व वैन ऐन सत परगास दैन पठत दिवस रैन सम रस पीजीयो मैं तो मूढ रिदे गूढ ग्यान विन महाफ़ूढ कथन करत रूढ मोपे मत धीजीयो जैसे जिनराज गुरू कथन करत धुरू तैसे ग्रंथ सुद्ध छुरू मोपे मत धीजीयो मैं तो बालख्यालवत चित्तकी उमंग करी हंसके सुभाव ग्या(ज्ञा)ता गुग ग्रह लीजीयो २ ग्राम तो 'वि(बि)नोली' नाम लाला चिरंजी व स्थाम भगत सुभाव चित्त धरम सुहायो है

९ जीवनराम ए प्रन्थकर्ताना स्थानकवासी गुरुतुं नाम छ ।

२-३ लाला चिरंजीलाल अने लाला इयामलाल ए बंने श्रावको भक्त अने समजदार हता.

सुषसे चोमास करी ग्यानकी लगन परी तिनकी कहन करी ग्यानरूप ठायो है भव्य जन पठन करत मन हरपत ग्यानकी तरंग देत चित्तमे सुहायो है संवत तो सुँनि करें 'अंक 'इंद्र 'संप धर कातिक सुमास वर तीज बुध आयो है ३

दोहा—ग्यान कला घटमे वसि, रसेसु निज गुण माहि
परचे आतमरामसे, अचल अमरपुरि जाहि १
संघ चतुर्विध वांचिड, ग्यानकला घट चंग
गुरुजन केरे मुख थकी, लहिसो तन्वतरंग २

इति श्रीआत्मारामकृत नवतत्त्वसंग्रह संपूर्णः लिपीचके 'वि(बि)नोली' मध्ये। शुभं भवतुः वाच्यमानं चिरं नन्द्यात्. श्रीरस्तुः



श्रीविजयानन्दसूरीश्वरकृत ॥ उपदेशबावनी ॥ (सवैया एकतीसा)



श्रीपार्श्वनाथाय नमो नमः ॥

जै नीत पंच मीत समर समर चीत अजर अमर हीत नीत चीत घरीए सूरि उज्झा मुनि पुज्जा जानत अरथ गुज्जा मनमथ मथन कथनसुं न ठरीए बार आठ षटतीस पणवीस सातवीस सत आठ गुण ईस माल बीच करीए एसो विभु जैकार बावन वरण सार आतम आधार पार तार मोक्ष वरीए १

अथ देवस्तुतिः--

नथन करन पन हनने करमधन धरत अनघ मन मथन मदनको अजर अमर अज अलख अमल जस अचल परम पद धरत सदनको समर अमर वर गनधर नगवर थकत कथन कर भरम कदनको सरन परत तभ(स) नमत अनध जस अतम परम पद रमन ददनको २ नमो नीत देव देव आतम अमर सेव इंद चंद तार वृंद सेवे कर जोरके पांच अंतराय भीत रित ने अरित जीत हास शोक काम वीत(धीन?) मिथ्यागिरि तोरके चिंद ने अत्याग राग द्वेष ने अज्ञान याग अष्टादश दोष हन निज गुण फोरके रूप ज्ञान मोक्ष जश वध ने वैराग सिरी इच्छा धर्म वीरज जतन ईश घोरके ३

अथ गुरुस्तुतिः---

मगन भजन मग धरम सदन जग ठरत मदन अग भग तज सरके कटत करम वन हरत भरम जन भवबन सघन हटत सब जरके नमत अमरवर परत सरन तस करत सरन भर अघ मग टरके धरत अमल मन भरत अचर धन करत अतम जन पग लग परके १ महामुनि पूर गुनी निज गुन लेत चुनी मार धार मार धुनि बुनी सुख सेजको ज्ञान ते निहार छार दाम धाम नार पार सातवीस गुण धार तारक से हजको पुगल भरम छोर नाता ताता जोर तोर आतम धरम जोर भयो महातेजको जग श्रमजाल मान ज्ञान ध्यान तार दान सत्ताके सहूप आन मोक्षमे रहेन(ज)को ५

अथ धर्मखरूपमाह-

सिद्धमत स्यादवाद कथन करत आद भंगके तरंग साद सात रूप भये हैं अनेकंत माने संत कथंचित रूप ठंत मिथ्यामत सब हंत तत्त्व चीन छये हैं

नित्यानित्य एकानेक सासतीन वीतीरेक भेद ने अभेद टेक भव्याभव्य ठये है शुद्धाशुद्ध चेतन अचेतन मूरती रूप रूपातीत उपचार परमकुं लये है ६ सिद्ध मान ज्ञान शेष एकानेक परदेश द्रव्य खेत काल भाव तत्त्व नीरनीत है नय सात सत सात भंगके तरंग थात व्यय ध्रुव उतपात नाना रूप कीत है रसकुंप केरे रस छोहको कनक जैसे तैसे स्यादवाद करी तत्त्वनकी रीत है मिथ्यामत नाश करे आतम अनघ धरे सिद्ध वधु वेग वरे परम पुनीत है ७ धरती भगत हीत जानत अमीत जीत मानत आनंद चित भेदको दरसती आगम अनुप भूप ठानत अनंत रूप मिथ्या भ्रम मेटनकुं परम फरसती जिन मुख वैन ऐन तत्त्वज्ञान कामधेन किन मित सुधि देन मेध ज्यं वरसती गणनाथ चित(त्त) भाइ आतम उमंग धाइ संतकी सहाइ माइ सेवीए सरसती ८ अधिक रसीले झीले सुखमे उमंग कीले आतमसूख्य ढीले राजत जीहानमे कमलवदन दीत संदर रदल(न) सीत कनक वरन नीत मोहे मद्पानमे रंग वदरंग छाळ मुगता कनकजाळ पाग धरी भाळ ळाळ राचे ताळ तानमें छीनक तमासा करी सुपनेसी रीत घरी ऐसे वीर लाय जैसे वादर विहानमें ९ आलम अजान मान जान सुख दुःख खान खान सुलतान रान अंतकाल रोये रतन जरत ठान राजत दमक मान करत अधिक मान अंत खाख होये है केसुकी कलीसी देह छीनक भंगुर जेह तीनहीको नेह एह दःखबीज वाये है रंभा धन धान जोर आतम अहित भोर करम कठन जोर छारनमे सोये है १० इत उत डोले नीत छोरत विवेक रीत समर समर चित नीत ही धरतु(त) है रंग राग लाग मोहे करत कूफर घोहे रामा धन मन टोहे चितमे अचेत्र(त) है आतम उधार ठाम समरे न निम नाम काम दगे(हे) आठ जाम भयो महापेतु(त) है तजके धरम ठाम परके नरक धाम जरे नाना दुःख भरे नाम कौन लेतु(त) है ४१ ईस जिन भजी नाथ हिरदे कमलपाथ नाम वार सुधारस पीके महमहेगो दयावान जगहीत सतगुरु सुर नीत चरणकमल मीत सेव सुख लहेगो आतमसरूप धार मायाभ्रम जार छार करम वी(वि)डार डार सदा जीत रहेगी दी(दे)ह खेह अंत भइ नरक निगोद लइ प्यारे मीत पुन कर फेर कौन कहेगी? १२ उदे भयो पुन पूर नरदेह भुरी नूर वाजत आनंदतूर मंगल कहाये है भववन सघन दगध कर अगन ज्युं सिद्धवधु लगन सुनत मन भाये है सरध्या(धा)न मूल मान आतम सुज्ञान जान जनम मरण दुःख दूर भग जाये है संजम खडग धार करम भरम फार नहि तार विषे पिछे हाथ पसताये है १३ ऊंच नीच रंक कंक कीट ने पतंग ढंक ढोर मोर नानाविध रूपको धरत है श्रंगधार गजाकार वाज वाजी नराकार पृथ्वी तेज वात वार रचना रचत है

आतम अनंत रूप सत्ता भूप रोग धूप वडे (परे ?) जग अंध कूप भरम भरत है सत्ताको सहत्प भुरु करनहींडोरे जुरु कुमताके वश जी आ नाटक करत है १४ रिधी सिद्धि ऐसे जरी खोदके पतार धरी करथी न दान करी हरि हर रहेगो रसना रसक छोर वसन ज(अं)सन दोर अंतकाल छोर कोर ताप दिल दहेगो हिंसा कर मुश धर छोर घोर काम पर छोर जोर कर पाप तेह साथ रहेगो जौंछो मित आत(दे) पान तौंछो कर कर दान वसेंहुं मसान फेर कोन देद(दे) करेगो १५ रीत विपरीत करी जरता सरूप धरी करतो बुराइ लाइ ठाने मद मानकुं द्युत धुत (झूठ) मंस खात सुरापान जीवघात चोरी गोरी परजोरी वेश्यागीत गानकं सत कर तुत उत जाने न घरमसूत माने न सरम भूत छोर अभेदानकुं मुत ने पुरीस खात गरभ परत जात नरक निगोद वसे तजके जहानकुं १६ लिखन पठन दीन शीखत अनेक गिन क(को) उनिह तात(³तत्त) चिन छीनकमें छिजे है उत्तम उतंग संग छोरके विविध रंग रंमा दंभा भोग लाग निश दिस भींजे है काल तो अनंत बली सुर वीर घीर दली ऐसे भी चलत ज्युं सींचान चिट लीजे है छोरके घरम द्वार आतम विचार डार छारनमे भइ छार फेर कहा किजे है १७ लीलाधारी नरनारी खेभंग जोगकुं वारि ज्ञानकी लगन हारि करे राग ठमको योवन पतंग रंग छीनकमे होत भंग सजन सनेहि संग विजकेसा जमको पापको उपाय पाय अध पुर सुर थाय परपरा तेहे घाय चेरो भये जमको अरे मूढ चेतन अचेतन तुं कहा भयो आतम सुधार तुं भरोसो कहा दमको ११८ एक नेक रीत कर तोष धर दोष हर कुफर गुमर हर कर संग ज्ञानीको खंति निरहोभ भज सरह कोमह रज सत धार भा(मा)र तज तज संग मानीको तप त्याग दान जाग शील मित पीत लाग आतम सोहाग भाग माग सुख दानीको देह होह रूप एत(ते) सदा मीत थिर नहीं अंत हि विलाय जैसे बुदबुद पानीको १९ ऐरावत नाथ इंद वदन अनुप चंद रंभा आद नारवृंद तु(धु १)^{जे} द्रग जोयके खट षंड राजमान तेज भरे वर भान भामनिके रूप रंग दीसे सेज सोयके हुळघर गदाघर घराघर नरवर खानपान गानतान लाग पाप वोयके आतम उधार तज बीनक इशक भज अंत वेर हाय ^४टेर गये सब रोयके २० 'ओडक वरस शत आयु मान मान सत सोवत विहात आध लेतहे विभावरी तत वाल खेल ख्याल अरध हरत प्राढ आध व्याध रोग सोग सेव कांता भावरी उद्ग तरंग रंग योवन अनंग संग सुखकी छगन छगे भई मित(मित) बावरी मोह कोह दोह छोह जटक पटक खोह आतम अजान मान फेर कहां दावरी? २१

९ आनंद। २ घर्मसूत्र। ३ तत्त्वज्ञाता। ४ आवाज। ५ आखर।

औषध अनेक जरि मंत्र तंत्र लाख करी होत न बचाव घरि एक कहु पानको सार मार करी छार रूप रस घरे परे यम निश्चित खरे हरे मानी मानको वाल लाल माल नाल थाल पाल भाल साल ढाल जाल डाल चले छोर थानको आतम अजर कार सिंचत अमृत धार अमर अमर नाम लेत भगवानको २२ अंध ज्ञान द्वगरित मानत अहित चित ग(गि)नत अधम रीत रूप निज हार रे अरव अनंत अंश ज्ञान चिन तेरो हंस केवत अखंड वंस बाके कर्म भार रे चुरा नुरा छुरा सुरा स्थामा श्वेत रूप भूरा अमर नरक कुरा जर है न नार रे सत चित निराबाध रूप रंग विना लाध पूरण अखंड माग आतम संभार रे २३ अधिक अज्ञान करी पामर खरूप धरी मांगे भीख घरि घरि नाना दु:ख रुहीये गरे घरि रिध खरि करमत विज जरी भुरु विन ज्ञान दिन हीन रहीये गुरु विभु वेन ऐन सुनत परत चेन करत जतन जैन फेन सब दहिये करमकलंक नासे आतम विमल भासे खोल द्रग देख लाल तोपे सर्व(ब) कहिये २४ काची काया मायाके भरोसो भमीयो तुं बहु नाना दुःख पाया काया जात तोह छोरके सास खास सुल हुल नीर भरे पेट फुल कोढ मोढ राज खाज जुरा तुर छोरके मुरछा भरम रोग सदल डहल सोग मुत ने पुरीस रोक होक सहे जोरके इत्यादि अनेक खरी काया संग पीड परी संदर मसान जरी परी प्यार तोरके २५ खेती करे चिदानंद अघ बीज बोत बृंद रसहे शींगार आद लाठी रूप लड़ हे राग द्वेष तुव घोर कसाय बलद जोर शिरथी मिथ्यात भोर गर्दभी लगइ हे तो होय प्रमाद आयु चक्रकार कार घटी लायु शिर प्रति प्रष्ट हारा कर खड़ हे नाना अवतार कलार चिदानंद वार धार इत उत प्रेरकार आतमकुं दइ है २६ गेरके विभाव दूर असि चार लाख नूर एहि द्रव्य वंजन प्रजाय नाम लयो हे मति आदि ज्ञान चार व्यंजन विभाव गुन परजाय नाम सुन शुद्ध ज्ञान टर्यो हे चरम शरीर पुन आतम किंचित न्यून व्यंजन सुभाव द्रव्य परजाय धर्यी हे चार हि अनंत फ़ुन व्यंजन सुभाव गुन शुद्ध परजाय थाय धाय मोक्ष वर्यो हे २७ घरि घरि आउ घटे घरि काल मान घटे रूप रंग तान हटे मूढ कैसें सोइये? जीया द्वं तो जाने मेरो मात तात सुत चेरो तामे कौन प्यारो तेरो पान कि गोइये चाहत करण सुख पावत अनंत दु:ख धरम विमुख रूख फेर चित रोइये आतम विचार कर करतो धरम वर जनम पदारथ अकारथ न खोइये २८ नरको जनम वार वार न विचार कर रिदे शुद्ध ज्ञान घर परहर कामको पदम वदन घन पद मन अठ भन कनक वरन तन मनमथ वामको हरि हर अम(ब्रह्म)वर अमर सरव भर मन मद पर छर धरे चित भामको शील फिल चरे जंबु जारके मदनतंबु निरारंग अंगकंबु आतम आरामको २९

छरद करत फीर चाटत अनंत रीत जानत ना हित कित श्वानदशा धरके सुरी कुरी कुल परे नाना रूप पीर परे जात ही अगन जरे मरे दुःख करके कुगुरु कुदेव सेव जानत न तत्त भेव मान अहमेव मूढ कहे हम डरके मिथ्यामति आतमसूर्य न पिछाने ताते डोलत जंजालमें अनंत काल भ(म)रके ३० जोर नार गरभसं मद (मोह) लोभ प्रसे राग रंग जंग लसें रसक जीहान रे मनकी तरंग फसे मान सनमान हसे खान पान धरमसे आतम अज्ञान रे सिद्धि रिद्धि चित लावे पतने विभुत भावे पुगलकं भोर धावे परो दःखलान रे करमको चेरो हुवो आस बांध झुर मुवो फेर मूढ कहेवे हम हुवो अम(ब्रह्म) ज्ञान रे ३१ जननी रोआई जैति जनमा(म) जनम धार आंखनसे पारावार भरीए महान रे आतम अज्ञान भरी चाटत छरद करी मनमे न थी(घी?)न परि भरे गंद खान रे तिशना तिहोरी यारी छोरत न एक घरी भमे जग जाल लाल भुले निज थान रे अंध मित मंद भयो तप तार छोर दयो फेर मूढ कहे हम हुवो ब्रह्मज्ञान रे ३२ जलके विमल गुण दलके करम फ़न हलके अटल धुन अघ जोर कसीए ढलके सुधार धार गलके मलिन भार छलके न प्रतान मोक्ष नार रसीए चलके सुज्ञान मग छलके समर ठग मलके भरम जगजालमें न फसीए थलके वसन हार खलके लगन टार टलके कनक नार आतम दरसीए ३३ टहके समन जेम महके सुवास तेम जहके रतन हेम ममताकुं मारी है दहके मदनवन करके नगन तन गहके केवलधन आस वा(ना ?)स डारी है कहके सज्जानभान लहके अमर थान गहके अखर तान आतम उजारी है चहके उवार दीन राजमित पारकीन ऐसे संत ईश प्रभु (बाल)ब्रह्मचारी है ३४ ठोर ठोर ठानत विवाद पखपात मूढ जानत न मूर चूर सत मत बातकी कनक तरंग करी श्वेत पीत भान परि स्यादवाद हान करी निज गुण घातकी पर्यो ब्रह्मजाल गरे मिथ्यामत रीझ धरे रहत मगन मूढ जुरी भरे खातकी आतमसरूपवाती मिथ्यामतरूपकाति ऐसो ब्रह्मघाति है मिथ्याति महापातकी ३५ डर नर पाप करी देत गुरु शिख खरी मान लो ए हित धरी जनम विहात है जीवन न नित रहे वाग गुल जाल महे आतम आनंद चहे रामा गीत गात है बके परनिंदा जेति तके पर रामा तेती थके पुन्य सेती फेर मूढ मुसकात है अरे नर बोरे तोकुं कहुं रे सचेत होरे पिंजरेकुं तोरे देख पंखी उड जातु है ३६ ढोरवत रीत घरी खान पान तान करी पुरन उदर च(भ)री भार नित वह्यो है पीत अनगरू नीर करत न पर पीर रहत अधीर कहा शोध नही रुखो है वाल विन पल तोल भक्षाभक्ष खात घोल हरत करत होल पाप राच रहा है शींग पुछ दाढी मुछ वात न विशेष कछ (कुछ) आतम निहार अछ (उछ) मोटा रूप कहा है ३७

नीके मधु पीके टीके शीखंड सुगंड लीके करत कलोल जीके नागवेर चाख रे अतर कपूर पूर अव(ग)र तगर भूर मृगमद घनसार भरे घरे खात(ख) रे सेव आरू आंब दारु पीसता बदाम चारु आतम चंगेरा पेरा चखत सुदाख रे मृदु तन नार फास सजक(के) जंजीर पास पकरी नरकवास अंत भई खाख रे ३८ तरु खग वास वसे रात भए कसमसे सूर उगे जात दसे दूर करी चीछना प्यारे तारे सारे चारे ऐसी रीत जात न्यारे कोउ न संभारे फेर मोह कहा कीलना जैसे हटवाले मोल मीलके वीछर जात तैसे जग आतम संजोग मान दीलना कौन चीर मीत तेरो जाको तु करत हेरो रयेन वस(से)रो तेरो फेर नहि मीछना ३९ थोरे सुख काज मूढ हारत अमर राज करत अकाज जाने लेयुं जग छुंटके कुटंबके काज करे आतम अकाज खरे लड़ी जोरी चोर हरे मरे शीर फुटके करम सनेह जोर ममता मगन भोर प्यारे चले छोर जोर रोवे शीर कुटके ेनरको जनम पाय वीरथा गमाय ताह भूले सुख राह छले रीते हाथ उठके ४० देवता प्रयास करे नर भव कुल खरे सम्यक श्रद्धान धरे तन सुखकार रे करण अखंड पाय दीरघ सहात आय सुगुरु संजोग थाय वाणी सुघा घार रे तत्त्व परतीत लाय संजम रतन पाय आतमसद्भव धाय धीरज अवार रे करत सुप्यार लाल छोर जग अमजाल मान मीत जित काल वृथा मत हार रे ४१ धरत सरूप खरे अधर प्रवाल जरे संदर कपुर खरे रदन सोहान रे इंद्वत वदन ज्युं रतिपति मदन ज्युं भये सुख मगन ज्युं प्रगट अज्ञ(न रे पीक धन साद करे धाम दान भर भरे कामनीके काम जरे परे खान पान रे करता तु मान काहा(ह) आतम सुधार राह नहि भारे मान छोरे सोवना मसान रे ४२ नरवर हरि हर चक्रपति हलघर काम हनुमान वर भानतेज लसे है जगत उद्धार कार संघनाथ गणधार फरन पुमान सार तेउ काल प्रसे है हरिचंद मुंज राम पांडुसत शीतधाम नल ठाम छर वाम नाना दुःख फसे है देढ दिन तेरी बाजी करतो निदान राजी आतम सुधार शिर काल खरो हसे हैं ४३ परके भरम भोर करके करम घोर गरके नरक जोर भरके मरदमे धरके कुटंब पूर जरके आतम नूर लरके लगन भूर परके दरदमें सरके कुटंब दूर जरके परे हजूर मरके वसन मूर खरके ललदमे भरके महान मद धरके निव न हद धरके पुरान रद मीलके गरदमें ४४ फटके सुज्ञान संग मटके मदन अंग भटके जगत कंग कटके करदमें रटके तो नार नाम खटके कनक दाम गटके अमक्षचाम भटके विहदमें हटके धरम नाल डटके भरमजाल छटके कंगाल लाल रटके दरदमें झटके करत प्रान लटके नरक थान खटके व्यसन मिर(ल) आतम गरदमे ४५ द्वा(बा)रामती नाथ निके सकल जगत टीके हलधर भ्रात जीके सेवे बहु रान है हाटक प्रकार करी रतन कोशीश जरी शोभत अमरपरी स(सा)जन महान रे

पुन ही(वी ?)ते हाथ रीते संपत विपत लीते हाय साद रोद कीते जर्यो निज नाथ(थान ?) रे सोग भरे छोर चरे वनमे विलाप करे आतम सीयानो काको करता गुमान रे ४६ भूळ परी मीत तोय निज गुन सब खोय कीट ने पतंग होय अप्पा वीसरत है हीन दीन डीन चास दास वास खीन त्रास काश पास दु:ख भीन ज्ञानते गीरत है दु:ख भरे झूर मरे आपदाकी तान गरे नाना सुत मित करे फिर विसरत है आतम अखंड भूप करतो अनंत रूप तीन लोक नाथ होके दीन क्युं फीरतुं है ? ४७ महाजोघा कर्म सोघा सत्ताको सरूप बोघा ठारत अगन कोघा जडमति घोया हुं अजर अमर सिद्ध पुरन अखंड रिद्ध तेरे विन कौन दीध सब जग जोया हं मुससें तु न्यारो भयो चार गति वास थयो दुःख कहुं(?) अनंत लयो आतम वीगोया हुं करता भरमजारू फर्सो हुं बीहारू हारू तेरे विन मित मैं अनंत कारू रोया हं ४८ यम आठ कुमतासें प्रीत करी नाथ मेरे हरे सब गुन तेरे सत बात बोछं हुं महासुखकारी प्यारी नारी न्यारी छारी धारी मोह नृप दारी कारी दोष भरे तोहं हं हित करूं चित्त घरुं सुखके भंडार भरुं सम्यक सरूप घरुं कर्म छार छोहं हुं आतम पीयार कर कतां(कुमत?) भरम हट तेरे विन नाथ हूं अनाथ भइ डोलुं हूं ४९ रुल्यो हुं अनादि काल जगमें बीहाल हाल काट गत चार जाल दार मोहकीरको नर भव नीठ पायो दुषम अंधेर छायो जग छोर धर्म धायो गायो नाम वीरको कुगुरु कुसंग नो(तो)र सत मत जोर दोर मिथ्यामति करे सोर कौन देवे धीरको ? आतम गरीब खरो अब न विसारो घरो तेरे विन नाथ कौन जाने मेरी पीरको ५० ? रोग सोग दुःख परे मानसी वीथाकुं धरे मान सनमान करे हुं करे जंजीरको मंदमति भूप(त) रूप कुगुरु नरक हूत संग करे होत भंग काची (कांजी?) संग छिरको चंचल विहंग मन दोरत अनंत(ग ?) वन धरी शीर हाथ कौन पुछे वृग नीरको आतम गरीब खरो स(अ)व न विसारो धरो तेरे बीन नाथ कौन मेटे मेरी पीरको ? ५१ लोक बोक जाने कीत आतम अनंत मीत पुरन अखंड नीत अव्याबाघ भूपको चेतन सभाव घरे जडतासो दूर परे अजर अमर खरे छांडत विरूपको नरनारी ब्रह्मचारी श्वेत स्थाम रूपधारी करता करम कारी छाया नहि ध्रपको अमर अकंप धाम अविकार बुध नाम कृपा भइ तोरी नाथ जान्यो निज रूपको ५२ वार बार कहं तोय सावधान कौन होय मिता नहि तेरो कोय उंधी मित छड है नारी प्यारी जान धारी फिरत जगत भारी शुद्ध बुद्ध लेत सारी छुंटवेको ठइ है संग करो दुःख भरो मानसी अगन जरो पापको भंडार भरो सुधीमित गइ है आतम अज्ञान धारी नाचे नाना संग धारी चेतनाके नाथकुं अचेतना क्या मइ है ! ५३ शीत सहे ताप दहे नगन शरीर रहे घर छोर वन रहे तज्यो घन थोक है वेद ने पुराण परे तत्त्वमिस तान धरे तर्क ने मीमांस भरे करे कंठ शोक है क्षणमित ब्रह्मपति संख ने कणाद गति चारवाक न्यायपति ज्ञान विनु बोक है रंगबी(ब)हीरंग अछ मोक्षके न अंग कछ आतम सम्यक विन जाण्यो सब फोक है ५८

षट पीर सात डार आठ छार पांच जार चार मार तीन फार लार तेरी फरे है तीन दह तीन गह पांच कह पांच रुह पांच गह पांच बह पांच दर करे है नव पार नव धार तेरकुं विडार डार दशकुं निहार पार आठ सात लरे है आतम सज्जान जान करतो अमर थान हरके तिमिर मान ज्ञानभान चरे है ५५ शीतल सहत्प घरे राग द्वेष वास जरे मनकी तरंग हरे दोषनकी हान रे संदर कपाल उंच कनक वरण कुच अधर अनंग रुच पीक धुन गान रे षोडश सिंगार करे जोवनके मद भरे देखके नमन चरे जरे कामरान रे ऐसी जिन रीत मित आतम अनंग जित काको मूढ वेद धीत ऐही ब्रह्मज्ञान रे ५६ हिरदेमे सुन भयो सुधता विसर गयो तिमिरअज्ञान छयो भयो महादःखीयो निज गुण सुज नाहि सत मत बुज नाहि भरम अरुझे ताहि पर्गुण रुशीयो ताप करवेको सुर धरम न जाने मूर समर कसाय वहि अरणमे ध्रावीयो आतम अज्ञान बरु करतो अनेक छरु धार अधमरु भयो मूदनमे मुखीयो ५७ लंबन महान अंग सुंदर कनक रंग सदन वदन चंग चांदसा उजासा है रसक रसील द्र(ह)ग देख माने हार मृग शोभत मांदार ऋंग आतम बरासा है सनतक्रमार तन नाकनाथ गुण भन देव आय दरशन कर मन आसा है छिनमे बिगर गयो क्या हे मूढ मान गयो पानीमें पतासा तेसा तनका तमासा है ५८ क्षीण भयो अंग तोउ मूढ काम धन जोउ की(क)^ह। करे गुरु कोउ पापमित साजी है खे(खै) रुने शींघान चाट माने सुख केरो थाट आनन उचाट मूढ ऐसी मति चाजी है मृत ने पुरिश परि महादुरगंघ भरी ऐसी जोनी वास करी फेर चहे पाजी है करतो अनित रीत आतम कहत मित गंदकीको कीरो भयो गंदकीमें राजी है ५९ त्राता घाता मोक्षदाता करता अनंत साता वीर घीर गुण गाता तारो अब चेरेको तं ज (तम) है महान मुनि नाथनके नाथ गुणी सेवं निसदिन पुनी जानो नाथ देरेको जैसो रूप आप घरो तैसो मुज दान करो अंतर न कुछ करो फेर मोह चेरेको आतम सरण पर्यो करतो अरज खरो तंरे विन नाथ कोन मेटे भव फेरेको ? ६० ज्ञान मान का(क)हा मोरे खान पान ता(दा)रा जोरे मन हू विहंग दोरे करे नाहि थीरता मुजसो कठोर घोर निज गुण चोर भोर डारे ब्रह्म डोर जोर फीरुं जग फीरता अब तो छी(ठि)काने चर्यो चरण सरण पर्यो नाथ शिर हाथ धर्यो अघ जाय खीरता आतम गरीब साथ जैसी कृपा करी नाथ पीछे जो पकरो हाथ काको जग फीरता ६१ शी(खि !) लीवार ब्रह्मचारी धरमरतन घारी जीवन आनंदकारी गुरु शोभा पावनी तिनकी कृपा ज करी तत्त्व मत जान परि कुगुरु कुसंग टरी सुद्ध मित धावनी पढतो आनंद करे सुनतो विराग घरे करतो मुगत वरे आतम सोहावनी संवत तो मुनि कर निधि इंदु संख घर तत चीन नाम कीन उपदेशबावनी ६२ करता हरता आतमा, घरता निरमल ज्ञान; वरता भरता मोक्षको, करता अमृत पानः १

याहकोनी ग्रुभ नामावली

- २५९ श्रीविजयदेवसूर संघनी पेढी.
- १०० श्रीसंघ पुना (उपधाननी उपजमांथी) ह. संघवी केशवलाल मणिलाल.
 - ५१ रा. मोतीलाल मूलजी.
 - ५१ ,, रायचंद मोतीचंद झवेरी.
- २५ अ. सौ. ख. मंगलाना स्मरणार्थे ह. बाडीलाल चत्रभूज
- २५ रा. नरोत्तम खेतसी
- २५ ,, हीरालाल बकोरदास इ. कांतिलाल
- २५ ,, सकराभाइ ल्रहुभाइ
- २० ,, कोठारी सुरजमल पुनमचंद
- ९५ श्री जैन आत्मानंद सभा (भावनगर).
- १५ रा. लालचंद खुशालचंद.
- १३ ,, पोपटलाल उत्तमचंद.
- ११ ,, उत्तमचंद मानचंद.
- ११ ,, जीवणचंद केसरीचंद (राधनपुर).
- ११ ,, } बाबु जीवणलाल पनालाल जे. पी. भगवानलाल ,, मोहनलाल ,,
- ११ ,, भोगीलाल लहेरचंद.
- १० ,, नगीनचंद कपुरचंद.
- ५ ,, ककलभाई भूधरभाई वकील.
- ५ ,, कान्तिलाल ईश्वरलाल मोरखीआ.
- ५ ,, गोदडजी डोसाजी.
- ५ ,, गोविंदजी भारमल.
- ५ ,, चिमनलाल शीरचंद.
- ५ ,, चुनीलाल उत्तमचंद.
- ५ ,, चुनीलाल गुलाबचंद.
- ५ ,, चुनीलाल वीरचंद.
- ५ ,, चंदुलाल वछराज.
- ५ ,, जेठाभाई कशलचंद.
- ५ ,, त्रिकमलाल न्यालचंद.
- ५ ,, त्रिकमलाल मगनलाल वीरवाडीया.
- ५ ,, दोसी कालीदास सांकलचंद.
- ५ ,, नगीनदास ललुभाई झवेरी.
- ५ ,, नेमचंद अमरचंद.
- ५ ,, प्रागजी धरमसी.

- ५ रा. बापुलाल चुनीलाल.
- ५ ,, बाबु दोलतचंदजी अमीचंदजी.
- ५ ,, मोहनलाल हेमचंद झवेरी.
- ५ ,, वाडीलाल पुनमचंदः
- ५ ,, वाघमल खीमराज सादडीवाला.
- ५ श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.
- ५ रा. हरगोविंददास हरजीवनदास.
- ५ ,, हंसीलाल पानाचंद.
- ४ ,, रवचंद ऊजमचंद.
- ३ ,, नवाब साराभाई मणिलाल.
- ३ ,, पानाचंद प्रेमचंद जामनगरवाला.
- ३ ,, मूलचंद हीराचंद जामनगरवाला.
- २ ,, अमृतलाल रायचंद झवेरी.
- २ ,, केरीगजी मोटाजी.
- २ ,, केशवलाल नरपतलाल.
- २ ,, खीमचंद तलकचंद.
- २ ,, गोविंदजी खुशाल.
- २ 🕠 चांपसीभाई वसनजी पालाणी.
- २ ,, चीमनलाल मणिलालनी कंपनी.
- २ 🦙 चुनीलाल ऊजमचंद.
- २ " जीवतलाल चंद्रभाण कोठारी.
- २ ,, जीवनचंद धरमचंद.
- २ ,, डीसा कॅम्न श्रीसंघ.
- २ दक्षिणविहारी मुनिराज श्रीअमरविजयजी
- २ देवेन्द्रविजय (यति).
- २ रा. दोसी हीरालाल पुरुषोत्तम.
- २ ,, नागरदास हकमचंद.
- २ ,, पेराज मनाजी.
- २ ,, प्रेमजी नागरदास.
- २ ,, प्रेमराज महेता.
- २ ,, भगुभाई हीराभाई.
- २ भातवजारना श्रीआदीश्वरजीना दहेरासरनी पेढी
- २ रा. भोगीलाल प्रेमचंद.
- २ ,, मगनभाई नगीनभाई.
- २ ,, मणिलाल त्रिकम नर्पत.
- २ ,, माणेकलाल न्यालचंद.
- २ ,, मोतीलाल नानचंद.
- २ ,, मंगलदास मोतीचंद महुधावाला.
- २ राजपुर (बीसा) श्रीसंघ,

- २ रा. रीखवचंद ऊजमचंद पालनपुरवाला.
- २ ,, लहुभाई करमचंद.
- २ ,, लाला संतराम मंगतराम.
- २ ,, वनमालीदास रामजी.
- २ ,, वाडीलाल मगनलाल.
- २ श्रीकुसुमविजयजी जैन श्वेतांबर पुस्तकालय.
- २ रा. साकरचंद हेमचंद.
- २ श्री प्रवचन पूजक सभा (मुंबई).
- १ रा. अमीचंद खेमचंद.
- १ ,, अमीचंद भभुतमल.
- १ ,, अमृतलाल पुनमचंद.
- १ ,, उमरीबाई धर्मपत्नी लाला सुंदरमल.
- १ ,, कीर्तिलाल हीरालाल भणशाली.
- १ ,, कीसनचंद पुंजाशा.
- १ " कंकुचंद जेचंद.
- १ ,, केशरीचंद चोकमल.
- १ ,, केशरीचंद पुनमचंद.
- १ " केशरबेन मोहनलाल पाटणवाला.
- १ ,, कैशवजी नारण.
- १ ,, केशवलाल बालाराम.
- १ ,, केशवलाल दलसुखभाई.
- १ ,, केशुराम तेजमाल.
- १ ,, कोठारी सरदारमल जेठाजी.
- १ ,, खेमचंद छोटालाल पाटणवाला.
- १ ,, गडकाबाईओ तरफथी.
- १ ,, गिरधरलाल हरजीवन.
- १ ,, गुलाबचंद गंगाराम.
- १ ,, गुलाबचंद तीलोकचंद.
- १ " चिमनलाल न्यालचंद.
- १ ,, चिमनलाल नगीनदास.
- १ ,, चंदुलाल सरूपचंद.
- १ ,, चंदुलाल सारामाई मोदी बी. ए.
- ९ ,, चंदनदेई धर्मपत्नी लाला गोकुलचंद.
- १ ,, चंपालाल पोपटलाल.
- १ ,, चुनीलाल खेतसी थानेरावाला.
- १ ,, छगनलाल मगनलाल.
- १ " छोटालाल छगनलाल काजी.
- १ ,, छोटालाल लहेरचंद.
- १ ,, छोदुभाई ईच्छाचंद.
- 🤊 " जवानमल देवाजी.

- १ रा. जवानमल प्रेमचंदजी.
- १ ,, जीवाभाई वाडीलाल.
- १ ,, जुवारमल मानमल.
- १ ,, जुमखराम गोदडचंद.
- १ ,, जेठमलजी मगनीरामजी.
- १ ,, जेसिंगलाल खीमचंद पाटणवाला.
- १ ,, जेसिंगलाल मोतीलाल.
- १ ,, जेसिंगलाल ललुभाइ.
- १ जैनानंद पुस्तकालय बनकोडा.
- १ रा. झवेरचंद ठाकरशी.
- १ ,, डाह्याभाई घेठाभाई मेसाणावाठा.
- १ ,, डी शान्तिलाल कान्तिलाल.
- १ ,, तलकचंद प्रेमचंद.
- १ ,, ताराचंद जसरामजजी.
- १ " ताराचंद वर्धिचंद.
- १ ,, ताराचंद हीराचंद.
- १ ,, तिलोकचंद राजमल.
- १ ,, दलपतलाल मनमुखलाल.
- १ ,, दिगंबरदास देवलाल.
- १ ,, दीपचंद केवलचंद चोटीलावाला.
- १ ,, दीपचंद सुरजमलजी.
- १ ,, दुर्लभ देवाजी.
- १ ,, देवसी हरपाल.
- १ ,, देवीदास कानजी.
- १ ,, दोसी हीराचंद मयाचंद.
- १ ,, घीरजलाल सरूपचंद.
- १ ,, नगीनदास रतनचंद.
- १ ,, नथमल मुलचंद.
- १ ,, नरोतमदास भगवानदाम.
- १ ,, नवलाजी फुवाजी.
- १ ,, नानाभाई दीपचंद.
- १ ,, नेणासी आशु कच्छी.
- १ ,, न्यालचंद सरूपचंद पाटणवालाः
- १ ,, पारोबाई धर्मपत्नी लाला हरदयाल जोघांबाला.
- १ ,, पारेख नेमचंद सोजी.
- १ पालनपुर जैनशाला.
- १ रा. पारी दलपतलाल चंदुलाल.
- १ ,, पुनमचंद मोतीचंद.
- १ ,, पोखराज धनराज मुता.
- ९ ,, पोपटलाल पुंजाशा.
- १ " प्रागजी चनाजी.

- १ रा. प्राणलाल वेलजी.
- १ ,, फत्तेह्चंद नवलचंद.
- १ ,, फुलचंद केशरीचंद उटडीवाला.
- १ " फुलचंद वेलजी.
- १ वसन्तीवाई धर्मेपली लाला अमरनाथ बंब.
- १ बाई नरमेकुंवर.
- १ बाई नाथीबाई.
- १ रा. बागलाल तीलोकचंद गांधी.
- १ ,, बागलाल शंकरलाल मुंबईगरा.
- १ ,, बागलाल मोहनचंद कापडीया.
- १ ,, बाबू गोपीचंद बी. ए; एडवोकेट.
- १ ,, बाबू वेलचंद देवलाल.
- १ ,, बालाभाई जेसिंगलाल.
- १ ,, बालुभाई कस्तुरचंद.
- १ ,, बावचंद जादवजी.
- १ ,, भभुतमल जोराजी.
- १ ,, भीमाजी हुकमाजी.
- १ ,, भोगीलाल ख्बचंद खंभातवाला.
- १ ,, भोगीलाल ताराचंद.
- १ ,, भोगीलाल दोलतचंद.
- १ ,, भोगीलाल दोलतचंद शाह.
- १ ,, मगनभाई कल्याणचंद.
- १ ,, मगनलाल गिरधरदास.
- १ ,, मगनलाल शीवलाल.
- १ ,, मणियार मोतीलाल नरपतलाल.
- ९ ,, मणियार बिवलाल नरपतलाल.
- १ ,, मणिलाल मोहकमचंद.
- १ ,, मणिलाल एम् धुपेलीया.
- १ " मणिलाल वेलचंद.
- १ ,, मणिलाल लक्षुभाई.
- १ ,, मणिलाल वाडीलाल मुकादम.
- १ ,, मणिळाल सूरजमलनी पेढी.
- १ ,, मीठुलाल पुंजाशा.
- १ ,, मीठुळाळ दुळीचंद.
- ९ ,, मुलजी जगजीवन मांगरोलवाला.
- 🤋 " मेता जीवराज मंगळजी पालनपुरवाला.
- १ मोरबी जैन लायब्रेरी.
- १ रा. मोहनलाल छोटालाल.
- १ ,, मोतीळाल लक्ष्मीचंद पालनपुरवाला.
- १ ,, मोहनलाल झवेरचंद.

- १ रा. मोहनलाल दीपचंद.
- १ ,, मोइनलाल धर्मासंह.
- १ ,, मोहनलाल खोडीदास.
- १ " मंखुभाई अमरचंद.
- १ ,, मंजुशा टीकमलाल.
- १ ,, रतनचंद हीराचंद पाटणवाला.
- १ ,, रतनाजी जोराजी.
- १ ,, रतिलाल फुलचंद.
- १ ,, रतिलाल भीखाभाई.
- १ ,, रतिलाल साराभाई.
- १ ,, रामलाल केशवलाल मास्तर राधनपुरवाला.
- १ ,, रामदास कीलाचंद.
- १ ,, रीखवचंद वाळचंद.
- १ ,, लक्ष्मीचंद लल्लुभाई.
- १ ,, लक्ष्मीचंद हेमराज कोठारी.
- ९ ,, लाला अगरमल जगन्नाथ.
- १ ,, लाल अमरनाथ तीर्थराम खंडेरवाल.
- १ ,, लाला कपूरचंद मेहरचंद.
- १ ,, छाला काल्रमल चांदनमल.
- १ ,, लाला कुन्दनलाल बनारसीदास.
- १ ,, लाला गुलजारीमल मुनशीराम.
- १ ,, लाला गोपीचंद किशोरीलाल.
- १ ,, लाला गोपीचंद रिषभदास.
- १ ,, लाला गोरामल अमरनाथः
- १ ,, लाला गंगाराम बनारसीदास.
- १ ,, लाला चांद्नमल रतनचंदः
- १ ,, लाळा जयकिशनदास पारसदास.
- १ ,, लाला ताराचंद निहालचंद.
- १ ,, ठाठा तुलसीदास भोठानाथ (गेठन).
- १ ,, लाला दीपचंद किशोरीलाल.
- १ ,, लाला दोलतराम रतनचंद सराफ
- १ ,, लाला दौळतराम ताराचंद.
- १ ,, लाला नेमदास रत्नचंद.
- १ ,, लाला परसराम जैन.
- १ ,, ळाळा पारसदास तीर्थदास.
- १ ,, लाला फागूमल प्यारेलाल.
- १ ,, लाला मलखीराम सराफ.
- १ ,, लाला महेरचंद दीनानाथ मनसोवाई.
- १ ,, लाला सुन्शीराम देवराज.
- १ ,, लाला मेघराज दुर्गादास गौरावाई.

२६२

नामाब ली

- १ रा. लाला राधामल जौतिप्रसाद.
- १ ,, लाला राधामल नःशुमल (जीरा).
- १ ,, लाला रामप्रसाद किशोरीलाल जैन.
- १ ,, ठाला रामशरणदास विलायतीराम.
- १ ,, लाला वसंतामल महरचंद.
- ९ ,, लाला सदासुखराय मुनीलाल.
- १ ,, लाला हरिचंद इंद्रशेन.
- १ ,, लाला हंसराज (पपनाखा).
- १ ,, छेरभाई न्यालचंद.
- १ ,, वमलसी जीतमल.
- १ ,, वाडीलाल कशलचंद.
- १ ,, वाडीलाल मगनलाल.
- १ 🕠 वाडीलाल मगनलाल वडोदरावाला.
- १ ,, वाडीलाल हरजीवनदास (अमलनेर).
- १ ,, विठलदास हरखचंद.
- १ ,, विठलदास गोविंदराम.
- १ ,, वीरचंद पानाचंद बी. ए.
- १ ,, वीजपाल भोजराज कच्छपत्री.
- १ ,, वृजलाल वी. पटेल.
- १ ,, बृजलाल मीखाभाई.
- १ ,, शेठ ब्रधर्स.
- श्री आत्मानंद जैनपुस्तकमंडार (माळेरकोटला)
- १ श्री आत्मानंद पुस्तकालय (आशपुर).

- १ श्रीकर्पूरविजय जैन पाठशाळाः
- श्री जैन लोंका गच्छ ज्ञानवर्धक लायनेरी (बालापुर)
- १ श्री वर्धमानज्ञानमंदिर.
- श्री वीरतत्त्वप्रकाशकमंडल (श्रिवपुरी).
- १ श्री सनातन जैन विद्यार्थी.
- १ श्री सीनोर संघ.
- १ श्री सुमति विजय जैन लायब्रेरी, कसूर (लाहोर).
- १ श्री संघ खानगाह डोगरां.
- १ श्रीहंसविजय जैन लाइब्रेरी (अमदावाद)
- । ", ",, (वडोदरा)
- १ रा. सरदारमल फुलचंदजी.
- १ रा. सुरचंद नगीनचंद, (मुंबई).
- १ ,, सुरचंद नगीनचंद (पाटण).
- १ ,, सोनराज हेमराज मुत्ता.
- १ ,, हरलाल सुंदरलाल.
- १ ,, हरजीवन गोपालजी.
- १ ,, हरिचंद मीठाभाई.
- १ ,, हरिलाल मनसुखलाल,
- १ ,, हरिलाल सोभागचंद.
- १ ,, हीमतलाल माधवलाल,
- १ ,, हीराचंद फकीरचंद.
- १ ,, हीराभाई अमीचंद
- १ ,, हीराभाई रामचंद मलबारी.
- १ ,, हीरालाल रायचंद.



